

जमनालाल बजाज की डायरी

१९१९-१९२१

(...) (राधाकृष्ण), ...पा
... की

कृपया यह ग्रन्थ नीचे निर्देशित तिथि के पूर्व अथवा उक्त तिथि तक वापस कर दें। विलम्ब से लौटाने पर प्रतिदिन दस पैसे विलम्ब शुल्क देना होगा।

20/2/22

जमनालालजी
की
डायरी

(१९१२ से १९१५)

प्रथम खण्ड

जमनालाल बजाज सेवा-ट्रस्ट : ग्यारहवां ग्रन्थ

जमनालालजी की डायरी

(१९१२ से १९१५)

प्रथम खण्ड

भूमिका

काकासाहब कालेलकर

संपादक

रामकृष्ण बजाज

१९६६

मुख्य विक्रेता

सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली

जमनालाल बजाज सेवाट्रस्ट, वर्धा
की ओर से
मार्तण्ड उपाध्याय
सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली

पहली बार
११ फरवरी, १९६६
मूल्य
चार रुपये

मुद्रक
श्यामकुमार गर्ग
राष्ट्रभाषा प्रिंटर्स, दिल्ली

संपादकीय

पूज्य पिताजी (श्री जमनालाल वजाज) संवंधी-साहित्य के प्रकाशन का कार्य जमनालाल-सेवा-ट्रस्ट की ओर से तेरह वर्ष पूर्व सन् १९५३ में प्रारंभ किया गया था। इस योजना के अंतर्गत अवतक कुल दस पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनमें पत्र-व्यवहार-माला के ५ भाग, पिताजी के पूज्य बापू व विनोवाजी से हुए पत्र-व्यवहार, पिताजी के भाषणों व लेखों का संग्रह आदि प्रमुख हैं।

इस पुस्तक के साथ हम एक और माला 'जमनालालजी की डायरी' का श्रीगणेश कर रहे हैं। इसके प्रथम भाग में सन् १९१२ से सन् १९१५ तक की डायरी संकलित है। वीच में सन् १९१३ की डायरी नहीं मिली। सन १९१५ में २१ अप्रेल तक की ही डायरी लिखी हुई है।

इस माला के अंतर्गत आगे के खण्ड भी यथासंभव शीघ्र प्रकाशित होते रहेंगे।

पूज्य काकासाहव कालेलकर ने व्यस्त तथा अस्वस्थ होते हुए भी, पहले खंड की विस्तृत भूमिका लिखने की कृपा की इसके लिए हम उनके अत्यन्त आभारी हैं।

पुस्तक के आरम्भ में श्री रिषभदास रांका द्वारा लिखित 'प्रास्ताविक' से पाठकों को इन डायरियों की पृष्ठभूमि समझने में आसानी होगी। श्री रांकाजी का पिताजी से बहुत वर्षों तक संपर्क रहा था। उन्होंने पिताजी से काफी प्रेरणा पाई और उनके प्रति वह सदैव श्रद्धावान रहे।

हमें खुशी है कि इस पुस्तक का प्रकाशन पिताजी की पुण्यतिथि (११ फरवरी) पर हो रहा है। इसका श्रेय प्रमुख रूप से श्री रिषभदास रांका को है, जिन्होंने हमारे अनुरोध पर इसके संपादन में बहुत लगन और परिश्रम से योग दिया।

—संपादक

प्रास्ताविक

इस युग में महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यों में महत्वपूर्ण योगदान देनेवाले श्री जमनालाल वजाज के जीवन, कार्यों तथा विचारों पर सम्यक् रूप से प्रकाश डालने के लिए यह आवश्यक था कि हमारी नई पीढ़ी को आज़ादी की प्राप्ति के प्रयत्नों और कार्यों की उचित जानकारी मिले। जमनालालजी की प्रवृत्तियां गांधी-युग के अथवा आजादी प्राप्ति के इतिहास की महत्त्वपूर्ण कड़ियां हैं। अतः उनके विषय में जो साहित्य प्रकाशित हो रहा है, उसका ऐतिहासिक महत्त्व तो है ही; उसमें आत्म-विकास करनेवालों को प्रेरणा भी मिलती है। इसलिए जव 'जमनालाल वजाज सेवा-ट्रस्ट' की ओर से उनकी डायरियों के प्रकाशन की चर्चा चली तो मैंने उसमें स्वभावतः दिलचस्पी ली। जमनालालजी के जीवन का अध्ययन मेरे लिए अत्यन्त प्रिय और दिलचस्प विषय रहा है।

गांधी-युग के इतिहास पर प्रकाश डालने की दृष्टि से जैसे 'महादेवभाई की डायरी' एक उत्तम साधन है, वैसे ही जमनालालजी की डायरी भी उपयोगी सिद्ध होगी, ऐसा मेरा विश्वास है। महात्माजी महादेवभाई व जमनालालजी को अपने दोनों हाथों की उपमा दिया करते थे, और उन दोनों के चले जाने से उन्हें लगता था, जैसे उनके दोनों हाथ चले गये। ऐसा बापू अक्सर कहा भी करते थे। बापू के इन दोनों मानस-पुत्रों की डायरियां प्रकाश में आ रही हैं, यह एक शुभ-संयोग ही समझना चाहिए।

यह बात सही है कि 'महादेवभाई की डायरी' विस्तार से लिखी गई है; और उससे महात्माजी के जीवन तथा विचारों पर विस्तृत प्रकाश पड़ता है। लेकिन जमनालालजी की डायरी संकेत रूप में लिखी होने पर भी महात्माजी के कार्यों तथा साथी कार्यकर्त्ताओं का परिचय पाने में बड़ी सहायक होती है।

जमनालालजी की जो डायरियां अभी उपलब्ध हैं, उनमें गांधीजी के संपर्क में आने के पहले की तो १९१२, १९१४ व १९१५ की ही मिल पाई हैं। उसमें भी १९१२ की तो पूरी मिलती है; १९१४ व १५ की कुछ अधूरी हैं।

जमनालालजी में एक बात मुख्य रूप से बचपन से ही दीख पड़ती थी और वह थी सत्संगति की तीव्र इच्छा। गांधीजी के संपर्क में आने के पहले भी उनका सज्जनों की संगति का तथा उनके जीवन का अच्छा उपयोग हो, इसलिए सत्कार्यों में योग देने का प्रयत्न चलता ही रहा और वैसा उल्लेख भी डायरी में मिलता है। सन् १९१२ से १९१५ तक के समय-समय के प्रथम खंड में गांधीजी के संपर्क में आने के पूर्व की गतिविधियों, जीवन, कार्यों तथा विचारों की झांकी मिलती है। इसे पढ़ने से उस समय के सामाजिक रीति-रिवाजों तथा समाज-सेवा-संबंधी कार्यों, व्यापार-संबंधी नीति, सत्संग की तीव्रता आदि की जमनालालजी विषयक जानकारी मिलती है। गांधीजी के संपर्क में आने के पहले उनके व्यक्तित्व के दर्शन भी उसमें होते हैं।

जमनालालजी के तत्कालीन जीवन और उनके व्यक्तित्व की झलक श्री घनश्यामदासजी बिड़ला के इस उल्लेख में मिलती है :

"शायद १९१२ की बात है। बंबई में मारवाड़ी पंचायत-वाड़ी में विशिष्ट मारवाड़ियों का एक छोटा-सा समाज मंत्रणा के लिए इकट्ठा हुआ था। बंबई में एक मारवाड़ी विद्यालय की स्थापना का आयोजन हो रहा था। समाज के धनी और वृद्ध, सभी लोग उपस्थित थे। किन्तु किसीने स्कूली शिक्षा नहीं पाई थी। इसलिए उन्हें यह पता नहीं था कि क्या करना है। पर धन एकत्र करना है, यह तो सभी जानते थे। सभा में तरह-तरह के लोग थे। अप्रस्तुत बातें भी चलती थीं। विषयान्तर भी होता था। पर एक मनुष्य था, जो जब अपना मुंह खोलता तो लोग उसे ध्यान से सुनते थे। मैंने भी उसे ध्यान से देखा। वह पुरुष नितान्त युवक था। पचीसी के इसी ओर ही। गौर वर्ण, स्थूल शरीर, गोल मुंह, शरीर पर रेशमी कोट और सिर पर काश्मीरी काम की टोपी। खादी की तो उस समय किसीको कोई कल्पना भी नहीं थी। स्वदेशी की परिभाषा में उस समय जापानी कपड़ा

तक त्याज्य नहीं माना जाता था। इसीसे युवक की वेश-भूषा के सारे कपड़े स्वदेशी नहीं थे। ठाट-बाट अमीराना था। चेहरे पर नजाकत थी, पर आंखों से सरलता और एक तरह की तेजस्विता टपकती थी। शिक्षित तो साधारण-सा ही मालूम होता था, पर बोल रहा था निर्भयता और पूरे आत्म-विश्वास के साथ, और वह लोगों को प्रभावित भी कर रहा था।

"मैं तो उस नवयुवक से भी छोटा था, बीसी के इसी पार। पर मुझसे उमर में थोड़ा ही बड़ा वह युवक जिस आत्म-विश्वास, अनुभव और प्रभाव के साथ बोल रहा था, वह देखकर मुझे कुछ डाह-सी हुई। मैंने किसीसे पूछा कि यह युवक कौन है ? पता लगा कि इस नौजवान का नाम जमनालाल बजाज है। इस छोटी-सी उम्र में देहात में रहनेवाला एक साधारण शिक्षा-प्राप्त व्यक्ति सामाजिक कार्यों में इतनी लगन और सचाई से रस ले सकता है, यह जानकर कुछ आश्चर्य और कुछ कुतूहल हुआ। मुझे जानना चाहिए था कि गुदड़ी में भी लाल होते हैं। बस, वहीं से मेरा जमनालालजी से परिचय हुआ, और उनसे उस दिन से जो मैत्री हुई, वह फिर जमती ही गई।"

जमनालालजी ने आगे चलकर गांधीजी के पुत्र के रूप में उनके सभी कामों की जिम्मेदारियां उठाकर सच्चे वारिस बनने का प्रयत्न किया। उनका गांधीजी के कामों में जो योग रहा, उसपर प्रकाश डालनेवाला साहित्य प्रकाशित अवश्य हुआ है, पर उन सबसे उनके पूर्व जीवन पर संपूर्ण प्रकाश नहीं पड़ता। इन डायरियों से उनके पूर्व जीवन, कार्यों और अंतरंग विचारों को समझने में अवश्य सहायता मिलेगी। पाठक जान सकेंगे कि गांधीजी के संपर्क में आने के पहले से ही जमनालालजी का व्यक्तित्व विकसित हो रहा था, जिसका आगे चलकर गांधीजी के संपर्क से विशेष विकास हुआ और उनकी शक्ति और बुद्धि का समाज एवं देश को अधिकाधिक लाभ मिला।

उनके कार्यों का ठीक मूल्यांकन करने के लिए भारत और खासकर बंबई, महाराष्ट्र तथा उसके निकट के प्रदेशों में चलनेवाले शिक्षा-प्रसार के प्रयत्नों का और सामाजिक स्थिति का निरीक्षण उपयोगी होगा। बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में या उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम चरण में महाराष्ट्र,

बंगाल, पंजाब, उत्तर प्रदेश, मद्रास आदि प्रान्तों में राजा राममोहनराय और उनके शिष्य, स्वामी दयानन्द तथा उनके अनुयायी, महाराष्ट्र में लोकमान्य तिलक, आगरकर, गोखले आदि लोगों ने प्रारंभ में शिक्षा-प्रचार को ही प्रजा को जाग्रत करने का साधन मानकर शिक्षा-प्रसार पर जोर दिया था और अनेक शिक्षा-संस्थाओं की स्थापना की थी। जमनालालजी ने प्रारंभ में मारवाड़ी समाज में शिक्षा-प्रसार तथा समाज-सुधारों के काम का श्रीगणेश करके राष्ट्र-सेवा के कार्य में उसकी पूर्णाहुति की थी। वर्धा में उन्होंने १९१० में मारवाड़ी छात्रालय की, १९१२ में मारवाड़ी विद्यालय की तथा मारवाड़ी कन्या विद्यालय की स्थापना की। बंबई में १९१२ में मारवाड़ी विद्यालय के लिए चन्दा किया और उसकी स्थापना भी की। उन्होंने मारवाड़ी विद्यालय के चन्दे में अपनी फर्म से ११,००० रु० का दान दिया। इसी दान के कारण सेठ रामगोपालजी, जो कारोबार में उनके भागीदार थे, नाराज हो गये और फर्म से संबंध विच्छेद कर लिया। इस समय जमनालालजी की उम्र सिर्फ २३ साल की थी। लेकिन उन्होंने धीरज के साथ परिस्थिति का सामना किया और सारी जिम्मेदारी निभाई। उनकी निर्भयता और तेजस्विता के पग-पग पर दर्शन होते थे।

उन्हें श्री श्रीकृष्णदासजी जाजू व बिरदीचन्दजी पोद्दार जैसे मित्र मिले, जिनसे उनके उन संस्कारों को वृक्ष रूप में फैलने में सहायता मिली। जाजूजी वकालत पास कर वकालत के लिए वर्धा आये थे। उनमें सत्कार्यों के प्रति प्रेम, सेवावृत्ति, राष्ट्रीय लगन व धार्मिकता थी। सत्य के प्रति निष्ठा और प्रामाणिकता उनमें सहज थी। बिरदीचन्दजी में भी सद्वृत्तियां और धार्मिकता थी और वह वेदान्त में विशेष रुचि लेते थे। इन तीनों मित्रों का मिलना-जुलना और समाज-सुधार तथा शिक्षा-वृद्धि के प्रयत्न में योग देना आदि बातें इन डायरियों के पन्ने-पन्ने पर परिलक्षित होती हैं।

जमनालालजी सरकारी अफसरों से भी मिलते रहते थे और उन्होंने कई अफसरों के साथ घनिष्ट संबंध भी बनाये थे। उन्हें बहुत छोटी (१९ वर्ष की) उम्र में आनरेरी मजिस्ट्रेट बनाया गया था और आगे चलकर वह रायबहादुर भी बने थे। प्रारंभ में वह राजनिष्ठ थे, लेकिन ज्यों-ज्यों देशभक्तों से संबंध बढ़ता गया, अफसरों के साथ कटु अनुभव आने लगा।

उन्हें हुआ मालूम कि उन संबंधों को किसी भी स्वाभिमानी व राष्ट्रीय हित की आकांक्षा रखनेवाले के लिए निभाना कठिन है। ये संबंध धीरे-धीरे घटते गये और उन्होंने आगे चलकर सरकारी उपाधि भी लौटा दी।

इन दिनों जमनालालजी का प्रमुख कार्य-क्षेत्र सामाजिक था और वह भी अधिकांश में मारवाड़ी-समाज तक ही सीमित था। फिर भी उनमें व्यापकता थी और अन्य समाजों, जैसे मराठा-समाज, जैन-समाज तथा माहेश्वरी समाज के सेवाकार्यों में वह दिलचस्पी ही नहीं लेते थे, सहायता भी करते थे। मराठा बोर्डिंग, जैन बोर्डिंग, जैन श्राविकाश्रम, माहेश्वरी महासभा आदि संस्थाओं में उन्होंने सहायता भी की और उनके कार्यों में योग भी दिया।

स्त्री-शिक्षा तथा स्त्री-सुधार के कार्यों में उनकी विशेष रुचि दिखाई पड़ती है। परदे के दुष्परिणामों से वह परिचित थे, इसलिए १९१२ में मारवाड़ी कन्या विद्यालय की वर्धा में स्थापना की। उनकी श्रद्धा थी कि मारवाड़ी समाज का सुधार हो और मारवाड़ी लोग धन का अपने समाज तथा जनता के हित में उपयोग करके अपनी प्रतिष्ठा बढ़ावें।

यद्यपि इन दिनों उनपर सनातनी विचारों का प्रभाव अधिक दिखाई देता था, क्योंकि उन दिनों में जिन पंडितों से उनका विशेष संपर्क हुआ था, उनमें सनातनी विचारों के ही व्यक्ति अधिक थे, पर वे पंडित भी यह तो चाहते ही थे कि समाज में शिक्षा का प्रसार हो। इसलिए बंबई के मारवाड़ी विद्यालय की स्थापना में पं० दीनदयालुजी शर्मा व नेकीरामजी शर्मा का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। पं० दीनदयालुजी सुप्रसिद्ध व्याख्याता थे और उनका मारवाड़ी समाज पर अच्छा प्रभाव था। इन्हीं दिनों पं० अमृतलालजी चक्रवर्ती से भी संपर्क आया, जो बंगाल के प्रसिद्ध राजनैतिक कार्यकर्ता थे।

उनका मुख्य कार्य व्यापार होते हुए भी जब वह बंबई आते तो सामाजिक कार्यों की चर्चा, योजना और काम साथ-साथ चलते ही रहते। जमनालालजी अपने मित्रों को भी सेवा-कार्यों की प्रेरणा देते और उनसे दान लेते रहते थे। बंबई में बिड़ला-बन्धु विशेषकर रामेश्वरजी व घनश्यामदासजी, रुइया-परिवार, पित्ती, दाणी, डागा, नेवटिया, पोद्दार, नेमाणी आदि के सहयोग से मारवाड़ी विद्यालय की स्थापना हुई थी। मारवाड़ी वाचनालय

तथा दूसरी सामाजिक प्रवृत्तियां भी चलती थीं।

उन्होंने, १९१४ में जब वह एक शादी में कलकत्ता गये तो, वहां खासा बड़ा मित्र-मंडल तैयार कर लिया। जुगलकिशोरजी बिड़ला, प्रभुदयालजी हिम्मतसिंहका, ज्वालाप्रसादजी कानोड़िया, वासुदेवजी केड़िया आदि से वहां सम्पर्क आया और उनसे समाज-हित के कार्यों कीं चर्चायें कीं। उनकी विशेषता थी कि वह बहुत जल्दी सम्पर्क स्थापित करके मैत्री जोड़ लेते थे। इन विशाल व्यापक सम्पर्कों का आगे चलकर राजनैतिक कार्यों में बहुत उपयोग हुआ। वैसे देखा जाय तो इस काल में जमनालालजी ने मारवाड़ी और व्यापारी-समाज के केन्द्र-रूप बनने के कार्य का प्रारम्भ कर दिया था, जिसका पूर्ण विकास उनके उत्तर जीवन में हुआ।

वर्धा और बंबई में ही नहीं, अन्यत्र भी उनका ऐसा प्रयत्न रहता था कि शिक्षा-संस्थायें और-और स्थानों में भी हों। प्रसिद्ध देशभक्त श्री दामोदरदास राठी के सहयोग से राजस्थान में भी उन्होंने शिक्षा-प्रसार का प्रयत्न किया था।

उनके प्रारम्भिक जीवन में त्याग का प्रभाव होते हुए भी निजी जीवन कुछ रईसों जैसा मालूम देता है। अच्छा भोजन करना और कराना, पार्टियां देना आदि बातों में उनकी दिलचस्पी मालूम देती थी। दाल-बाटी, अमरस-पूड़ी आदि उनके प्रिय भोजन दिखाई पड़ते हैं। हुर्डा-पार्टी का भी जिक्र बार-बार आता है। ज्वार के भुट्टे भूनकर दही, चटनी के साथ खाने का रिवाज विदर्भ में पाया जाता है। यद्यपि गांधीजी के सम्पर्क के बाद रहन-सहन की अमीरी कम होकर सादगी आ गई थी, पर अतिथि-सत्कार और खिलाना-पिलाना तो अन्त तक चालू ही रहा। गांधीजी के सम्पर्क में उन्होंने भोजन में सादगी अपनाई जरूर थी, पर अच्छा खाना उन्हें रुचिकर न लगता हो, ऐसी बात नहीं थी। वैसे वह राजयोगी थे, पर त्यागी बन गये थे। उन्हें संयम-पालन के लिए सदा आत्म-संघर्ष करना पड़ा।

व्यापार में उनकी व्यवहार-कुशलता के साथ-साथ प्रामाणिकता के दर्शन होते हैं। बचपन से ही उनमें प्रामाणिकता पर निष्ठा पाई जाती है। यह प्रामाणिकता की समझ ही उनके व्यावसायिक विकास में सहायक बनी। उनकी प्रामाणिकता और किसीसे अनुचित लाभ न उठाने की वृत्ति से ही

उन्होंने व्यापार में मित्रों का अमित सहयोग पाया। उन्होंने केवल अपने व्यापार का ही विकास नहीं किया, मित्रों के व्यापार को भी लाभ पहुंचाने का प्रयास किया।

भले ही जमनालालजी की पढ़ाई स्कूल में अधिक न हुई हो, पर उनके शिक्षा-प्राप्ति के प्रयत्न चलते हुए दिखाई देते हैं। वह "भणियां नहीं, पर गुणियां" थे, जिसका दर्शन उनकी डायरी में पग-पग पर होता है। भले ही ये डायरियां सविस्तर न हों, उनमें संकेत मात्र हों, पर वे निस्सन्देह प्रेरणा-दायक हैं। मुझ-जैसे उनके जीवन के अभ्यासी के लिए तो उनके जीवन पर प्रकाश डालनेवाली महत्त्वपूर्ण कड़ी मालूम देती हैं। डायरी पढ़ने पर मैंने उनमें जो दिलचस्पी दिखाई, उसके कारण भाई रामकृष्णजी ने उसके सम्पादन के कार्य में मेरी मदद चाही। अपनी रुचि का काम होने की वजह से मैंने उसे बड़ी खुशी के साथ स्वीकार कर लिया। इस निमित्त से जमनालालजी के पूर्व जीवन का जो अध्ययन हुआ, वह मेरे लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

—रिषभदास रांका

भूमिका

सूक्ष्म रूप से देखा जाय तो पता चलेगा कि साहित्य का प्रादुर्भाव संभाषण से हुआ है। बोलनेवाले जब अनुभवी और संस्कारी होते हैं, तब उनके संभाषण के बीच-बीच कहावतें तैयार हो जाती हैं। कहावतों का स्वरूप 'टकसाली सिक्कों' जैसा होता है। गहरे अनुभव, आकर्षक विचार और प्रभावशाली भाषा के कारण लोग कहावतों को कंठ कर लेते हैं और एक मुंह से दूसरे मुंह उनका प्रचार चलता रहता है। दरअसल कहावतों को कण्ठ करने का कोई प्रयास भी नहीं करता, कहावतें अपने आप ही कण्ठ हो जाती हैं।

जिन वचनों का स्वरूप आकर्षक होने के कारण वे कण्ठ हो जाते हैं, उनमें धीरे-धीरे भाषा का लालित्य आ जाता है और अपने ही आप उनकी छन्दोमयी वाणी बन जाती है। मैं मानता हूं कि कविता का उद्‌गम इसी तरह कहावतों में से ही हुआ होगा। फिर छन्दोमयी वाणी में गेयता होने से उसीका आकर्षण बढ़ता है और लोग सब तरह की कथाएं और प्रभावशाली प्रवचन भी कविता में लिखने लगते हैं। प्राचीन साहित्य में ये दोनों प्रकार, गद्य और पद्य, पाये जाते हैं।

कहावतों के बाद आती हैं कथाएं, मसलन ईसप की कथाएं, पंचतंत्र, हितोपदेश आदि। बादशाह-बीरबल की कथाएं तथा तेनाली रामन की कथाएं भी इसी कोटि की हैं।

कथाओं का विस्तार बढ़ने से बड़े-बड़े प्रकरण बनते हैं। ऐसे प्रकरण एकत्र करके ही पुराण-महापुराण बनाये गए। रामायण, महाभारत आदि इतिहास ग्रन्थ भी इसी तरह से बने।

बाद में आई लेखन-कला। मनुष्य की वाणी पहले तो बोलने के लिए ही होती है। 'भाषा' का अर्थ ही है 'बोलने का साधन'। लेकिन मनुष्य

कितनी चीज़ें कण्ठ करे ? और अपनी स्मरण-शक्ति पर बोझा भी कितना डाले ? और जहां आवाज़ पहुंच नहीं सकती, वहां अपनी सूचनाएं भी जैसी-की-तैसी कैसे भेजे ! मनुष्य ने भाषा को लिपिबद्ध करने की कला ढूंढ़ निकाली। मानवीय संस्कृति की प्रगति में लिपि का आविष्कार एक महत्त्व की चीज़ है, लिपि की कला हाथ में आते ही मनुष्य खत लिखने लगा और हिसाब के आंकड़े भी लिखकर रखने लगा। कभी-कभी याददाश्त के लिए थोड़े वचन भी लिखकर रखने लगा। इससे लिखित साहित्य के दो रूप हुए—एक खत-पत्र और दूसरा स्मरण के लिए लिखी हुई 'यादियां।'

हमारे देश में लोग 'यादियां' अपने लिए कहां तक लिखते थे, हमें मालूम नहीं है। दिन-भर का अनुभव लिख रखना, दूसरे दिन क्या-क्या करना है, इसकी भी नोंध रखना मनुष्य के लिए स्वाभाविक है। इतिहास संशोधक ऐसी पुरानी सूचियां पढ़कर ही पुराना इतिहास तैयार करते आये हैं। हमारे यहां घटनाओं का बयान लिख रखने की आदत कम थी। भाट, चारण आदि लोग जो बातें स्मरण में रखते थे, उसीपर राजा लोग भी निर्भर रहते थे।

विदेशों में दैनन्दिनी लिखने का रिवाज शायद ज्यादा होगा। हमारे यहां जो पठान और मुगल राज्यकर्ता हुए वे अपनी रोजनिशी लिखते थे। इसके लिए आजकल हम अंग्रेज़ी शब्द 'डायरी' चलाते हैं। अंग्रेज़ी शब्द 'डे' पर से 'डायरी' शब्द आ गया है। दैनन्दिनी शब्द है तो अच्छा, लेकिन कुछ बड़ा और भारी है। हमारे यहां दिन को 'वासर' कहते हैं, रविवासरे, सोमवासरे इत्यादि शब्द बोलते हैं। इस 'वासर' शब्द पर से दैनन्दिनी के लिए 'वासरी' शब्द बनाया गया। 'वासरी' अथवा 'वासरिका' शब्द अब चलने लगा है।

डायरी या वासरी लिखनेवाले लोगों के दो प्रकार होते हैं। एक में 'सारे दिन में किन-किन लोगों में मिले, किन-किन लोगों से क्या-क्या बातें हुईं, लोगों को कौन से वचन दिये, जो लोग मिले, उनके बारे में अपना अभिप्राय क्या हुआ।' इत्यादि विस्तार से लिखा जाता है। इनमें लोग बौद्धिक, हार्दिक और चर्चात्मक बातें भी लिखते हैं। ऐसी वासरियां लोगों के पढ़ने के लिए नहीं होतीं। वे होती हैं 'आत्मनेपदी'—अपने ही लिए।

इनका उपयोग आत्म-चरित्र लिखने में अथवा समकालीन इतिहास लिखने में अत्यन्त महत्त्व का होता है।

बाद में जब ऐसी वासरियों के दुरुपयोग होने की संभावना नहीं रहती है, तब वे प्रकाशित भी की जाती हैं। लिखनेवाले की साहित्यिक शक्ति भी उनमें अच्छी तरह से प्रतिबिम्बित होती है। वासरी लिखनेवाले यह भी जानते हैं कि किसी-न-किसी समय यह सब लेखन दूसरों के हाथ में जाने की संभावना है, इसलिए लिखते समय वे काफी संभलकर ही लिखते हैं। मनुष्य-स्वभाव पहचानने के लिए और समकालीन घटनाओं का रहस्य समझने के लिए ऐसी वासरियां अत्यन्त महत्त्व की होती हैं, और लिखनेवाला यदि प्रभावशाली पुरुष है और उसमें साहित्यिक शक्ति भी है तो उसके लेखों की अपेक्षा उसकी वासरियों का महत्त्व अधिक गिना जाता है।

जो दूसरे प्रकार के वासरी लिखनेवाले लोग होते हैं, वे महत्त्व की चर्चा या घटना कौन-सी हुई, उसका जिक्र तो करते हैं, लेकिन क्या बातचीत हुई, उसमें अपना अभिप्राय क्या था और आगे स्वयं क्या करने का सोचा है, इत्यादि कुछ भी नहीं लिखते। सिर्फ कोई घटना आदि ही लिखते हैं। मैंने कई वर्षों से इसी तरह की वासरियां लिखी हैं। मेरे लिए उनका उपयोग अधिक-से-अधिक है। दूसरों के लिए कुछ भी नहीं है। किस दिन मैं किनसे मिला, किस विषय पर लेख लिखा, महत्त्व का पत्र किसे लिखा आदि ज़रा-सा जिक्र ही उसमें आ आता है। कौन-सी चीज़ कब घटी, इसकी जानकारी मेरी वासरी में से जब चाहे मिल जाती है। अगर मैं आत्मकथा लिखने बैठूं तो मुझे मेरी वासरी से काफी मदद मिल सकती है। लेकिन यह शब्द इतना आत्मनेपदी होता है कि दूसरों के लिए वह कुछ काम का नहीं होता। उसमें रस भी पैदा नहीं हो सकता।

महात्मा गांधी भी इसी तरह की वासरियां लिखते थे। उसमें तो बहुत ही कम शब्दों में अत्यन्त ज़रूरी बातों का ही जिक्र होता है। अमुक दिन गांधीजी कौन-से शहर में थे, किससे मिले और उस दिन क्या किया, इसका ज़रा-सा जिक्र ही उसमें मिलता है। गांधीजी की जीवनी लिखने वालों के लिए ऐसी वासरी हमेशा काम की चीज़ है सही, लेकिन गांधीजी की ओर से उसमें कुछ भी नहीं मिला।

श्री जमनालालजी की यह जो दो-तीन साल की वासरियां हैं, इनमें भी केवल याददाश्त के लिए आवश्यक सूचनाएं ही लिखी हैं। न उनका हृदय पाया जाता है और न उनके अभिप्राय।

अगर किसी अच्छे प्रभावशाली नाटक का पहला ही अंक पढ़ा हो तो उसपर से उसे समस्त नाटक की कल्पना तो क्या, पहले अंक की खूबियां भी ध्यान में नहीं आ सकेंगी। समस्त नाटक पढ़ने के बाद ही प्रथम अंक में वर्णित छोटी-मोटी घटनाओं और संभावनों का रहस्य ध्यान में आता है। इसी तरह जमनालालजी के जीवन का प्रथम भाग ही जानने-वाले व्यक्ति को पता नहीं चलेगा कि प्रारम्भ के दिनों में कौन-सी सूक्ष्म शक्तियां आगे जाकर विकसित रूप धारण करनेवाली हैं। पूरा जीवन जाननेवाले आज के लोग ही उनके प्राथमिक जीवन के संस्कारों की सूक्ष्माति-सूक्ष्म खूबियां समझ सकेंगे और उनकी कद्र कर सकेंगे।

श्री जमनालालजी के अत्यन्त नजदीक के स्नेही श्रीकृष्णदासजी जाजू आज अगर जीवित होते तो इन तीन साल की वासरियों पर अधिक प्रकाश डाल सकते थे और वह इनमें से हमें बहुत-कुछ दे सकते थे। हम तो इसमें इतना ही देख सकते है कि गांधीजी के सम्पर्क में आने के पहले जमनालाल-जी का जीवन कैसा था। उन्होंने कहां-कहां मुसाफिरी की, किन-किनसे मिले, व्यापार-उद्योग में उनका ध्यान कैसा था और अपने दिन का उपयोग वह कैसा करते थे।

वासरियों के इस प्रथम भाग में सन् १९१२ तथा १९१४ की वासरियां पूरी हैं। १९१३ साल की वासरी मिली ही नहीं और १९१५ में केवल पहले चार महीने ही उन्होंने कुछ लिखा है। हम देखते हैं कि इसमें उनकी मुसाफिरी वर्धा, नागपुर और बम्बई के इर्द-गिर्द हुई है। केवल एक ही दफा वह कल-कत्ता गये हैं और उन्होंने वहां अनेक लोगों से मुलाकात की।

धर्म-प्रचार करनेवाले लोगों से उनका सम्पर्क था। रामायण, गीता, उपनिषद् आदि के प्रवचन वह ध्यान से सुनते थे और धार्मिक ग्रंथ भी वह पढ़ते थे। सरकारी कर्मचारियों से मिलना, धार्मिक और सामाजिक उत्सवों में शरीक होना, अच्छी-अच्छी संस्थाओं को मदद देना, नेताओं के साथ थोड़ा-कुछ सम्पर्क रखना और मारवाड़ी-समाज के लिए शिक्षा-संस्थाओं

की स्थापना करना—व्यापार के अलावा यही उनका प्रधान व्यवसाय था।

सन् १९१२ में उनकी उम्र २३ साल की थी। बाल्यकाल पीछे छोड़कर जवानी में उन्होंने प्रवेश किया था। शादी हो चुकी थी। चि० कमला और कमलनयन का जन्म भी हुआ था। बम्बई में दुकान खोलने की बातें सोची जा रही थीं और गांधीजी के बारे में वह केवल अखबार में ही पढ़ते थे। पंडित मदनमोहनजी मालवीय-जैसे राष्ट्र-पुरुष राजनैतिक नेता थे, वैसे ही हिन्दू-समाज के भी सामाजिक नेता थे। मालवीयजी की धार्मिकता भी सामान्य कोटि की नहीं थी। मालवीयजी का असर जमनालालजी के ऊपर होना बिलकुल स्वाभाविक था। तिलक, गोखले, लाजपतराय और दादाभाई जैसों के बारे में भी उनका आकर्षण था। सार्वजनिक संस्थाओं का महत्त्व पहचानकर मदद देना और दिलवाना, इसमें उनको विशेष दिलचस्पी दीख पड़ती थी।

धार्मिक प्रवचन सुनना, नाटक देखने जाना, संगीत के जलसे का आनंद लेना, टेनिस खेलना, ब्रिज खेलना, वन-भोजन आदि विशुद्ध आनन्द को प्रोत्साहन देना, नेताओं के व्याख्यान सुनना, इस तरह जीवन की सब प्रवृत्तियां उनमें पाई जाती हैं। सबमें संस्कारिता, जीवनशुद्धि, सेवाभाव और दिल की उदारता पाई जाती है। २२ से २५ वर्ष की उम्र में कितने लोगों से उन्होंने सम्पर्क साधा था, इसकी सूची देखकर सचमुच आश्चर्य होता है।

जमनालालजी के स्वभाव में जैसी विशेष आतिथ्यशीलता थी, वैसा ही साथी, संबंधी और राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं के व्यक्तिगत जीवन में भी प्रवेश करके उनके सुख-दुःख के साथ एकरूप होने का माद्दा था। एक तरह से हम कह सकते हैं कि स्वभाव से ही वह विश्व-कुटुम्बी थे। इसीलिए आगे जाकर जब उन्होंने गांधीजी से प्रेरणा प्राप्त की और उनके पांचवें पुत्र बने, तब समूचे विशाल गांधी-परिवार को अपनाना उनके लिए आसान और स्वाभाविक बन गया। बचपन से सबको अपनाने का स्वभाव न होता तो आगे जाकर वह इतना काम नहीं कर सकते थे। तरह-तरह के राष्ट्र-सेवक, उनके परिवार के लोग, राष्ट्रीय संस्थाएं और उनकी कठिनाइयां, सबके साथ जमनालालजी एक हृदय हो सकते थे—यह थी उनकी विभूति की विशेषता।

गांधीजी में भी ये गुण थे। इसीलिए तो गांधीजी को जमनालालजी का इतना बड़ा सार्वभौम सहारा मिल सका। गांधीजी का विस्तार चाहे जितना बड़ा और जटिल हो, उसे संभालने की हिम्मत और कुशलता जमनालालजी में थी और इस दिशा में जमनालालजी गांधीजी को सब तरह से निश्चिंत कर सके थे। जमनालालजी की और गांधीजी की ऐसी विशेषता जिन्होंने ध्यान से देखी है, उनके लिए तो उनकी वासरी के छोटे-छोटे पन्ने और उनके खत-पत्र भी विशेष महत्त्व के प्रतीत होते हैं।

केवल अपने को और अपनी धन-सम्पत्ति और कौशल्य-शक्ति को ही नहीं, वल्कि अपने परिवार के सब लोगों को राष्ट्र-सेवा में अर्पित करने की उनकी तैयारी थी। केवल तैयारी ही नहीं, उत्साह था। उसीमें वह अपने जीवन की कृतार्थता मानते थे। लेकिन यह सब होते हुए भी उनकी 'श्रेयार्थी आत्मसाधना' ही सर्वोपरि थी। उसीका थोड़ा चिंतन करना आवश्यक है।

जब कभी कोई 'श्रेयार्थी' आत्मसाधना शुरू करता है, तब-कुटुम्ब-कबीला, आजीविका का व्यवसाय और सार्वजनिक सेवा सबकुछ झंझट समझकर सबको त्याग देने की कोशिश करने लगता है। हमारे देश में ऐसे ही आत्मार्थी अधिक पाये जाते हैं। ऐसे ही लोगों ने संन्यास-आश्रम को सबसे प्रधान माना।

हमारी संस्कृति में शुरू में संन्यास का महत्व नहीं था। बाद में वह बढ़ा। बुद्ध भगवान और महावीर ने इस वैराग्य साधना को अधिक-से-अधिक बढ़ावा दिया। लेकिन जिन लोगों ने घर छोड़ा, समाज छोड़ा, राज-काज छोड़ा उनके पीछे संघ, विहार, मठ की झंझट उन्होंने लगा दी। अन्त में संन्यास को ही 'कलिवर्ज्य' बना दिया और कहा कि "संन्यास आश्रम किसी समय भले ही अच्छा रहा हो, लेकिन आज के जमाने के लिए वह हितकर नहीं है।"

संन्यास आश्रम का पुनरुज्जीवन शंकराचार्य ने बड़े उत्साह के साथ किया। पर हमारे जमाने में संन्यास आश्रम को बढ़ावा दिया स्वामी विवेकानन्द और स्वामी दयानन्द ने। रामकृष्ण मिशन के कारण और आर्य समाज के प्रचार के कारण संन्यास आश्रम का महत्त्व आज की दुनिया में कुछ हद तक माना जाता है, लेकिन गांधीजी ने संन्यास आश्रम के प्रति पूरा आदर

दिखाकर उसे एक बाजू रखा और गीता में बताये हुए संन्यास-योग को पसन्द किया है। मनुष्य गृहस्थ-आश्रम में प्रवेश करे या न करे, ब्रह्मचर्य-पालन का महत्त्व वह समझे और संयम बढ़ाते हुए गृहस्थ-आश्रम को कृतार्थ बनावे, यही था गांधीजी का आदर्श। मनुष्य ब्रह्मचर्य का पालन करके कौटुम्बिक जीवन की एकांगिता और संकुचितता छोड़ दे और जीवन में कर्मयोग को ही प्रधान बनाकर, सेवामय जीवन व्यतीत करते-करते समस्त मानव-जाति के साथ अपने ऐक्य का अनुभव करे और वहां भी न रुककर समस्त जीव-सृष्टि के साथ तादात्म्य का अनुभव कर विश्वात्मैक्य की साधना चलावे, यही है गांधीजी का मार्ग। इस मार्ग को युगानुकूल समझकर जमनालालजी ने भी पसन्द किया था। अपनी मर्यादा को पहचानकर वह यथाशक्ति 'जनक-मार्ग' का अनुसरण करते रहे। उस जीवन-साधना का प्रारंभ अगर कोई ढूंढ़ना चाहे तो इस तीन साल की वासरी में कुछ-न-कुछ मसाला उसे मिलेगा ही।

एक बात खास ध्यान में लेने की है। भारत के लोगों को स्वराज्य चाहिए था। योग्य नेता मिले और सफलता की आशा हो तो लोग लड़ने के लिए भी तैयार थे। लेकिन लोग नहीं जानते थे कि स्वराज्य को चलाने के लिए जिस तरह पूर्व तैयारी की जरूरत होती है, वैसे ही संगठित रूप से स्वराज्य की लड़ाई लड़ने के लिए भी पूर्व-तैयारी की जरूरत होती है। जिन दोषों के कारण भारत ने स्वराज्य खोया, उन दोषों को दूर करना सबसे पहला काम होता है। लड़ने के लिए जो आंतरिक एकता आवश्यक होती है, वह अगर दीख न पड़े तो उसकी तैयारी भी करनी चाहिए। राष्ट्र की शक्ति लोगों की पारस्परिक आत्मीयता और विश्वास पर ही निर्भर होती है। उसके लिए भी कोशिश किये बिना राष्ट्र में आत्मविश्वास नहीं आता। अच्छे व्याख्याता की बातें सुनकर लोग तालियां बजायेंगे। जिसके विचार लोगों के प्रिय हैं, उसे वोट भी देंगे। लेकिन स्वराज्य के लिए लड़ने के लिए लोग उसीका नेतृत्व स्वीकार करते हैं, जिसने उनकी महत्त्व की सेवा की है और जो जनता के सुख-दुःख को पहचान सकता है और जनता के साथ एक-हृदय हो सकता है।

इस तरह की जो पूर्व-तैयारी आवश्यक होती है, उसीको गांधीजी ने

नाम दिया—रचनात्मक कार्यक्रम। ऐसे रचनात्मक काम के लिए निष्ठा और धैर्य की आवश्यकता होती है, जो सामान्य जनता में नहीं होती। लोग तो फल चाहते हैं, किन्तु उसके लिए जमीन में बीज बोना, खाद डालना, पानी का सिंचन करना आदि तपस्या करने के लिए वे तैयार नहीं होते। फल मीठा होता है। उसके लिए लड़ने का काम तीखा-तमतमा होता है। ऐसा स्वाद लोगों को पसन्द तो आता ही है, लेकिन पूर्व तैयारी का रचनात्मक काम परिश्रम का होते हुए अलोना-सा लगता है। हमारे पुरखों ने लोक स्वभाव की इस खूबी या खामी को पहचान कर कहा है :

पुण्यस्य फलं इच्छन्ति, पुण्यं न इच्छान्ति मानवाः।

लोग पुण्य का फल प्राप्त करने की इच्छा रखते हैं जरूर, लेकिन जरूरी पुण्य या तपश्चर्या करना नहीं चाहते।

स्वराज्य प्राप्ति के लिए लोक-जाग्रति और राष्ट्रीय एकता सिद्ध करने के लिए जो रचनात्मक काम करना जरूरी होता है, उसका महत्त्व गांधीजी जानते थे। जमनालालजी को भी यह समझते देरी नहीं लगी। इसीलिए जमनालालजी ने गांधीजी की तमाम रचनात्मक प्रवृत्तियों को सफल बनाने के लिए अपनी सारी द्रव्य-शक्ति और कौशल्य-शक्ति पूरे उत्साह के साथ लगा दी।

आज मैं वर्ण-व्यवस्था का अभिमानी या प्रोत्साहक नहीं रहा, लेकिन उस व्यवस्था की सुन्दरता मैं जानता हूं। लोगों के सामने सुन्दर-सुन्दर आध्यात्मिक आदर्श रखना ब्राह्मणों का काम है, विचारों को प्रेरक और रोचक रूप देना भी उन्हींका काम है। क्षत्रिय पूरी बहादुरी से लड़ने के लिए तैयार होते हैं। जान-माल को न्यौछावर करने की तैयारी उनसे बहुत जल्दी होती है। लेकिन समाज का संगठन करना, खेती, पशु-पालन, उद्योग, हुनर और तिजारत आदि के द्वारा समाज को सम्हालना, समर्थ बनाना और भिन्न-भिन्न वर्गों के बीच सामंजस्य स्थापित करके सहयोग को सार्वभौम बनाना, यह काम तो बनिये का ही है। गांधीजी में बनिये के ये सब गुण थे। इसके अलावा वह लोकोत्तर तेजस्विता और चातुर्य से भरे हुए सेनापति भी थे। गांधीजी को लोग पहले केवल 'भाई' कहते थे। बाद में 'कर्मवीर' कहने लगे। अंत में भारतीय जनता ने उनको 'महात्मा' की

पदवी दी। लेकिन उनकी इन सब शक्तियों से ऊपर और सबको कृतार्थ करनेवाली उनकी शक्ति थी एक सेनानी की। क्षत्रिय तभी लड़ सकता है, जब बनिया उसे पूर्व तैयारी कर देता है। यूरोप के लोकोत्तर सेनापति नेपोलियन ने कहा था—"सेना चलती है पेट पर।" गांधीजी ने कहा था कि सत्याग्रह की सफलता का आधार रहता है रचनात्मक कार्यक्रम पर। उन्होंने यहां तक कहा था कि "मेरा रचनात्मक कार्यक्रम अगर सारा राष्ट्र पूरी तरह से सफल कर दे तो सत्याग्रह के बिना ही मैं आपको स्वराज्य ला दूंगा।"

गांधीजी के इसी रचनात्मक कार्य का पूरा महत्त्व जाननेवाले इने-गिने लोगों में भी जमनालालजी का स्थान बहुत ऊंचा था। यह गुण तो मनुष्य की आस्तिकता में से ही प्रकट होता है। क्षत्रिय भले ही लड़कर राज्य प्राप्त कर लें, राज्य चलाने का काम भले ही क्षत्रियों का माना जाय, पर दरअसल वह है बनिये का ही काम। चार आश्रमों में जिस तरह अनुभव से सिद्ध हुआ है कि गृहस्थाश्रम ही सर्वश्रेष्ठ है, उसी तरह हमें समझना चाहिए कि चार वर्णों में भी श्रेष्ठता कबूल करनी चाहिए वैश्य वर्ण की। वैश्य धर्म की सार्वभौमता के नीचे ही ब्राह्मण-धर्म और क्षात्र-धर्म अपने-अपने काम में कृतार्थ हो सकते हैं। बनिया गांधीजी का सामर्थ्य किसमें है, यह अचूक देख सके बनिया-शिरोमणि जमनालालजी ही।

यह सब जाननेवाले लोग जमनालालजी की बासरियों के प्राथमिक वर्षों में भी रचनात्मक प्रवृत्ति की ओर उनका झुकाव देख सकेंगे।

सन् १९१५ की उनकी शुरू के तीन माह की बासरी के बाद ही जमनालालजी का गांधीजी से संपर्क हुआ। जब गांधीजी दक्षिण अफ्रीका से भारत आये, तब नामदार गोखले ने उनकी पूर्व तैयारी की। कविवर रवीन्द्रनाथ ने अपने दो उत्तम अंग्रेज स्नेहियों—मि० एंड्रयूज और पियर्सन को दक्षिण अफ्रीका भेजा था। दीनबन्धु एंड्रयूज ने भारत आकर अपसे दोस्त प्रिन्सिपल रुद्र और महात्मा मुन्शीराम से गांधीजी की बातें कहीं। इस तरह गांधीजी का सम्पर्क बढ़ता ही गया।

जब गांधीजी रवीन्द्रनाथ से मिलने शांतिनिकेतन आये, तब मैं उसी संस्था में था और उनके आश्रम-वासियों के साथ घुलमिल गया था। गांधीजी

के आते ही मैंने अपने मित्र आचार्य कृपालानी को तुरन्त वहां आने को लिखा। मेरी ही तरह उन्होंने भी गांधीजी से लम्बी चर्चा की और इस नये सामर्थ्य को पहचान लिया। मैंने गांधीजी की बात स्वामी आनन्द से कही। लोकमान्य के दाहिने हाथ कर्नाटक-केसरी गंगाधर राव देशपांडे से कही। वे सब देखते-देखते गांधीजी के प्रभाव तले आ गये। सन् १९०७ से अपने लिए एक प्रेरक शक्ति की खोज करनेवाले जमनालालजी गांधीजी के आकर्षण से अलिप्त कैसे रह सकते थे? गांधीजी को गुरु के रूप में पाकर भी उन्हें गुरु-शिष्य संबंध से संतोष नहीं हुआ। पिता-पुत्र के संबंध को ही उन्होंने मांग लिया और गांधीजी ने भी प्रसन्नता से और उतनी ही निष्ठा से उस संबंध को मान्य किया।

अगर देवों में नये अवतार को पहचानने की शक्ति होती है तो अवतार में भी अपने साथियों को पहचानने की शक्ति होनी ही चाहिए। हम इसे तारा-मैत्रक कह सकते हैं। गांधीजी के पास असंख्य लोग आये। चंद लोगों को गांधीजी ने स्वयं बुलाया। चंद अपने आप आकर गांधीजी से चिपक गये। लेकिन दो आदमियों के बारे में मैं जानता हूं कि देखते ही गांधीजी ने उन्हें पहचान लिया कि इनके साथ अभेद भक्ति का संबंध बंधने वाला है। एक थे महादेव देसाई और दूसरे थे जमनालालजी और खूबी यह कि इन दोनों ने जैसे ही गांधीजी को पहचाना, वैसे ही एक-दूसरे को भी तुरंत पहचान लिया। महादेवभाई ने जमनालालजी को जो खत लिखे थे, उनमें से चंद खत मैंने पढ़े हैं। उस पर से कह सकता हूं कि इन दोनों का परस्पर आकर्षण भी कम अद्भुत नहीं था। गांधीजी को आश्रमियों में से श्रीविनोबा भावे का वर्धा जाना भी, मैं इसी तरह का ईश्वरी संकेत या युगरचना या व्यवस्था मानता हूं।

अन्योन्य संबंध की यह प्रेम-श्रृंखला कैसी बढ़ती गई, यह देखने का आनंद जैसें गांधीजी के चरित्रकार को मिलता है, वैसे ही जमनालालजी के चरित्रकार को भी मिलेगा। परस्पर मिलन, परस्पर सहयोग, यह कोई आकस्मिक घटना नहीं होती। सृष्टि में परस्पर संबंध का विशाल जाल फैला हुआ रहता है। उसीके अनुसार सबकुछ होता है। कोई भी घटना अकस्मात होती नहीं। हरेक घटना या संबंध का 'कस्मात्' हम जानें या न

जानें होता है ही। जब मनुष्य-जाति की ज्ञान-शक्ति बढ़ेगी, तब मनुष्य ऐसे संबंध को पहचानकर ही इतिहास लिखने बैठेगा। आजकल के इतिहास अंधों के प्रयास हैं। ज्ञानमय प्रदीप प्राप्त होने के बाद ही मानव-जाति की सच्ची जीवन-गाथा लिखी जायगी। गांधी-कार्य का प्रयोग, रहस्य और उसकी कृतार्थता तभी दुनिया के सामने पूर्ण रूप से प्रकट होगी।

गांधीजी के संपर्क में आने के बाद जमनालालजी का सारा जीवन ही बदल गया था। उसका प्रतिबिम्ब उनकी बाद की वासरियों में जरूर मिलेगा। ऐसी वासरियों के लगभग दस खण्ड प्रकाशित होने वाले हैं। इन सब खण्डों को पढ़ने के बाद ही जमनालालजी की इस अन्तर्मुखी आत्मनेपदी प्रवृत्तियों के लिए योग्य भूमिका लिखी जा सकती है। इस प्रथम खण्ड में तो उनकी पूर्व-तैयारी की थोड़ी कल्पना ही आ सकती है।

गांधीजी ने हिंदू-धर्म में और हिंदू-समाज में जो महान परिवर्तन किये, उसमें संन्यस्त जीवन को नया रूप दिया, जिसका महत्त्व कम नहीं है। उसका प्रत्यक्ष उदाहरण जमनालालजी के जीवन में चरितार्थ होता पाया जाता है। यह समझकर ही जमनालालजी की ये वासरियां पढ़नी चाहिए।

सन्निधि, राजघाट
नई दिल्ली.

—काका कालेलकर

जमनालालजी की
डायरी



१९१२

वंबई १-१-१२

मामूली कार्य हुआ। शापुरजी (तलाटी) अंधेरी ३० दिसंवर १९११ को रेल में मिला। उसका जन्म ४ नवंवर १८९९, कार्तिक शुदी १२, सोमवार को १ वजकर ४९ मिनिट पर हुआ था।

वर्धा २-१-१२

रात को लक्ष्मीनारायण मंदिर में पं० रुद्रदत्तजी का वर्ण-व्यवस्था पर व्याख्यान हुआ। थोड़े लोग आये थे।

पुलगांव, वर्धा ३-१-१२

पुलगांव जाकर शाम को ट्रेन से वापस आया। वहां जापान काटन कंपनी से पुलगांव की १०० गांठों का दर ९७।। रुपये ३४० प्रति खंडी से वर्धा टर्म पर सौदा किया। दलाली चार आना लेना तय हुआ।

रात को मूर्ति-मंडन पर पं० रुद्रदत्तजी का व्याख्यान हुआ। वाद में सुदाम-देव नाटक के तीन अंक देखे।

वर्धा ४-१-१२

शाम को ५ वजे टाउन हाल में मराठा-कांफ्रेंस शुरू हुई। ५१ रुपये देने का वचन दिया।

रात को गांधर्व विद्यालय के अधिष्ठाता विष्णु दिगंवर पलुसकर डेपुटेशन लेकर आये। १० से १२।। वजे तक वातचीत व गायन हुआ। पच्चीस रुपये प्रदान किये।

५-१-१२

लगभग २ बजे स्टेशन पर रुई की गांठों को प्लेटफार्म पर देखने गया। गांठों के बारे में मास्टर केसरीमल तथा गुड्स क्लर्क से वात की।

बद्रीनारायणजी ३ बजे गाड़ी से आये। पं० अमृतलालजी को साथ लेकर कप्तानसाहब के यहां गये। उन्होंने अर्जी देने के लिए कहा।
पुरुषोत्तमदास कोठारी से दिल्ली-दरबार का हाल पूछा। शाम को जीन में व रात को दूकान में कार्य किया।

६-१-१२

काटन मार्केट में जाकर कम भाव निकालने की कोशिश की, जिसमें सफलता मिली। जापान काटन व वालकटवालों के रुई तथा कपास का नमूना व गंजी (ढेर) बताई। मामूली पत्र-व्यवहार किया।
३ बजे प्लेटफार्म पर रुई की गांठें रखने की जगह कराने तथा वेगन के लिए गया।

७-१-१२

कोआपरेटिव बैंक की मीटिंग ८ से ११ तक हुई, जिसमें उपस्थित रहा।

वर्धा-नागपुर ८-१-१२

डिप्टी कलेक्टर साहब के यहां जाकर दरबार के टिकिट लाया। ३ बजे शाम को बादशाह के दर्शनार्थ नागपुर गये। खानबहादुर नवाब मुहम्मद सलेमुल्लाखान बुलडाना व रावबहादुर भाऊराव चांदावाले भी साथ थे।

नागपुर-वर्धा ९-१-१२

सवेरे गाड़ी से अंबाभरी गये। १ बजे किले की टेकड़ी पर गये। २॥ बजे बादशाह व महारानी के दर्शन बहुत अच्छी तरह से किये। जिस समय बादशाह मोटर में बैठे तब हम दो फुट पर ही थे। अच्छी तरह से ५-७ मिनट तक देखते रहे। बाद में उनकी स्पेशल सिताबर्डी पुल से जाते हुए देखी।
विद्यार्थीगृह में पूज्य जमनाधरजी को लड़कों का गायन सुनवाया। रात को ९ बजे की गाड़ी से वर्धा वापस लौटे।

१०-१-१२

स्टेशन पर वेगन के लिए गया। गांठें प्लेटफार्म पर बहुत अधिक बिखरी पड़ी थीं। सर्की (बिनौले) के बोरे तो बड़ी बुरी दशा में पड़े थे।

११-१-१२

मारवाड़ी विद्यार्थीगृह-स्थायी फंड में श्री पीरदान आसाराम से २१०० रुपये मेघराज के मार्फत लिये।

४-५ घंटे भुसान कंपनी के साहब के साथ बहुत-से कंपाउडों में फिरने पर लगभग ५०० गांठों का सौदा हुआ।

१२-१-१२

भुसान कंपनीवालों के यहां ३-४ घंटे लगे। लगभग ५०० गांठों का सौदा किया।

१३-१-१२

काटन मार्केट में गये। रालेगांव की गाड़ी ८१ रुपये में तय की। माल अच्छा हुआ तो यह भाव दिया जायगा।

म्युनिसिपल कमेटी की मीटिंग में सराय (धर्मशाला) के विषय में जैसा होना चाहिए था, वैसा ही हुआ।

१४-१-१२

संक्रांति के गोरक्षण मेले के जुलूस में गये। बद्रीनारायणजी ३ बजे की गाड़ी से आये।

शाम को भुसान कंपनी के साहब के साथ जीन में फिरकर सौदा किया। शाम को बोर्डिंग में भोजन किया। रात को बोरगांव के लड़कों का सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ।

१५-१-१२

शाम को ५ बजे बगीचे में बनारसवालों ने बेंत के मलखंब का काम दिखाया। कुश्ती के दावपेंच भी देखे। बगीचे में तमाशा देखने और भी बहुत-से लोग आये थे। वकील-मंडली भी मौजूद थी।

रात को बद्रीनारायणजी व वंशीधर पुलगांव गये।

१७-१-१२

जिनिंग फैक्टरी के कपाउंड में घूमकर, मेल ट्रेन के आने के समय स्टेशन पर गया। टाटा आयरन कंपनी की (खान) खदानके बड़े मैनेजर मि० वेल्स

मिले। उनके साथ बात करते हुए पुलगांव तक जाने का विचार था। टिकिट भी ले लिया था। लेकिन जीन में आग लगने की खबर लगने पर जीन में गया। आग बहुत जोर की लगी थी। लगभग ८॥ बजे तक जीन में रहा। आग लगने में दूकानवालों की गलती थी, जिसके कारण बहुत नाराजी रही।

१८-१-१२

सवेरे ही जीन में गया। वहां देख रहे थे कि बीमा कंपनी की ओर से फाउलर साहब आये। उन्हें सब दिखाया। दूकान से सब हिसाब आदि उतारकर दिया। शाम को फिर २-३ घंटे जीन में रहा। रात को थोड़ी देर मंदिर और बोर्डिंग में गया।

१९-१-१२

सवेरे ९ बजे जीन में गये। १० बजे फाउलर साहब आये। रूई ८७॥ के भाव में नीलाम की। १२॥ बजे के अंदाज दूकान में स्कोडा साहब की सलाह से बीमे की रकम का फैसला किया। तीन बजे बीमा कंपनीवाला डाक गाड़ी से रवाना हुआ। जली हुई रुई की गंजी (ढेर) की फोटो उसे दी, जिससे वह बहुत खुश हुआ।

लादूरामजी को आर्वीवाले खुशालचंदजी जाजू के रुपये बोर्डिंग के खाते में जमा-खर्च करने को कहा और शिवरी में रुई जथे में ५-७ सौ गांठें भिजवाने की कोशिश करने को कहा।

२०-१-१२

सवेरे से ११ बजे तक जीन में रहे। बाद में मामूली पत्र-व्यवहार किया। शाम को नई जिनिंग फैक्टरी में गया। रात को बिरदीचंदजी से मिला। उनके बगीचे के बारे में बातचीत हुई।

२१-१-१२

टाउन हाल में म्युनिसिपल कमेटी की मीटिंग के लिए गया, किंतु कोरम न होने से मीटिंग नहीं हुई! कर्णिक साहब को जीन की जगह बताई। हाईस्कूल की बिल्डिंग इश्तियाक अली साहब के साथ देखी। भोजन के बाद

श्री जाजूजी के यहां गया। वहां मारवाड़ी स्कूल कमेटी का काम बहुत देर तक होता रहा। अप्रैल से क्लास शुरू करने का विचार हुआ।

श्री लक्ष्मीनारायण की मूर्ति का फोटो लिया गया। फिर पू०जीवराजजी से मिलकर उनका बंगला १ जनवरी से ६४०० रु० में खरीद लिया। भोजन बोर्डिंग में किया।

रात को माधवरावजी पाटणकर आये। उनसे मारवाड़ी स्कूल के लिए 'रणछोड़ राय' नाटक ३१ तारीख के लिए लिया। आमदनी का एक हिस्सा उनका और तीन हिस्से स्कूल के।

२२-१-१२

सबेरे जीन में गया। भोजन के बाद पत्र-व्यवहार। तीन बजे फिर जीन में गया। वहां से ५।। बजे म्युनिसिपैलिटी की मीटिंग में। फिर हाईस्कूल की मीटिंग में गया। वहां से पोद्दारों का जो बंगला लिया, उसे देखने गया। साथ में स्कोडा साहब भी थे। रात को मानमलजी बंशीधरजी पुलगांववालों से बातचीत।

२३-१-१२

सबेरे जीन में गया। भोजन के बाद भुसानवालों के बंगले गया। वहां से लौटने पर पत्र-व्यवहार। ३ बजे जीन में गया और वहां से प्रेस में। देवली की ९० गांठें ९७।। में गोकुलदासजी वालों को बेचीं। वहां से जीन में साफ किया हुआ कपास व्यापारी को दिखाया। शाम को ७।। बजे के लगभग दूकान पर आया। मानमलजी व बंशीधरजी रात को पुलगांव से आये, उनके साथ बातचीत की। बाद में पत्र-व्यवहार।

२४-१-१२

सबेरे जीन में गया। जीन से वापस लौटते समय जाजूजी के यहां कुछ देर ठहरा। खरेसाहब के यहां क्लब के मेंबर जमा हुए थे। बुलावा आनेपर वहां गया। उसके बाद प्रेस व भुसान के बंगले गया। आकर पत्र-व्यवहार किया।

नागपुर २५-१-१२

सवेरे की गाड़ी से दौलतरामजी के पोते के विवाह के लिए नागपुर गया। वहां पहुंचते ही विवाह-मंडप में गया। कुछ देर ठहरकर भोजन के बाद पोद्दारों के बंगले गया। वहां थोड़ा आराम कर शाम को निकासी में शामिल हुआ। निकासी में पू०जीवराजजी के साथ नरसिंहदासजी आदि नागपुर के कई सज्जन मिले। निकासी अच्छी रही।

२६-१-१२

सवेरे ५ बजे पू०विरदीचंदजी के साथ अंबाझरी गया। वापस लौटते समय स्टेशन पर क्रेडाक साहब चीफ कमिशनर मिल गये। वहां और भी सज्जन मिले। बाद में राइटसाहब व किर्लोसाहब के यहां अमरचंदजी को साथ लेकर गया। वहां से लौटकर कलकत्तावालों की ओर से फेरों की जिमनवार में गया। शाम को रामनारायणजी राठी से मिलने गया। उनकी तबीयत बहुत ही खराब थी। चित्त दुःखी हुआ। रात को भोजन करके वर्धा आने का विचार था, लेकिन पू०जमनाधरजी पोद्दार के कहने से रुक गया।

नागपुर-वर्धा २७-१-१२

सवेरे ५। बजे अंबाझरी विरदीचंदजी के साथ गये। वापस लौटने पर स्नान व भोजन के बाद सगों के यहां भंडारे के लिए पू० नानाजी के साथ गया। वापस आकर फिर पू० नानाजी के साथ अवाझरी गया। वर्धा बोर्डिंग की बात निकालने पर उन्होंने कहा कि विचार करके निश्चित बात बाद में लिखेंगे। उनको वर्धा की गाड़ी पर बिठाया। रात को सगों के यहां 'सजन-गोठ' का भोजन करके रात की गाड़ी से ११। बजे वर्धा पहुंचे।

२८-१-१२

म्युनिसिपल कमेटी के दफ्तर गया। मि०एकनाथ थोडगे को मत दिया। वापस जाने पर रामानुजदासजी की खबर पढ़ी। चित्त को दुःख हुआ। बाद में छोटेलालजी आदि मिलने आये। भोजन के बाद पत्र-व्यवहार करके थोड़ा आराम।

शाम को जीन में गया। रात को भोजन वोर्डिग में किया। वाद में टाटा कंपनी के शेयरों का जमा-खर्च रात को डेढ़ वजे तक विरदीचंदजी कराते रहे।

२९-१-१२

सवेरे ही जीन में गया। वापस आकर पत्रादि पढ़े। वाद में रोकड़ वगैरा देखी। स्नान के वाद भोजन करके पत्र लिखे।

३०-१-१२

रात को दलालों के मार्फत नाटक के टिकिट विकवाने की कोशिश की। दलालों से प्लेग की कुछ गड़वड़ी सुनी। कुछ देर तक दूकान का कार्य देखते रहे। फिर शयन।

३१-१-१२

सवेरे ही जीन में जाकर वहां से काटन मार्केट गया। उसके वाद स्नान व भोजन करके मारवाड़ी विद्यालय की सहायता के लिए पाटणकर नाटक कंपनी के टिकिट विकवाने की कोशिश की। फिर पत्र-व्यवहार।
हरदास दुवे के लिए रामनाथजी के यहां गया। वहां से रामनाथजी के सगों के यहां गया। शाम को जाजूजी के साथ पैदल पोद्दारों के वगीचे गया।
आज नाटक के लिए पुलगांव व देवली के लोग आये थे। रात को टिकटों का हिसाव किया। नाटक देखने गये। नाटक अच्छा रहा। प्रवंध भी अच्छा था, लेकिन साधारण लोग कम आये थे। नागपुर के लक्ष्मणराव राजे (भोंसले) भी आये थे। पंडित रामनारायणजी से माधवराव को धन्यवाद दिलाया। उन्होंने भी बहुत खुशी जाहिर की।

१-२-१२

रात को नाटक देखने के कारण सुबह कुछ देरी से उठा। जीन में गया। आराम के वाद पत्र-व्यवहार। वद्रीनारायणजी डाक गाड़ी से पुलगांव गये। जीन व प्रेस से घूमते हुए वगीचे गया। वापस लौटने पर नित्य कार्य से निवृत्त होकर विरदीचंदजी के पास गये और वहां से ओलदारी-सहित तंवू के लिए कानपुर तार दिलवाया।

२-२-१२

आज सवेरे ही जीन में गया। बाद में स्नान, भोजन और पत्र-व्यवहार किया। ४ बजे के लगभग म्युनिसिपल कमेटी के दफ्तर में गया। वहां से हाई स्कूल गया। हेडमास्टर से थोड़ी देर तक बातचीत हुई। फटे मास्टरजी प्लेग से मर गये, सुनकर चित्त को खेद हुआ। तहसील जाकर डिप्टी कमिश्नर साहब से प्लेग के बारे में बातचीत हुई। घर आया तो वहां गोविंदरामजी प्लेग के टीके की तैयारी कर रहे थे। कुछ देर बाद सिविल सर्जन आये। करीब ११० लोगों को टीका लगाया। मैंने भी टीका लगवाया। रात को हरारत के कारण सोने में तकलीफ रही। बोर्डिंग के लड़के, दूकानवाले, रामलीलावाले व जीन प्रेस के थोड़े आदमियों ने टीका लगवाया। रात को कुछ लोगों को तकलीफ रही।

३-२-१२

सवेरे उठकर जीन में गया। टीके के कारण हाथ में तकलीफ थी। गरम पानी से हाथ-पैर अच्छी तरह से धोकर व दूध लेकर स्कूल कमेटी में जाने लगे। खरेसाहब भी रास्ते में साथ हो गये। कमेटी में स्कूल बाहर ले जाने, चंदे की लिस्ट भेजने व सेटलमेंट आफिस स्कूल के लिए मांगने इत्यादि मामलों पर विचार हुआ।

वहां से घर आकर प्रेस में गया। देवली की १०६ गांठें ९८ के दर से बेचीं। वहां से स्कोडासाहब के यहां गया। आज भोजन कुछ कड़वा लगा। शरीर में बुखार की हरारत रहने के कारण सुस्ती रही। कुछ देर सोया। शाम को गोरक्षण होते हुए बगीचे गया। राठीजी के सगे आये। रात को भोजन करके लेटा, लेकिन बुखार व दर्द के कारण नींद ठीक से नहीं आई।

४-२-१२

सवेरे निबटकर पत्र व अखबार पढ़े। भोजन के बाद थोड़ी देर सोया। शाम को बुखार १०१ डिग्री रहा। बिरदीचंदजी पोद्दार घर पर आये। उनसे कुछ देर तक बातचीत होती रही। उनके चले जाने पर कुछ खाकर सो गया। आज बुखार होने के कारण जैसा चाहिए वैसा चित्त प्रसन्न नहीं था।

५-२-१२

प्लेग के कारण बगीचे में सामान भिजवाया। शाम की रसोई वहीं पर हुई। और वहीं पर रहने के लिए गये। रात को पुलगांव देवली के मुनीम आये। भोजन के बाद उनसे व्यापार-संबंधी बातचीत की। तबीयत साधारण ठीक रही। करीब ११ बजे सो गया।

६-२-१२

सबेरे कुछ देर ५४ पेज तक 'सुंदर विलास' पढ़ी। बाद में स्नान, पूजन आदि करके भोजन किया। फिर जावराजीन व भुसानवालों के बंगले प्रेस होते हुए दूकान पर आया। थोड़ी देर सोया। बाद में पत्र-व्यवहार किया। फिर हीरालालजी का हिसाब किया। शाम को रामनाथजी के यहां निकासी में गया। वहां से आने पर जाजूजी व नथमलजी के साथ गोरक्षण गया। वहां से बगीचे आकर भोजन किया। पुलगांव की चिट्ठियों का जवाब दिया। तुलसीकृत रामायण पढ़ते रहे। बाद में पहरेवाले राणा से कुछ भजन सुने। तबीयत आज बहुत ठीक रही। करीब दस बजे सोया।

७-२-१२

सबेरे उठते ही 'सुंदर विलास' पढ़ी। बाद में निवृत्त होकर थोड़ी देर घूमता रहा। इतने में पांडुरंग पंत, फोलते, आनंदराव मेघे बोरगांववाले वगैरा आये। मराठा बोर्डिंग के विषय में सलाह करते रहे। स्नान व भोजन के बाद पोद्दारों के बगीचे होकर दूकान गया। पत्र लिखे। कुछ समय तक बारिश हुई। भुसानवालों के बंगले गया। वहां से स्कोडा के साथ पुलगांव गया। डिब्बे में रैली के मैनेजर आदि मिले। पुलगांव में थोड़े ओले गिरे। बारिश ज्यादा हुई। जिनिंग फैक्टरी कंपाउंड में गये। रास्ता बहुत खराब था। दूकान पर भोजन किया। रेल में २०५ गांठों का सौदा किया। बगीचे में आकर अखबार पढ़े। बाद में सोया।

८-२-१२

सबेरे उठते ही 'सुंदर विलास' पढ़ी। फिर तुलसी-रामायण। पंडित मुरलीधरजी आये। उनसे थोड़ी देर बातें। तीसरे पहरे भुसान के बंगले और

बिरदीचंदजी से मिलते हुए जीन प्रेस होकर दूकान गये। पत्र वगैरा लिखे। शाम को वहां से बगीचे आकर भोजन किया। आज बंबई से रुई बाजार बहुत तेज २७४ से २७६॥ तक रहा।
रात को रामायण आदि पुस्तकें पढ़ीं।

९-२-१२

सवेरे उठते ही 'सुंदर विलास' पढ़ी। बोर्डिंग के लड़कों को ककड़ी आदि खिलाई। स्नान, भोजन करके बगीचा, जीन प्रेस होते हुए दूकान गया। भुसानवालों के यहां पुलगांव का कुछ सौदा किया। पत्र-व्यवहार। शाम को प्रेस, गोरक्षण आदि जाकर भोजन। थोड़ी देर तक रामायण, महाभारत पढ़ी। बाद में सोया।

१०-२-१२

सवेरे उठे। हाथ-मुंह धोकर चिट्ठियां पढ़ीं। जाजूजी का संदेश आया। उसका जवाब दिया। श्रीनिवासजी ने रास्ता साफ करवाया। भोजन करके दूकान गया। दूकान में कुछ काम और सौदा भी किया। श्री दामोदरदासजी राठी जाजूजी के साथ मेल से आनेवाले थे। इसलिए स्टेशन गया। स्टेशन पर मालूम हुआ कि मेल ट्रेन दो घंटा लेट है, इसलिए जीन व प्रेस में जाकर फिर स्टेशन आया। डाक गाड़ी आई। राठीजी यहां उतरे और दूकान गये। कुछ देर ठहरकर बगीचे आये। थोड़ी देर वार्तालाप होता रहा। बाद में स्नानादि करके आनंद से भोजन किया, पान खाये। इसके बाद कुछ लड़कों के श्लोक, पद वगैरा हुए। फिर तांगे में बैठकर गोरक्षण गये। श्री दामोदरदासजी ने बिरदीचंदजी व जाजूजी की उपस्थिति में प्रति-वर्ष पच्चीस सौ रुपया देना स्वीकृत किया। बाद में स्टेशन जाकर उन्हें गाड़ी में बिठाया। राठीजी का समागम अच्छा रहा। रात को करीब १२ बजे बगीचे लौटे।

११-२-१२

सुबह लड़कों के साथ टेनिस ग्राउंड पर थोड़ी देर गेंद खेलते रहे। पसीना आने पर बंद किया। स्नान-भोजन करके तांगे से डिप्टी कमिशनर साहब

के बंगले गया। वहां स्कूल की दरखास्त दी और बोर्डिंग के विषय में बातचीत हुई। वहां से कौल के बंगले गया। पोस्ट मास्टर मिले। पत्रादि लिखकर सज्जनगढ़ (हनुमान टेकड़ी) पर गये। वहां वाद-विवाद चल रहा था। बालाप्रसाद ने गुरुजी के विरुद्ध मंडप के बाहर स्पीच पढ़ी। लगभग दो घंटे वहां रहे। सप्रे आदि मिले। वहां से बगीचे आये। बगीचे से पैदल गोरक्षण गये। वहां भोजन किया। जाजूजी व अमृतलालजी चक्रवर्ती की राह देखी। वे नहीं आये। अत्रेसाहब से बातचीत होती रही। वहां से बगीचे आया।

१२-२-१२

स्नान, पूजन और भोजन के बाद भुसान के बंगले गया। तांगा पं० अमृतलालजी चक्रवर्ती के लिए भेज दिया। वह भी वहां आगये। स्कोडा भी वहां आये। उनसे स्कोडासाहब की काफी देर तक बातचीत होती रही। वहां से जीन और जीन से गोरक्षण होते हुऐ बगीचे आये। जाजूजी भी वहां पहुंच गये थे। वार्तालाप होता रहा। पंडितजी संध्यादि से निवृत्त हुए। बाद में भोजन किया। २-३ विद्यार्थी और पुलगांव देवली के मुनीम भी शामिल हुए। भोजन के समय श्लोक आदि हुए। भोजन के बाद कुछ देर तक हास्य-विनोद होता रहा। जाजूजी और पंडितजी गोरक्षण गये। कुछ देरतक पढ़ता रहा। बाद में सोया।

१३-२-१२

दैनिक कार्य से निवृत्त होकर ११ बजे के करीब भुसानवालों के बंगले गये। वहां से पंडितजी के लिए तांगा भिजवा दिया और बिरदीचंदजी के यहां गया। पंडितजी के आने पर उनका बिरदीचंदजी से परिचय करवाया। वहां से दूकान। पंडितजी लेख लिखते रहे और मैं दूकान-संबंधी कामकाज देखने लगा। बहुत दिनों की उदरत साफ कराकर जमा-खर्च करवाये। ४।।-५ बजे जाजूजी व पंडितजी से कालेज-संबंधी व जीवन किस उपयोग में खर्च करना चाहिए आदि बातें हुई। कालेज का कार्य महत्व का है। इसलिए उसका प्रारंभ शीघ्र करने का निश्चय हुआ। विद्यार्थियों को सत्य, प्रामाणिकता आदि के आधार पर वार्षिक छात्रवृत्ति देने के संबंध में निश्चय

हुआ। वार्तालाप होता रहा। बाद में बगीचे में आकर भोजन किया और कुछ देर पढ़ता रहा, फिर शयन।

१४-२-१२

सवेरे कुछ जल्दी उठा। निवृत्त होकर थोड़ी देर घूमता रहा। बाद में स्नान, पूजन और भोजन कर प्रेस होते हुए दूकान गया। बाढोणा गांव का सौदा किया। ३।। तक दूकान का कार्य किया। बाद में गांठों के सौदे के लिए गामडिया प्रेस व नरसिंगदास मेहता कंपाउंड में गया। उनके बुलावे से सौदा भी हुआ। शाम को भुसान के बंगले होते हुए बगीचे आया। कुछ देर बाद पंडित अमृतलालजी आये। साथ में भोजन किया। थोड़ी देर बाद पंडितजी गोरक्षण कैंप में गये। मैं पुलगांव व देवली के मुनीमों से व्यवहार-संबंधी वार्तालाप करता रहा। १०।। बजे के करीब शयन।

१५-२-१२

भोजन के बाद भुसान के बंगले होते हुए प्रेस में और वहां से दूकान गया। गांठों का सौदा हुआ। १ बजे के करीब फिर भुसान के बंगले जाकर चेक लिया। पत्र-व्यवहार। ५ बजे के करीब गोरक्षण में गया। वहां से जाजूजी व पंडितजी के साथ बगीचे आये। पंडितजी की लिखी हुई भूमिका सुनी। आज कुछ मानसिक चिंता रही, जिससे मन उदास रहा। भोजन किया। थोड़ी देर तक पंडितजी से वार्तालाप रहा। बाद में गोरक्षण गये। वापस आकर कुछ पढ़ने के बाद सोया।

१६-२-१२

आज शिवरात्रि का उपवास था। स्नान आदि के बाद जल्दी ही भुसानवालों के बंगले गया। २-३ घंटे सौदा होने में लगे। दूकान १२।। बजे के करीब आया। १ से २ बजे तक शिवजी का पूजन। बाद में हुंडी, चिट्ठियां व पत्र-व्यवहार किया। फलाहार के लिए बगीचे आया और फलाहार कर वापस दूकान पर गया। जाजूजी के साथ पोद्दारों की लान में थोड़ी देर बैठे। वहां से जाजूजी के साथ फ़ोरेस्ट मास्टर के बगीचे आये। बहुत देर तक वार्तालाप हुआ और राणा के भजन होते रहे। ठंडाई ली। बाद में तुलसीकृत रामा-

यण पढ़ी । १० वजे के करीव सोया।

१७-२-१२

सवेरे उठते ही भुसान की चिट्ठी पुलगांव गांठों के तौल के विषय में आई। पढ़कर रंज हुआ। स्नान-भोजन करके भुसान के बंगले और वहां से दूकान गया। दूकान का काम करके लगभग २। वजे तक फिर भुसान के वंगले गया। वहां से फलाहार के लिए वगीचे आया। वाद में गोरक्षण में अमृतलालजी चक्रवर्ती से मिला। उन्हें स्टेशन जाने के लिए तांगा दिया और मैं पैदल गांठोंवाले प्लेटफार्म से होकर स्टेशन गया। ट्रेन पर पंडित अमृतलालजी और सुदर्शनदासजी भी मिले। ये लोग सेकंड क्लास में बैठकर रवाना हुए। पंडित अमृतलालजी अमरावती गये। उन्हें २१ रुपये विदाई दी। पुलगांव की ८५ गांठों के तौल में फरक आता था। जिसकी जांच की। बराबर पता नहीं लगा। वाद में भुसान के खाते में कुछ गांठों की खरीदी की। शाम को वंशीधर व पेस्तमजी साथ आये। साहव से वहुत देरतक वात हुई। भोजन पुलगांव में किया। गांठें वेचने का विचार था, परंतु लिमिट कैंसिल आने के कारण सौदा नहीं वना।

१८-२-१२

मारवाड़ी विद्यार्थीगृह के लड़कों का तैरना देखा। दूकान गया। वहां पुलगांव के वारे में चिट्ठी लिखकर भुसानवालों को एक लाख का चेक भेजा। पत्र लिखे। लगभग ४ बजे वगीचे आया। फलाहार कर लड़कों के साथ कुछ देर तक मोक्षपट (वच्चों का शतरंज की तरह का खेल) खेल खेलते रहे। वाद में "स्वर्ग नुं विमान" पुस्तक पढ़ी।

गेंद खेल रहे थे कि रामनाथजी आये। उनसे लड़के के गोद लेने के विषय में वार्तालाप किया। गोरक्षण और वोर्डिंग कैंप में रामनाथजी व पुरुषोत्तम को लेकर गया। वहां थोड़ी देर लड़कों का खेल देखा। वहांपर आनंद से भोजन किया। रामनाथजी, जाजूजी वगैरा भी पंगत में साथ थे। फिर लड़कों को सुधार के लिए इनाम रखा था, उसके विषय में लड़कों को अच्छी तरह से समझा दिया। कुछ इनाम बढ़ा भी दिये।

रामनाथजी से सत्य वोलने पर इनाम रखवाया। मैंने नीति पर इनाम रखा, जो सत्यं से दूसरे नम्बर का था। वहां से वगीचे आये। कुछ देर तक 'स्वर्ग नुं विमान' नामक गुजराती नाटक पढ़ा। वाद में शयन।

१६-२-१२

चिरंजीलालजी नागपुरवालों का विवाह दस रोज पहले हुआ था। सुना कि वह प्लेग से गुजर गये। वहुत रंज हुआ। जवान लड़की के हाल पर वहुत विचार रहा। स्नान देरी से किया। पुलगांव से वंशीधर, सुदर्शनदास और वंशीधर के सगे आये थे। उन सवके साथ भोजन किया। चित्त में नाना प्रकार के विचार उत्पन्न हुए। इसलिए दूकान जाने में देरी हुई। करीब २॥ वजे दूकान पहुंचा। सुदर्शनदास ने अपना हाल वताया। पुलगांव की जीन प्रेस का काम उसके सुपुर्द किया। दुकान से जीन और जीन से भुसान के वंगले गये। वहां से पुलगांव तार देकर भाटिया खिमजी को ८६ गांठ की जांच के लिए वुलाया। स्कोडा के साथ वगीचे आये। जापान के विषय में वात होती रही। भुसान का आदमी वुलाने आया सो वहां गया। दरयाफ्त करने से साबित हुआ कि पुलगांववालों ने अवश्य गड़वड़ी की। प्रेस में जाकर १० वजे वगीचे आये। पुलगांव के काम से चित्त में खेद हुआ।

२०-२-१२

झोंपड़ी के लिए जगह मांगने सरावगी लोग आये। उनको जगह बताई। थोड़ी देर वाद राठीजी व चूडामणराव से सुना कि हरिभाऊ वकील का लड़का सदाशिवराव, बी० ए०, एल० ए० वी, प्लेग से मर गया। चित्त में दुःख हुआ। ईश्वर की इच्छा समझकर संतोष किया। रामनाथजी वगैरा आये, उन्हें जगह बताई। १२॥ वजे दूकान व प्रेस में गया। हीरालालजी का हिसाव नक्की किया। पत्र वगैरा लिखे। वंबई से वाजार तेज आया। भुसानसाहव से मिला। उसे ६-७ सौ गांठें वेचीं। ५॥-६ वजे वगीचे आया। रामनाथजी वगैरे वहां थे, उनसे वात-चीत की। वहां सुना कि वंशीधर नागपुरवाला मर गया। सवेरे भुसान के काम से हिंगनघाट जाने का विचार था। परंतु यह पता चला कि गोरक्षण कैंप में २-३ चूहे मरे। विद्यार्थी

बंगले पर आगये थे, उन्हें रवाना करना था। इसलिए हिंगनघाट का विचार स्थगित रखा। भोजन कर आर्वी, कारंजा, उखली, बुरहानपुर के लड़कों को रात को ही रवाना किया। काटोल व हिंगनघाटवालों को सवेरे जाने को कहा। १०॥ बजे सोया। रात को मन चिंताग्रस्त रहा।

२१-२-१२

आज पुरुषोत्तमदास व लक्ष्मीनारायण को मेल ट्रेन से जावरा भेजना था, इसलिए प्रेस की दूकान पर जाकर कार्य निपटाकर बगीचे आया और उन्हें फलाहार कराकर स्टेशन भेजा और सुदर्शनदास के साथ जावरा रवाना किया। पुलगांव से मानमल का तार आया। वहां जाने का इरादा था, परंतु बंशीधरजी के कहने से विचार मुलतवी रखा। शाम को जल्दी भोजन करके बच्चों के साथ टेनिस ग्राऊंड पर फुटबाल खेलते रहे। मानमलजी की चिट्ठी लेकर आदमी आया। जाजूजी को बुलाया। उनका विचार रहा कि जाने की आवश्यकता नहीं। जाजूजी के साथ वार्तालाप होता रहा। १०॥-१०॥। तक 'स्वर्ग नुं विमान' पढ़ता रहा। जाजूजी भी यहीं सोये।

२२-२-१२

श्रीनारायणजी व अमरावतीवाले से बातचीत की। फिर श्री नारायणजी इंजापुरवाले आये, भोजन करके विश्राम किया। बाद में भुसान के बंगले से प्रेस गये। मि० स्कोडा पुलगांव जाने की तैयारी में थे। ऋषिकुल के सेक्रेटरी की चिट्ठी आई थी, उसका उत्तर दिया और ५१ रु० भेजे। पोद्दारों के बगीचे गया। पू० बिरदीचंदजी से कार्य के विषय में वार्तालाप होता रहा। स्टेशन पर मेल ट्रेन आई। पुलगांव जाने की इच्छा हुई। वहीं से सीधे पैदल ही स्टेशन गया। फर्स्ट क्लास का टिकिट लेकर स्कोडा के साथ गया। पुलगांव में बद्रीनारायणजी वगैरा से बातचीत हुई। उनकी इच्छा यह रही कि मैं एक बार पुलगांव आकर रहूं। विचार भी किया कि ८-१० रोज पुलगांव रहें। छोटी जीन में बंगले की तजवीज करने को कहा। जवाब मिलने पर जाने का विचार रहा। वर्धा शाम की ट्रेन से आया। स्टेशन पर

इश्तियाक अली, छोटेलाल, श्रीनारायणजी, सेक्रेटरी आदि मिले। बगीचे आये। 'स्वर्ग नुं विमान' पुस्तक पढ़ी और लड़कों को उसका अर्थ बताया।

२३-२-१२

डाक देखी। नागपुर में आदमरायजी शिवनारायण का कार्ड पढ़ा। श्री रामनारायणजी राठी इस संसार से २०-१-१२ रात को बिदा हुए। इन समाचारों से मन को दुःख हुआ। मारवाड़ी समाज को बड़ा धक्का लगा। ईश्वरेच्छा। बंबई के समाचारों में पढ़ा कि कुलाबा में भयंकर आग लगी। ४॥ बजे प्रेस में गया। वहां एक घंटा ठहरा। फिर पोद्दारों के बगीचे जाकर फलाहार किया। एक परदेसी पंडित बीमार थे। उन्हें देखा। कुछ इंतजाम किया। बाद में बिरदीचंदजी और मैं इश्तियाक अली के यहां गये। उन्होंने ट्रेडमार्क के लिए नया कानून बनाने के विषय में राय पूछी। निर्णय हुआ कि अभी कुछ जरूरत नहीं है। बाद में जाजजी के कैंप में गये। वहां हेडमास्टर आदि से बातचीत हुई। स्कूल शुरू करने की मंजूरी आई, सो पढ़ी। पोद्दारों के यहां भोजन किया। थोड़ी देर बातचीत की। सुना कि अपने बगीचे में केदारमल केजडीवाल के लड़का हुआ, रात को ११ बजकर २५ मिनिट पर उसके लिए व्यवस्था की। ११॥ बजे सोया।

२४-२-१२

बगीचे में घूमा। बाद में स्नान। जाजूजी आये, उनके साथ भोजन किया। १॥ बजे तक बगीचे में रहे। बाद में दूकान जाकर चिट्ठियों के जवाब लिखवाये। भुसानवालों को गांठें बेचने के लिए पुलगांव जाने को स्टेशन गये तो मालूम हुआ कि गाड़ी १ घंटा लेट है। इसलिए वहां से जीन में गये। गोदाम वगैरा देखकर स्टेशन वापस आये। मेल पर चिरंजीलालजी पुलगांववाले के काका आदि मिले। पुलगांव पहुंचकर बंगले गया। वर्धा में रूई की गांठें ज्यादा होने से भुसानवालों ने गांठें नहीं लीं। कंपाऊंड में घूमकर पुलगांव स्टेशन पर आया। वहां बंबावाले कप्तानसाहब मिले। ट्रेन में ठाकुरसाहब भी थे। [illegible]वाले के साथ फर्स्ट क्लास में बैठकर वर्धा आये। उनसे बहुत-सी बातचीत हुई।

वर्धा, २५-२-१२

मारवाड़ी कैंप में घूमने के लिए गये। आकर स्नान, पूजन, भोजन करके १२ बजे के अंदाज में शामराव, मूलचंद व चूडामणराव इंजिनियर को सीविल स्टेशन की ओर भेजा और बंबावाले कप्तान के यहां गये। कई विषयों पर बातचीत हुई। उन्होंने अपने जीवन की बहुत-सी बातें बताई। बाद में कौलसाहब के यहां गया। बंगला ठीक करवाना था, वह देखा। वहां भी कई विषयों पर बातें हुईं। दूकान पर जाकर चिट्ठियां लिखीं और नागरमलजी वगैरा को स्टेशन पहुंचाया। वह गयाजी गये। जाजूजी व बिरदीचंदजी के साथ बगीचे आया। रामायण पढ़ी और फलाहार किया। थोड़ी देर तक फुटबाल खेला। फिर सभी मारवाड़ी कैंप गये।

भोजन के समय जाजूजी को बिच्छू ने काटा, पर ज्यादा दर्द नहीं रहा। जल्दी ही आराम हो गया।

सुना कि दत्तूजी की मां बहुत बीमार है, वहां गये। करीब ९। बजे वापस लौटकर सोया। दत्तूजी के लड़के-बच्चे सोने के लिए यहां आ गये थे।

२६-२-१२

आज पूज्य फूलचंदजी को हरिद्वार रवाना करना था। उसकी तैयारी करवाई और उनसे बातचीत की। दूकान २॥ बजे के आस-पास गये। पत्रों पर जयगोपाल (दस्तखत) करके जीन में गया। मेहता पारसी व पुलगांववाले बंशीधर साथ में थे। वहांपर गोदाम के माल का जिनिंग हो रहा था, वह देखा। अच्छा था। वहां से पोद्दारों के बगीचे गये। बिरदीचंदजी से हाजिर रूई के सौदे की बातचीत की। स्वदेशी मिल की खरीदी ११० के भाव में हो तो उन्हें बुलाने के लिए लिखवाया था। उनसे बहुत देर तक बातचीत हुई। जाजूजी व अत्रेसाहब आये, उनसे कई विषयों पर बातचीत हुई। कौलसाहब ने लैंप भेजा, सो देखा। वहां से बगीचे आये। फूलचंदजी को रवाना किया, फिर भोजन किया। रामनाथजी आदि आये, उनसे बातचीत की। ११ बजे सोना।

२७-२-१२

मुखमार्जन कर थोड़ी देर फुटबाल खेलना । दत्तूजी व मानमलजी से बातचीत कर स्नान करना । हरिकिसनजी आये । घोड़े का तांगा खरीदने को कहा । भोजन कर पेपर पढ़े और विश्राम किया । दूकान पर लगभग २।। बजे गये । पत्रों पर जयगोपाल लिखकर पोद्दारों के बगीचे आया । वहां से बिरदीचंदजी को साथ लेकर ५ बजे अपने बगीचे आया । फलाहार कर बातचीत की । मारवाड़ी कैंप में गये । शाम को भी फुटबाल खेले । हरसामलजी वगैरा आये । बाद में भोजन कर रामनाथजी के साथ शतरंज खेलना । जीन के जाट लोग आये । उनका गींदड़[1] देखा । टेनिस ग्राऊंड में रात के ६।। बजे तक खेल-कूद होता रहा । मोतीलालजी आदि बहुत-से लोग आ गये थे । बाद में शयन ।

२८-२-१२

सवेरे कुछ देर से उठे । मुखमार्जन, स्नान भोजन कर आराम किया । दूकान से पत्र लिखकर आये, उनपर जयगोपाल किये । बाद में पुलगांव से बंशीधर हरलालका आया । बातचीत के बाद जावराजीन में जाकर दत्तूजी वगैरा से मिले । बगीचे में वापिस आये । सेक्रेटरी वगैरा आये । उनके साथ वार्तालाप करने के बाद फुटबाल खेले । फिर आराम और भोजन किया । उसके बाद जीन के जाट लोग आये । गींदड खेलते रहे । लड़के भी खेले ।

२६-२-१२

नित्यकर्म से निवृत्त होकर भोजन किया । थोड़ी देर आराम किया । गंगाविसन से थोड़ी देर मराठी रामायण सुनी । दूकान २।। बजे के करीब गये । चिमनीराम पुलगांव से आया । गांठें बेचने को लिखा । स्टेशन मास्टर को मकान के लिए कहा और बगीचे आया । कुछ देर पढ़ते रहे, फिर भोजन किया और गींदड़ देखा । ११।। बजे सोया ।

---

[1] दांडिये की तरह का पुरुषों का खेल, जो होली के दिनों में खेला जाता है ।

१-३-१२

नित्य कर्म से निवृत्त हो पत्र और अखबार पढ़े। बाद में स्नान कर स्कोडा के साथ प्रेस और स्टेशन गया। बगीचे में ११ बजे आकर भोजन और आराम किया। २॥ बजे प्रेस होकर जिला कचहरी गया। पुलगांव मकान की रजिस्ट्री करवाई। गवाह की आगे तारीख हुई। कचहरी से बम्बावाले साहब के यहां गये। वे घर पर नहीं थे। घर के लोगों से. बहुत देर तक बातचीत होती रही। वहां से पोस्ट आफिस में गये। रामनारायणजी पोस्ट मास्टर से वार्तालाप कर प्रेस में गया। लौटकर भोजन किया। तुलसीकृत रामायण और वालमीकि रामायण के मराठी अनुवाद का बालकांड पढ़ा। लड़कों के साथ थोडगे आये। आज सवेरे ही भुसान का साहब पुलगांव से आया था। बगीचे में ही रहे। सोते समय थोड़ी देर गृहलक्ष्मी का अंक पढ़ा। १०॥ बजे सोना। रात को बुरा सपना आया।

२-३-१२

नित्य कर्म से निवृत्त होकर पत्र और अखबार पढ़े। पंडित शिवप्रसादजी राणीगंजवालों का, उनके लड़के के विवाह के विषय में, पत्र आया था, उसके लिए ५० रुपये का मनीआर्डर भिजवाया। भोजन के बाद विश्राम और २॥ बजे दुकान जाकर पत्र बांचकर उनपर जयगोपाल किया। ३ बजे तांगे में बैठकर बालूजी के यहां गया और थोड़ी देर बैठा। वहां से प्रेस में गया। राठीजी के माल में आग लगी थी, सो देखकर तार दिया। बाद में पोद्दारों के यहां गया और ठंडाई ली। जाजूजी के साथ बगीचे आकर थोड़ी देर घूमे और भोजन किया। फिर जाजूजी पोद्दारों के बगीचे गये। तुलसीकृत रामायण पढ़ी। बाद में शयन। गींदड के कारण रात को नींद नहीं आई। सवेरे ४॥ बजे होली मंगली[१], फिर शयन।

३-३-१२

रात के जागरण के कारण सवेरे देर से उठा। स्वजातीय लोग आये। उनके साथ कपड़े पहनकर साथ हुए। उन्होंने होली की राखड़ (राख) गेरी।

---

१ होली जलाने को 'मंगली' कहते हैं।

वहां से पोद्दारों के बगीचे गये। वहां ठहर गया और जाजूजी से बातचीत की। बाद में बगीचे में निबटकर स्नान किया। गींदडवालों को बुलाया। बाद में भोजन और विश्राम। ३ बजे दूकान से पत्र आये, देखे। बाद में थोड़ी देर फुटबाल खेला। राठीजी आये, उनके साथ श्री लक्ष्मीनारायण मंदिर में फूल डोर[1] के लिए गया। वहां बिरदीचंदजी, जाजूजी, पोस्ट-मास्टर आदि आये। वहां का काम पूरा करके उनके साथ पोद्दारों के बगीचे गया। वहीं भोजन तथा बातचीत। बाद में जाजूजी के साथ कैंप में गया। उनसे बोर्डिंग स्कूल-सम्बन्धी वार्तालाप कर टांगे में बैठकर बगीचे आये। थोड़ी देर बाद शयन।

वर्धा से बंबई की रेल-यात्रा में ४-३-१२

सवेरे उठते ही मुखमार्जन कर पुस्तक वगैरा रखी। बम्बई साथ ले जाने का सामान जमाया। बाल बनवाकर स्नान-भोजन किया। बाद में मिलनेवाले आये। उनसे बातें कीं। रामनारायणजी के दीवानजी से बातचीत कर गांठों का बैलेंस उतारा। फलाहार कर २॥ बजे के करीब स्टेशन आये। स्टेशन पर जाजूजी, बिरदीचंदजी तथा बहुत-से लोग पहुंचाने आये थे। डिब्बा रिजर्व नहीं था, इसलिए सैकंड में बैठा। बंबावाले कप्तानसाहब की लड़की रेणुकाबाई भी साथ में थी। डिब्बे में त्रिवेदी-मेहता आदि सज्जनों से गोखले बिल[2], आर्य-समाज आदि विषयों पर बहुत देर तक बातचीत होती रही। वे लोग बड़े सज्जन थे। पुलगांव, धामणगांव पर बहुत-से लोग मिलने आये। महादेवजी वगैरा चांदूर तक साथ थे।

बंबई ५-३-१२

सवेरे कल्याण में रेणुकाबाई पूना जाने के लिए उतरीं। साथ में उनका

---

[1] धुलेंडी के दिन शाम को मंदिर में जाकर मित्र-मंडली का गुलाल आदि से सत्कार करना।

[2] श्री गोपालकृष्ण गोखले ने समाज-सुधार का एक बिल असेंबली में रखा था।

भाई त्र्यंबक भी था। दादर स्टेशन पर लच्छीरामजी बजरंग आदि उपस्थित थे। सामान दादर स्टेशन भेजा। औरतें गाड़ी में बैठकर आई। बाकी के दूसरे लोग दादर स्टेशन से अंधेरी आये। सीतारामजी मिले। उन्होंने अन्य बातचीत के बाद अपने स्वयं के विवाह की बात कही। चित्त को रंज हुआ। उन्हें मौघम (इशारे) में समझाया। उनकी इच्छा प्रबल दिखाई दी। स्नानादि कर भोजन किया। आराम करने के बाद सुरजी से मिले। फिर अंधेरी से चर्नीरोड उतरकर और दुकान से भुसान के आफिस में गये। वहां से कुलाबा गया। वहां बहुत-से सज्जन मिले। वर्धा से लाया हुआ रुई का नमूना दिखाया। हाजर का बाजार साधारण ठीक था। वर्धा २८३ खंडी था। वहां से चर्चगेट से अंधेरी रवाना हुआ। रास्ते में खंडेराव नित्यानन्दजी आदि से बातचीत की। बंगले आये। भोजन के बाद सीतारामजी, भेरूप्रसादजी से वार्तालाप।

बंबई-अंधेरी ६-३-१२

आज पूना से बम्बावाले आनेवाले थे, इसलिए उन्हें लेने के लिए डालू को भेजा था। निबटने जा रहे थे, इतने में वे आये। बातचीत के बाद बहुत दूर तक निबटने के लिए गये। वापिस आकर मुखमार्जन स्नान-भोजन कर बंबई गये। लड़कों को रानीबाग वगैरा देखने भेज दिया। दुकान पर करीब दो घंटा ठहरकर किले गया। स्वदेशी स्टोर्स से कुछ सामान खरीदा। कुलाबा जापान के आफिस गये। वहां कई लोगों से बातचीत की। वापिस चर्चगेट आये। ईश्वर-कृपा से त्र्यंबकराव बम्बावाला बहुत बड़ी जोखम से बचा। अंधेरी आये। रामनारायणजी व सूरजमलजी रूइया से सीतारामजी के विवाह के सम्बन्ध में वार्तालाप किया। घर आकर भोजन किया। ब्रजमोहनजी सोने के लिए आये। रात को ताश खेलना व करीब ११ बजे सोना।

७-३-१२

सवेरे उठकर निबटने गये और बाद में मुखमार्जन किया। सीतारामजी ने भोजन के लिए बहुत आग्रह किया। इसलिए उनके यहां जीमने का निश्चय

हुआ। स्नान-संध्योपासना के बाद ब्रजमोहनजी आदि सबने मिलकर सीतारामजी के यहां भोजन किया। बंबई १२-५ की गाड़ी से आये। पत्रादि लिखकर किले गये। किले से जल्दी ही कुलाबा गये। वहां थोड़ी देर ठहरकर ५-३२ की गाड़ी से अंधेरी वापस आये। बंगले आने पर देखा कि सीतारामजी के निकासी की तैयारी थी। निकासी में साथ हुए। जनवासे गये। ८-१० सज्जन और साथ थे। हरसामलजी सिंघानिया से बहुत देर तक वार्तालाप हुआ। सीतारामजी फेरे में बैठे। उनके पंजाबी सगों की स्त्रियों के गीत सुने। वापिस आकर भोजन किया। ग्रामोफोन ब्रजमोहनजी ने बजाया। १०॥ बजे करीब शयन।

८-३-१२

सवेरे जल्दी उठे। मैदान जाकर, मुखमार्जन कर, बातचीत की। बाद में स्नान-संध्योपासना और ब्रजमोहनजी आदि को जिमाकर भोजन किया और फल खाये। सीतारामजी पहरावनी कर बिंदणी को लेकर आये, उसे देखा। दृश्य अवश्य ही देखने योग्य था। १२-५ की गाड़ी से बंबई आया। रामनारायणजी, सूरजमलजी रूइया भी साथ में थे। पत्र लिखकर स्वदेशी स्टोर में जाकर कपड़े बनवाये। कुलाबा गये। वहां कोशिश कर दाऊद ससून को वर्धा की ३१८ गांठें बेची। भुसान कंपनी के बहुत-से साहबों से मिला। ६-५८ की गाड़ी से अंधेरी ब्रजमोहनजी के साथ आया। भोजन कर हास्य-विनोद की चिट्ठी बिरदीचंदजी को भेजी। ११ बजे के करीब शयन।

९-३-१२

१२-५ की गाड़ी से बंबई गये। रामबिलासजी के साथ बातचीत की। दुकान पर जाकर किले में भुसान के आफिस गये। वहां से कुलाबा गये। वहां हाजर में ग्राहक कम थे। जीन २७१॥ तक बिकी।
ताजमहल होटल में आग लगी, वह देखी। पानी के बंबे देखे।

१०-३-१२

श्री रामनायणजी रूइया को विद्यार्थीगृह के नियम भेजे। रामनारायणजी और सूरजमलजी से बंबई में विद्यालय स्थापन करने के विषय में बहुत-सी

बातें हुईं। उनकी थोड़ी मदद करने की इच्छा भी दिखाई दी। खेमराजजी के यहां जाकर उनसे भी विद्यालय की बातचीत की। वहां उनके संपादक चंदुलालजी से भी मिले। बाद में खेमराजजी को साथ लेकर पं. दीनदयालुजी से माधवबाग में मिले। बहुत देर तक बातचीत होती रही। फिर दुकान गये। गेइटी थियेटर में देवकन्या नाटक देखा।

११-३-१२

आज शीतला अष्टमी के कारण ठंडे पानी से स्नान कर ठंडा भोजन किया। बाद में बंबई विद्यालय के बारे में बातचीत करने रामनारायणजी रुइया के यहां गया। पर उन्हें फुरसत न होने के कारण वापस आ गया। ११-१० की गाड़ी से बंबई गया। रामनारायणजी के यहां जाकर दोनों भाइयों से विद्यालय-संबंधी बातचीत की। फिर श्री पंडित दीनदयालुजी से मिले। उन्होंने बुधवार को अंधेरी आने को कहा। १ घंटा तक वहां रहकर दुकान गया। वहां पत्र-व्यवहार निपटाकर कुलाबा गया। गांठें बेचने की कोशिश की, लेकिन सौदा नहीं हुआ। अंधेरी वापस आते समय एक यूरोपियन मिला। उससे शिकार-संबंधी अद्भुत चर्चा सुनी। भोजन कर बंबई सिनेमा देखने गये।

१२-३-१२

१०॥ बजे की गाड़ी से बंबई गये। रास्ते में सूरजमलजी रुइया मिले। चर्नीरोड से माधवबाग जाकर पं० दीनदयालुजी से मिले। वहां १ घंटा कई विषयों पर वार्तालाप होता रहा। दुकान आकर नोरंगरायजी, दुर्गाप्रसाद, शिवनारायण आदि को पत्र लिखे। नारायणदासजी पोद्दार दुकान पर आये। उनसे बातचीत कर स्वदेशी स्टोर में जाकर खरीदी की। कुलाबा गये। ५-३८ की गाड़ी से व्रजमोहनजी के साथ अंधेरी आये। भोजन कर ८-११ की गाड़ी से मरीन लाइन उतरे और मैदानिया (प्रदर्शनी) गये, वहां हिमालय ट्रेन में बैठे। एक्सलसियर थियेटर में सिनेमा देखकर विक्टोरिया से चर्चगेट आये। कुछ देर समुद्र के किनारे बैठकर संतरे वगैरा खाये। ११-४५ की गाड़ी से अंधेरी आना।

१३-३-१२

१२-५ की गाड़ी से बंबई आया। दुकान पर पत्र-व्यवहार कर किले से कुलावा गया। कुलावा में १२ गांठें २०१ में पं० दीनदयालुजी के लिए बेचीं। ६-७ की गाड़ी से अंधेरी आया। थोड़ी देर बाद पं० दीनदयालुजी पं० नेकीरामजी के साथ आये। भोजन के बाद उनसे बंबई विद्यालय के विषय में वार्तालाप होता रहा। सीतारामजी सिंघानिया भी आ गये थे।

१४-३-१२

पंडित दीनदयालुजी के साथ भोजन कर बंबई आना। चर्नीरोड उतरकर खेतवाड़ी गये और खेमराजजी से मिलकर बातचीत की। बाद में पंडितजी को डेरे पर छोड़कर दुकान गया। दुकान से स्वदेशी स्टोर होकर कुलावा गया। बाजार की रंगत देखकर १०० गांठें कॉटन वेस्ट की २७४ में लीं। ६-७ की गाड़ी से वापिस आये। रेल में रामनारायणजी सूरजमलजी से विद्यालय-संबंधी बातचीत होती रही। दूसरी ट्रेन से पंडितजी भी आये। भोजन कर कुछ देर पढ़ता रहा। १० बजे सोया।

१५-३-१२

नित्य कर्म से निवृत्त होकर पं० दीनदयालुजी तथा नेकीरामजी के साथ भोजन कर विश्राम किया। १२-५ की गाड़ी से बंबई गया। आज गाड़ी पौन घंटा लेट थी। गाड़ी में श्री रामनारायणजी रुइया तथा पंडितजी से वार्तालाप होता रहा। रामनारायणजी ने सहानुभूति दिखाई। पंडितजी को चंदावाड़ी में छोड़कर दुकान गये। पत्रादि देखकर ब्रजमोहनजी के पास गये। उन्हें लेकर गिरगांव में गांधर्व विद्यालय में गये। प्रोफेसर विष्णु दिगंबर पलुसकर बड़े ही योग्य पुरुष हैं। उन्होंने विद्यालय का काम-काज दिखाया। वहां से कांदेवाड़ी गये। श्री गोस्वामी देवकीनन्दनाचार्य के दर्शन पं० दीनदयालुजी के जरिये किये। एक गिनी नजर की। वहां से फिर गांधर्व विद्यालय में गये और उन लोगों के साथ ईश्वर की प्रार्थना की, जो बड़ी ही मनोहर थी। वहां कई विषयों पर बातचीत होती रही। गायन व हारमोनियम सिखानेवाले मास्टरों की पलुसकरजी से मांग की। उन्होंने दूसरे दिन

आने को कहा। लड़कों को पुरस्कार देने का समारोह था। ग्रान्ट रोड से अंधेरी आकर भोजन किया। थोड़ी देर पढ़कर सोया।

१६-३-१२

अंधेरी से दूकान गये। पत्रादि पढ़े। बाल बनवाये। स्नान कर दुकान पर ही भोजन किया। वहां से कावसजी जहांगीर हाल में गांधर्व विद्यालय के जल्से में गया। कार्यक्रम बड़ा ही उत्तम हुआ। व्याख्यान व गायन-क्रम ठीक रहा। आगामी साल जो लड़का सर्वप्रथम आयेगा उसे १५ रुपये पुरस्कार देने को कहा। अध्यक्ष ने धन्यवाद दिया। इस समारोह में व्रजमोहनजी व नारायणजी आदि थे। वहां से सिनेमा देखने गया। अच्छा था। वहां पर वजन किया, २३७ रतल आया। वहां से मैदानिया (प्रदर्शनी) गये। कई तरह की दर्शनीय चीजें देखीं। ११॥ बजे तक घूमते रहे।

१७-३-१२

आज २ बजे की गाड़ी से बंबई गये। चर्नीरोड से चन्दाबाग जाकर पं० दीनदयालुजी से मिले। वहां ताराचंदजी भियाणीवाले मिले। उनसे विद्यालय के विषय में बातचीत की। वहां से दुकान गये। हीरालाल, व्यासजी आदि से मिले। ५॥ बजे गांधर्व विद्यालय के स्नेह-सम्मेलन के लिए चन्दाबाग होते हुए पं० दीनदयालजी को साथ लेकर गये। कार्यक्रम शुरू हो गया था। गायन ठीक रहा। प्रेसिडेंट बैरिस्टर जेकब थे। उनका व्याख्यान बढ़िया रहा। पं० पलुसकरजी ने बुलाकर फलों के लिए बहुत आग्रह किया। थोड़े लेकर पंडित दीनदयालुजी को दिये। अपनी गाड़ी दीनदयालुजी को दी और व्रजमोहनजी की गाड़ी से ग्रान्ट रोड होकर अंधेरी आये।

१८-३-१२

आज सोमवती अमावस्या थी इसलिए निवटकर तांगे से वरसोवा गये और रत्नाकरजी (समुद्र) में आनन्दपूर्वक स्नान करके संध्या की। बाद में हिंद पितामह दादाभाई नवरोजी का बंगला देखा। अंधेरी आकर भोजन करके १२-७ की गाड़ी से बंबई आया। बहुत-से पत्रों का उत्तर दिया। वहां से स्वदेशी भंडार जाकर त्र्यंबक के लिए स्वेटर बनाने को दिया, फिर कुलाबा

गये। ताराचंदजी भियाणीवालों को लेकर रामनारायणजी के यहां गये। विद्यालय की बात की। इन लोगों में आंतरिक उत्साह बिलकुल दिखाई नहीं दिया, इसलिए आज से प्रयत्न बंद करने का विचार किया। कुलाबा में हाजिर की लेवाली बहुत कम थी। वर्धा के माल की कोई मांग नहीं थी। वहां से बाबुलनाथजी के दर्शन को गये। अच्छी तरह दर्शन कर ग्रांट रोड से अंधेरी गये। रात को १ बजे तक ब्रजमोहनजी से वाद-विवाद होता रहा।

१९-३-१२

सवेरे उठकर देखा तो रात को बहुत ओस गिरी हुई दिखाई दी। ओस के कारण पहाड़ी पर मनोहर दृश्य दिख रहा था। भोजन कर ११-१० की गाड़ी से बंबई आये। रेल में सूरजमलजी, ताराचंदजी, बैजनाथजी के लड़के आदि से बातचीत हुई। ब्रजमोहनजी की दुकान पर जाकर हीरे आदि देखे। पं० दीनदयालुजी से मिले। विद्यालय स्थापित होने की आशा नहीं दिखती। वार्तालाप कर (रुई के) जथे की दुकान गये। पत्रादि लिखकर किले में भुसान के आफिस गये। बड़े साहब से बहुत देर तक बातचीत होती रही। वहां से कुलाबा जाकर ३३४ गांठें बेचीं। रंगनाथजी से मिले। बाद में मुरलीधर आया। उसने बताया कि लच्छीरामजी नयानगर जाना चाहते हैं। तब गाड़ी में बैठकर दुकान के नीचे आया और तलाश किया। लच्छीरामजी का विचार स्थगित रहा। चर्नीरोड स्टेशन से बैठकर अंधेरी आये। बच्चों के साथ ताश खेले। थोड़ी देर हारमोनियम बजाया।

२०-३-१२

नित्यकर्म से निवृत्त होकर गुजराती चन्द्रकान्त वेदान्त की पुस्तक पढ़ी। भोजन, आराम कर बंबई गया। रेल में रामनारायणजी रूइया से वर्धा में बैंक खोलने की बाबत बहुत-सी बातचीत हुई। चर्नीरोड से उतरकर दूकान गये। पत्र लिखे। बाद में किले में त्र्यंबकराव के लिए साइकल देखी। कीमत ज्यादा थी। कुलाबा गये। आज वहां बहुत भीड़ थी। वायदे के लिए नियम छपते थे, वहां गये। बाजार का रुख तेजी का था। ६।। बजे

रवाना होकर पोलो की जगह गये। थोड़ी देर ठहरकर अंधेरी आये, ताश खेले। चन्द्रकान्त व रामायण पढ़ी। जावरे से गजाधर आया, सो मिला।

२१-३-१२

विनायक एस० त्रिवेदी आये, उनसे बातचीत कर विश्राम किया। बाद में बंबई गया। पं० वृद्धिचन्द्रजी वैद्य, नारायणदासजी पोद्दार व गजानन्द मोदी आये। उनसे विद्यालय-सम्बन्धी बातचीत की। कापिंग प्रेस जंचाया। वर्धा पत्र लिखा। ५-४८ की गाड़ी से अंधेरी जाकर भोजन कर बंबई आया। साथ में जानकीराम रुइया थे। ९ बजे माधवबाग पहुंचे और दर्शन किये। झांकी उत्तम थी। बाद में पंडित विष्णु दिगंबरजी की तुलसी रामायण गायन के साथ सुनी। बड़ी ही मनोहर थी। 'हरे राम हरे राम' की छटा विलक्षण थी। ११ बजे रामायण पूरी हुई। पं० दिगंबरजी दीनदयालुजी से मिलकर चर्नीरोड आये। ११-४६ की गाड़ी से रवाना हुए। माहिम के पास गाड़ी लेट हो जाने से १॥ बजे घर पहुंचे। आज गर्मी थी, जिससे २॥ बजे नींद आई।

२२-३-१२

जागरण के कारण देरी से उठा। दैनिक कार्य से निवृत्त होकर ११-१० की गाड़ी से बंबई गया। रास्ते में सूरजमलजी रुइया से बात हुई। दूकान पर खेमराजजी व पं० वृद्धिचन्द्रजी से विद्यालय के सम्बन्ध में बातचीत करने आये थे। ४ बजे फारेन इंडिया एजेंसी गये। वहां से गजानन्द मोदी को लेकर रिकार्ड लिये। साइकल लेकर कुलावा गये। आज बाजार तेज था, कुछ सौदा किया। ६-५२ की गाड़ी से अंधेरी आये। गजाधर साथ में था। कल के जागरण के कारण भोजन कर जल्दी सोया।

२३-३-१२

१०-४० की गाड़ी से बंबई आने के विचार से स्टेशन गया। गाड़ी निकल गई। रामनारायणजी व सूरजमलजी मिले। गंगाधर भी साथ था। दूकान पर कालुभाई से अंग्रेजी में तथा और भी पत्र लिखवाये। जयनारायणजी पोद्दार का आदमी आया। वहां गया, उनसे एकान्त में बहुत देर तक बातचीत

हुई। सज्जन और उत्साही मालूम दिये। विद्यालय व तेल की एजेंसी आदि बहुत-सी बातें हुईं। दूकान आकर कलेवा कर कुलावा गये। वर्धा की ११३ गांठें २८० में लीं और मार्च ११०, २८५ में बेची। बाजार आज भी तेज था। सुखानन्दजी से मिले, विद्यालय-सम्बन्धी चर्चा की। ६-५२ की गाड़ी से अंधेरी आये। भोजन के बाद, गांधर्व विद्यालय की तरफ से गायन सिखाने आये थे, उनसे 'जानकी नाथ सहाय करे' यह पद सीखना शुरू किया। फिर मारवाड़ी विद्यालय की चर्चा हुई। चन्द्रकान्त पढ़कर सोया।

२४-३-१२

विनायकराव से इंग्लिश पढ़ी। स्नान-भोजन के बाद सीतारामजी सिंघानिया से बातचीत की। बंबई १२-५ की गाड़ी से जाकर पत्र आदि देखे। स्त्रियां देवकन्या नाटक में गई थीं। दूकान पर पंडित लज्जारामजी शर्मा व वृद्धिचन्द्रजी आये थे। बहुत-सी बातचीत हुई। लज्जारामजी से मारवाड़ी जाति की सच्ची हालत पर पुस्तक लिखने को कहा। उन्होंने स्वीकार किया। पं० लज्जारामजी बड़े ही योग्य मालूम दिये।

२५-३-१२

तेल-मालिश कर स्नान किया। थोड़ी अंग्रेजी पढ़ी। भोजन कर बंबई गया। अंधेरी में पत्र लिखे थे, वे डाक में गिरवाये। बालुभाई विलायत से आये हुए एक शिक्षक को लाये। उनसे १ घंटा अंग्रेजी में बातचीत सीखने का विचार हुआ। स्टोअर होते कुलावा आये। हाजर का बजार सुस्त था। पानी लगी १०० गांठें २७८ में बेचीं। ६-७ की गाड़ी से अंधेरी आया। गाड़ी में रूइया से बातचीत की, भोजन कर कुछ अंग्रेजी का अनुवाद किया। गायन मास्टर आये, उनसे १०॥ बजे तक गायन सीखे।

२६-३-१२

नौरात्र का आखरी दिन था। मिष्टान्न भोजन कर आराम किया। १२-५ की गाड़ी से बंबई जाकर पत्र लिखे। खेमराजजी ने बुलाया, इसलिए वहां गये। वह रास्ते में ही मिल गये। विद्यालय के सम्बन्ध में बातचीत हुई। भुसान के आफिस जाकर बाजार का रुख पूछा और कुलावा गये। वहां से

व्रजमोहनजी को साथ लेकर ग्रांट रोड के तवेले में जीवनदासजी के गाड़ी-घोड़े विकने आये थे, वे देखे। ग्रांट रोड से अंधेरी आकर भोजन के बाद गायन सीखा। पं० वृद्धिचन्द्रजी वैद्य आये।

२७-३-१२

दैनिक कार्यों से निवृत्त होकर भोजन कर आराम किया। १२-७ की गाड़ी से बंबई गये। रेल में रामनारायणजी, वैजनाथजी आदि से विद्यालय-सम्बन्धी बातचीत हुई। आज प्रमुख लोगों की मीटिंग करने का निश्चय हुआ। माधव-बाग में दर्शन कर पं० दीनदयालुजी से मिले; खेमराजजी को टेलिफोन किया। मालूम हुआ कि उन्हें बहुत जोर का ज्वर आया है, इसलिए सभा मुलतवी रही। दूकान आकर गजानन्द मोदी को लेकर साइकलवाले के यहां गये और साइकल ली। टी० एस० रामचन्द्र के यहां से बहुत बढ़िया हाथ का हारमोनियम खरीदा। पं० वृद्धिचन्द्रजी के साथ अंधेरी आये। रेल में आनरेवल लल्लुभाई से बातचीत हुई। वह योग्य सज्जन मालूम दिये।

२८-३-१२

मुंह-हाथ धोकर थोड़ी देर साइकल से घूमने गये। बंबई से गुरुदास राम-दयाल मिलने आया। भोजन कर १२-५ की गाड़ी से दूकान गये। पत्र पढ़े और लिखे। वर्धा से विरदीचंदजी का पत्र आया, जिसमें लिखा था कि वहां प्लेग कैंप में आग लगने से ६०० घर जले। एक लड़के के जलने की भी खबर थी। फिकर हुई। कुलाबा गये, लेकिन चित्त दुःखी होने के कारण वहीं से अंधेरी आये। रेल में 'सांज वर्तमान' में पढ़ा कि पारसी लोगों के अस्पताल का उद्‌घाटन हुआ, जो २२ लाख के चंदे से बना था। मार-वाड़ी जाति की दशा देखकर चित्त में बड़ा खेद रहा। गायन-मास्टर से १०।। बजे तक गायन सीखते रहे।

२९-३-१२

११-१० गाड़ी से बंबई दूकान पर गये। पत्रादि लिखकर कुलाबा जाना और ६-७ गाड़ी से अंधेरी आना। रेल में यूरोपियन और औरंगाबाद मिल के मैनेजर से वाद-विवाद हुआ। भोजन करके खांडेकर गायन-मास्टर से

गायन सीखा। बंशीधरजी जालान आये, उनसे थोड़ी देर बातचीत की।

३०-३-१२

भोजन कर पलंग पर लेटते ही निद्रा आ गई। ११-१५ के लगभग खेमराजजी बजाज व पं० वृद्धिचंद्रजी बंबई से मिलने आये। उनसे मारवाड़ी विद्यालय-संबंधी बातचीत करीब दो घंटे होती रही। बंबई १-२० की गाड़ी से उनके साथ गये। चर्नीरोड उतरे, तो आज रेस का आखरी दिन होने से बहुत दूर जाने पर बड़ी मुश्किल से विक्टोरिया मिला। रास्ते में शिवनारायणजी नेमाणी का बनता हुआ नया मकान विद्यालय के लिए देखा। चंदाबाग जाकर पं० दीनदयालुजी से विद्यालय-संबंधी बातचीत की। खेमराजजी को उनकी दूकान छोड़कर दूकान आकर पत्र पढ़कर कुलाबा गये। मुसान के दलाल दामोदरदासजी से बोर्डिंग आदि-संबंधी बातचीत हुई। रेल में चक्कर खाते हुए अंधेरी गये। गायन सीखा। सर कस्तूरचंदजी डागा से मिलने का कार्यक्रम निश्चित किया।

३१-३-१२

२-३४ की गाड़ी से बंबई गये। चंदाबाग में पंडितजी से मिलकर दूकान गये। ब्रजमोहनजी को साथ लेकर माधवबाग जाना। ताराचंदजी रायसाहब बने, इसलिए मानपत्र दिया गया। वहां से दामोदरदास गोरधनदास सुखडवाला के साथ गिरगांव प्रार्थना-समाज में गये। वहां डाक्टर सर भंडारकर का मराठी भाषा में मार्मिक उपदेश सुना। हारमोनियम पर स्त्री-पुरुषों ने मिलकर गाया। पैसा फंड पेटी में ४ रुपये दिये। वहां से सुखडवाला के साथ ओरिएंटल क्लब में गये। बड़ा ही सुन्दर मकान था। वहां से चर्नीरोड होकर अंधेरी आये। रेल में गायक से बातचीत हुई, जिसका चित्त पर असर पड़ा।

१-४-१२

आज शाम को माधवबाग में सभा होनेवाली थी, इसलिए आमंत्रण कार्ड भेजे। १०-४५ की गाड़ी से बंबई गये। ग्रांट रोड स्टेशन पर उतरकर गांधर्व विद्यालय में जाकर शाम को सभा में लड़कों के आने की व्यवस्था

की। वहां से खेतवाड़ी खेमराजजी के पास गये। गायन छपवाये। दूकान जाकर पत्रादि देखे। निपटकर स्नान किया। ग्रहण तथा सभा के कारण ४ बजे भोजन किया। माधवबाग जाकर कुर्सियां लगवाना, गलीचे बिछाना आदि बंदोबस्त किया। प्रबंध के लिए ८-१० मेल-मुलाकातियों को ले गये थे। सर कस्तूरचंदजी डागा आये। अध्यक्ष के लिए उनके नाम का सुझाव दिया। अध्यक्ष के विराजमान होते ही गायन हुआ। पं० नेकीरामजी का व्याख्यान हुआ। बाद में पं० दीनदयालुजी का जोरदार व सारगर्भित व्याख्यान हुआ। सभा जोरदार हुई। श्रोता करीब १००० थे।

२-४-१२

हाथ-मुंह धोकर किराये के तीन तांगे कर वरसोवा गये। दरिया में खूब नहाये। वहां से आकर भोजन व आराम किया। बंबई ११-२० की गाड़ी से आये। रास्ते में माधवबाग के मालिक व गोकुलदास तेजपाल के मित्र मिले। उनसे बातचीत हुई। दूकान जाकर पत्र लिखे। वहां से कुलाबा गये। बाजार सुस्त था। ६-७ गाड़ी से जाने के लिए चर्चगेट आये। पं० वृद्धिचंद्रजी विक्टोरिया से गिर गये। गाड़ी रवाना हो रही थी, इसलिए थर्ड क्लास में बैठे। ग्रांट रोड में उतरकर फर्स्ट क्लास में बैठे। रामनारायणजी से सलाह कर पं० हरिश्चंद्रजी को बांदरा से वापिस बंबई भेजा। विद्यालय के लिए चंदा करने के लिए बुधवार को सभा निश्चित की। रामनारायणजी से आने की स्वीकृति ली। वृद्धिचंद्रजी को कार्ड छपाने के लिए कहा।

३-४-१२

११-१० की गाड़ी से बंबई गया। रूइयाजी रेल में साथ थे। शाम को सभा में आने को कहा। दूकान पर जाकर ३-४ जगह फोन किये। चंदाबाग ४॥ बजे के करीब गये। सर डागा को चंदाबाग में लाने के लिए खेमराजजी को टेलीफोन किया। थोड़ी देर में ताराचंदजी, रामनारायणजी, सर कस्तूरचंदजी, बलदेवदासजी, खेमराजजी नेवाटिया और प्रतिष्ठित दूकानदार व दलाल एकत्र हुए। बातचीत होकर चंदा आरंभ हुआ। ७४,२०० रुपये हुए। दूकान के नाम से ११,००० लिखे। अंधेरी जाते समय रेल में कुंवरभाई

कामा व डा० यशवंतराव आनंदराव भालेकर से बातचीत। विद्यालय के लिए चंदा देने के लिए सीतारामजी सिंघानिया से बात की। उनको फिकर पैदा हुई। सर कस्तूरचंदजी ने चंदा लिखवाते समय खानगी (एकान्त) में मुझसे बात की थी ?

४-४-१२

त्र्यंवक बम्बावाला वर्धा जानेवाला था, इसलिए १०-१० की गाड़ी से बंबई गये। दूकान से १२। बजे बोरीबंदर स्टेशन जाकर त्र्यंवक को गाड़ी में बैठाया। दूकान वापस आये तो शरीर में कुछ दर्द होने लगा। गर्मी ज्यादा मालूम दी। चिट्ठियां पढ़कर चर्नीरोड से २-३० की गाड़ी में बैठे। रेल में सीताराम दीक्षित सालिसिटर से कई तरह की बातचीत हुई। नागपुर का मारवाड़ी पत्र पढ़ा। अंधेरी आकर सोये। ५॥ बजे उठकर हाथ-मुंह धोया। २०-२२ डाकोत (शनी के पुजारी) लोग आकर हल्ला मचाने लगे। रंज हुआ। कुछ दिया। फिर कपड़े पहनकर लड़कों के साथ घूमने गये। विला-पार्ला स्टेशन तक पैदल गये। रास्ते में बंगला देखा। रेल से मिला हुआ था। विलापार्ला पहुंचते खूब पसीना आया हुआ था। स्टेशन पर अंधेरी की गाड़ी तैयार थी।

५-४-१२

आज बहुत जोर की सर्दी और खांसी हो रही थी। बुखार भी १०० तक था। मुंह-हाथ धोकर कपड़े बदल लिये। हल्का भोजन किया और आराम किया। बंबई से चिट्ठियां और अखबार आये, सो पढ़ता रहा। सूरजी से भी पढ़ाये। शाम को भोजन नहीं किया। सीतारामजी सिंघानिया बहुत देर तक बैठे। उन्हें विद्यालय के चन्दे की बात अच्छी तरह समझाकर कही, पर उनका विचार बहुत कम रहा।

६-४-१२

सर्दी का जोर और बुखार रहा। हाथ-मुंह धोकर अदरक लिया। भोजन थोड़ा किया, लेकिन रुचि ठीक नहीं थी। डाक्टर को तीन बजे बुलाया। उसने सर्दी का जोर बताया और कुछ सूंघने की दवाई भेजी। चित्त अस्वस्थ रहा।

शाम को लादूरामजी एरणगोत्री मिलने आये थे। दोपहर को कुंवरबाई पारसिन मिलने आई थी। उसके दो बंगले वेचना या किराये पर देना है। वह बहुत देर तक बैठी। रात को ब्रजमोहनजी आदि से बहुत देर तक बात करते रहे। बाद में छुहारे व दूध लेकर सोया।

७-४-१२

आज सर्दी का जोर तो था, लेकिन बुखार कम मालूम हुआ। पं० वृद्धिचन्दजी सभा-सम्बन्धी जो कार्ड छपवाकर लाये थे, वे अंधेरी में बहुत-सी जगह भेजे। मुंह-हाथ धोया। माधवबाग के मालिक मनोहरदास मिलने आये। दो घंटे से अधिक बैठे रहे। बम्बई से भाई सीताराम पोद्दार व विसेसरलाल आये। वे भी करीब तीन घंटे बैठे। कई विषयों पर बातचीत कर विद्यालय को सहायता मिले, ऐसा प्रबन्ध किया। बम्बई से पारसी डाक्टरनी आई। घर में से तबीयत बताई। तबीयत ठीक है कहा। बीस रुपये फीस दी। थोड़ी देर आराम कर २-१७ की गाड़ी से सभा के लिए बम्बई गया। चर्नीरोड से चन्दाबाग पंडितजी के पास गये। वहां से माधवबाग आकर दर्शन किये। राजा मोतीलालजी आये। उनके पोते गोविन्दलालजी (पित्ती) बड़े ही उत्साही दिखलाई पड़े। थोड़ी बातचीत हुई। सभा-स्थान पर आये। सभापति का मैंने प्रस्ताव किया। उसका ताराचन्दजी ने अनुमोदन किया। सभा का कार्य आरम्भ हुआ। विद्यार्थियों द्वारा मंगलाचरण हुआ। नेकी-रामजी तथा वृद्धिचन्दजी की भूमिका के बाद पं० दीनदयालुजी का विद्या और उन्नति पर बड़ा ही प्रभावशाली व्याख्यान हुआ। ६।। बजे सभा पूरी हुई। गोविन्दलालजी आदि से बातचीत। रामनारायणजी से अंधेरी में दूसरे रोज क्या करना, यह तय किया।

८-४-१२

आज तबीयत ठीक मालूम दी फिर भी सर्दी, तो थी। १२-७ की गाड़ी से बंबई गये। दूकान आकर पत्र पढ़े। मथुरा से रामगोपालजी की विद्यालय-सम्बन्धी चिट्ठी पढ़ी। चित्त रंजीदा हुआ। खेमराजजी की दूकान १।। बजे गये। वहां से रामनारायणजी के यहां, फिर सूरजमलजी के यहां जाकर उनके

चन्दे में ११००० रुपये लिखवाये। बाद में दो मोटरों में ८ जने राजा मोतीलालजी पित्ती के यहां वालकेश्वर गये। वहां से चिमनीरामजी जेसराज के यहां गये। उनसे बातचीत हुई। अच्छी रकम भरी जाने की आशा हुई। बाद में शिवनारायण नेमाणी के यहां गये। वह नहीं मिला। पंचायती में थोड़ी देर बैठ डाक्टरनी के यहां गये। वह नहीं मिली। खेमराजजी से कई तरह की बातचीत हुई। पंडितजी से मिलकर अंधेरी आये।

९-४-१२

आज तबीयत सुस्त थी। नित्य कर्म से निपटकर पुस्तक पढ़ी। भोजन करके आराम किया। गुजराती पुस्तक देर तक पढ़ता रहा। कलेवा (नाश्ता) करके ४ बजे की गाड़ी से पं० वृद्धिचन्दजी के साथ बम्बई गये। कुलाबा स्टेशन उतरकर रूई बाजार में गये। वहां भुसान कम्पनी का बड़ा साहब (मित्सुई परिवार का) जापान में मर गया, इस कारण शोक सभा थी। उसमें उपस्थित हुए। फिर रामनायणजी रूइया से मिला। उन्होंने कहा, वालकेश्वर जाकर चन्दे का नक्की कर आओ। ब्रजमोहनजी को लेकर मोटर से वालकेश्वर जाकर माताजी से मिले। उनकी इच्छा बहुत कम मालूम हुई। नागपुर समाचार लिखवाये, काफी कहा-सुनी की। सीतारामजी व दौलतरामजी की इच्छा ठीक मालूम दी। बाद में चर्नीरोड से ८ बजे की गाड़ी से अंधेरी के लिए रवाना हुए। रास्ते में माधवबागवाले स्त्री-सहित पारसीवेश में मिले।

१०-४-१२

भोजन कर १०-१० की गाड़ी से बंबई गये। आज गंगाबिसन व लक्ष्मीनारायण को वर्धा रवाना किया। पत्रादि पढ़े। खेमराजजी को टेलीफोन किया। उनका जबाब नहीं आया। शरीर भारी मालूम हुआ। अंधेरी आये। थोड़ी देर सोकर कलेवा किया। ४-५२ की गाड़ी से फिर बंबई आये। चर्चगेट उतरकर कुलाबा गये। लोग त्रिलोकचन्द के यहां पहले ही चले गये थे। फिर लच्छीरामजी उनसे मिले। चर्नीरोड से बैठकर अंधेरी गये। रास्ते में ताराचन्दजी से विद्यालय के विषय में बातचीत। वह भी सहायता

देने को तैयार हुए। पं० दीनदयालुजी बंगले पर थे। भोजन आज सीता-रामजी सिंघानिया के साथ किया। फिर ग्रामोफोन बजाया। १०॥ बजे सोया।

११-४-१२

पंडित दीनदयालुजी आज १२ बजे तक अंधेरी ही थे। भोजन कर आराम किया। पंडितजी १२-५ की गाड़ी से बंबई गये। मैंने १२-१८ की गाड़ी से बंबई जाकर ७-८ चिट्ठियों के जवाब लिखे। फिर जत्थे की दूकान जाकर रूई के नमूने का हिसाब लिया। वहां से भुसान के आफिस आया और स्कोडा से मिला। बहुत देर तक बातचीत हुई। फुलगोरी साहब से सर्टि-फिकेट मांगा। वहां से कुलाबा गये। रामनारायणजी रूइया ने बुलाया। विद्यालय-सम्बन्धी बहुत-सी बातचीत हुई। ताराचन्दजी भी वहां थे। रूई के नमूने देखे। बैजनाथजी रूइया मिले। कहने लगे कि हाजर का थोड़ा माल सीर में खरीदने का विचार है। मैंने कबूल किया। ६-७ की गाड़ी से अंधेरी आये। रूइया साथ थे।

१२-४-१२

बंबई १२-५ की गाड़ी से दूकान आकर ताराचन्दजी के यहां गये। उन्हें लेकर देवड़ों की तीनों दूकान पर गये। रामनारायणजी रूइया के यहां गये। वहां से विद्यालय के काम से भगवानदासजी बागला, केदारमलजी लडिया आदि की दूकान पर गये। बाद में दूकान जाकर कुलाबा गये। रोजगार-सम्बन्धी कामकाज देखा। अकोला की १०० गांठें २७९ में बेची। गजा-नन्दजी आदि से विद्यालय-सम्बन्धी बात की। भुसानवालों के यहां से ३ गांठें लेने के लिए चिट्ठी मंगाई। बैजनाथजी नेवटिया मिले। अंधेरी ६-७ की गाड़ी से आये। रेल में रामनारायणजी व सूरजमलजी से विद्यालय-सम्बन्धी बातें होती रही।

१३-४-१२

बंबई १२-५ की गाड़ी से आया। दूकान पहुंचते ही खेमराजजी के यहां से आदमी बुलाने आया। वहां से ताराचन्दजी की दूकान गये। सीतारामजी

की ओर से विद्यालय के चन्दे में २७०० रुपये लिखवाये। नैनसुख प्रताप से ११०० रुपये और बंशीधर मंगतुलाल से ७०१ रुपये लिखवाये, फिर ताराचन्दजी घनश्यामदासजी की दूकान पर गये। उनसे फिर सभापति होने को कहा। और भी कई तरह की बातचीत हुई। बाद में दूकान होकर कुलाबा आया। थोड़ी देर ठहरकर ५-३८ की गाड़ी से अंधेरी आया। ८-११ की गाड़ी से व्रजमोहनजी के साथ मैदानिया (प्रदर्शनी) गये और कुछ खरीदी की। एक्सेलसियर में सिनेमा देखकर ११-३६ की गाड़ी से अंधेरी आये। आज १॥ बजे सोया।

१४-४-१२

बंबई से बालुभाई, भगवानदास, छोटेलाल व बंगाली युवक आये। व्यापार-संबंधी कई प्रकार की बातें हुईं। सभी १२-१० की गाड़ी से बंबई आये। रास्ते में बातचीत होती रही। दूकान जाकर पगड़ी बांधी और खेमराजजी की दूकान पर गये। वहां से चौपाटी पर जैनारायणजी दानी के बंगले डेप्युटेशन लेकर गये। उनसे कई तरह की बातचीत हुई। उनसे विद्यालय के लिए २१०० रुपये लिखवाये। वापस आकर पं० दीनदयालुजी से मिलने चन्दाबाग गये। माधवबाग जाकर सभा की व्यवस्था की। आये लोगों को बिठाया। अध्यक्ष का स्वागत कर आसन पर बैठने की सूचना की। कार्य शुरू हुआ। 'मनुष्य जीवन' पर पं० दीनदयालुजी का बहुत अच्छा व्याख्यान हुआ। खेमराजजी की गाड़ी में बैठकर ग्रांटरोड आये। उनसे उनके घर-सम्बन्धी बातचीत हुई। त्रिभुवनदासजी से भी बातचीत।

१५-४-१२

बालुभाई आये। उनसे बातचीत की और ११-१० की गाड़ी से बंबई आये। दूकान जाकर चिट्ठियां लिखीं। माधवरावजी सप्रे पूना से आये थे। उनसे पुस्तक के विषय में बातचीत की। भगवानदास, बालुभाई व लच्छीरामजी के साथ छोटेलाल पारिख के आफिस में गये। वहां से भगवानदास इंडिया इंजिनियरिंग के आफिस गये। भगवानदास के सीर (साझे) में स्टोर का काम करने का निश्चय हुआ। कुलाबा गये। अंधेरी ६-७ की गाड़ी

से गया। रेल में रामनारायणजी रूइया ने भूतकाल में जीवन कैसे बीता और भविष्य में कैसे विताना यह प्रेम से सविस्तर बताया। उनके विचार अच्छे थे और मैंने भी कुछ बातें उनसे कहीं। मृत्युपत्र (वसीयत) बनाने का निश्चय हुआ। भोजन कर घीसूलाल से खेमराजजी के झगड़े की बात सुनी। रामनारायणजी के यहां जाकर ताश खेला। थोड़ी देर शतरंज भी। ११ बजे सोना।

१६-४-१२

आज जल्दी ही बाल बनवाकर १०-२७ की गाड़ी से बंबई व्रजमोहनजी की दूकान पर गया। श्रीनिवासजी जालान वर्धा से आये, उनसे बातचीत की। ताराचंदजी वगैरा को बुलवाया और चैनीरामजी जेसराज के यहां गये। भगतरामजी सीताराम से बात करके मेमराजजी रामभगत के यहां गये। वहां उमरावसिंहजी प्रह्लादरायजी नहीं मिले। पृथ्वीराज भगवानदास और रामकरणदासजी रामविलास के यहां गये। उन्होंने ११००रुपये चन्दे में भरे। दूकान पर गये, पर आलस आने लगा। मथुरा पू० रामगोपालजी को विद्यालय और स्टोर दूकान करने के विषय में सविस्तर पत्र लिखा। कुलाबा ५ बजे के करीब गये और रामचंद्र को लेकर खेमराजजी रामभगत के ५१०० रुपये भरवाये। और कइयों से मिले। लल्लुभाई से रेल में विद्यालय-संबंधी अंधेरी तक बात होती रही। उनसे इस काम में मदद मिलने की आशा है। भोजन कर रामनारायणजी के यहां गये। ताश खेली।

१७-४-१२

जल्दी दैनिक कार्य से निवृत्त होकर बंबई ११-२० गाड़ी से गया। दूकान के पत्र देखकर जबाव दिये। आज आनरेबल लल्लुभाई ने अपनी लड़की की लिखी हुई सब किताबें भेजी। गेइटी थियेटर में नल-दमयंती नाटक देखने ३।। बजे गये। बलीरामजी ने कहा कुलाबा में वर्धा की ४१४ गांठें २८७ के भाव में बेची।

१८-४-१२

११-१० की गाड़ी से बंबई। रेल में रामनारायणजी साथ थे। दूकान जाकर

खेमराजूजी के यहां गया। वहां से सबको साथ लेकर बड़े-बड़े दलालों के यहां गया। तीन घंटे में करीब नौ हजार रुपये हुए। फिर खेमराजजी की दूकान जाकर चन्दावाड़ी पं०दीनदयालुजी के पास गये। वह आज जानेवाले थे। उनकी १०१ रुपये भेंट और टिकिट खरीदकर दी। ग्रांट रोड स्टेशन से ५-१८ की गाड़ी से अंधेरी गये। रामनारायणजी से पडितजी के जाने की बात कही। भोजन कर ११ वजे की गाड़ी से कुलावा जाकर पंडितजी से अच्छी तरह मिले। वहांपर कई सज्जन आये थे। रेल में ग्रांटरोड तक उनके साथ आये। मारवाड़ी विद्यार्थीगृह वर्धा के डेपुटेशन में साथ आने की स्वीकृति दी। आजतक विद्यालय के लिए १,२५,६५६ रुपये एकत्र हुए।

१९-४-१२

खेमराजजी के यहां १२ वजे गये। वह नहीं मिले। दूकान जाने पर उनके यहां से आदमी आया, फिर दो वजे वहां गये। विचार हुआ कि आज फिर राजा मोतीलालजी के यहां जावें और विद्यालय के चन्दे-संवंधी नवकी करके चैक लिया जाय। दो मोटरों में ८ लोग वहां गये। वहां जाने पर कुछ देर वाद राजासाहव आये। उनको मानपत्र मैंने पढ़कर सुनाया। वाद में विद्यालय-संवंधी वातचीत की। उन्होंने ११००० रुपये देने का वादा किया, वहां से मोटर से कुलावा गये। मोटरों का १७ रुपया किराया चुकाया। अंधेरी ६-७ की गाड़ी से गये। रामनारायणजी से शिवलालजी पित्ती की वात की। आज अखवार में पढ़ा कि सवसे वड़ा एक जहाज लंदन से अमरीका जा रहा था। उसमें १५६६ आदमी थे। उसके डूवने से सव लोग संसार से विदा हुए। उसमें कई प्रतिष्ठित करोड़पति भी थे। समाचार पढ़कर रोमांच हुआ। परमात्मा की मर्जी।

२०-४-१२

वंवई १२-५ की गाड़ी से गये। दूकान जाकर किले में पेटीवाले के यहां गये। पेटी खरीदी, वह अच्छी थी। वहां से दूकान जाकर पत्र-व्यवहार करके कुलावा गया। वहां ताराचंदजी भिवानीवाले मिले। भुसान के आफिस में गये। खुशालचंदजी, गोपालदासजी के वड़े मुनीम, चुन्नीलालजी तथा

गिरधारीलालजी इंजिनियर आदि मिले। आज हाजर में गांठें नहीं बिकी। अकोला २०० गांठें २७५ में खरीदी। अंधेरी ६-७ की गाड़ी से आये। रामनारायणजी रेल में मिले, उनसे विद्यालय तथा घर-संबंधी बातचीत हुई। उन्होंने अपने सही विचार साफ दिल से कहे। रामनारायणजी के यहां गये। वहां बातचीत और ताश खेले। उन्होंने शुक्रवार को लोणावला चलने के लिए आग्रहपूर्वक कहा।

२१-४-१२

आज बंबई नहीं गये। बालुभाई के बंगले १२ बजे गये। उनसे व पं० अनंतप्रसाद से बातचीत कर माधवबागवालों के बंगले गये, उनसे बातचीत की। बंगले का फर्नीचर बहुत ही सुंदर था। बंगले में हवा भी अच्छी आती थी। घर आकर पत्र लिखे। आज पं० अनंतरामजी का अपने यहां हरिकीर्तन था, उसकी तैयारी करवाई। बिछायत करवाई। शिवप्रसादजी गाड़ोदिया बंबई से ५ बजे के लगभग आये। वह रात को यहींपर रहे। ६ बजे सब तैयारी कर घूमने गये। बैजनाथजी, गजानंदजी, लल्लुभाई, रामनारायणजी आदि से मिला। हरिकीर्तन में आने को कहा। हरिकीर्तन ८॥ बजे के करीब शुरू हुआ। त्रिभुवनदासजी व लल्लुभाई परिवार के साथ, रामनारायणजी रूइया, बैजनाथजी आदि कई प्रतिष्ठित सज्जन आये। कीर्तन बहुत ही अच्छा हुआ। सभी प्रसन्न हुए। अनंतरामजी अच्छे विद्वान व सात्विक वृत्ति के मालम दिये। वह राधनपुर में कई वर्षों तक दीवान रह चुके थे। नरसी मेहता के परिवार के हैं। शिवप्रसादजी को सबसे मिलाया। बालुभाई बंबई से आये थे।

२२-४-१२

शिवप्रसादजी के यहां गये। फिर भोजन कर थोड़ी देर आराम किया। ११-३० की गाड़ी से बंबई गये। दूकान जाकर पत्रादि देखे। खेमराजजी के यहां तलाश करवाया। वह दूकान पर नहीं थे। किला होकर कुलाबा गये। वहां बाजार की रंगत देखी। बाजार तेज था। ६-७ की गाड़ी से अंधेरी आये। रेल में रामनारायणजी मिले। शुक्रवार को लोणावला आने को

कहा।

२३-४-१२

बंबई ११-१० की गाड़ी से गये। दूकान पर जाकर पू० रामगोपालजी का मथुरा से पत्र आया उसका जवाब दिया और भी पत्र लिखे। कुलाबा गये। रूई के बाजार का रंग तेज दिखाई दिया, इसलिए कुछ गांठें खरीदीं। चर्च-गेट से ६-७ की गाड़ी से रवाना हुए। पाठकसाहब से मिलने का विचार हुआ। इस कारण बांदरा उतरकर उनके बंगले गये। छोटा-सा बंगला समुद्र-किनारे था। वह नहीं मिले, उनकी पत्नी मिली। बातचीत की। उन्होंने कहा कि वह देर से आवेंगे। कल बंबई में मिल लेवें। वापस आये। बांदरा में बहुत-से पारसी तथा यूरोपियन रहते हैं। यहां के प्रभु जाति के डाक्टर एक यूरोपियन स्त्री से विलायत में विवाह करके ले आये थे। उन्हें देखा। उनका वृत्तांत्त सुना। पहली स्त्री के लड़के सांताक्रुज में रहते हैं। धिक्कार है उसे! ब्रजमोहनजी ने गोठ व नाच का विचार किया। गोठ का निश्चय किया, नाच का नहीं।

२४-४-१२

बंबई १०-१० की गाड़ी से। बांदरा में पाठकसाहब परिवार-सहित मिले। ग्रांटरोड से चर्नीरोड तक उनसे बातचीत हुई। उन्होंने बताया कि वह २॥। की गाड़ी से मद्रास जानेवाले हैं। दूकान जाकर पत्र लिखे, बाद में हार लेकर २॥ बजे स्टेशन गया। पाठकसाहब व उनकी स्त्री को हार पहनाये। वे बहुत खुश हुए। स्टेशन से गाड़ी छूटने पर भुसान के आफिस गये। रूई का रुख तेजी का बताया। वहां से स्पीसी बैंक में गये। चुन्नीलाल नहीं मिले। मर्चेंट बैंक में गये। जयनारायणजी दानी मिले। विद्यालय-संबंधी बातें करने पर वर्धा में मर्चेंट बैंक की शाखा के विषय में विचार हुआ। उनका मन अनुकूल था, पर निश्चय बाद में करेंगे, ऐसा कहा। अंधेरी ६-७ की गाड़ी से गया। रेल में जामनगर राजघराने के जोरावरसिंहजी, मुलजी जेठा के चतुरभुजजी व प्रधान आदि से परिचय और बातचीत। रूई के तोल के बारे में बहुत-सा विचार चलता रहा।

२५-४-१२

अंधेरी से ११-१० की गाड़ी से बंबई गया। व्रजमोहनजी की दूकान पर गये। वहां घर पर बनाया हुआ आईस्क्रीम खाया। खेमराजजी की दूकान पर गये। वहां नहीं थे। वर्धा से दस्तावेज आया, उसपर साक्षी करवाई। डेप्युटेशन बनाकर चेनीराम जेसराज के यहां गये। उन्होंने विद्यालय के चन्दे में ३१०० रुपये लिखे। वहां से १-२ जगह और भी गये, लेकिन सफलता नहीं मिली। कुलावा गये। वहां वल्लभदासजी के मुनीम चुन्नीलालजी व मेघराजजी दलाल से विद्यालय-संबंधी चर्चा हुई। ५-४८ की गाड़ी से अंधेरी आये। सुना कि सीतारामजी सिंघानिया की नई साली का, जिसकी उम्र १९ साल की बताते हैं, बरेली में ६५ साल के बूढ़े के साथ विवाह हुआ। रंज हुआ।

२६-४-१२

जल्दी उठकर पहाड़ पर निपटने गया। फत्तुलाल रुइया साथ में था। २-३ दिन के लिए लोणावला में जाने का विचार होने से व्यवस्था की। १२-५ की गाड़ी से बंबई गये। २-४५ की पूना मेल से लोणावला फर्स्ट क्लास में गये। नेरल में श्री बार्लिंगे मिले। सोमवार को माथेरान के लिए आवेंगे, यह समाचार वर्धावाले श्री नायडू को पहुंचाने को उनसे कहा। लोणावला ५-५८ को पहुंचे। स्टेशन पर रामनारायणजी गाड़ी लेकर आये थे। मैंने उन्हें देखा, पर आगे के डिब्बे में होने से उन्होंने मुझे नहीं देखा। त्रिभुवन-दासजी से पूछ-ताछ कर वह चले गये। मैं तांगा करके बंगले पहुंचा। खेतसी भाई से बहुत देर तक बातचीत होती रही। रामनारायणजी घूमकर आये। भोजन के बाद कई तरह की बातचीत होती रही। रात को दरवाजा बंद करने पर भी ओढ़ने की जरूरत हुई।

लोणावला २७-४-१२

हाथ-मुंह धोकर रामनारायणजी के साथ सूरजमलजी के यहां गये। वहां से पैदल ही पूरणमल सिंघानिया के बंगले गये। वह बंबई गया था। नौकरों से उसकी तबीयत के विषय में पूछा। अफसोस रहा। बंगले जाकर स्नान-पूजा,

भोजन और आराम किया। रामनारायणजी से बातचीत के बाद खेतसी-भाई, सूरजमलजी, हेमराजभाई के साथ ताश खेला। बाद में ६ बजे मोटर से कार्ले की गुफा देखने गये। रामनारायणजी नीचे ही रहे, सूरजमलजी के साथ ऊपर गये। दो माईल की चढ़ाई थी। ऊपर पहुंचकर गुफा देखी। मनोहर तथा देखने योग्य थी। ४९ खंभों पर कमान लगी हुई नग्न मूर्तियां थीं। दृश्य अच्छा था। बौद्धों की बनाई हुई है। लौटकर निबटे। भोजन किया। रामनारायणजी से विद्यालय व मारवाड़ी-कान्फरेंस वर्धा करने आदि विषयों पर बहुत-सी बातचीत हुई। उन्होंने कान्फरेंस वर्धा बुलाने के प्रति सहानुभूति बताई और आने को कहा। उनके विचार सराहनीय थे।

२८-४-१२

रामनारायणजी को बंबई से आया हुआ पत्र सुनाया। गुरुवार को विद्यालय की मीटिंग करने का निश्चय किया। सूरजमलजी के साथ यूरोपियन लोग रहते हैं। उस रास्ते पैदल घूमते हुए स्टेशन होकर त्रिभुवनदासजी के बंगले गये। वहां से खिलौने की दूकान से ५ रुपये के खिलौने खरीदकर सूरजमलजी के बंगले आये। करीब मील-भर घूमना हुआ। पत्र लिखकर सूरजमलजी के साथ भोजन किया, बाद में फल खाकर रामनारायणजी के बंगले मोटर से आया। कुछ देर आराम किया। रामनारायणजी को विद्यालय की रिपोर्ट सुनाई। सूरजमलजी आये। ताश खेलकर स्टेशन गये। श्रीपतराव दीवान से मिले। वहां से टाटा हाइड्रो इलेक्ट्रिक का काम देखने गये। काम जोरों से चल रहा था। बंगले पर जाकर निपटे। सूरजमलजी खेतसीभाई आदि के साथ भोजन किया। बंबई से रामरिखजी आये। खेतसीभाई की बात सुनी। रामरिखजी से नरसिंहदासजी के यहां की बातें सुनीं।

माथेरान २९-४-१२

जल्दी उठकर स्नान कर पूड़ी खाकर ८-१३ की मेल ट्रेन से माथेरान जाने को रामनारायणजी के साथ स्टेशन आये। वहां सूरजमलजी, खेतसीभाई, हेमराजभाई आदि आये थे। गाड़ी में बैठकर नेरल आये। बारलिंगे ने

स्टीम ट्रामवे में अच्छी तरह बिठाया। गोपाल स्वामीजी मेल ट्रेन से रवाना होकर अमीन लाज में ठहरे। वर्धा के नायडू वकील मिले। माथेरान पहुंच-कर लक्ष्मी हिंदु होटल में ठहरे। ३ बजे घूमने निकले। घोड़े पर बैठकर नायडू के बंगले गये। फोटो निकालने का विचार था। लेकिन फोटोग्राफर देरी से आया, इसलिए फोटो नहीं निकलवा सके। नायडूसाहब के साथ सीन-सीनरी देखी। होटल में ६ बजे आये। वहां से, आदमी खींचते उस गाड़ी (रिक्शे) में बैठकर, फुलगोरीसाहब के बंगले गये। वहां से दृश्य बहुत अच्छा दीखता था। मैनेजर बहुत ही प्रेम से मिला। दिन में दृश्य बड़ा ही मनोहर दिखाई देता था। हवा बहुत ठंडी थी।

बंबई ३०-४-१२

जल्दी उठकर हाथ-मुंह धोकर होटल का बिल चुकाया। घोड़े पर बैठकर फोटो निकलवाया। ७-५० की गाड़ी से नेरल के लिए रवाना हुए। रास्ते में वर्धावाले नायडू वकील मिले। सवेरे माथेरान का दृश्य बड़ा ही मनोहर था। नेरल पहुंचकर बार्लिगे के बंगले गये। उसकी स्त्री आदि से मिले। बाद में पूना मेल से बैठकर ११।। बजे बंबई आये। दूकान पर स्नान-भोजन कर पत्र पढ़े। चर्नीरोड से १-१२ की गाड़ी से अंधेरी आये। अमरचंदजी साथ में थे। अंधेरी स्टेशन पर सप्रेजी, वृद्धिचंद्रजी मिले। बंगले पर आये। सूरजबाई से रामायण पढ़ी। भोजन के बाद खुली हवा में सप्रेजी व वृद्धि-चंद्रजी से बातचीत की। सप्रेजी पूना के लिए रवाना हुए। व्यासजी का गायन सुना।

१-५-१२

बंबई १२-५ की गाड़ी से गया। दूकान जाकर रामनारायणजी रूइया के यहां बरोरा जीन प्रेस के बारे में बातचीत करने गये और वहां से खेमा-राजजी के दूकान गये। खेमराजजी को साथ लेकर जयनारायणजी दानी के पास मर्चेंट बैंक में गये। यहां गजानंदजी नेवटिया भी थे। दानीजी ने विद्या-लय का जो विधान बनाया, वह सुना। बाद में सर कस्तूरचंदजी को फोन कर दूसरे दिन १०।।। बजे उनके यहां एकत्र होने का निश्चय किया। नद-

रोजजी गामडिया मिले। उनसे वर्धा में बैंक खोलने को कहा। फिर कुलाबा गया। भुसान के आफिस में देर लगी। वहां से दामोदरदासजी राठी से मिलने बाजार में आये, लेकिन वह चले गये थे। ६-३८ की गाड़ी से अंधेरी गया और भोजन कर रामनारायणजी के यहां आया, उनसे जीन प्रेस की बात हुई। सुखडवाला की लायब्रेरी देखी।

२-५-१२

पूज्य रामगोपालजी के पत्र का जवाब और अन्य पत्र लिखे। १०-१० की गाड़ी से रवाना होकर रामनारायणजी को साथ लेकर चर्नीरोड उतरा। वहां से गोकुलदास माधवजी के बंगले पर कस्तूरचंदजी से मिला। दानीजी का बनाया हुआ विद्यालय के विधान का मसौदा पढ़ा। रामनारायणजी ने कहा कि उसे हिंदी में छपवाकर सबकी सम्मति लेनी चाहिए। रामनारायणजी को उनकी दुकान छोड़ अपनी दूकान करीब १२ बजे पहुंचे। बरोरा जीन प्रेस के संबंध में सीताराम शेंडे व रामरिखजी से बातचीत की। फिर दूरबीन वगैरे ली। डेविड ससून के आफिस गये। ताराचंदजी से बरोरा जीन प्रेस का सौदा पक्का किया। वहां से कुलाबा गये। दूकान से टेलीफोन आया कि नवाजबाई डाक्टरनी मिल सकती है, इसलिए उसके यहां गये। वह मिली उससे दवाई ली और अंधेरी आये। ताराचंदजी का कुलाबा से संदेसा आया। उनसे कल मिलने को कहा।

३-५-१२

रामनारायणजीवाले ताराचंदजी आये। जीन प्रेस का सौदा पक्का हुआ। उसकी सौदा-चिट्ठी पर दस्तखत करने को कहा। भोजन कर १२-५ की गाड़ी से बंबई गया। वहां जाकर आदमी भेजे व टेलीफोन कर विद्यालय के लिए चन्दा एकत्र करने के लिए डेप्युटेशन तैयार किया। डेप्युटेशन में १०-१२ व्यक्ति हो गये। पूरणमलजी सिंघानिया के यहां गये। काफी चर्चा की। उनकी अनुकूलता दिखाई दी। और भी कई जगह गये। १००२ रुपये मिले। बाद में कुलाबा गये। रामरिखजी से जीन प्रेस लेने की बाबत नरसिंहदासजी को तार दिलाया। बाद में अंधेरी गये। भोजन करके बैठे थे कि

लादूरामजी आ गये। उनसे विद्यालय के डेप्युटेशन की वात हुई। बताया कि नंदलालजी देवड़ा का व्यवहार ठीक नहीं रहा। रविवार को मिलने का निश्चय हुआ।

४-५-१२

१२-१० की गाड़ी से वंवई गये। नरसिंहदासजी मोहता के मुनीम सीताराम पंत, रामरिखजी, अजितसिंह आदि दूकान पर आये हुए थे। रामनारायणजी से जो जीन प्रेस लिया था, वह एक लाख पन्द्रह हजार में नरसिंहदासजी को वेच दिया। कच्ची लिखा-पढ़ी करवा ली। वाद में कुलावा गया, ताराचंदजी मिले। जयनारायणजी का टेलीफोन आया। वहुत देरतक वात हुई। ५-३८ की गाड़ी से अंधेरी गया। रविवार शाम को इष्ट मित्रों को वुलाने और आमरस पूड़ी का भोजन करवाने का विचार हुआ। रामनारायणजी के यहां से वरोरा जीन प्रैस के कागज आये, वे देखे।

५-५-१२

वंवई १०-४० की गाड़ी से गये। रेल में केदारमलजी लडिया, मोतीलालजी देवड़ा आदि से विद्यालय-संवंधी वहुत-सी वातें हुईं। चर्नीरोड उतरकर जयनारायणजी दानी के यहां गये। दानीजी वड़े ही सज्जन हैं। उनके साथ मोटर से गामड़िया के यहां महालक्ष्मी गये। वहुत देर तक वैठे। नवरोजजी से वर्धा में वैंक की शाखा खोलने की वातें हुईं। उनके वात जंची, पर विचार करके पक्का जवाव देने को कहा। उन्होंने अपना मकान दिखाया। वातचीत में वहुत नम्रता दिखाई दी। वहां से दानीजी को घर छोड़ दूकान आये। नरसिंहदासजी के आदमी को वरोरा जीन प्रेस के कब्जे की चिट्ठी लिखकर दी। विद्यालय के लिए डेपुटेशन बनाकर माहेश्वरी पंचायत में गये, वहां थोड़े सज्जन मिले। लेकिन उनका अनुकूल अभिप्राय दिखाई दिया। वड़ा ही मुलाहिजे का व्यवहार किया। अंधेरी ५-१२ गाड़ी से गया। गोठ थी, इसलिए रंगनाथजी, रघुनाथभाई, वालुभाई, हीरालाल, हिरजीभाई, व्रजमोहनजी आदि कई सज्जन साथ आये। आनंद से भोजन किया। जावरे से कामेरी को वुलाने की रंगनाथजी से सलाह की।

६-५-१२

आज १२-१७ की गाड़ी से वंबई जाना चाहते थे, लेकिन पेट में दर्द रहने से निवटे। गुजराती स्त्रियों ने वहुत देरतक भवसागर पढ़ा। बाद में दानीजी ने विद्यालय के नियम गुजराती में वनाये थे, उसे हिंदी में पं० वृद्धिचंद्रजी व अमरचंदजी कर रहे थे, उसे देखता रहा। आज मथुरा से पूज्य रामगोपालजी का पत्र आया। वह ठीक था। वर्धा दूकान का सीर (साझा) निकाल लेने का अपनी ओर से विचार हुआ था, वह मुलतवी रखने का निश्चय हुआ। वंबई ४-३६ की गाड़ी से गया। व्हाईट वे लेडला की दूकान से एक खिलौना लिया। व्यावरवाले दामोदरदासजी राठी के विषय में तलाश किया। वह नहीं आये थे। चौपाटी पर घूमकर नवाजवाई के यहां गया। उसने वर्धा चलने को दो हजार रुपये मांगे। औरतों का हठ होता है। ये लोग सात वहन और सात भाई हैं। उनके घर में विद्या का अच्छा प्रकाश है।

७-५-१२

पूज्य रामगोपालजी के पत्र का जवाव दिया। वंबई १२-५ की गाड़ी से गया और दूकान जाकर पत्र देखकर उत्तर लिखा। दानीजी का टेलीफोन आया। उनसे भाड़मल गुमानमल के यहां जाने का विचार हुआ। दूकान पर जगन्नाथजी आये। डेप्युटेशन वनाकर गाड़मल गुमानमल लोढ़ा के यहां गये। वात तो अच्छी कीं, लेकिन मूंजी पाये गये। वाद में रामदास के लड़के का विवाह था, वहां जुलूस में गया। मरीन लाइन से ७-२२ की गाड़ी से अंधेरी गया। भोजन करके श्री जसावाला का पत्र आया था, उसे अमरचंदजी से सविस्तर सुना। उसके लिए चन्दे की व्यवस्था करने का निश्चय हुआ। और भी पत्र देखे व विद्यालय-संवंधी चर्चा की।

८-५-१२

सवेरे रामनारायणजी से मिला। वंबई ११-१० की गाड़ी से दूकान जाकर पत्रादि देखे। बाद में वालुभाई, भगवानदास, शामराव आदि को बुलाया। उनसे समिति के लिए वनवाये हुए धोती-जोड़े बांटने के संवंध में विचार किया। पहले वैष्णव अनाथाश्रम देखा। वहां १॥ साल का लड़का देखा,

जिसकी सेवा-सुश्रुषा होती थी। संस्था को पचीस रुपये प्रदान किये और ९-१० धोती-जोड़े दिये। वहां से ग्रांटरोड १३वीं गली में अंधों का स्कूल देखा। विद्यार्थियों से लिखवाना, पढ़वाना, हिसाब, गायन, सिलाई कराकर परीक्षा ली। व्यवस्था और पढ़ाई अच्छी है। जीवन में पहली बार ऐसी उन्नति-दायक संस्था देखी। बाद में भायखला का लड़कियों का अनाथाश्रम देखा। वहां भी बड़ा ही उत्तम इन्तजाम था। लड़कियों को मोजे बनाना, छापखाने का काम करते देखा। फिर त्रिपाठी के यहां से पुस्तकें खरीदीं। रेल में आज बहुत भीड़ थी।

९-५-१२

११-१० की गाड़ी से बंबई स्टेशन पर बालुभाई और भगवानदास आये थे उनके साथ चर्नीरोड फर्नीचरवाले के आफिस गये। वहां से उनके फर्नीचर के कारखाने में गये। फर्नीचर ठीक था। आलमारी का आर्डर दिया। वहां से बंदूकवाले की दूकान पर गये। बंदूकें देखकर दूकान पत्रादि देखकर कुलाबा गये। व्रजमोहनजी के साथ यूरोपियन जोतिषी से मिलने गये। वह नहीं मिला। शा वालेस के दफ्तर में गोविंदरामजी से मिलने गये। वह नहीं मिले। बाद में जापान काटन में थोड़ी देर ठहरकर व्हाइट वे लेडला गये। वहां से व्रजमोहनजी ने कुछ खरीदा। ६-७ की गाड़ी से अंधेरी आये। रास्ते में एक यूरोपियन मिला। उसने अपना वृत्तांत सुनाया।

१०-५-१२

बंबई १२-१७ की गाड़ी से जाकर दूकान में पत्र देखे। बाद में मेरवानजी सालिसिटर के आफिस किले गये। वह नहीं मिले। फिर हरी सीताराम दीक्षित के आफिस गये। वह भी नहीं मिले। नागपुर के बी० आर० पंडित मिले, उनसे बातें हुई। बाद में कुलाबा गये। बिरूलवाले को सौ गांठ अमेरिकन लेने को कहा। कुलाबा में भुसान के आफिस गये। ६-७ की गाड़ी से अंधेरी आये। रेल में माही कंपनी का मालिक मिला। उनको गेरेंटेड ब्रोकर की जरूरत थी, उनसे मिलने को व्रजमोहनजी से कहा और रूई के व्यापार-संबंधी चर्चा की।

११-५-१२

बंबई १२ की गाड़ी से गये, साथ में स्त्रियां भी थीं। वल्लभदासजी का मकान देखा। साधारण था। दूकान जाकर मथुरा से आया हुआ पूज्य रामगोपालजी का पत्र पढ़ा। भुसान के आफिस हो कुलाबा गये। रघुनाथ-भाई को लेकर गांधर्व विद्यालय गये। पंडितजी डेप्युटेशन में गये हुए थे, नहीं मिले। रघुनाथ के मालिक अबूबकर मिले। चर्नीरोड से ७-२६ की गाड़ी से अंधेरी जाना और भोजन करके बंगाली पढ़कर सोये।

१२-५-१२

दूकान जाकर माहेश्वरी पंचायत में विद्यालय के कार्य के लिए गये। लक्ष्मण-दासजी डागा उत्साही मालूम दिये। कई विषयों पर बातचीत हुई। सभी ने मालकों को लिखने का अभिवचन दिया। दामोदरदासजी राठी के पास गये। उनसे कई विषयों पर बातचीत हुई। उनको लेकर अंधेरी आया। आज ब्रजमोहनजी गाड़ोदिया के यहां स्नेह-सम्मेलन था। अच्छा हुआ। वर्धा में कालेज करने में राठीजी को हिस्सा लेने को कहा, उन्होंने स्वीकार किया। रात को हरिकीर्तन ठाठ से हुआ। कल का कार्यक्रम बनाया।

१३-५-१२

हाथ-मुंह धोकर राठीजी व अमरचंदजी के साथ वरसोवा गये। हिंद पितामह दादाभाई नवरोजजी के दर्शन किये। उन्होंने मारवाड़ी जाति में अच्छी पद्धति से व्यापार करने की आवश्यकता बताई। घर आये। राठीजी ने वार्षिक श्राद्ध किया। १-२० की गाड़ी से बंबई आकर राठीजी से अंध स्कूल का निरीक्षण करवाया। बाद में गुलाबचंदजी ढड्ढा एम० ए० से मिले। उत्साही नजर आये। बंबई मारवाड़ी विद्यालय के चंदे में राठीजी से ३१०० रुपये लिखवाये। कुलाबा होकर अंधेरी आये और भोजन कर ग्रांटरोड गये। राठीजी से बातें हुईं। जयनारायणजी दानी वहां आये, उनसे विद्यालय के कार्य-संबंधी चर्चा हुई। अंधेरी आकर जाजूजी को बंबई आने के लिए तार किया।

१४-५-१२

बंबई १२-५ की गाड़ी से आया। दूकान पर पत्रादि देखे। किले गया। स्वदेशी बैंक के डायरेक्टर चुन्नीलाल, धरमदास व रूइया से मिले। बैंक की शाखा वर्धा में खोलने की बाबत विचार हुआ। विचार करके उत्तर देने को कहा। वहां से शा वालेस के दफ्तर गये। ताराचंद घनश्यामदासजी के मुनीम गोविंदरामजी से विद्यालय के चंदे के लिए मिले। उनकी सम्मति देखी। रामगढ़ से समाचार आने पर नाम लिखने की कही। कुलाबा जाकर व्रज-मोहनजी को साथ लेकर गुलाबचंदजी ढड्ढा के यहां गये। वहींपर पक्की रसोई जीमे। ढड्ढा बड़े उत्साही और विद्वान सज्जन हैं। वहां से दानीजी के यहां गये। उन्होंने फलों की पार्टी दी। विद्यालय की चर्चा होती रही। उनसे बैंक में भी मिले थे।

१५-५-१२

भुसान कंपनी का बंबई से तार आया। बंबई आफिस में बुलाया था। १०-११ की गाड़ी से बंबई गये। दूकान से आफिस गया। स्कोडासाहब आज मद्रास जानेवाला था। फुलगोरीसाहब से वर्धा एजंसी के विषय में बहुत देर तक बातें होती रही। फुलगोरीसाहब ने अपने कार्य और व्यवहार से प्रसन्नता दिखाई। कुलाबा जाकर बाजार की रंगत देखी। ६-७ की गाड़ी से अंधेरी आये। जाजूजी का रवाना होने का तार आया। सवेरे स्टेशन जाने की व्यवस्था की। आज पूज्य पितामह का वार्षिक श्राद्ध था। भूल से नहीं हो सका, वह अमावस्या को कराने की व्यवस्था की।

१६-५-१२

गर्मी होने के कारण जाजूजी को लाने अमरचंदजी को भिजवाने के लिए जल्दी उठा। घड़ी में ३ बजे थे। फिर व्यासजी से सवेरे तक भजन सुनते रहे। जाजूजी को लेने दादर गया। नागपुर मेल १॥ घंटा लेट होने से वापस आकर तर्पण आदि करवाया। जाजूजी के साथ अत्रेसाहब भी आये। ब्राह्मण को जिमवाकर भोजन किया। जाजूजी से बात कर आराम किया। दादाभाई नवरोजजी के यहां अमरचंदजी के साथ बाणच (फल) भेजे।

बंबई ४ बजे की गाड़ी से गये। ढड्ढाजी दानीजी से मिलकर स्वदेशी स्टोर देखते हुए मैदानिया (प्रदर्शिनी) गये। कस्तूरचंदजी डागा के पास ६ बजे गये। साथ में जाजूजी और अत्रेसाहब भी थे। विद्यालय की चर्चा हुई। डागाजी ने राजा मोतीलालजी से अधिक चंदा भरने में नाराजी प्रकट की। उनको संतोष करवाया। विद्यालय के कार्य-संबंधी चर्चा ११ बजे तक होती रही। सेठ मथुरादास से कई विषयों पर बातें हुई। ट्रस्टी और प्रेसिडेंट के संबंध में विचार किया। १०-१५ की गाड़ी से अंधेरी आये। जाजजी विद्यालय की नियमावली पढ़ते रहे।

१७-५-१२

जाजूजी के नाम जस्सावाला का विलायत से पत्र आया। उसे अमरचन्दजी ने सबको पढ़कर सुनाया। १-२० की गाड़ी से बंबई गये। दूकान जाकर पत्र देखे। जाजूजी बाजार में घूमने गये। वापस आने पर दूकान पर ही भोजन किया। बाद में मुंबा देवी माधवबाग के दर्शन करते हुए गुलाबचन्दजी ढड्ढा के यहां गये। वहां से दानीजी के यहां। पूनावाले रायबहादुर रामनारायणजी राठी भी आये हुए थे। उनसे विद्यालय-सम्बन्धी चर्चा। कल १० बजे कस्तूरचन्दजी के यहां ट्रस्टियों के विषय में विचार करने के लिए मिलने का निश्चय हुआ। कुछ प्रबन्ध-कर्ताओं के नाम लिखे। चर्नीरोड से अंधेरी आया।

१८-५-१२

सवेरे रामगढ़, लोणावला, मथुरा, पुलगांव तार दिये। ९-१२ की गाड़ी से जाजूजी, अत्रे, पुंगलियाजी के साथ बंबई गये। रेल में उमरावसिंह डालमियां आदि से विद्यालय-सम्बन्धी चर्चा की। सर डागा के बंगले गये। थोड़ी देर बाद दानीजी भी आ गये। काफी देर तक चर्चा होने पर इतवार को ४ बजे सभा करने का निश्चय हुआ। दूकान आये। ताराचन्दजी घनश्यामदासजी के मुनीम गोविंदरामजी से बहुत देर तक बात हुई। रामगढ़ से आया हुआ तार बताया। लक्ष्मणदासजी डागा से बहुत देर तक बातचीत होती रही। उनका विद्यालय के सम्बन्ध में उत्साह ठीक देखा। जुहारमलजी

खेमका के मुनीम जगन्नाथजी खेमका भी आये थे। वहुत देर तक बैठे जाजूजी डा० राव के यहां गये। सभा के लिए स्थान का इन्तजाम किया। रेल में दानीजी मिले।

१६-५-१२

अंधेरी से वंवई १०-३६ की गाड़ी से आया। रेल में हरी सीताराम दीक्षित से विद्यालय-सम्वन्धी वातचीत की। दूकान जाकर सभा के नोटिस भेजे। सभा के लिए मार्केट की जगह मांगी। विद्यालय की नियमावली के प्रूफ आये, सो देखे। चार वजे गोविंदलालजी पित्ती आदि को लेकर सभास्थल पर गये। सर कस्तूरचन्दजी आये। ताराचन्दजी घनश्यामदास के मुनीम गोविंदरामजी आये। सभा का कार्यक्रम शुरू हुआ। कई लोग, चन्दा न देना पड़े इसलिए, कार्य को हानि पहुंचाने का प्रयत्न कर रहे थे, पर परमात्मा की कृपा से आवश्यक कार्य विधिवत् पूर्ण हुआ। कार्य को हानि पहुंचे, ऐसा एक वार मौका आया, पर धीरज और चतुराई से काम संभाल लिया। गोविंदलालजी पित्ती से विद्यालय-सम्वन्धी वात हुई। मरीन लाईन से अंधेरी आना। रेल में गजानंदजी नेवटिया मिले।

२०-५-१२

जयनारायणजी दानी व लक्ष्मणदासजी डागा आये। उनसे विद्यालय-संवंधी वातचीत होने पर जाजूजी, व्रजमोहनजी आदि के साथ भोजन आनन्द से किया। दानीजी व डागाजी १०-४० की गाड़ी से गये। विश्राम किया। जाजूजी अत्रेसाहव से कई विषयों पर वाद-विवाद होता रहा। वंवई ४ वजे की गाड़ी से आये। दूकान जाकर स्वदेशी स्टोर होते हुए कुलावा गया। दूकान पर यह खबर सुनी कि लक्ष्मीनारायणजी डिविजनल जज आये। कुलावा व किले से स्टेशनरी का सामान लेकर चर्चगेट से चले। गोवर्धन-दासजी, गोकुलदास तेजपालवाला, दादाभाई नवरोजजी के जंवाई दादीना व घोलकर से वातचीत होती रही। डा० दादीना वड़े ही योग्य मालूम हुए। उन्होंने माणकबाई को अपने यहां भेजने को कहा।

२१-५-१२

स्नान आदि से निवृत्त होकर पूजा कर रहे थे तभी लक्ष्मीनारायणजी डिवि-जनल जज तथा उनके दोस्त सागर के वकील आये। भोजन कर १२-१८ की गाड़ी से बंबई गये। दूकान जाकर पत्र लिखे। दानीजी का फोन आया। उन्होंने शाम को भोजन के लिए बुलाया। शाम को जाजूजी, अत्रे आदि सब लोग उनके यहां गये। अच्छी तरह से भोजन किया। हैदराबादवाले राम-कृष्णजी आदि भी थे। बाद में सर डागाजी के यहां गये। विद्यालय-सम्बन्धी विविध चर्चा देर तक होती रही।

२२-५-१२

रामनारायणजी रुइया के यहां से कुलावा आया। उनसे मिला। बहुत-सी बातें हुईं। रामनारायणजी भी साथ में थे। दूकान जाकर दानीजी को टेलि-फोन किया। विद्यालय के लिए नोट लेने शंभुप्रसाद दूकान पर आया। १२-२८ की गाड़ी से चर्नीरोड से अंधेरी आये। विश्राम करके हिंद पिता-मह दादाभाई नवरोजजी के यहां जाजूजी के साथ गये। बातचीत हुई। माणकभाई से मिले। बंगले जाकर घूमने गये। लल्लुभाई आदि के बंगले देखते हुए घर आये। भोजन कर ब्रजमोहनजी ने जोगी[1] को बुलाया था, उससे निहालदे[2] सुनी।

२३-५-१२

नित्य कर्म से निवृत्त हो पुस्तकें आदि वर्धा भेजने के लिए पेटी में बन्द कीं। स्नान-भोजन किया। माणिकभाई दादीना से वर्धा आने की बातचीत की। बंबई ११-१० की गाड़ी से जाना। दूकान पहुंचकर पत्र देखे व लिखे। बाद में किले जाकर गुलाबचन्दजी ढड्ढा व दानीजी से मिले। कुलाबा होते हुए चर्चगेट से अंधेरी। भोजन कर आम खाकर कुछ देर निहालदे सुनी।

२४-५-१२

गुलाबचन्दजी ढड्ढा आये। उनसे वार्तालाप होता रहा। बाद में डा० दादीना

[1] गाकर इतिहास व लोक-कथा सुनानेवाले।

[2] राजस्थानी लोककथा।

आये। कहा कि माणकबाई को वर्धा भेजने को तैयार हैं। फीस ८ रोज की २०० रु० बताई। पर बाद में १५ रुपये रोज की रही। १२-११ की गाड़ी से बंबई। दूकान पहुंचे। इतने में दानीजी का विद्यालय के काम के सम्बन्ध में फोन आया। पत्र देखे। चांदी के बर्तन, हीरे की अंगूठी आदि खरीदी। भुसान के आफिस में जाकर दानीजी से मिले और कुलाबा गये। दानीजी के बैंक में गोविंदरामजी लोया से विद्यालय-सम्बन्धी बातचीत बड़ी देर तक होती रही। वहां लक्ष्मणदासजी आदि मिले। ८ बजे की गाड़ी से अंधेरी आये। दाभोलकर मिले। भोजन कर वर्धा से शिवनारायणजी लढ्ढा आये, उनसे वहां की खबर पूछी।

२५-५-१२

बंबई से बालुभाई, भगवानदास आये। उनसे बातचीत की। बालुभाई को जत्थे में सुधार करने को कहा। माणकबाई से वर्धा चलने के बारे में बातचीत हुई। चार सौ रुपये महीने के हिसाब से देने को कहा। दूकान व बोरीबंदर गया। भुसान के मैनेजर फुलगोरीसाहब ने सर्टिफिकेट बताया। ५-११ की गाड़ी से अंधेरी गये। भोजन कर ८-११ की गाड़ी से सर डागा से मिलने बंबई आया। वह नहीं मिले। जाजूजी के साथ अंधेरी आये। ब्रजमोहनजी, लच्छीरामजी, शिवनारायणजी से १॥ बजे तक बातें होती रहीं।

२६-५-१२

सबरे जल्दी उठकर निवृत्त हुए। ताराचंदजी व पालीरामजी आये। जीन प्रेस की बातचीत हुई। भोजन कर १०-३६ की गाड़ी से बंबई जाना। दूकान गये। सीतारामजी पोद्दार आये। स्टेशन गये। दानीजी, सीतारामजी पोद्दार, ताराचंदजी, ब्रजमोहनजी, रंगनाथजी, चंदूलाल संपादक आदि कई सज्जन पहुंचाने आये। फर्स्ट क्लास की सीट रिजर्व थी। १ बजे रवाना हुए। रास्ते में कोई तकलीफ नहीं हुई। पानी का कष्ट रहा। पर भुसावल में पीकर सो गये।

वर्धा, २७-५-१२

सबेरे पुलगांव स्टेशन पर मानमल, बंसीलाल आये। वर्धा स्टेशन पर बिरदी-

चंदजी आदि ५०-६० सज्जन थे। विद्यार्थी भी थे। घर आकर नित्यकर्म से निवृत्त हो भोजन कर आराम किया और विरदीचंदजी के यहां गये। सब-से मिले। बद्रीनारायणजी से बहुत-सी बातें हुईं। महावकसजी के यहां बैठने गये। बगीचे गये। रामनारायणजी पोस्टमास्टर मिलने आये। भोजन कर रामकिसन पूंजाजी के यहां गये। वहां से फिरने गये। बालुजी, बंसीजी साथ में थे।

वर्धा-हिंगनघाट २८-५-१२

रामकिसनजी के यहां गये। दूकान पर दुबे तहसीलदार मिलने आये। भोजन कर आराम किया। आराध्ये से कन्या पाठशाला का निश्चय किया। हीरा-लालजी को बुलाकर जगह निश्चित की। हिंगनघाट से तार आया। शाम की मोटर से हिंगनघाट गये। पू०जीवराजजी वगैरा राह देख रहे थे। वहां जाकर भोजन किया।

हिंगनघाट-वर्धा २९-५-१२

स्नान कर पोद्दारों की दूकान आये। चुनीलाल से जीन की बात की। रंग जमने लायक नहीं देखा। श्री वल्लभजी को हिसाब दिया। रुपये भेजने को कहा। श्री वल्लभजी के यहां भोजन किया। गोपीकिसनजी अगरवाल व पुरुषोत्तमदास कोठारी आये। ताश खेले, कलेवा किया। पुरानी मिलवालों का तांगा बुलाने के लिए आया, वहां गये। ठंडाई ली, पान खाया। मिल मैनेजर बेलचम् का मारवाड़ी बीकानेर ड्रेस में फोटो देखा। अच्छा था। पोद्दारों के बगीचे गोपीकिसनजी के साथ टेनिस खेले। पू० जीवराजजी के साथ भोजन कर रात की गाड़ी से वर्धा आया।

३०-५-१२

मारवाड़ी कन्या पाठशाला खोलने का इरादा था, उसपर विचार किया। अध्यापिका रमाबाई से काफी देर तक बातचीत होती रही।

३१-५-१२

कन्या पाठशाला का मुहूर्त किया। जाजूजी भी बंबई से आ गये थे। मुहूर्त में पू० जीवराजजी भी आये। लड़कियां आईं। भोजन के बाद विश्राम किया।

जाजूजी आये। वंबई की विविध बातें होती रहीं। जाजूजी को विल (वसीयतनामा) वनाने को कहा। शाम को पू० वालुजी के साथ मनीरामजी के यहां वैठने गये। वहां से गोरक्षण का निरीक्षण करने गये। रात को विद्यार्थीगृह की खतौनी करवाई। गिगाजी, (वृजमोहनजी सराफ) चतुर्भुजजी, चांदमलजी सरावगी (हिंगनघाट वाले) आये।

१-६-१२

पोद्दारों के यहां रामचंद्र वीमार था और जीवराजजी आये हुए थे, इसलिए गया। वहां डेढ़-दो घंटा तक वैठकर कन्या पाठशाला का निरीक्षण करके स्नान और भोजन किया। दुवेजी तहसीलदार आये। टाटा-कंपनी के शेयर्स व कागजों पर दस्तखत किये। मथुरा पत्र दिया। व्यवहार-संवंधी काम देखा और पोद्दारों के यहां गया। पू०जीवराजजी के साथ कई विषयों पर चर्चा हुई। उनके साथ् वगीचे व वंगले आये। जाजूजी आये। कल अमरस के भोजन का निश्चय हुआ।

२-६-१२

भोजन कर म्युनिसिपल कमेटी की मीटिंग में गये। वहां से पोद्दारों के यहां होते हुए घर आये। दूकान का कामकाज देखा। हरिराम मुरारका की स्त्री का देहान्त हुआ था, वहां वैठने गये। शाम को पोस्टमास्टर आये। अमरस-पूड़ी का भोजन वना था। छतपर वैठकर आनंद से श्लोकों के साथ भोजन हुआ।

३-६-१२

खान वहादुर महम्मद सरवर से मिले। वाद में वंवावालों से मिले। म्युनिसिपल कमेटी की मीटिंग में गया। इश्तियाक अली घर आये। कन्ट्राक्टर को काम दिखाया। बद्रीनारायणजी पुलगांव से आये। जीन प्रेस का जमा-खर्च किया। पू०बिरदीचंदजी आज बंबई गये। शाम को रामचंद्र के पास बैठे। बद्रीनारायणजी से विक्री-पत्र आदि की बात हुई। हरसामलजी व जाजूजी से वातचीत।

४-६-१२

हरसामलजी आये। मथुरा को पत्र लिखवाया। पोद्दारों के यहां गये। नौकरों तथा विद्यार्थियों को बंबई से लाये हुए आम बांटे। जाजूजी आये। शिवदत्त राठी के रुपयों की व्यवस्था के लिए दाऊजी को बुलवाया।

५-६-१२

बगीचे जाकर कोठे की जगह देखी। सड़क, कुएं आदि की मरम्मत करवानी थी। राठीजी के यहां गये। किसन की मां बीमार है। २-३ वैद्यों को बुला-कर इलाज-संबंधी विचार किया। पू०जीवराजजी से मिलने कन्या पाठशाला देखते हुए घर आये। बंबई से सामान आया था, वह खोला।

७-६-१२

कर्णिक व शंकरराव चिटनवीस के यहां गये। बातचीत हुई। तानाजी जंबडे से सज्जनगढ़ के विषय में बात की। खाकर घर आये। पुलगांव से बद्रीनारायणजी सकुटुंब आये। बगीचे में ठहराया। भोजन, विश्राम के बाद कामकाज किया। जाजूजी आये। वह आज आर्वी जा रहे थे। उनसे बहुत-सी बातचीत हुई। श्रीधरपंत के खिलाफ पुस्तक छपी थी, सो पढ़ी।

८-६-१२

रामनारायणजी रूइया के मुनीम पालीरामजी आये। उनसे बातचीत। भोजन व आराम के बाद बहुत-से पत्र लिखे। हिंगनघाट से गोपीकिसनजी मुन्सिफ, पुरुषोत्तमजी कोठारी आये। आज विद्यार्थियों की परीक्षा थी। रात को मंदिर में भजन और बाद में गोपीकिसनजी से बातचीत की।

९-६-१२

गोपीकिसनजी व पालीरामजी के साथ बगीचे गया। गोपीकिसनजी भोजन करके नागपुर और पुरुषोत्तमजी हिंगनघाट गये। पालीरामजी, चिमनीराम भी हिंगनघाट गये। जीवराजजी रामचन्द्र को लेकर आये। स्नान-भोजन के बाद म्युनिसिपल आफिस में आनंदराव के साथ जाकर मार्केट-सम्बन्धी जांच की। सभा में गये। पालीरामजी से बातचीत। नरसिंहदासजी की ओर से कोठारी व कृष्णराव आये। उनसे बरोरा जीन-संबंधी बातचीत की।

१०-६-१२

शिवनारायणजी, गिगाजी, हरसामलजी आदि आये। शिवनारायणजी ने हरसामलजी से रुपये देने या हिसाब करने को कहा। उनका जवाब अनुचित था। शामराव शिरस्तेदार पेंशनर को दीवानजी की जगह रखना चाहते हैं। इसलिए जांच की।

११-६-१२

इश्तियाक अली के बंगले छोटे डिप्टी कमिश्नर के यहां गये। बंबावाले व पु० सुपरिंटेंडेंट से बात करके डिप्टी कमिश्नर के यहां गये। उनसे अच्छी तरह बातचीत हुई। आज 'चरित्र गठन' पढ़ा। लड़के गायन सीखते थे, वहां रात को बैठे।

रामरिखजी आये और बोले कि नोटिस मत दो।

१२-६-१२

बद्रीनारायणजी ने मथुरा से पू० रामगोपालजी के आये हुए पत्र का हाल बताया। इनकी भी मर्जी अलग होने की ही ज्यादा दिखाई दी। बंशीधर घेलिया ने मथुरा कुछ नहीं लिखा। बद्रीनारायणजी से भागचंदजी रामगोपालजी की कई बातें हुई। पोद्दारों के यहां आंगीमेवा[1] देखने गये। वहां से आकर बापट से बहुत देर तक बातचीत होती रही। हरिदास पंत आये। भिड़े से श्रीधर पंत के विषय में बात हुई। भिड़े विरुद्ध मालूम हुए।

१३-६-१२

बद्रीनारायणजी पुलगांव गये। कन्या पाठशाला, विद्यार्थीगृह का निरीक्षण कर दूकान आये। त्र्यंबक सूबेदार मिले। दोपहर को सीताराम रोड़े व कृष्णराव रामप्रताप आये। टाटा कंपनी के कागजों पर दस्तखत किये। रात को करीब ९ बजे भिड़े ने आकर बताया कि दामोदर पंत व बंबावाले राय-

---

[1] सगाई के बाद लड़कीवाले लड़के व उसके कुटुम्ब के लिए कपड़े-लत्ते, दागीना देते ह, उसे अंग-मेवा कहते हैं।

बहादुर हुए। खुशी हुई। खरे से उसी समय जाकर मिले। देवसाहब जाने-वाले थे। उनके यहां खरे के साथ गये और बातचीत की।

१४-६-१२

रायबहादुर दामोदर पंत खरे से मिले। रायबहादुर अमृतराव बंबावाले के यहां जाकर उनका अभिनंदन किया। वहां इश्तियाक अली भी थे। अराव्ये आये, उनसे बातचीत की। गुजराती 'मनोविचार' पुस्तक पढ़ी।

१५-६-१२

खरे व जाजूजी से मिले। इश्तियाक अली कारोनेशन का हिसाब करने आये। १५३ रुपये की कसर रही। पालीरामजी से वरोरा जीन के विषय में बातचीत हुई। शाम को पुस्तक पढ़ी। जाजूजी आये। प्रेस गये। कानपुर से नया तंबू आया, वह देखा।

मारवाड़ी विद्यालय की मीटिंग थी। थत्ते, अत्रे, बापट आये। कमेटी का काम ठीक से हो गया। रामनाथजी, ब्रजमोहनजी आये थे।

वर्धा १६-६-१२

हीरालालजी आये। उनसे भांदक[१] के संबंध में बातचीत की। १०-५१ की गाड़ी से जीन की व्यवस्था के लिए गये। बद्रीनारायणजी व पालीरामजी साथ थे। वहां जाकर नारायण की मां से बातचीत व भागचंदजी से मिला। पहले तो मीठी-मीठी बातें हुईं, पर बाद में उन्होंने कालुरामजी आदि के लिए अश्लील शब्द कहे। अपने खुद के लिए भी हल्के शब्द का प्रयोग किया। अहंकार बहुत अधिक था। जीन की व्यवस्था होना असंभव देखा। मारवाड़ी छात्रालय देखा। ठीक चल रहा है। शाम को वर्धा में पुराने दोस्त रेलवे के पुलिस सब-इन्सपेक्टर मिले। परशुराम पंत, थत्ते आर्वी जा रहे थे। इसलिए एकत्र १५-२० लोगों ने मिलकर कलेवा किया।

१७-६-१२

सराय के लिए नजुल की जमीन देखने गये। वहां से कर्णिक साहब, चिटन-

१ चांदा जिले में भांदक (भद्रावती) प्राचीन जैन तीर्थ है। वहां के मंदिर की व्यवस्था हीरालालजी फतेहपुरिया देखते थे।

वीस, रामलाल पांड़े डिस्ट्रिक्ट जज से मिले। शिवराम मास्टर आदि से बातचीत करके भोजन व आराम। मथुरा पूज्य रामगोपालजी को पत्र लिखा। बद्रीनारायणजी को बताकर झड़सी गांव बेचा था, उसकी रजिस्ट्री कर दी। घर आकर बगीचे गये और टेनिस खेले। जाजूजी से बातचीत की। अमरचंद के पास होने की नारायणराव खरे को खबर भेजी। कवि हेडमास्टर से बातचीत। श्रीधर पंत को बुलाकर जगह १०० साल की लीज पर ३५०० में ली। खर्च उनके जिम्मे।

१८-६-१२

रावसाहब शंकरराव चिटनवीस, कर्णिक, नायडू वकीलसाहब विद्यार्थीगृह देखने आये। मकान वगैरा सब देखा। केसरीमलजी से बातचीत की। शामराव इंजिनियर से देवली-संबंधी वार्ता की।

नरसिंहदासजी का दिवान कृष्णराव आया। वरोरा जीन प्रेस का विक्री का मसौदा किया। पालीरामजी बंबई गये। रावबहादुर विनायक मोरेश्वर केलकर से मिलने स्टेशन गये। वहां बहुत-से अमलदार आये थे। शामराव को मुख्त्यार पत्र दिया, उसकी रजिस्ट्री कराने कचहरी गये।

१९-६-१२

राठीजी की स्त्री ज्यादा बीमार सुनी, इसलिए वहां गये। ज्यादा बीमार थी। बातचीत की। पर बचने की उम्मीद नहीं। घर जाकर जलपान किया। खबर सुनी कि राठीजी की स्त्री गुजर गई। श्मशान गये। वहां से ९।। बजे जीन में स्नान करके राठीजी के घर गया और मंदिर के कुएं पर स्नान किया। श्रीनारायणजी व अमरावतीवाले भंडारी आये। भोजन करके श्रीनारायणजी से अमरावती में बोर्डिंग खोलने की बातचीत। उन्होंने कोशिश करने को कहा। राठीजी के लिए चिंता रही।

२०-६-१२

शिवनारायणजी अमरावतीवाले के साथ बगीचे गये। कलेवा कराकर अमरावती रवाना किया।

भोजन करके अखबार पढ़ते थे कि अमरावती की गोखले सोसायटी के

द्रविड़, बाबूराव भिड़े, अगाशे वकील आये। उनसे बातचीत के बाद आराम। टाउनहॉल में मराठा समाज की सभा थी, उसमें जाकर १॥ घंटा बैठा। राठीजी से मिलते हुए घर गया। भोजन के बाद अमृतलालजी से थोड़ी देर बातचीत। अंग्रेजी पद्धति के आफिस में सुधार किया।

२१-६-१२

बगीचे से इश्तियाक अली के बंगले होकर गोरक्षण गये। वहां का काम देखा। रामनारायण को कुछ सूचनाएं दीं। कर्णिकसाहब के बंगले गये। घटाटे के मुकदमे में गवाह के लिए कचहरी गये। बाररूम में बैठे रहे। गवाही नहीं हुई, वापिस आया।

जीवराजजी पोद्दार से मिलकर स्कूल बोर्डिंग-सम्बन्धी विविध चर्चा। उन्हें बगीचे पहुंचाकर राठीजी के यहां गये। वहां से बाजार की इमारत तैयार हो रही थी वहां एक घंटा ठहरे। आगे का काम कैसे करना, उसका निश्चय किया। विद्यार्थी-गृह गये। कई सूचनाएं दीं। जाजूजी से बहुत-सी बातें हुईं।

२२-६-१२

बगीचे में जाकर बंबई से जो डाक्टरनी आनेवाली थी उसकी व्यवस्था की। बोर्डिंग के लड़कों के चालचलन के विषय में बारीकी से जांच की। गजानंद, लीलाधर, नेमिचंद, लक्ष्मीनारायण, केदार आदि के साथ बगीचे गये। बाई[1] और आराध्ये से बातचीत की। रात को मंदिर जाकर भजन किया।

२३-६-१२

कुछ लड़कों की फिर परीक्षा ली। भिड़े रविदास पंत के चन्दे के लिए आये। दादाभाई नवरोजजी के दामाद दादीना से मिलने प्रेस में गये। शिवनारायण-जी से जावरा जीन के विषय में बातचीत। लक्ष्मीनारायण बजाज को समझाया। अत्रे व जाजूजी से बातचीत की। बोर्डिंग की मासिक सभा के

---

[1] कन्या विद्यालय की अध्यापिका।

लिए गये। इच्छा न रहते हुए भी राठीजीकी स्त्री को खर्च (मोसर) का दुवा[1] देने गये। विद्यार्थी-गृह में सोये।

२४-६-१२

वगीचे से आकर काफी देर तक गंगाविसन को समझाया। उसने वैसे चलना मंजूर किया। स्नान-भोजन कर पेपर पढ़े। शंकरलाल राठी को समझाया। विधानकुमार की मृत्यु से चित्त में विचार रहा। विल बनाने का विचार हुआ।

२५-६-१२

भागचंदजी धामणगांव से आये। उनके साथ भोजन किया। जावरा जीन मोरसी जीन व अन्य कई तरह की वातचीत हुई। वह मेल से धामणगांव गये। जाजूजी आये। दामोदरदासजी राठी की भूमि का संशोधन किया। वगीचे जाकर टेनिस खेले।

२६-६-१२

श्रीनारायणजी व महादेवजी धामणगांव से आये। भोजन के बाद उनसे देर तक कई विषयों पर बात होती रही। दत्तूजी व वापूजी (रुक्मानंद वजाज) से वातचीत। शिवनारायणजी से जावरे जीन के फैसले के बाबत वातचीत हुई। वगीचे में टेनिस खेलकर धामणगांववालों से वातचीत की।

२७-६-१२

बालूजी से फत्तू केजडीवाल के विषय में कहा। रात को विद्यार्थी-गृह में भोजन। जाजूजी, श्री नवनारायणजी आये। अमरचंदजी अमरावती से आये।

२८-६-१२

बद्रीनारायणजी की पुस्तक से कुछ तफसील लिखी। अमरचंदजी ने विद्यार्थी-गृह की रिपोर्ट लिखी। शाम को बापूराव खरे व गंगाधरराव कामले आये। वगीचे जाकर टेनिस खेली। भोजन कर विद्यार्थी-गृह गये। भिड़े सत्य के

---

१ पंचों के साथ विगत निश्चय करने जाना।

विषय में समझा रहे थे, सुना। विद्यार्थियों को सवेरे पवनार ले जाने का निश्चय किया। उनके स्नान आदि का निजी प्रवंध किया। पुजारी को अलग होने को कहा। अमरचंदजी से वातचीत। रामनाथजी, हरिकिसनजी, गिगाजी आये।

२९-६-१२

अमरचंदजी को साथ लेकर घोड़े के तांगे से पवनार गये। लड़के पैदल गये। नदी का दृश्य मनोहर था। विद्यार्थी खूब तैरे और नहाये। वापस आते समय म्युनिसिपल प्राइमरी स्कूल की मीटिंग में गये। कन्या पाठशाला का स्कूल देखते हुए घर आये। भोजन-आराम के वाद माहेश्वरी (इंदौर) की टीका की पुस्तक देखी। आगे काम किस प्रकार चले, इस विषय में वातचीत और मथुरा पत्र लिखा। शाम को वाररूम् की तरफ से नायडूसाहव के यहां वंवावाले, खरे, इश्तियाक अली की पार्टी थी, वहां गये। कई सज्जन मिले। नागपुर के मारवाड़ी-पत्र के संपादक को पत्र लिखा। वारिश जोर से आई। विद्यार्थियों से वातचीत। राजाराम पंत, दीक्षित, साठे से वार्ता।

३०-६-१२

रात को वारिश १ इंच ६१ सेंट हुई। ओले भी गिरे। राठीजी के यहां गये। वहां से घर आकर पत्र देखे व आराम किया। फिर राठीजी के यहां व्राह्मण-भोजन था। वहां गये। भिड़े मास्टर ने लीलाधर का हाल कहा। मारवाड़ी विद्यालय की सभा हुई। अत्रे, वापट, जाजूजी आदि उपस्थित थे। रात को अंग्रेजी आफिस के कार्य का निरीक्षण किया। जन्मपत्री देखी। १। वजे सोया।

१-७-१२

वोहनी शुरू हुई। गंगाविसन को समझाकर प्रतिज्ञा करवाई। मारवाड़ी विद्यालय, कन्या-पाठशाला, लायव्रेरी का निरीक्षण किया। जाजूजी के साथ वैठकर नियम वगैरा कई वातों का निर्णय किया।

२-७-१२

रामनाथजी व उनके संवंधी दो लड़कों को विद्यार्थी-गृह में भरती कराने

आये। लड़कों के नाम लिखवाने कन्या स्कूल होकर सरकारी स्कूल गये। राठीजी के यहां जातिभोज था। वहां गये। दवाखाने गये। ५० रुपये राठीजी से व एक सौ रुपये अपनी ओर से बीमार के इलाज के लिए अर्पण किये। ईश्वरदास तलेगांववाले कांच का सामान[१] लेकर आये थे, उसे देखा। उस विषय में वातचीत की। फिर राठीजी के घर गये। वापस जाकर तलेगांववालों को भोजन करवाया। रात को गर्भाधान के लिए शास्त्रोक्त हवन किया। विद्यार्थी-गृह में गये। आज २ बजे सोये।

३-७-१२

बगीचे में ईश्वरदासजी से वातचीत कीं। हीरालालजी ओसवाल के रुपये के विषय में कहा। ब्राह्मण-भोजन था। भोजन कर आराम करना चाहते थे कि शिवनारायण सिंहजी, संपादक 'मारवाड़ी' नागपुर, अमरचंदजी के साथ आये। उन्हें विद्यालय, कन्या पाठशाला आदि बताये। शाम को बगीचे जाजूजी भी आये। टेनिस खेले। घर आकर मंदिर गये। संपादकजी विद्यार्थी-गृह के निरीक्षण के लिए गये। उनकी उचित व्यवस्था कर दी। जाजूजी-के साथ वातचीत। रिपोर्ट छपवाने का निश्चय हुआ।

४-७-१२

निद्रा से उठकर नीचे आये। उसके पहले ही संपादकजी स्टेशन चले गये थे। तबीयत आज कुछ भारी मालूम दी। बद्रीनारायणजी की किताब से कुछ हिस्सा लिखा।

५-७-१२

बद्रीनारायणजी धामणगांव जाने के लिए दूकान आये। दत्तूजी, पन्नालाल आये उनसे वातचीत की। गोपालप्रसाद नरहर आये, उन्होंने चूडामणराव के विषय में सारा हाल सुनाया।

६-७-१२

जाजूजी से वातचीत के वाद दामोदर पंत खरे के यहां इश्तियाक अली को

---

१ लो० तिलक ने स्वदेशी माल के उत्पादन व प्रचार के लिए 'पैसा-फंड' के नाम से एक फंड खोला और इस उद्योग की स्थापना की।

पार्टी थी, वहां गये। शतरंज, गपशप व लोगों का व्यवहार देखकर आश्चर्य हुआ। पार्टी में देवराव की पूरी-पूरी फजीहत की गई। खरेसाहब के आग्रह के कारण चिवड़ा व फल लिये। अलग से दुबे तहसीलदार से गप्पें लगाई।

७-७-१२

वगीचे से घर आकर नित्यकर्म से निवृत्त हो जाजूजी के यहां गये। मजदूरों की हाजरी देखी। स्कूल में नाली डालने की खबर आई, वहां गये। राव-साहब व देवीप्रसाद से मिले। उन्होंने नाली दूसरी ओर डालने की व्यवस्था करने को कहा। बाद में देवीप्रसाद साहब घर आये, क्योंकि उन्हें सब इमारत दिखानी थी। म्युनिसिपल स्पेशल बाजार में ईंटों के विषय में मीटिंग थी, वहां गये। वह काम होने पर इश्तियाक अली, रामलाल पांडे व बंबा-वाले से वार्ता। गजानंद विद्यार्थी से बातचीत की।

८-७-१२

बद्रीनाराणजी पुलगांव रहने के लिए गये। बंबई के हस्ते खाते का हिसाब ठीक कर जमाखर्च करवाया। शेष रह गया। रामनारायणजी के विषय में बंबई वृद्धिचंदजी वैद्य को पत्र दिया। आज से विद्यार्थियों का गायन आरंभ हुआ। कुछ देर सुनते रहे।

९-७-१२

इश्तियाक अली सेक्रेटरी आये। बंबई के हिसाब का जमाखर्च करवाया। विद्यार्थियों से बातचीत। केशव वगैरा आये। बंबई से जो श्रुतिबोध पत्र निकलना शुरू हुआ, वह आया। उसे पढ़ा। धरमदास विद्यार्थी से कारंजे-वाले नारायणलाल पालीवाल का बहुत-सा हाल सुना। स्कूल का उद्‌घाटन करने कमिश्नरसाहब आनेवाले थे, इसलिए लड़कों को गायन की तालीम शुरू की गई। सुनते रहे।

१०-७-१२

चिंतामणि तेली मर गया। उसपर कर्ज ज्यादा था, इसलिए उसका फैसला कराने बुलाने आये, वहां गया। १२ बजे तक वहां रहे। १।। बजे पत्र-व्यव-हार। पुलगांव से इंजिनियर आया, उससे बातचीत। अमरचन्दजी भांदक से

आये। उनके साथ एफ० ए० क्लास के दो मारवाड़ी दोस्त थे। सुना कि शाम-राव इंजिनियर नौकरी छोड़ता है। रेखचन्दजी के मुनीम किसनदास डागा मिलने आये। फिर चिंतामणि के यहां गये। वहां से बंगले आये। वहां इश्तियाक अली व हेडमास्टर आदि बैठे थे। उनसे हँसी-मजाक व बातचीत होती रही। बाद में शामराव से बात की। नागपुर का मारवाड़ी पत्र पढ़ा। चूड़ामणराव को शादी व घर-खर्च के बारे में बहुत-सी बातें समझाई।

११-७-१२

सुबह ५ बजे चिमनीरामजी राठी श्री जगदीश की परवानगी के लिए आया। जाने की इजाजत दी। बगीचे से अगरवाल पोस्टमास्टर साहब के यहां गये। उनका लड़का बीमार था। म्युनिसिपल सेक्रेटरी से भी मिला। घर आकर दूध लेकर जाजूजी के यहां गये। वहां से जीन में गया। कर्णिकसाहब को नजुल की जगह का मौका दिखाया। सरकारी हाई स्कूल व बोर्डिंग देखा। इश्तियाक अली आये।

मेल पर गये कमिश्नर आये उनसे मिले। घर पर विश्वम्भरनाथ दुबे सूबेदार आये। विठोबा थोडगे पांचसौ रुपया देकर मैजिस्ट्रेट बनने की इच्छा से आया। उसकी मूर्खता पर आश्चर्य हुआ।

१२-७-१२

बंबई का हिसाब देखा। सुना कि माणकबाई डाक्टरनी के लड़के को बुखार आया। इसलिए प्रेस में गया। बात हुई। वहां से तांगे से बंबावाला के यहां गया। वे नहीं मिले। रास्ते में घोड़ा बदमाशी करने लगा, इसलिए बायगांव की सड़क से काफी दूर निकल गये। रात हो गई। घोड़ा भी थक गया। कमिश्नर के चपरासी आये। उनसे हाल पूछा।

१३-७-१२

बंबावाले के यहां होते हुए डिसपेंसरी व गोविंदरावजी का घर देखते हुए आये। जाजूजी के लड़के के सम्बन्ध में बातचीत की। मालूम हुआ कि आगे जोखम नहीं रहेगी। ब्राह्मणपुर का विद्यार्थी बंसीलाल बीमार था, उसे देखने बापट के यहां गये। कमिश्नर चैपमैन से मिले। वह कल ९ बजे

विद्यार्थी-गृह आदि देखने आवेंगे। विद्यार्थी-गृह तथा जाजूजी के घर होते हुए बगीचे गये। बारिश हुई।

१४-७-१२

जाजूजी खरेसाहब के यहां होते हुए मंदिर व बोर्डिंग गये। वहां की सफाई देखी। कमिश्नर चैपमैन ९ बजे आये। बड़े लायक आदमी मालूम दिये। सराय भी देखी। जाजूजी के साथ भोजन व आराम किया। सुना कि केशवदेव बीमार है, वहां गया। नये हाई स्कूल में गये। शाम को घर पर इश्तियाक अली स्कूल के काम के लिए आये।

१५-७-१२

आज क्रेडाक हाईस्कूल का उद्घाटन था। उसका काम करते रहे। पेड़े आदि का प्रबन्ध कर हाई स्कूल जाकर घर आये। चान्दी का वज़न किया, वह १ तोला साढ़े आठ आनी भार हुआ। जल्से के लिए ३॥ बजे गये। जल्सा ४ बजे शुरू हुआ। पहले रिपोर्ट पढ़ी गई। कमिश्नरसाहब बोले, कामासाहब ने अंग्रेज़ी में उनका आभार माना। बाद में हमने हिन्दी में सबका आभार माना। वहां आये हुए प्रतिष्ठित लोगों से बातचीत की। सर गंगाधरराव चिटनवीस, रा० ब० पंडित, श्री ठाकुर, जोगेश्वर, बापू बोधनकर आदि सज्जनों को मन्दिर, मकान दिखाया व विद्यार्थियों से मिलाया। विद्यार्थीगृह के नियमादि देखकर वे प्रसन्न हुए। उनका स्वागत ठंडाई व पान से किया। बंबावाले भी आ गये थे। उन सबको स्टेशन पहुंचाकर आये।

१६-७-१२

आज कमिश्नर चैपमैन व स्कूल इन्स्पेक्टर इव्हान्स मारवाड़ी विद्यालय तथा मारवाड़ी कन्या पाठशाला का निरीक्षण करने आनेवाले थे। प्रबन्ध करवाया। वे लोग आये। स्कूल तथा कन्या पाठशाला देखकर वे खुश हुए। बहुत देर तक बैठे। रा० ब० खरे, अत्रे, बापट, जाजूजी, हैडमास्टर आदि उपस्थित थे। उनके चले जाने पर जाजूजी के साथ बातचीत। आज ब्रज-मोहन ब्राह्मण का देहान्त हुआ।

१६-७-१२

वगीचे से आकर जीन में गया। वहां तार के खम्भे गाड़े जाते थे, वे देखे। शामराव को, फाटक कहां रखना, बताया। दैनिक कार्य से निवृत्त होकर आराम किया, दत्तूजी के खाते का हिसाव, जीन के हिस्से का, करवाकर उनसे रसीद लिखवा ली। चांदा से गोर्धनदास आया। उससे वातचीत की। जाजूजी आये। विद्यार्थीगृह के नियम-सम्बन्धी काम किया। नागपुर के माणकचंदजी जोहरी आये। उन्हें विद्यार्थीगृह व मन्दिर दिखाया। बाद में भोजन। गोवर्धन से बातचीत।

२०-७-१२

बगीचे से घर आते समय पू० जीवराजजी से दूकान पर मिला। घर आकर बंबावाले व पाठकसाहब के यहां गये। वापस आते समय पोस्टमास्टर के यहां गए। थोड़ी देर ठहरे। स्नान व भोजन करके, नया अस्पताल खुलने-वाला था वहां पाठकसाहब ने बुलाया था, इसलिए गये। बाद में इश्तियाक अली व लोकल बोर्ड के इन्जीनियर अभ्यंकर के यहां गये। स्कूल का खर्च-सम्बन्धी हिसाब किया। जीवराजजी, श्रीधरजी, पोद्दार आये। इश्तियाक अली फिर से आये। श्रीधरजी को स्टेशन पहुंचाकर वापस आये। श्री वल्लभजी खेमका के विषय में बातें होती रहीं। बिरजू मर गया था, इसलिए बालाबक्स के यहां गए।

२१-७-१२

भुसान के मैनेजर फुलगोरी कलकत्ता से आये, उनसे मिला। परांजपे मुन्सिफ की ओर से शाम को बंबावाला के बंगले पर पार्टी थी, उसका निमंत्रण आया, इसलिए जाजूजी व खरेसाहब के साथ गये। आग्रह के कारण आधा लाल केला खाया। बातें होती रहीं। वहां से बगीचे जाजूजी व पोस्टमास्टर के साथ टेनिस खेला। पोद्दारों के यहां बाफला[1] बाटी का भोजन किया।

---

१ गरम पानी में बाटी को उबालकर कंडे पर सेंका जाता है, उसे बाफला कहते हैं।

२२-७-१२

बंबावाला, डी० एस० पी० व डिप्टी कमिश्नर पाठकसाहब के यहां गया। बहुत देर तक अनेक विषयों पर बातें होती रही। बंबावाला, खरे व इश्तियाक अली के निमित्त से फ्रूट पार्टी ६ बजे थी। उसका प्रबंध किया। पार्टी में बहुत-से लोग आये। श्री पाठक भी आये। पार्टी आनंद के साथ समाप्त हुई। जाजूजी के यहां गये। कई तरह की बातें हुई। सराय के लिए नायडूसाहब के सामने की जमीन का विचार किया। वहां से आकर बोर्डिंग गये। ११ बजे सोया।

२३-७-१२

सवेरे स्टेशन पर इश्तियाक अली से मिला। आज सर डागा बड़नेरा से हिंगनघाट जानेवाले थे, उनसे स्टेशन पर मिला। बहुत देर तक बंबई विद्यालय तथा अन्य विषयों पर बातचीत की। बाद में जाजूजी भी आ गये थे। घर आकर मारवाड़ी विद्यालय गया। वहां कुछ सामान आनेवाला था, वह देखा।

श्रीनिवास राव नायडू आये। उनसे 'नीतिमान मनुष्य का असली कर्तव्य क्या है ? इस विषय पर काफी देर तक चर्चा होती रही।

२५-७-१२

बगीचे से घर आये। स्नान-पूजन कर भोजन किया। म्युनिसिपल कमेटी में जाना चाहता था, पर कमेटी की मीटिंग की तारीख दूसरी निश्चित होने से नहीं गया।

२७-७-१२

सवेरे ४।। बजे के करीब उठे। बगीचे जाकर मारवाड़ी विद्यालय गये। कन्या पाठशाला की जांच की। बद्रीनारायण पुलगांव से आये।

११।।। बजे कन्या का जन्म हुआ।

बायलर इंस्पेक्टर घूस लेता है। उसके विषय में बद्रीनारायण, रामरिखजी, बंसीजी से बातचीत।

शाम को भागीरथदासजी व जाजूजी आये।

२८-७-१२

आज भुनान का बड़ा मैनेजर फुलगोरी कलकत्ते से बंबई जा रहा था। उसका तार आया। स्टेशन पर जाकर मिले। बारिश जोर से हो रही थी। रात को दूकान-संबंधी कामकाज देखा।

२९-७-१२

विद्यार्थियों को तैरने की तीव्र इच्छा थी, इसलिए अपने सामने तैरने की व्यवस्था की। जीन के पुल की जगह देखकर घर आये। भोजन कर दूकान-संबंधी काम किया। शाम को इंजिनियर आया, उसका मसौदा बनाया।

३०-७-१२

बगीचे से आकर जाजूजी के यहां गये। खतावणी का जमाखर्च करवाया। स्नान-भोजन के बाद वहीं पर व्यवहार का काम करते रहे। शाम को बोर्डिंग के विद्यार्थियों से बातचीत। माणकबाई के दोनों लड़कों से बातचीत की।

३१-७-१२

भोजन के बाद घटाटे के मुकद्दमे में गवाही थी, इसलिए कचहरी गये। २ घंटे तक वकीलों की रूम में बातें करते रहे। गवाही हुई, घर आये। तुकाराम पंत घटाटे का आम मुख्त्यार आया। उसे उनका हिसाब बताया व समझाकर नक्की किया। माणकबाई दादीना से हिंद पितामह दादाभाई नवरोजजी के जीवन-निर्वाह के बाबत बहुत देर तक बातें हुईं।

१-८-१२

स्नान, भोजन, व्यावहारिक कार्य, पत्र तथा जमाखर्च करता रहा। जाजूजी के यहां गया। ४ बजे प्रेस जाकर दरवाजा देखा। रास्ते में श्रीनिवास राय नायडू मिले। टाऊन हॉल के पीछे टेनिस कोर्ट देखने गये और खेले। पेपर तथा 'चरित्र गठन' पुस्तक पढ़ी।

३-८-१२

अमृतलालजी चक्रवर्ती की लिखी किताब आई, सो पढ़ी। बाद में पत्र-व्यवहार किया। माणकबाई दादीना से शरीर-स्वास्थ्य-संबंधी बातचीत। उन्होंने मेरे लिए दवाई मंगवाई थी, वह ली। पथ्यादि समझाया। पट्टा

बनाया।'
गंगाविसन को विनय पर लेख लिख दिया। इस विषय पर लिखने के लिए पुस्तकें देखीं, पर उनमें न मिलने से मन से ही लेख लिखा।
थॉरो की पुस्तक पढ़ी।

४-८-१२

लड़कों को कुश्ती लड़ते देखा। उनकी जोड़ियां बनाईं। डाक पढ़ी, जाजूजी के यहां से भोजन का निमंत्रण आया। आज नहान (जचकी के बाद स्नान और पूजा) था। जाजूजी के यहां भोजन कर घर आये। १ बजे जाजूजी आये। मारवाड़ी विद्यालय की कमेटी थी। भिडे, अत्रे, हैडमास्टर आदि आये। मीटिंग का काम-काज हुआ। तुकाराम पंत, घटाटे के मुख्त्यार आये। जीन का हिसाब कर रसीद लिखवाई व लिख दी।

५-८-१२

बद्रीनारायणजी पुलगांव से आये। थोड़ी देर बातचीत और कुछ पढ़ा। पोद्दारों के बगीचे गये। आज कुछ सर्दी मालूम होती थी। बिरदीचंदजी बंबई से आये। वह मारवाड़ी विद्यालय में गये थे। उनसे बातचीत हुई।
मारवाड़ी विद्यालय में गये। करीब एक घंटा ठहरे, पढ़ाई देखते रहे। दूसरी कक्षा के लड़के बढ़ाने का प्रबंध किया। सोमवार को लड़कों का उपवास था, इसलिए उन्हें १। घंटे की छुट्टी दी। भगवानदासजी व पंडित लोगों से बातचीत। पुस्तक पढ़ी।
रामदयालजी पोस्टमास्टर की भंडारा बदली हुई। उनके सम्मान में जाजूजी के यहां भोजन था। बिरदीचंदजी, पोस्टमास्टर, अमरचन्दजी के साथ आनंद से भोजन और बातचीत हुई।
रात को घर पर अमरचंदजी व जाजूजी आये, उनसे बातें होती रहीं।

६-८-१२

पुलगांव के हमालों के साथ करारनामा किया। बिरदीचंदजी पोद्दार व पं० भगीरथदासजी आये। शेयरों का जमाखर्च किया। उन्हें मकान तथा पायखाना दिखाया। उनके साथ बगीचे गया।

भोजन कर पुलगाव चिट्ठी लिखकर आत्माराम को दी। व्रजमोहन झावंलका आया। स्टेशनमास्टर के मुकदमे की वात करता रहा।
चिंतामणी तेली के मकान की रजिस्ट्री आज हुई।

७-८-१२

वगीचे जा रहे थे कि पोद्दारों के मुनीम ने, हिंगनघाट से चिट्ठी आई थी, इसलिए वुलाया। विरदीचंदजी से मिलें। उन्होंने कप्तानसहाव से मिलने को कहा। वगीचे जाकर वंवावाले के यहां गये। उनसे हिंगनघाट-संवंधी वात कही। थोड़ी देर तक वातचीत करके घर आये। विरदीचंदजी हिंगनघाट के वारे में पूछने आये। तबीयत कुछ नरम थी, इसलिए सोया। भगवानदास आया। विरदीचंदजी ने भोजन के लिए कहलवाया। विद्यार्थियों से वात करके उनके यहां गया। जाजूजी व विरदीचंदजी के साथ भोजन किया। विरदीचंदजी को जोर देकर सट्टा न करने को कहा। अभी जो मुनाफा है, वह निकाल लेना व जमनाधरजी पोद्दार को सारा हाल कह देना, इस विषय में वहुत देर तक वातचीत होती रही, लेकिन उनके ध्यान में वह वात नहीं आई।

८-८-१२

वगीचे से आते समय नागपुरवाले शिवनारायणजी राठी मिले। साथ में बंगले आकर वातचीत की। विद्यार्थीगृह वतलाया। सहायता के लिए कहा। पांच सौ रुपये से अधिक देने को राजी नहीं हुए। इसलिए निर्णय नहीं हुआ। जाजूजी ने वहुत कोशिश की। स्नान-भोजन कर मारवाड़ी विद्यालय में गये। दूसरी कक्षा में नौ लड़के मुफ्त लेने का निश्चय किया। वहां से पोद्दारों के यहां गया। वृद्धिचंदजी वगैरे मिलकर घर आये। आन्याजी रायली के एजंट से औलिया (सिद्ध फकीर) संबंधी वातचीत होती रही। बाद में रामनारायणजी-कृत 'बुढ़ापे की विवाह-दुर्दशा' नामक किताव पढ़ी। अमृतलालजी की किताव पढ़ते थे, इतने में जाजूजी आये। उनके साथ उनके घर दालबाटी का भोजन किया।

९-८-१२

पेट में दर्द था, दवाई लेकर सोये। आज भोजन का विचार नहीं था, पर आग्रह के कारण करना पड़ा। पं० चंद्रिकाप्रसाद व पं० रामनारायणजी आये, उनसे काफी देर तक बातचीत होती रही। पोद्दारों के दिल्ली के मुनीम जोखीरामजी आये, उनसे जमनादासजी पोद्दार आदि के विषय में बातचीत। फ्रेजम साहब को पत्र लिखा।

बंबई से केमेरा लाया था, उससे जाजूजी, अत्रे, गोले आदि का फोटो खिचवाया। मंदिर में कीर्तन सुना। डीकोना मास्टर आये। उन्हें कुत्ते ने काटा। रात में पं० रामनारायणजी से पराशर-स्मृति का एक अध्याय सुना।

१०-८-१२

मानमलजी आये। उनसे जीन प्रेस की बातचीत। बाद में स्नान-भोजन। वं बावाले कप्तान ने बुलाया था, इसलिए उनके यहां गये।

विद्यार्थी हनुमान चालीसा पढ़ रहे थे, वह सुना। फिर पं० भगीरथदासजी के साथ घूमने गये। कामासहाब के बंगले गये। बहुत देरतक बातचीत होती रही। जाल भी आ गये। बंगला देखा, अच्छा सजाया था।

११-८-१२

काशी के अग्रवाल विलायत गए थे, उस विषय में पं० शिवकुमारजी महामहोपाध्याय की हुई गवाही पढ़ी।

११ बजे म्युनिसिपैलिटी की मीटिंग के लिए टाऊन हॉल गये। म्युनिसिपैलिटी का काम चल रहा था कि डिप्टी कमिश्नर श्री पाठक आये। ग्रेज्युएट के लिए कर (टैक्स) का काम शुरू हुआ। उसपर बहुत-सा वाद-विवाद हुआ। मर्जी के खिलाफ प्रस्ताव हुए।

रात को ऊपर के बंगले में विद्यार्थियों की सभा की। जाजूजी से चरित्र-गठन पर बातचीत। द्वारकादास व शिवभगवान को समझाया।

१२-८-१२

अखबार पढ़कर स्नान-पूजन किया। देवदर्शन कर दूकान पर गया। वहां पुलगांव के इंजिनियर से बातचीत की। थोड़ी देर तक 'संपत्ति शास्त्र' पढ़ा।

तीन-चार रोज चिट्ठियां लिखनी रह गई थीं, वे लिखीं। २। बजे महादेवजी के पूजन के लिए गए। ३ बजे भोजन किया। कप्तानसाहब के ससुर आये थे। सुतार को बुलाया। माणकबाई का बिल ठीक करवाया। विद्यार्थियों की पुस्तकें देखी।

१३-८-१२

बगीचे नये कुएं का काम देख आये। स्नान कर मंदिर में देवदर्शन किया। सुना कि सुखानंदजी के लड़के नंदलालजी का शरीर जल गया। रंज हुआ। मानमलजी, बंसी, पुलगांव के पुराना स्टेशन-मास्टर आदि से वार्ता। सुखानंदजी के यहां करीब चार बजे गये। बालुजी के यहां से हरिद्वार तार दिया "फूलचंदजी कैसे हैं, तुम कब पहुंच रहे हो।"

१५-८-१२

मकान का कार्य देखा। आज बहुत-से पत्र लिखे। बालुजी का तार आया। बीमारी के कारण आ नहीं सकते। उनको चिट्ठी लिखी। केसरी ने आकर कहा कि यह बात सारे गांव में मालूम हो गई है। बंगाली के घर गये। बैठक की।

१७-८-१२

सबेरे हीरालालजी फत्तेपुरिया आये। जाजूजी आये। मकान देखते रहे। स्नान-भोजन कर म्युनिसिपल आफिस में गया। रूई के टैक्स के बारे में आज निर्णय नहीं हुआ। पाठकसाहब से बातें। बिरदीचन्दजी के यहां होते हुए घर आया। मणिकबाई दादीना का हिसाब किया। उसके लड़के को चेन घड़ी आदि दी। जाजूजी के घर गये। वहां से मणिकबाई को पहुंचाने स्टेशन गये।

बगीचे गये। टेनिस खेले। वहां मकई के भुट्टे खाये।

लक्ष्मीनारायण बजाज से मिले। लक्ष्मीनारायण ने कहा कि उसका शरीर बरत जाय तो स्त्री जीवित रहे वहांतक मकान बेचकर खाने व कपड़े का प्रबन्ध करना। उसके मरने पर सब पैसा योग्य धर्मादि में लगा देना। दूसरा उपयोग न हो।

१८-८-१२

म्युनिसिपैलिटी की स्पेशल सभा थी, लेकिन स्थगित रही। पोद्दारों के बगीचे गये। जाजूजी, अत्रे व लड़कों को तैरते देखा। वहां से बालूजी के यहां गये। वह आज हरिद्वार से आये थे। वहां के लोगों आदि विषयों पर बातचीत हुई।

शिवदत्त राठी की औरत गुजर गई, वहां बैठने गये। बालूजी के पास फिर गये। करीब २ घंटे बैठे। बगीचे जाकर टेनिस खेली।

बालूजी के यहां फिर गये। वहां से सेगांववालों के पास गये।

मुरली को छोड़ने को कहा। उन्होंने कबूल किया। रात को हरिकीर्तन सुनने गये। नागपुर के बैंक का सदरवाला ओसवाल दलाल अमोलक के साथ मिलने आया।

१९-८-१२

डिसोजा से बीमा की बातचीत की। बंबई का जमा-खर्च करवाया। पैर के अंगूठे में पत्थर गड़ गया था, वह निकलवाया।

सोमवार को उपवास था, सो भोजन किया।[1]

२२-८-१२

मेल पर स्टेशन गये। ब्रजमोहनजी जाजोदिया व पं० वृद्धिचन्दजी आये। ठाकुरसाहब मिले। भोजन के बाद जाजूजी व वृद्धिचन्दजी धामणगांव गये। डाकगाड़ी से भुसान के फुलगोरीसाहब बंबई जा रहे थे। उनके साथ धामणगांव तक गया। वहां दामोदरदासजी राठी, जाजूजी आदि के साथ 'मारवाड़ी विद्यार्थी-गृह' का निरीक्षण किया। भागचन्दजी मिले। वापस वर्धा आया। राठीजी जाजूजी के साथ घर गये। जाजूजी को आर्वि का तार आया, इसलिए मिलने गये। राठीजी को विद्यार्थी-गृह दिखाया। राठीजी ने जाजूजी के यहां भोजन किया।

---

[1] श्रावण के महीने के सोमवार को अक्सर लोग व्रत रखते हैं और एक बार भोजन करते हैं।

२३-८-१२

सवेरे दामोदरदासजी राठी व ब्रजमोहनजी के साथ बगीचे गया। राठीजी विद्यार्थी-गृह, वर्धा की शाखा ब्यावर में खोलने के लिए रकम देंगे। इसका विचार कर उत्तर देने को कहा। मारवाड़ी स्कूल, कन्या पाठशाला आदि का निरीक्षण किया। राठीजी को २॥ बजे की गाड़ी से रवाना किया।

फूलचन्दजी के घर गये। बालूजी से बातचीत। सुखानन्दजी के यहां गये। सेगांववालों के काम से बगीचे गये, गोपीराम साथ था।

वर्धा-धामणगांव २४-८-१२

१०-५२ की गाड़ी से धामणगांव गया। दामोदरजी राठी भी नागपुर से उसी ट्रेन से आये। रामगोपालजी से बातचीत। भागचन्दजी से रूबरू कई तरह की बातें हुई। शाम की गाड़ी से ब्रजमोहनजी के साथ वर्धा आया। पुलगांव स्टेशन पर शालिग्रामजी मिले।

जाजूजी आये। उनसे, दामोदरजी राठी ने २११०१ रुपये देकर ब्यावर में विद्यार्थी-गृह की शाखा के बाबत जो बात की थी, उस विषय की चर्चा की।

वर्धा, २५-८-१२

विद्यार्थियों की कुश्ती देखी। फूलचन्दजी के यहां गये। शालिग्रामजी आदि वहां आये थे। शालिग्रामजी को भोजन के लिए बुलाया। भोजन किया। पैसा फंड फैक्टरी से जो कांच का सामान आया वह देखा। अच्छा था। केदार विद्यार्थी की जांच की। झूठा व घुन्ना है। बालूजी की दूकान पर गये। वहां शालिग्रामजी से बातें होती रहीं। रामनाथजी के बगीचे गये। ठाकुरसाहब व उनके दामाद से वार्ता हुई।

२६-८-१२

शालिग्रामजी से मिलते हुए बगीचे गये। स्नान व भोजन के बाद फूलचन्दजी के यहां ब्राह्मण-भोजन में गये।

नागपुर से वामनराव कोल्हटकर व रावबहादुर पंडित आये। बहुत देर तक बातचीत हुई। फूलचन्दजी के यहां से रुक्मानन्द के यहां लक्ष्मणगढ़ गोशाला

के डेप्युटेशन के साथ। वहां से हरदत्तरायजी के यहां गये। दोनों स्थानों पर १०५१ रुपये लिखे गये। वालूजी के यहां आये। शालिग्रामजी से वाद-विवाद हुआ। पोद्दारों के वगीचे गये, वहां शतरंज खेले।

२७-८-१२

पोद्दारों के वगीचे में श्रावणी का कार्य करवाया। वहां पट्टी बांधकर तलाव में तैरे।

लक्ष्मीनारायण मंदिर में आये और ११।। वजे कार्य प्रारम्भ हुआ। १।।। वजे निवृत्त हुए। फूलचन्दजी के यहां भोजन व शालिग्रामजी से वातचीत की। रक्षावन्धन का कार्य हुआ।

२८-८-१२

जाजूजी के यहां व्रजमोहनजी, लच्छीरामजी के सम्मान में भोजन था। वहां आनन्द से भोजन किया। भागचन्दजी २।। वजे की गाड़ी से आये। ३ वजे फूलचन्दजी के यहां गये। वहां से भोजन कर ७।। वजे वापस लौटे। घर आकर भागचन्दजी से वार्ता। उन्होने ऊपरी प्रेम तो वहुत दिखलाया। वह ८।। वजे की गाड़ी से गये। वाद में लच्छीरामजी से वात होती रही।

२९-८-१२

वगीचे से घर आकर शालिग्रामजी आर्विवालों से वार्ता। व्रजमोहनजी के यहां स्नान कर भोजन के लिए गये। वहां रसोई में देर थी। इसलिए लच्छीरामजी को जल्दी भोजन करवाकर स्टेशन गये। शालीग्रामजी आदि से मिले। वापस जाकर व्रजमोहनजी के यहां भोजन किया। वहां करीव घंटा-भर वैठे। मोतीलालजी के यहां होते हुए घर।

विरदीचन्दजी का टांगा आया। उनके यहां व्रजमोहनजी आदि मिलकर गये। वहां वातचीत हुई। लच्छीरामजी शाम की गाड़ी से पुलगांव आये।

३०-८-१२

श्रीनारायणजी गनेडीवाल अमरावतीवालों से वार्ता। स्नान-भोजन। करीव २।। वजे मकई के भुट्टे की पार्टी व कलेवा।

डाकगाड़ी से ब्रजमोहनजी, लच्छीरामजी श्रीनारायणजी पुलगांव गये। जमा-खर्च करवाकर पोद्दारों के यहां से वगीचे गया। टेनिस खेले। घर आकर भोजन व वाद में पढ़ा।

३१-८-१२

वगीचे से घर आकर वेकाम के कागजों को छांटा। आज १०॥ वजे की गाड़ी से पुलगांव जाने का विचार था, किन्तु घटाटे का मुकदमा था, इसलिए कचहरी गया। गवाही हुई। डाकगाड़ी से पुलगांव गये। राजाराम दीक्षित व साठे से वातचीत की। पूज्य रामगोपालजी से मामूली वातचीत की। शाम की गाड़ी से वापस आये। गट्टूराम के साथ भोजन। 'व्यवहार पद्धति' पढ़ता रहा।

जाजूजी आये। उनसे वातचीत, वाद में रामरिखजी ने हिंगनघाट की वातें कहीं।

१-९-१२

म्युनिसिपल कमेटी की मीटिंग के लिए ८॥ वजे गया और १०॥ वजे वापस आया। भोजन कर वंबावाले के यहां जाजूजी-सहित भोजन को गये। खान-वहादुर भी साथ में थे। घर आकर मारवाड़ी विद्यालय की सभा की। पोद्दारों के यहां फलाहार किया। वगीचे जाकर शंकरराव चिटनवीस के साथ खेला।

विद्यार्थियों के ब्रह्मचर्य विषय पर अच्छे व्याख्यान हुए। रात्रि शाला शुरू करने का निश्चय हुआ।

२-९-१२

वगीसे से आकर वाजारवाले मकान का जो काम चल रहा था, उसे देखकर, वालूजी से मिलकर घर आया। मकान के काम के वारे में भगतजी को समझाया। श्रीनारायण धामणगांव से आया, उससे वातचीत की। नायडू-साहव के घर के सामने सराय के लिए जगह देखकर खूंटी गाड़ी और जूनी सराय का काम चलता था, वह देखा। रामनाथजी गोयनका अकोलावाले आये। उनसे वातचीत। जाजूजी के साथ घर आया। लच्छीरामजी के

रतलामवालों की चिट्ठियां दिखाईं व दीं। वृद्धिचन्दजी धामणगांव गये। रात की शाला देखा।

३-६-१२

ब्रजमोहनजी व लच्छीरामजी से बातचीत। खानवहादुर महम्मद सरवर कप्तान की भोपाल बदली हुई। वह मिलने आये। उनसे बातचीत हुई। घर, बिरदीचन्दजी पोद्दार से बातचीत। ब्रजमोहनजी व लच्छीरामजी को १०-५३ की गाड़ी से पहुंचाया। पोद्दारों के यहां गया। टाटा कंपनी के शेयर्स पर दस्तखत किये। महम्मद सरवर को पहुंचाने स्टेशन गये। शिवदासजी मोहता के साथ नरसिंगदासजी मोहता के यहां गये। वे दोनों साथ में घर आये। विद्यार्थीगृह के चन्दे की फेरिस्त बताई, पर उन्होंने उत्तर नहीं दिया। विद्यार्थियों को योग्यतानुसार इनाम दिया। भिडे व जाजूजी के साथ विद्यार्थीगृह में हिस्सा लिया।

४-६-६४

हिंगनघाट से मथुरादास मोहता आया, उससे बातचीत। जाजूजी के यहां भोजन किया। मथुरादास डिप्टी कमिश्नर के यहां से करीब १। बजे आया। बातें हुईं। मूलचन्द इंजिनियर से विद्यार्थी-गृह-सम्बन्धी बातचीत। एम्ब्रायडरी मशीन पर काम किया। नमूना दिखाया, वह अच्छा था। मन्दिर में सफाई का काम हो रहा था, बगीचे में मारवाड़ी पत्र पढ़ा। मद्रासी नायडू आया, उससे बातें। मन्दिर में गया। ६॥ बजे तक बैठा, 'व्यवहार पद्धति' पुस्तक पढ़ी। नेमीचन्दजी की जांच की। जाजूजी आये। उनसे संस्था-सम्बन्धी बातें। मन्दिर गया। आरती की। घर आकर प्रसाद लिया।

५-९-१२

पगड़ी पहनकर पाठकसाहब डिप्टी कमिश्नरसाहब से मिलने गया। वह घर पर नहीं थे। चांदमारी को गये थे। उनकी पत्नी से मिले। उनसे लड़कियों के स्कूल-संबंधी वार्ता की। गाडगिलसाहब से मिलने गए। वह भी घर नहीं थे। घर आये। कुछ लिखा। बंबावाले, गाडगिल, ठाकुर, उनके दामाद आदि ने मंदिर, मकान व बोर्डिंग देखा।

स्टेशन पर पू० रामगोपालजी को लेने गये। वह आये, भोजन कर उन्हें मंदिर ले गया। वहां गायन आदि सुनाया। उन्होंने भागचन्दजी के विषय में बातें कहीं।

६-९-१२

घर पर केशवदेव की जांच की। राठीजी के पत्र का संशोधन किया। पू० सेठजी से वार्ता व उनको घर का आंक दिखाया। वगीचे गये।
पू० रामगोपालजी ने वगीचे में प्रश्न पूछे। घर आकर भोजन किया और छत पर टहला। कई तरह की वार्ता हुई। भागचन्दजी के विषय में बहुत-कुछ कहा। नीचे आये और कई प्रकार की वातें हुईं। बाद में कविताएं सुनीं। विद्यार्थियों को रात को देखने गये। सो गये थे।

७-९-१२

पू० रामगोपालजी से वार्ता। आज कृष्णराव से गरम वातचीत हुई। दत्तूजी व रुक्मानन्दजी आये, जीन की पाती (हिस्सा) की वोली (नीलाम) के लिए। शाम को सुखानन्दजी वालूजी के साथ वालाजी-मन्दिर गये। वालूजी की दूकान होकर पू० रामगोपालजी के साथ वगीचे गये। घर आकर भोजन किया। नाटक-कम्पनी के मैनेजर के आग्रह से नाटक देखने गये। पं० वृद्धिचन्द्रजी साथ में थे। 'प्रवल योगिनी' व 'नारायणराव पेशवा की मृत्यु' देखा। फार्स में सुमेरसिंह व दासी का काम अच्छा था। चिटनवीस साहव घर आये थे। ३ बजे गाड़ी देकर भेजा। विद्यार्थी-गृह देखा। निरीक्षण के बाद शयन।

८-९-१२

वगीचे से जाजूजी के यहां गया। पं० चन्द्रिकाप्रसाद आये। उनके साथ रामलालसाहव के यहां गये। उनके लड़के का हाथ टूट गया था, इसलिए करीब १ घंटा वातचीत होती रही। मानमल सरावगी पुलगांव से आया। उससे जीन प्रेस-सम्बन्धी वार्ता हुई।
मद्रासी पण्डित व रामनारायणजी का शास्त्रार्थ वहुत देर तक होता रहा। रुक्मानन्द, भगवानदास व दत्तूजी के साथ विनोद की वातें होती रहीं।

कुछ देर तक कविता आदि पढ़ते रहे।

९-९-१२

पोद्दारों के यहां गया। वहां बातचीत हुई। पू० रामगोपालजी के यहां वार्षिक श्राद्ध था। इसलिए ऊपर की रसोई में जीमे। शिवनारायणजी आये। जावरा जीन का फैसला करने के लिए पंचों की नियुक्ति की। दत्तूजी व जाजूजी जो निर्णय दें, वह मान्य करने के बाबत चिट्ठी लिखी गई। रामरिख आये। पोद्दारों के यहां होकर बगीचे गये।

१०-९-१२

आज पोले[१] का त्यौहार था, इसलिए बैल नहीं जोते गये। संग्राम गाड़ी से बगीचे जाकर आया। कुछ लिखा, बाद में स्नान, पूजन व भोजन किया और जाजूजी के यहां गया।

विद्यार्थी-गृह की कमेटी को कपास की एक गाड़ी व रुई बोझा पर एक आना लाग धरमादा के रूप में देना निश्चित करके दस्तखत किये। मानमल सरावगी ने १०० रुपये साल, दस वर्ष तक, देना निश्चित कर दस्तखत किये। पोद्दारों के यहां गये। बातचीत की। घर आये। पू० रामगोपालजी से बातचीत हुई। जाजूजी आदि भी आये। शाम को बैलों का पोला देखकर आये। बैलों को इनाम आदि दिलाया। रात को स्कूल में पढ़ने गये।

११-९-१२

डिप्टी कमिश्नर पाठक से मिलने गये। बहुत-सी बातें हुईं। दुबे तहसीलदार को घर पहुंचाकर आये। शाम को लड़कों का 'पोला' भरा था, वहां गये। भोजन पोद्दारों के यहां किया। जाजूजी व बिरदीचंदजी से वार्ता और बालाजी मन्दिर में सनातन धर्म सभा की स्थापना हुई, उसके अधिवेशन में गये।

---

१ महाराष्ट्र में बैलों का त्यौहार, जिसमें बैलों को सजाकर एकत्र करते हैं और उनकी पूजा की जाती है। बाद में उनमें दौड़ की प्रतिस्पर्द्धा भी होती है।

देवल की सर्कस देखने गया। ठीक थी।

१२-६-१२

नये जीन प्रेस के कार्य का निरीक्षण किया। राठीजी से वार्ता। व्यवहार-कार्य देखा। आनन्दराव मोघे आये। बैंच-सम्बन्धी बातें।

पू० रामगोपालजी से वार्ता। उन्होंने कुछ जमा-खर्च करवाये। उनको कुछ शंकाएं थीं। वे दिखलाई, तब ध्यान में आई।

बैंच में मुकदमे थे, वहां गये।[1]

डाक्टर गोविन्दरावजी की लड़की सोनी, गंग आदि से मिले। वल्लभदासजी के मुनीम सुजानमलजी से जाइंट व म्युनिसिपल-संबंधी बातचीत। पू० रामगोपालजी के साथ पोद्दारों के बगीचे जाना। जीवराजजी, बिरदीचंदजी, सीताराम मंगलचंदजी आदि से वार्ता।

१३-६-१२

जाजूजी के यहां होते हुए पोद्दारों के यहां गया। पू० रामगोपालजी के साथ वार्ता। पू० जीवराजजी आये। म्युनिसिपैलिटी के मुकदमे थे, उनके बारे में बातचीत। पू० रामगोपालजी के अकेले व साथ में तीन-चार तरह के फोटो खिचवाये। भिडे आदि से बातचीत।

१४-६-१२

पू० रामगोपालजी के पेट में दर्द था, इसलिए उनके पास बैठे। उनका जाने का विचार स्थगित रखा। जीवराजजी से बहुत-सी बातें। उनसे लाग (चन्दा) कबूल करवाई। उनको व सीताराम को विद्यार्थियों से मिलाया। तालाब में पेटी बांधकर तैरे। पोद्दारों के बगीचे में गोठ जीमे।

नागपुर १५-६-१२

पैसेंजर ट्रेन से नागपुर गये। माहेश्वरी सभा की बैठक थी। कालेज-विद्यार्थी, विपनबाबू, बैजनजी, जमनाधरजी आदि से वार्ता। १२ बजे रात को वर्धा आया।

---

१ श्री जमनालालजी उन दिनों आनरेरी मजिस्ट्रेट थे। अतः कोर्ट में जाकर मुकदमे किया करते थे। उसीका यह उल्लेख है।

१६-९-१२

पू० रामगोपालजी से वार्ता। शिवदत्त राठी आया, उससे बातें। सीताराम पोद्दार के साथ भोजन किया। पू० रामगोपालजी से आगे का खुलासा किया। प्रेम तो बहुत दिखलाया, पर पहले जैसा काम नहीं हुआ। वर्धा की नई दूकान की देख-रेख अपनी रही। मेल से उन्हें स्टेशन पहुंचाया। बड़े प्रेम से पुलगांव के लिए विदा हुए। पूज्य जीवराजजी घर आये। उनसे बात-चीत। राठीजी से बातें।

वर्धा व पुलगांव १७-९-१२

जाजूजी से रफ मसविदा बनवाया। मृत्यु-पत्र का जो मसविदा पू० राम-गोपालजी ने संक्षिप्त कहा था, उसको लेकर पुलगांव बुलाया था। मसविदा लेकर पुलगांव गये। मसविदा पढ़कर सुनाया, उन्हें बहुत पसंद आया। सवेरे वर्धा आकर रजिस्टर करने को कहा।

शिवदत्त राठी, दत्तूजी आदि को हिसाब का निकाल करने को कहा। राठीजी को माधोजी का जमा-खर्च कर खाता उठाने को कहा। हीरालालजी ओसवाल की तरफ हमेशा चार हजार रुपये रखने को कहा।

वर्धा १८-९-१२

पू० रामगोपालजी व बद्रीनारायणजी पुलगांव से आये। उन्हें जाजूजी के यहां ले गये। मृत्यु-पत्र का मसविदा पू० रामगोपालजी ने जाजूजी को बताया। जाजूजी ने उसे अंतिम रूप से तैयार किया। घर आकर भोजन किया और मसविदा को अच्छे कागज पर लिखा। रजिस्ट्रार के आफिस में गये। कानून देखकर रजिस्टर किया।

पू० रामगोपालजी से बहुत-सी बातें हुईं। उन्होंने प्रसन्नता दिखाई। बोर्डिंग में पुलगांव, वर्धा, देवली के गाड़ी-बोझा पर हमेशा लाग देने का सहर्ष कबूल किया। रात की गाड़ी से पुलगांव गये। श्रवणलालजी का व्याख्यान सुना। जाजूजी व बिरदीचंदजी से बातें।

वर्धा व धामणगांव १९-९-१२

बगीचे में पं० श्रवणलालजी से बातें। विद्यार्थी-गृह गया। घर आया।

स्नान-भोजन कर विरदीचंदजी के यहां गया। वात हुई।
मेल से पुलगांव गया। पू० रामगोपालजी उसी गाड़ी से धामणगांव जा रहे थे, इसलिए उनके साथ धामणगांव जाते हुए वातें हुई। वहुत प्रसन्नता दिखलाई।
धामणगांव में भागचंदजी व दुलीचंदजी की माता से वातें। धामणगांव से वापस आते समय इंस्पेक्टर व पोस्टमास्टर से वार्तालाप। वापस वर्धा आये। वंसीधर हरलालका व अमृतलालजी अमरावतीवाले आये। साधारण धर्म विपय पर श्रवणलालजी का व्याख्यान हुआ।

२०-६-१२

पं० वृद्धिचंद्रजी से वार्ता। वाद में श्रवणलालजी से वातें। रात को भोजन के वाद श्रवणलालजी का व्याख्यान सुना।

२१-६-१२

जाजूजी से माहेश्वरी महासभा आदि विपय पर वातें। धामणगांव से दुलीचंद, लच्छी और उनकी माताजी आईं। उनसे वातचीत की।
विद्यार्थियों से हनुमान-चालीसा सुना। भोजन के वाद श्रवणलालजी का व्याख्यान सुना।

२२-६-१२

वगीचे में श्रवणलालजी से वातें। वद्रीनारायणजी आये। वड़े नाना से चूड़ामणराव के संवंध में वातचीत की। दुलीचंद व उसकी मां मेल ट्रेन से धामणगांव गये। उनसे वातचीत कर जाजूजी के यहां पंचायत के लिए गया। घर पर दत्तूजी आदि से वातें। ठाकुरजी का डोला निकला। साथ में घूमते हुए पोद्दारों के वगीचे गया। छत पर पूड़ी-साग खाया। विरदीचंदजी के यहां होते हुए डायासाहव के यहां सार्वजनिक गणपति में गया।
गीता विषय पर घारपुरे का व्याख्यान सुना। विलकुल ही अरुचिकारक था। श्रवणलालजी का व्याख्यान अच्छा हुआ।

२३-६-१२

आज सेशन में तारीख थी, इसलिए वहां गये। असेसर दूसरे मुकर्रर हुए।

बिरदीचंदजी से २।।। बजे तक वाद-विवाद व चर्चा होती रही।
चंदूलाल सरावगी की आश्चर्यजनक मृत्यु आज हुई। वहां बैठने गये। बालूजी से बातचीत। बगीचे में टेनिस खेला।
सार्वजनिक गणेशजी के सम्मुख पं० श्रवणलालजी का व्याख्यान सुना। घर पर जाजूजी से बातचीत हुई।

२४-९-१२

बगीचे में श्रवणलालजी व बिरदीचंदजी के साथ टेनिस खेला। घर में अनंत का उद्यापन था, उसकी जानकारी ली। दामोदर पंत खरे के यहां मुकदमे के लिए गया। श्रवणलालजी से बातें।
साधुराम तुलारामवालों से विद्यार्थी-गृह की लागत बाबत दौलतरामजी व बिरदीचंदजी के साथ बातें हुईं। गाड़ी पर तथा बोझे पर आधा आना लाग विद्यार्थी-गृह के लिए लगाया।
अनंत की तैयारी की। एक ही बार भोजन किया। रात को ११ से १२।। बजे तक पूजा-हवन इत्यादि होता रहा।

२५-९-१२

बगीचे से घर आकर अनंत-उद्यापन का हवन-कार्य किया। अनंत की कथा सुनी। लगभग २८ ब्राह्मणों को भोजन करवाया। ढाई बजे के करीब ऊपर की छत पर आनंद से भोजन हुआ। दक्षिणा दी। उद्यापन-कार्य से निवृत्त हुए और पोद्दारों के यहां गये। वहां से बगीचे गया। वहांपर रा० ब० पंडित, चक्रवर्ती, नायडु आदि आये। कौंसिल के मेंबरों के विषय में बहुत-सी बातें हुईं।
पोद्दारों के यहां गया। पूज्य नागरमलजी की स्त्री मामीजी से लगभग आध घंटा बातचीत। उसे समझाना चाहते थे, परंतु मन की बड़ी विलक्षण मालूम हुई। घरवालों के प्रति उसका आंतरिक प्रेम बिलकुल नहीं है।
विद्या विषय पर श्रवणलालजी का व्याख्यान हुआ।

२६-९-१२

रायबहादुर वासुदेवराव पंडित व वकील आये। बातचीत हुई। देवराव

देशपांडे व थोडगे आदि आये, उनसे बातचीत।

मेल पर कमिश्नर चैपमैनसाहब से मिलना और बातचीत। पाठकसाहब को मौका दिखाया। आज थोड़ा अजीर्ण मालूम हुआ। बगीचे जाकर टेनिस खेला।

विद्यार्थी-गृह में श्रवणलालजी, बिरदीचंदजी, वेद, बंसीधर हरलालका तथा विद्यार्थियों के साथ आनंदपूर्वक भोजन किया।

बालाजी-मंदिर में श्रवणलालजी का सनातन-धर्म की मूलकथा पर व्याख्यान हुआ। सनातन-धर्म सभा को, ब्राह्मण के लड़के संध्या सीखें, उन्हें पुरस्कार स्वरूप देने के लिए पचास रुपये देने को कहा।

२७-९-१२

पंडित श्रवणलालजी के साथ भोजन किया। वह आज जानेवाले थे। विदाई में उनको ५१ रुपये दिये। उनके साथ के आदमी को चार रुपये दिये। उन्हें १०-५३ की गाड़ी पर पहुंचाया। स्टेशन से घर आकर विश्राम किया।

बंबावाले के यहां गया। उनसे बातचीत की। बगीचे गये। टेनिस खेले। गरमी मालूम हुई। पोद्दारों के बगीचे जाकर, पेटी बांधकर तालाब में तैरे। कम भोजन किया और जल्दी सोये।

२८-९-१२

म्युनिसिपैलिटी की सब-कमेटी थी, वहां गये। कुएं का मौका देखा। राय-साहब चंद्रिकाप्रसाद से बातचीत की।

रामरिखजी, डागाजी, दत्तूजी आदि आये। उनसे बातचीत और बाद में भोजन किया। म्युनिसिपैलिटी के अधिकारी रुई की गांठों पर टैक्स लगाना चाहते हैं, इसलिए बहुत-से रुई के व्यापारी घर आये। कल मीटिंग में व्यापारियों की ओर से क्या-क्या दलील देना, इस विषय पर चर्चा हुई। रात को १०॥ बजे तक अन्नाजी सीताराम शेंडे आदि सब आये।

२९-९-१२

विद्यार्थियों की कुश्ती देखी। अत्रे वकील के यहां म्युनिसिपल टैक्स के विषय में सलाह लेने गये।

आज म्युनिसिपैलिटी की स्पेशल मीटिंग थी, वहां गये। १२॥ बजे तक श्री पाठकसाहब आदि से वाद-विवाद होता रहा। उनका बहुमत था, इसलिए उनकी इच्छानुसार प्रस्ताव हुआ। पोद्दारों के यहां गये।

रुस्तमजी पारसी मिलने आये, उनसे बातचीत हुई। चिटनवीससाहब के यहां उनकी तबीयत देखने गया। वहां कर्णिकसाहब आदि से बातचीत हुई। वहां से सबके साथ विघ्नेसाहब के यहां गये।

भोजन बोर्डिंग में किया। पंजगहान के विद्यार्थियों से बातचीत और उनके चालचलन की बाबत जांच की। जाजूजी जबलपुर से आये। उनसे मिला।

३०-९-१२

आज सवेरे जैनियों के प्रमुख माणकचंदजी पानाचंदजी वर्धा में जैन बोर्डिंग के उद्घाटन के लिए आये। उन्हें बाजे-गाजे के साथ स्वागत कर जुलूस में ले जा रहे थे, वह दृश्य देखा।

पंडित वृद्धिचंद्रजी से बंबई विद्यालय के बारे में बहुत देरतक बातें होती रहीं। उन्हें डाक गाड़ी पर पहुंचाया। वहां से बिरदीचंदजी के साथ पोद्दारों के बगीचे आये। वहां दो बाजी शतरंज खेली। वापस आ रहे थे, लेकिन माणकचंदजी वहां आ गये। उनसे बहुत देरतक बातें होती रहीं।

१-१०-१२

आज दिगंबर जैनियों का रथ था। जल्सा अपने यहां होनेवाला था, इसलिए व्यवस्था की। मगनबाई और कंकूबाई कन्या पाठशाला देखने आईं।

बिसाऊ के सुधारक पंडितजी ने कलकत्ते का बहुत-सा हाल बताया। सरावगियों का रथ आया। २-३ घंटे जल्सा रहा। गाना-बजाना आदि होता रहा।

पोद्दारों के यहां गया। वहां बिरदीचंदजी से विभीषण के बारे में बहुत देरतक वाद-विवाद होता रहा।

२-१०-१२

बंगले की रिपेअरी का काम देखने गये। टाऊन हॉल में को-आपरेटिव बैंक की सभा में जाना था, लेकिन वहां नहीं जा पाये।

दिगंवर जैन वोर्डिग में अकोलावाले श्री माणकचंद जयकुमारजी वकील आये। उन्हें मारवाड़ी विद्यालय, कन्या पाठशाला व विद्यार्थी-गृह दिखाये। वातचीत हुई, वगीचे में साथ गये।

घर आकर भोजन किया और पोद्दारों के वगीचे होकर जैन पाठशाला के मकान में कंकूवाई व मगनवाई के व्याख्यान सुनने गये। व्याख्यान अच्छा हुआ। आदमी भी वहुत आये थे।

३-१०-१२

आज पूज्य दादाजी व पिताजी का श्राद्ध था, १ वजे शुरु हुआ। तीन व्राह्मणों ने पारायण किया। ३॥ वजे निवृत्त हुए।

माणकचंदजी वंवई-मेल से जानेवाले थे। उनसे मिलने स्टेशन गया और वातचीत की। डाक-गाड़ी से विदा किया।

मगनवाई, माणकचंद पानाचंद जौहरी वंवईवालों की वेटी, व कंकूवाई (हिराचंद नेमिचंद की पुत्री) मानमलजी के साथ वग्गी से आये। लक्ष्मी-नारायण मंदिर में रात को कंकूवाई व मगनवाई का 'स्त्रियों के कर्तव्य' पर व्याख्यान हुआ। वहुत-सी स्त्रियां उपस्थित थीं। जाजूजी के यहां गये।

४-१०-१२

आज सर्दी लग गई, जिससे गरम पानी से स्नान किया। घर आकर देव-दर्शन आदि किया। शरीर गरम मालूम दिया। बुखार आना संभव लगा। डाक्टर वापट को वुलाया। होमियोपैथिक दवाई ली।

मगनवाई, कंकूवाई से कई आश्रमों की वातें हुईं। वे डाक गाड़ी से वंवई गईं। उनके आश्रम को सौ रुपये दिये।

शाम को पोद्दारों के यहां 'क्या विभीषण अन्यायी था?' इस विषय पर वाद-विवाद हुआ। रात को जाजूजी के यहां गये। शिवनारायणजी के हाथ से उनका निकाल करवाया, विद्यार्थी-गृह की लाग पर हमेशा के लिए उनकी सही करवाई।

५-१०-१२

तेल-मालिश करवाकर स्नान व पूजा की और गीता पढ़ी। कन्या पाठशाला

में जाकर लड़कियों को समझाया। मंदिर में दर्शन कर भोजन किया। जाजूजी आये, उनसे माहेश्वरी महासभा आदि विषयों पर बहुत-सी बातें हुईं। फोटो देखे, विपिनबाबू तथा गंगाधरराव चिटनवीस की चिट्ठी आई, वे कल नहीं आ सकते।

६-१०-१२

स्नान-संध्या के बाद गीता-पठन। मीठामल पोद्दार से बातचीत और भोजन। पोद्दारों के यहां गये। वहां भी थोड़ा भोजन किया। नागरमलजी आदि बंगले आये। आज विपिनबाबू व गंगाधरराव आनेवाले थे, पर स्वास्थ्य ठीक न रहने के कारण नहीं आये। पोद्दारों के बगीचे में वर्धा सीरपुर जीनिंग कंपनी की जनरल सभा हुई। वादविवाद के बाद निर्णय हुए।
आज मारवाड़ी कन्या पाठशाला की लड़कियों को भोजन करवाया। भोजन के बाद ज्योतिषी आये। उनसे प्रश्न पूछे, वादविवाद किया। भगवानदासजी केजड़ीवाल से बातें।

७-१०-१२

नागरमलजी मिलने आये। चिमनी गठान आदि विषय में बातचीत। बंसीजी व बापूजी से वार्ता। बगीचे गये। पोद्दारों के यहां भोजन किया, अनेक विषयों पर बातचीत होती रही। अमृतलालजी उपदेशक के एकदम बीमार होने की खबर सुनी। वहां गये। करीब १।। घंटा बैठे, दवाई वगैरा दी।

८-१०-१२

मीठामल पोद्दार व बंसीधर के साथ बगीचे गये। अमृतलालजी की देखभाल कर जाजूजी से बातचीत की। बंसीलालजी आदि से बातचीत की। हीरालालजी से वार्ता। तार वगैरा आये, उनके जवाब दिये। रामकुंवरजी से बातचीत की।
पंडित देवसहायजी, भगवानदासजी, छगनलालजी आदि से शास्त्रीय वार्ता।

९-१०-१२

बगीचे से आते समय बालूजी के यहां गये। दो कोशे के कोट-कमीज, दुपट्टे

बनवाये। लक्ष्मीनारायणजी वैद्य, बालूजी, राजकुमार आदि कई लोग आये। वार्ता हुई। बिरदीचंदजी पोद्दार के साथ गुलाबचंद सरावगी के, उनकी स्त्री मर गई थी, यहां बैठने गये। पोद्दारों के बगीचे से, गढ़ की तरफ से घूमते हुए, घर आया। बाद में जाजूजी के साथ पोद्दारों के यहां वर्धा सीरपुर जीनप्रेस के कार्य के लिए गया। पुलगांव के शामराव इंजिनियर से बातचीत की।

१०-१०-१२

बालाराम सेक्रेटरी घर पर आया। उससे बातचीत की। सीताराम शेंडे से वार्ता और विद्यार्थियों का गायन। लक्ष्मीनारायणजी व महादेवजी धामणगांव से २। बजे आये। वे मेल ट्रेन से धामणगांव वापस गये। यवतमाल का खुलासा और निर्णय हुआ। भुसान की खरीदी की कुछ व्यवस्था उनके जुम्मे की। आधी पाती उनकी रखकर भुसान-संबंधी कुल आधी-आधी पाती में जीन व बंगलासाहब के वास्ते कर दिया। व्यवस्था व हिसाब कबूल किया। कमेटी में गये। बंगले आकर पत्र पढ़े। एम० एम० बाटलीवालों के एजेंट आये, उनसे बातचीत की। दुर्गाप्रसाद खेतान को चांडील पत्र लिखा।

११-१०-१२

नरसिंहदासजी के मुनीम बरोरा जीनप्रेस की बातचीत करने आये। मसविदा जाजूजी को दिखाया। उसमें दुरुस्ती करने को कहा। जाजूजी के यहां गये। उनकी तबीयत अस्वस्थ थी। वहां बैठे।

बरोरा १२-१०-१२

बगीचे से जल्दी आकर बरोरा जीनप्रेस का दस्तावेज लिखाया। भोजन किया। ६ बजे की गाड़ी से बरोरा गये। पोद्दारों के यहां ठहरे। नरसिंहदासजी के मुख्त्यार आये। मसविदा बनवाया। सब-रजिस्ट्रार-दफ्तर बंद बताया। फिकर हुआ। तहसीलदार अच्छा मिलने से रजिस्ट्री हुई। भोजन नरसिंहदासजी के यहां किया। पोद्दारों के यहां भी थोड़ा खाया। मकान देखा। सुगनचंद का झगड़ा निपटाया। ११॥ बजे वर्धा पहुंचे। रुस्तम पारसी से बातें। 'नारायणराव पेशवा' नाटक देखा। सुमेरसिंह पात्र को इनाम दिय।

१३-१०-१२

सिविल सर्जन मिलने आया। कप्तानसाहब, जाजूजी व पोद्दारों के यहां से दूकान आकर दूकानवालों को काम सुझाया। कई लोग मिलने आये। बातचीत हुई। ४ बजे भोजन कर स्टेशन गया। सेकंड क्लास में भीड़ थी। इसलिए फर्स्ट क्लास में बैठे। बिरदीचंदजी आदि पहुंचाने आये। रेल में बंसीधर से वार्ता। पुलगांव से धामणगांव तक बद्रीनारायण से बातें। श्रीनारायण आदि आये। अकोला में श्रीराम लक्ष्मीचंद आये। सेगांव स्टेशन पर जोहारमलजी, स्वामीजी, मास्टर आदि आये। बातें हुईं। दूध, जल व पान लिये। भुसावल स्टेशन पर हरसामलजी मिले। भुसावल में जीवनदासजी के पुत्र गोविंददासजी को घूमते देखा।

बंबई १४-१०-१२

सवेरे कल्याण में गोविंददास मालपाणी से मिले। गाड़ी में बोरीबंदर तक उनसे बातें होती रहीं। स्टेशन पर उतरे। खेमराजजी, ब्रजमोहनजी, मुरलीधरजी आदि सज्जन स्टेशन पर आये थे। हार पहनाया।

शिवनारायणजी नेमानी ने विद्यालय के लिए दो साल के लिए मकान देना निश्चय किया, सो दूकान के नीचे से ही देखा। वहां सबसे मिले।

रामनारायणजी से बहुत-सी बातें हुईं। उन्होंने परमात्मा को साक्षी रखकर कहा कि सच्चे दिल से हम तुमको अंतःकरणपूर्वक चाहेंगे। आधी रात को कोई भी काम होगा करने को तैयार रहेंगे। उनकी इच्छानुसार पूरा जमाखर्च करवा दिया। उन्होंने विद्यार्थी-गृह आदि विषय की वार्ता राजनैतिक बताई।

केदारमलजी के यहां गये। वहां से पं० दीनदयालुजी के यहां होकर ब्रजमोहनजी की दूकान पहुंचे। विद्यालय-संबंधी काम किया। पं० दीनदयालुजी आदि आये। रामनायणजी से बातचीत और भोजन।

बंबई १५-१०-१२

श्राविकाश्रम देखने तारदेव गये। वहां का सभी कार्य मगनबाई, कुंकूबाई, ललिता, यशोदाबाई ने दिखाया। कार्य देखकर चित्त में अत्यंत प्रसन्नता

हुई। आज प्रथम वार ही इस तरह की स्त्रियों की व्यवस्था स्त्री-कार्यकर्त्रियों द्वारा चलती हुई देखी।

माधवबाग का दर्शन कर पं० दीनदयालुजी से मिलकर डेरे आया। भोजन कर विश्राम किया।

वल्लभनारायणजी दानी आये। उनके साथ चंदावाड़ी गया। विद्यालय के नियम ठीक करने का कार्य २॥ बजे शुरु हुआ, सो रात को ८। बजे तक चलता रहा। थोड़ी देरतक पंडितजी से बातें कर डेरे जाकर भोजन किया। नारायणदासजी पोद्दार व हीरजी से बातचीत की। आज डोंगरदासजी नेवटिया के यहां से बाणच (फल-मेवे आदि) आया। एक रुपया लानेवाले को दिया।

१६-१०-१२

पंडितजी के पास चंदावाड़ी गये। काफी देरतक बहुत-सी बातें होती रहीं। देवीप्रसादजी खेतान की विलायत-यात्रा के संबंध में बहुत-सी बातें हुई। पंडितजी ने कहा उसका उत्साह भंग न करो, जाने दो। बिरादरी के तथा और भी बहुत-से लोग आये थे।

इन्कमटैक्स कम-से-कम पांच वर्ष व ज्यादे-से-ज्यादे सात वर्ष का नक्की करने को कहा। २३०० रुपया साल निश्चित हुआ। लिखा-पढ़ी मजबूत करने के लिए लच्छीरामजी को समझाया। हीरजी घीया का रोजगार अब बंबई खाते रहा। लच्छीरामजी को पू० रामगोपालजी के समाचार खुलासेवार मंगाने को कहा।

रामनारायणजी के साथ भोजन किया। शंभुप्रसाद से वार्ता। २ बजे भुसान कंपनी के आफिस में गया। वहां सबसे प्रेम से बातचीत हुई। फुलगोरीसाहब से बहुत-सी बातें हुई। अमरीका का सौदा उनकी सलाह से करने के कारण वर्धा खाते रखने को कहा। आढ़त बारह आना सैकड़ा कही। वहां से कुलाबा गया। रघुनाथभाई, स्कोडासाहब आदि मिले। डेरे पर आकर विद्यालय का काम किया। खेमराजजी, सीताराम पोद्दार, ब्रजमोहनजी, मोतीलालजी नेवटिया आदि सज्जन मिले। चंदावाड़ी व्यवस्थापक-सभा के लिए ८॥ बजे

गये। रामनारायणजी के साथ डेरे पर गये।

१७-१०-१२

हीरालालजी वर्धावालों से बातें कीं। कालीप्रसादजी खेतान के यहां मिलने गये। वह पूजन में बैठे थे। गीताजी का पाठ करके कुछ बातें हुईं। फिर व्यंकटेश्वर प्रेस में गये। जाजूजी ने माहेश्वरी महासभा के बारे में लिखा था, सो छपवाया। खेमराजजी से बहुत-सी बातें हुई। उन्होंने अत्यन्त आग्रह किया, इसलिए भोजन वहीं किया। गणेशदत्तजी उपदेशक से मिले। व्यंकटेश्वर के मैनेजर शिवराजजी आदि आये। जुलूस का प्रबन्ध किया। सीतारामजी, खेमराजजी, ब्रजमोहनजी, वल्लभनारायणजी, दानीजी, चन्द्रशंकरजी. जगन्नाथजी आदि सज्जन आये। विद्यालय-सम्बन्धी कार्यवाही ७॥। बजे तक चलती रही।

भोजन कर रामनारायणजी के साथ व्यवस्थापक-सभा में गये। रामनारायणजी से बहुत-सी बातें हुईं।

१८-१०-१२

जयनारायणजी दानी व वल्लभनारायणजी आये। मंत्री को चिट्ठी न भेजने को कहा। डेरे आकर रामनारायणदासजी पोद्दार व बालूभाई से बातचीत। मर्चेंट बैंक में गया। वहां जाइंट-सम्बन्धी तथा वर्धा में बैंक की शाखा खोलने के सम्बन्ध में बातचीत हुई।

दयाराम गिड्डूमलजी सेवासदन-आश्रम में गया। वहां की कार्यवाही व उनका स्वभाव तथा ऊंचे विचार देखकर बड़ा ही आश्चर्य व प्रसन्नता हुई। सब व्यवस्था बारीकी से देखी। सुशीलाबाई के जरिये वहां १०० रुपये भिजवाये। वहां से खेमराजजी के प्रेस होते हुए दानीजी के यहां मोटर से गये। बैंक व जाइंट-सम्बन्धी बहुत-सी बातें हुईं। वहां से चौपाटी घूमने गये। वहां तथा मोटर में बातें होती रहीं। डेरे आये।

कुछ लिख रहे थे कि कालीप्रसादजी खेतान आये। उनसे बहुत-सी बातें कीं और समझाया। भोजन कर उन्हें लेकर मोटर में महालक्ष्मी के दर्शन करने गये। वहां बड़ा भारी मेला लगा हुआ था। कालीप्रसादजी योग्य हैं।

वहां से घूमते हुए डरे आये। वालूभाई, नारायणदासजी साथ में थे। मोटर का किराया ८॥ रुपया लगा।

१६-१०-१२

वालूभाई, नेकीरामजी, ताराचन्दजी से बातें। कालीप्रसादजी खेतान की विलायत-यात्रा को लेकर दो विभाग नहीं होने चाहिए, यह ताराचन्दजी ने भी कहा। भोजन के बाद मामूली कार्य कर विलायत जानेवाले स्टीमर पर कालीप्रसादजी खेतान से मिलने गये। वहां समाज के कई सज्जन उपस्थित थे। कालीप्रसादजी के रसोइये का वेश देखकर आश्चर्य हुआ।

मर्चेंट बैंक में जाइंट-सम्बन्धी बातें कीं। ब्रजमोहनजी के पास गये। उनसे विद्यालय-सम्बन्धी बातें हुईं। रामनारायणजी से देस, दानप्रणाली आदि विषयों पर बातें हुईं। उन्हें कहा कि आपकी पूज्य माताजी से मिलते समय वर्धा में स्मारक करने की बाबत पूरा खयाल रखें। उन्होंने स्वीकार किया।

पंडितजी से मिलने चंदावाड़ी गये, तो वहां दूसरा ही रंग देखा, जो बिलकुल ही नियम के विरुद्ध था। ५-६ लोग जमा हो रहे थे। उनसे कोई बात कही गई तो ऐसा लठमार उत्तर दिया कि बड़ा बुरा लगा। किंतु किसी तरह विद्यालय का काम पार पड़े, इसलिए सहन किया। नन्दलालजी व गोविंदरामजी की मर्यादा-रहित बातें सुनीं। हाथ जोड़कर उत्तर दिया। डेरे आकर भोजन किया।

रामनारायणजी का विचार देस जाने का था, सो कल पर रहा। उनके साथ घूमने गये। कई तरह की, घर की व विद्यार्थी-गृह की खुलासेवार बातें हुईं। बहुत प्रेम दिखाया।

२०-१०-१२

चन्दावाड़ी सभा के लिए ८ बजे पहुंचे। तब वहां दो ही आदमी थे। धीरे-धीरे लोग आये, उनका स्वागत किया और उनसे बातचीत की। ८॥ बजे काम शुरू हुआ। सभा अच्छी हुई। जुलूस ६॥ बजे निकला। बहुत-से बड़े लोग थे। घूमते-फिरते नेमाणी विद्यालय के भवन पर पहुंचे। वहां

आनरेवल गोकुलदास काहनदास पारीख उपस्थित थे। वह थोड़ा-सा बोले। सार अच्छा था। पूजन वगैरा हुआ और बहुत-से लोगों की उपस्थिति में विद्यालय का उद्घाटन आनन्द से हो गया। समारोह अच्छा हुआ।

रामनारायणजी के साथ डेरे पर आये। दशहरे का पूजन और भोजन किया। चूड़ामण आया, उससे बातचीत हुई। दूकान जाकर मुनीम-गुमाश्तों को इनाम दिया। मुम्बादेवी का मेला देखा।

लच्छीरामजी व मुरलीधर के साथ श्राविकाश्रम गया। मगनबाई आदि से बातचीत कर पुस्तकों के लिए पचास रुपये दिये। प्रसन्नता हुई। डेरे गया। रामनारायणजी से विद्यार्थी-गृह के सम्बन्ध में बात की। उन्होंने सहायता शीघ्र पहुंचाने के लिए पक्का और विश्वासपूर्वक वचन दिया। रामनारायणजी सहकुटुम्ब गये। उन्हें पहुंचाया। अत्यन्त प्रेम दिखाया।

२१-१०-१२

चंडीरामजी व पालीरामजी आये। अमदावाद स्टेशन पर श्री रामनारायणजी के लिए पूड़ी-साग लाने के लिए तार दिया। दूकान गये। वहां से बिरदीचंदजी के घर के लिए हार आदि लाने के लिए गये।

ब्रजमोहनजी की दूकान गये। गणेशदत्तजी महाउपदेशक से बातचीत। उन्होंने पं० दीनदयालुजी के विषय में अप्रीति दिखाई। वल्लभनारायणजी आये। नवरोजजी गामड़िया के यहां गये। जाइंट की खुलासेवार बातचीत हुई। ६० जीन मशीन तैयार हो, उस दिन से तीन साल का जाइंट। ओटाई ४॥, बंधाई ३॥। यह निश्चय हुआ।

दानीजी के यहां गये, वह आज गोंडल जानेवाले थे। बैंक की वर्धा में शाखा खोलने के विषय में बातचीत। विलायत के काम की भी खुलासेवार बातें हुई। वहां से ब्रजमोहनजी के यहां गया। बालूभाई को साथ लेकर छोटा पालना व गाड़ी की तलाश की। बहुत घूमे। माधोबाग में पं० ज्वालाप्रसादजी व गणेशदत्तजी का व्याख्यान सुना। ज्वालाप्रसादजी में फजूलपना कम नज़र आया।

पं० दीनदयालुजी से बात कर आये। भोजन के बाद झाबरमल व बिरदीचंदजी

वकील आये। उनसे १२ बजे तक बातें होती रहीं। नन्दलालजी, ताराचन्दजी, सीतारामजी नेवटिया आदि से बातें।

बंबई से रवाना २२-१०-१२

स्टेशनरी का सामान मंगाया। भोईवाड़े में जाकर लक्ष्मीनारायण के दर्शन किये। मन्दिर तो साधारण था, लेकिन मूर्तियां बड़ी ही सुन्दर व मनोहर थीं। वहां से चन्दावाड़ी गये। पं० दीनदयालुजी से बातें हुईं। कमेटी का क्या कहना था, यह बता दिया। घर आये।

वणी के जीनप्रेस की बात की। डोंगरदासजी नेवटिया से मिलने गये। वहां बहुत-सी बातें हुईं। खेमराजजी आये, मानपत्र देने को कहा, लेकिन मैंने बिल्कुल इन्कार कर दिया। डेरे आये। खेमराजजी से बातें होती रहीं। पं० वृद्धिचन्द्रजी को विद्यालय के काम का पारिश्रमिक तीन सौ एक रुपया देने को लक्ष्मीराम से कहा। ब्रिजमोहनजी से बातें कीं।

खेमराजजी आदि ने रहने का आग्रह किया, लेकिन एक तो मन उठ गया था व वर्धा से तार-पत्र भी आये थे।

भुसान के आफिस में गये, सबसे मिले। बातचीत कर स्टेशन आये। वहां वल्लभनारायणजी दानी, खेमराजजी, रंगनाथजी, ब्रजमोहनजी, रामचंद घीसूलाल, पालीरामजी, बिरदीचंदजी, झाबरमल और लोगों से भेंट।

जथे की दूकान, घरू दूकान के सब आदमी तथा दलाल वगैरे कई सज्जन स्टेशन पर पहुंचाने आये थे। सबसे मिलकर बातचीत की। फर्स्ट क्लास में बैठे। बेरामशा पारसी सज्जन मालूम हुए, रेल में उनसे बातें होती रहीं। उन्होंने बहुत-सी बातें कहीं। इगतपुरी, मनमाड में थोड़े फल खाये और पानी पिया।

चालीसगांव में हीरालालजी का तार मिला। वह बिना कपड़े के मनमाड में रह गये। नौकर को उनके लिए उतारा। चिंता रही।

वर्धा २३-१०-१२

वर्धा ६।। बजे पहुंचे। स्टेशन पर दूकान के लोग और विद्यार्थी आये थे। दो विद्यार्थियों के साथ बगीचे गये। वहां नित्य-कर्म से निवृत्त हो घर आये।

घर पर चिमणीरामजी, सीतारामजी से विद्यार्थी-गृह के चन्दे के लिए कहा गया। सीतारामजी की इच्छा १००० की थी, इसलिए नहीं लिया।

डिप्टी कमिश्नर पाठक के बंगले पर पार्टी थी, इसलिए वहां गये। बहुत-से लोगों से विविध वार्ता हुई। फल खाये। मिसेज़ पाठक, फोस्ट, बंबावाले से बातें कीं। जाजूजी ने अमृतलालजी के साथ भोजन किया। महासभा के लिए विद्यार्थियों ने पद बनाये थे, वे मन्दिर में सुने। अमृतलालजी चक्रवर्ती से वार्ता।

२४-१०-१२

बगीचे में मकराने का काम करवाया था, सो भगतजी को बताया। उन्हें पत्थर के लिए लिखने को कहा। सर्दी बहुत होने से तबीयत अस्वस्थ मालूम हुई। शिवभगवान आया, उसने भविष्य में भूल न करने की प्रतिज्ञा ली। ब्राह्मणपुर के ब्रह्मचारियों से बातचीत की। पं० भगीरथजी व भगवान-दास से बातें कीं। जस्सावाले के लिए २५ रुपये चन्दा दिया। गोरक्षा का प्रबन्ध जैसा चाहते हैं, वैसा हो और पैसा-फण्ड निकालें तो एक पैसा हर रोज का देने का निश्चय किया। जाजूजी के साथ भोजन। शालीग्रामजी से जाइंट के बारे में कहा। वह बहुत जिद्दी हैं। वह आर्वी गये।

जीन का पुल देखने गये। वहां से पोद्दारों के यहां बिरदीचंदजी से बातें। बाजार में नया मकान बन रहा था, वहां गये। मकान का मौका देखा। बाढोणे के किसी साधु का देहान्त हो गया था, उसे लोग बाजे-गाजे के साथ ले जा रहे थे। उसे देखा। घर पर आये। भागीरथजी व देवीसहायजी से बातचीत। जाजूजी के साथ भोजन किया।

२५-१०-१२

आज दिल्ली से स्वामी शिवगणानन्दजी आये। जाजूजी के यहां उनसे मिले और कुछ बातचीत की। जाजूजी २॥ बजे की गाड़ी से नागपुर गये।

स्वामीजी के साथ बातचीत और उनके साथ २॥-३ मील घूमे। दो-तीन विद्यार्थी भी साथ में थे। घर आकर भोजन किया। मन्दिर में आज शरद-पूर्णिमा का उत्सव था। वहां बैठे। विद्यार्थियों का गायन हुआ। स्वामी

शिवगणानन्दजी का 'साधारण धर्म' इस विषय पर व्याख्यान हुआ। बारह बजे आरती हुई, प्रसाद लिया। थोड़ी देर बाहर चौक में खड़े रहे। १॥ बजे सोया।

२६-१०-१२

स्टेशन गये। सवेरे पंडित दीनदयालुजी, हरिस्वरूपजी, नेकीरामजी आदि मेल से आये। उन्हें बगीचे ले गये। वहां नित्य-कर्म से निवृत्त हो घर आये। उनके व विद्यार्थियों के साथ में भोजन किया। विश्राम व गृहकार्य के बाद पंडितजी से बातें कीं। डाक्टर मोहर, तानबा जवड़े के साथ कौंसिल के वोट के लिए आये। उन्हें साफ कह दिया कि उन्हें वोट नहीं दे सकता। पंडित वृद्धिचन्द्रजी के साथ पोद्दारों के बगीचे गये। बाद में बगीचे में टेनिस खेले। घर आकर भोजन व देवदर्शन। पंडितजी से बातें होती रहीं। २॥ बजे की गाड़ी से छात्रालय के विद्यार्थी नागपुर गये।

नागपुर २७-१०-१२

माहेश्वरी महासभा के लिए २॥ बजे की गाड़ी से नागपुर जाना था। उसकी तैयारी की। सेकण्ड क्लास रिजर्व कराके रवाना हुआ। रेल में दामोदरदासजी राठी तथा कई सज्जनों से बातें हुईं। नागपुर पहुंचे। स्टेशन पर बहुत-से लोग आये थे। जुलूस में पैदल पं० दीनदयालुजी के डेरे गये। उनकी वहां सब तरह की व्यवस्था लगा दी। वहां गोस्वामी मधुसूदनाचार्यजी से मिले। फिर पोद्दारों के बंगले गये। भोजन के बाद महासभा के मण्डप में गये। जाजूजी, पंडितजी से मिलकर अमोलकचन्द के साथ बंगले जाकर सोये।

२८-१०-१२

श्रीनिवास को इतवारी टेलीफोन किया। सभा-मण्डप होते हुए रसोई के लिए इतवारी गये। दादी का वार्षिक दिन था। एक ब्राह्मण जिमाकर भोजन किया। बारह बजे महासभा के लिए रवाना हुए। महासभा का काम शुरू हो गया था। वल्लभदासजी जबलपुरवालों के पास बैठे। सभा का कार्य विधिपूर्वक आनन्द के साथ समाप्त हुआ। जाजूजी से बात कर

पोद्दारों के बंगले गये। भोजन किया। आराम करना चाहते थे कि राठी-जी व जाजूजी का बुलावा आया। अध्यक्ष फत्तेलालजी के डेरे पर पहुंचे। विद्या-प्रसार के लिए फंड जमा करने के विषय में उनसे बात की। वहां से दीवान बहादुर वल्लभदासजी के पास गये। फत्तेलालजी, दामोदरदासजी राठी व जाजूजी ने उन्हें बहुत समझाया, उन्होंने चन्दा इकट्ठा करने व स्वयं भी देने को कहा। सभा-मण्डप होते हुए पोद्दारों के बंगले जाकर शयन किया।

२९-१०-१२

पूज्य बैरिस्टर दादाभाई व दीक्षित आये। उनसे एक घंटे तक बातें हुईं। बाद में सभामंडप में गये। वहां से गोस्वामीजी के यहां गये। फिर बंगले जाकर भोजन किया।

सभा में गये। बारह बजे काम शुरू हुआ। विद्यार्थियों का मंगलाचरण होकर पं० अमृतलालजी चक्रवर्ती, गोस्वामीजी व दीनदयालुजी के व्याख्यान व अपील ठीक हुईं। वल्लभदासजी से बहुत देरतक बातें हुईं। अपील का काम शुरू हुआ। करीब ५५-६० हजार रुपये लिखे गये। पचीस हजार रुपयों की पहले ही व्यवस्था कर ली थी।

शाम को आफिसर लोग आये। कमिश्नर बाकरसाहब, डिप्टी कमिश्नर विपिन बोस, चिटनवीस आदि आये। बाकरसाहब का फत्तेलालजी व राठी-जी से परिचय कराया। कार्यक्रम आनंद के साथ पूर्ण हुआ।

३०-१०-१२

पू० जीवराजजी, नागरमलजी आदि से बातचीत की। नागरमलजी के साथ एम्प्रेस मिल के मैनेजर सोराबजी से मिलने गया। विद्यार्थी-गृह के विषय में बहुत-सी बातें हुईं। वहां से विपिन कृष्ण बोस के यहां गये। वहां भी खानगी बातचीत हुई। वहां से महासभा पंडाल होते हुए बगले पर भोजन किया।

जीवराजजी नागरमलजी से विलायत में दूकान करने के बाबत बात हुई। वह बात उनके भली प्रकार ध्यान में आ गई। नागरमलजी ने पू० जमनाधरजी

से पूछने का कवूल किया। फिर माहेश्वरी सभा में गये। वहां सभा का काम शुरू हुआ। वहां से स्टेशन जाकर वर्धा के लिए डिब्बा रिजर्व कराया। चीफ कमिश्नर साहब आज आनेवाले थे। सर बेंजामिन राबर्टसन से पंडित-साहब व सर चिटनवीस के जरिये मिले। बहुत-से अफसरों व दीवान बहादुर से बातचीत हुई। सभा में आये। वल्लभदासजी से गौहर आदि का नाच बंद कराने को कहा। दीनदयालुजी, मधुसूदनजी डेरे पर आये। महासभा की तरफ से दुशाला भेंट किया। सबसे मिले। स्टेशन पर जाजूजी आदि पहुंचाने आये। वर्धा आकर १॥ बजे शयन।

वर्धा ३१-१०-१२

सबेरे उठकर पं० दीनदयालुजी से बातचीत। आज भोजन पंगत में किया। अमृतलालजी चक्रवर्ती से बातचीत की। मधुसूदनाचार्यजी की व्यवस्था पोद्दारों के यहां करने को कहा। २॥ बजे स्टेशन गये। बद्रीनारायणजी पुलगांव से चंदौसी जा रहे थे। उनके साथ सींदी तक गये। उनसे लच्छीरामजी व भागचंदजी के विषय में बातचीत की। उन्होंने अपना अभिप्राय कहा। सिंदी स्टेशन से मेल-ट्रेन से गोस्वामीजी के साथ वर्धा आये। कासगंजवाले सूरजप्रकाशजी, गुलाबचंदजी नागोरी आदि माहेश्वरी सज्जन साथ थे। बगीचा दिखाया। टेनिस खेले। घर पर पक्का भोजन सबके साथ छत पर किया। स्टेशन पर दामोदरदासजी राठी से मिलने गये। वह नहीं आये, पर विद्यार्थी लोग आये थे।

बिरदीचंदजी से बातचीत की। आज शाम को डेडराज ब्राह्मण की मां के खर्च (मृत्युभोज) की पंचायती थी, इसलिए पोद्दारों के यहां ठहरे। निपटारा हुआ।

१-११-१२

पं० दीनदयालुजी, अमृतलालजी चक्रवर्ती आदि से मिलकर बगीचे गये। नेकीरामजी को औषधि दी।

गोस्वामी मधुसूदनाचार्य से मिलने पोद्दारों के बगीचे गये। उनसे बहुत-सी बातें हुईं। सनातन-धर्म के मुख्य लक्षण बताये। अविद्वान ब्राह्मण और दुर्व्य-

सनी लोगों के विषय में पूछा। संतोषजनक उत्तर दिया। घर आकर स्नान व भोजन किया और व्यवहार-कार्य देखा।

मधुसूदनाचार्य घर पर आये। गोस्वामीजी, दीनदयालुजी, अमृतलालजी आदि सज्जनों ने कन्या का नाम कमला रखा। उन सबको मंदिर, विद्यालय, कन्या पाठशाला, विद्यार्थी-गृह आदि दिखाये। मधुसूदनाचार्यजी का रात को लक्ष्मीनारायण मंदिर में भक्ति विषय पर व्याख्यान हुआ। व्याख्यान ठीक था। उनको भेंट देने के लिए पोद्दारों के बगीचे गये। १।। बजे आकर शयन।

२-११-१२

आज बंगले के सामने पं० दीनदयालुजी का भक्ति पर व्याख्यान था; उसका प्रबंध करवाया। डाकगाड़ी से दीवान बहादुर वल्लभदासजी ग्वालियर जाने-वाले थे। उनसे मिलने स्टेशन गये। बातचीत हुई। स्कोडा तथा जापान के साहब नागपुर से आयें, वहां जाकर घर गये। वहां से कप्तान आदि के यहां गये। व्याख्यान के लिए बिछायत करवाई। लगभग छह सौ आदमी एकत्र हुए। अध्यक्ष रावबहादुर खरे थे। व्याख्यान ठीक हुआ। जाजूजी के साथ भोजन।

नागपुर-वर्धा ३-११-१२

अमृतलालजी व झाबरमलजी कलकत्ता गये। वल्लभदासजी के नागपुर के मुनीम सुजानमलजी आये। वह जाइंट के बारे में परवानगी दे गये। हमेशा के लिए डेढ़ आना गाड़ी का विद्यार्थी-गृह के लाग बाबत कागज पर पढ़कर दस्तखत कर दिये।

दीनदयालुजी के साथ २।। बजे नागपुर गये। आज उनका व्याख्यान था। स्टेशन पर ३०-४० लोग लेने आये थे। जिनमें तीन कवि भी थे। व्याख्यान ७ बजे शुरू हुआ। सनातन-धर्म का असली स्वरूप बताया। व्याख्यान अच्छा व प्रभावशाली हुआ।

भोजन इतवारी में घर पर किया। रात को ९।। बजे पोद्दारों के बंगले गये। वहां दूध लिया। रात की गाड़ी से वर्धा आये। विद्यार्थियों को देखा। वे सो गये थे।

४-११-१२

स्नान-भोजन के बाद पंडितजी से बातचीत की। वृद्धिचंदजी आदि आये। पंडितजी का आज व्याख्यान था, लेकिन उनकी माताजी की बीमारी का तार आया, जिससे डाकगाड़ी से पं० दीनदयालुजी, हरस्वरूप, नेकीरामजी, हरनारायण को पहुंचाया। बिरदीचंदजी के साथ बग्घी में घूमे।

घर आकर बगीचे में जाकर टेनिस खेले। गजु से बातचीत। नागपुर-सभा का हिसाब जाजूजी से किया। बंबई का हिसाब हुआ।

६-११-१२

दुबे तहसीलदार के घर होते हुए बगीचे से वापस आया। वहां बातचीत हुई। ९ बजे गाडगील, कर्णिक व दुबे तहसीलदार आये। चीफ कमिश्नर के आने के विषय में बातचीत।

घटाटे के मुकदमे में साक्षी थी, इसलिए कचहरी गया। वकील-रूम में बैठे और बातें करते रहे। वहां की व्यवस्था देखते रहे। मुकदमा शुरू हुआ, थोड़ी देर में साक्षी खतम हुई। महाराजदीन की साक्षी सुनी, मजेदार मालूम हुई।

घर आकर विश्राम व व्यवहार-कार्य।

७-११-१२

सोहागपुरवालों से बातचीत की। गाडगीलसाहब आये। चीफ कमिश्नर के कार्यक्रम-संबंधी बातचीत हुई। भोजन-विश्राम के बाद दुकान-कार्य। मिचल कंपनी के पेस्तमजी आये, उनसे बातचीत की।

बस्ती में थोड़ी देर गये। घर आकर दीयों की पूजा कर भोजन। पोद्दारों के यहां गया। वहां श्री रामचंद्रजी की भक्ति पर अच्छा व्याख्यान हुआ।

घर आकर लक्ष्मीजी के आगे बिस्तर पर सोये।

८-११-१२

बगीचा, घर आदि की सजावट करते रहे। दूकान की सजावट का काम शाम तक बराबर होता रहा। शाम को दीपपूजन के बाद सबके साथ मिलकर भोजन किया। श्रीलक्ष्मी-पूजन आनंद से हुआ। रुई आदि के सौदे हुए। नई दूकान पर पान-सुपारी को गये। वहां से बालूजी आदि के यहां होते हुए

पोद्दारों के यहां गये। वहां बहुत-से सौदे हुए। घर पर भी थोड़ा सौदा हुआ। इस साल हवा आदि नहीं थी। रोशनी साधारण ठीक थी। दूकान के कर्मचारियों व नौकरों को इनाम वगैरा दिये।

९-११-१२

जाजूजी से ट्रांसवाल, टर्की आदि देशों की तथा स्वामी विवेकानंद, रामतीर्थ आदि महात्माओं की बहुत देर तक बातचीत की।

स्नान, पूजन, भोजन करके डिप्टी कमिशनर के यहां सलाह के लिए गये। वह रास्ते में मिल गये। मामूली बात हुई। फिर आने को कहा। ठाकुरसाहब से मिलकर पोद्दारों के यहां होते हुए घर आये।

नये वर्ष की चिट्ठियों पर ३॥ से ५॥ तक जैगोपाल लिखे। बालाजी के मंदिर में अन्नकूट के भोजन का बुलावा आया। वहां भोजन के लिए गये। घर पर केदार (विद्यार्थी) ने बहुत-सी बातें कहीं। रामलाल पांडे आये, उनसे व हीरजी से बातचीत। थोड़ी सर्दी थी, इसलिए जल्दी सो गए।

१०-११-१२

सवेरे अमरचंदजी के साथ बगीचे गया। स्वामी सरस्वतानंदजी से महात्माओं के संबंध में बातचीत हुई। सेगांव बोर्डिंग का मास्टर आया। उसे बहुत-कुछ कहा। उसने दस्तावेज लिखना नामंजूर किया।

दो बजे ठाकुरजी की आरती हुई। तीन बजे पुलगांव से बद्रीनारायणजी वगैरा आये। उनके साथ भोजन। मानमल सरावगी से सिरपुर जीन तथा जाइंट वगैरा के बाबत बातें कीं।

बिरदीचन्द आये। दीपावली का सौदा किया था। उनको ५०० रुपये मुनाफे के देकर उसे बराबर किया। बाद में गांव के लोगों को जिमाना शुरू हुआ। बहुत अच्छी तरह से भोजन कराया गया। पुलगांव से कई लोग आये थे। जाजूजी आदि सभीने भोजन किया। विद्यार्थी-गृह के लाग की बात हुई। वर्धा की नई दूकान, देवली व पुलगांव की लाग बद्रीनारायणजी की सलाह से लिखी गई।

रामनाथजी के यहां पानबीड़ा के लिए गये। गोरधनदास बजाज ने

भागचंदजी से हुई बातचीत बताई।

११-११-१२

गाडगील साहब आये। उनसे चीफ कमिश्नर के स्वागत-संबंधी बातें हुईं। जाजूजी के साथ साढ़े तीन बजे डिप्टी कमिश्नर के यहां गये। सराय, बोर्डिंग की बातें हुईं। सराय की दरखास्त बनाई। नक्शे के लिए कहा। कामासाहब के बंगले तक बातचीत करते आये। उन्होंने कौलसाहब के बारे में कहा। कल पत्र लेकर बुलाया।

बगीचे गये। जाजूजी से बातचीत की। टेनिस खेले। नागपुर, छिंदवाड़े से आये हुओं से बातचीत की।

१२-११-१२

आत्माराम दलाल के यहां से पान-बीड़ा लेकर, डिप्टी कलेक्टर पाठक ने बुलाया, सो वहां गये। कौलसाहब के साथ का सारा पत्र-व्यवहार बताया। उन्होंने साफ कहा—तुम्हारी गलती नहीं है। कौलसाहब बूढ़े होने के कारण भूल गये हैं।

२।। बजे की गाड़ी से भागचंदजी, बद्रीनारायणजी, मानमलजी आदि आये। सिरपुर जीन की बातचीत हुई। २०-२१ हजार तक मिले तो लेने का निश्चय हुआ। उसमें मानमलजी की आधी पाती रहे।

पोद्दारों के बगीचे गये। वहां बिरदीचंदजी से बहुत देरतक बातें हुईं। उनको बहुत समझाया कि सिरपुर के कारखाने में हमारे सीर में तुम रह जाओ, नहीं तो हमें अपने सीर में रख लो। वह नहीं माने। पोद्दारों ने वह जीन २० हजार में लिया। भागचंदजी, बद्रीनारायणजी से जाइंट-संबंधी बातें। वह गये।

१३-११-१२

तहसीलदार साहब के यहां होकर जाजूजी के यहां गये। वहांपर कान्ट्रेक्ट का मसविदा बनवाया। अन्नाजी आये। उन्हें काम के बारे में एक घंटे तक समझाया।

आज दलाल तथा सिताबर्डी के लोगों की पार्टी थी। आनंद से हुई। घरू

तथा मंदिर की रोकड़ देखी। नेमीचंद विद्यार्थी की जांच की। उसे बहुत देर तक समझाया। उसने बहुत-सा हाल बताया। उसे अहंकार के बारे में समझाया। बंसीधर हरलालका ने इनाम के लिए चिट्ठी लिखकर दी। आज इक्यावन गाठें दिसंबर की ग० ११८ और सौ जनवरी की ग० ११६ में नई दूकान को बेचीं।

१४-११-१२

गाडगीलसाहब आये। चीफ कमिश्नरसाहब ने पार्टी मंजूर की, यह बताया, और भी बातें हुईं। मुरलीधरजी हलवासिया मिलने आये। उन्होंने अपनी हकीकत कही। बंबावाला कप्तान के यहां गये। वह भी आज घर को आये थे। उनसे बहुत देर तक अनेक विषयों पर बातचीत हुई। उन्हें विद्यार्थी-गृह को नरसिंहदासजी मोहता से अच्छी रकम दिलाने को कहा। उन्होंने प्रयत्न करने को कहा। विद्यार्थी-गृह से पूर्ण सहानुभूति बताई। अपने लड़के-लड़कियों को साथ लेकर घर आये। बिरदीचंदजी पोद्दार आये।
आज हुरडा (जवार के भुने हुए भुट्टे) पार्टी अच्छी रही। गाडगील साहब, बाबूराव, रामनाथजी वगैरा कई सज्जन उपस्थित थे। बातें हुईं। घर आकर भोजन कर पोद्दारों के यहां गये। वहां बहुत-सी बातें हुईं।

१५-११-१२

चिं० गंगाबिसन को समझाया। उसकी पहले से बहुत तरक्की हुई। श्री लक्ष्मीनारायणजी के दर्शन को गये। वहां सबको समझाकर कहा। दुर्गादत्त बड़े महादेवजी का पूजन, व महादेव घरू ठाकुरजी का पूजन अच्छी तरह से करे। बाकी सब पंडितों को शाम को आरती के बाद वैद्यकी का अध्ययन करना जरूरी होगा।
कमला की मां को मस्से की तकलीफ से थोड़ी फिकर हुई। बंबई से कास्केट आये थे। गाडगील साहब आये, उन्हें दिखाये। वह कचहरी ले गये।
जाइंट के लिए जीनप्रेसवाले इकट्ठे हुए। कच्चा लिखान केवल गई साल का भाव व खर्चा रखने के बाबत हुआ। गामड़िया का जवाब आने पर निश्चित करना तय हुआ। सीताराम शेंडे से बातचीत।

१५-११-१२

टर्मिनल टैक्स के विषय में बात करने के लिए डिप्टी कमिश्नर का बुलावा आया। वहां गये। उन्हें समझाया, पर कोई निर्णय नहीं हुआ। उनसे पार्टी के विषय में भी बातचीत हुई। वहां से सिविल सर्जन के यहां गये। उनसे भी पार्टी के विषय में बहुत-सी बातें हुईं। उन्होंने शाम को क्लब में आने के लिए कहा।

घर आकर पत्र-व्यवहार किया। बाद में बगीचे गये। वहां से क्लब गये। घूमते रहे। बंबावाले आये। उनके साथ कामासाहब के यहां जाने को निकले। रास्ते में कौलसाहब मिले। कामासाहब से पार्टी के विषय में बातें हुईं। उन्होंने अमरावती का सुझाव दिया। घर आकर भोजन किया और पोद्दारों के यहां गये।

१७-११-१२

बगीचे में बागवान को काम समझाया। घर आते समय बालूजी ने बुलाया। वहां गये। उन्होंने बंगाली के विषय में कहा। उसे बुलाकर समझाया। घर आये। कमेटी में जा रहे थे, लेकिन जाजूजी आ गये, इसलिए नहीं गये। बंगाली को समझाया। उसने कहना माना। आर्वी की बातें उसने बताईं। सुनकर खेद व आश्चर्य हुआ। नौकरी का जमाखर्च करवाया। चिमनीराम राठी को समझाया। उसके उत्तर से लगा कि उसके हाथ से अपने कार्य का किसी तरह नुकसान या बेईमानी नहीं होगी। टेनिस खेले। खेलते-खेलते गिर पड़े और पैर मुड़ गया। तेल लगाया। रामलालजी पांडे, शंकरराव चिटनवीस, कर्णिक, विघ्ने, खांडेकर, बनवारीलाल आर्य आदि आये। उन्होंने टेनिस खेला। घर तक पैदल आये, पर बाद में पैर में दर्द हुआ, तेल लगाकर सेंक करवाया।

१८-११-१२

पैर में मोच के कारण बहुत दर्द था। पैर उठाया नहीं जाता था। बड़ी मुश्किल से बगीचे गये। बंबावाले कप्तानसाहब बगीचे में ही आगये। बहुत

देर तक बैठे रहे। थोड़ा वाणी[1] का हुरड़ा व बाजरी का खिलाया। अच्छा था। उनसे चीफ कमिश्नर के बंदोबस्त की बातें हुईं। उन्होंने सब बताया। उन्होंने और भी बाते ऊंचे विचार की कहीं। प्रसन्नता हुई। घर आकर भोजन कर विश्राम किया।

सिविल सर्जन बरटसाहब को बुलाया। उन्होंने आकर पैर को दवाई वगैरा लगाई, उनसे बातें हुईं। वह बड़े ही सज्जन हैं। उन्होंने दो रोज चलने-फिरने की मनाई की।

शाम को बिरदीचंदजी, जाजूजी आदि आये। उनसे बातचीत की। शिवभगवान को समझाया। फिर ११ बजे तक द्वारकादास को समझाते रहे।

१९-११-१२

सवेरे उठे। पैर में दर्द था। बगीचे ७॥ बजे के करीब गये। हाथ-मुंह धोकर स्नान किया। घर आकर दवाई लगाई। को-आपरेटिव बैंक के रजिस्ट्रार कृष्णराव देशमुख, जाजूजी आदि आये। मिठाई के काम के लिए हैड-मास्टर आये।

देवधरसाहब आये। उनसे थोड़ी देर बातचीत की। रामप्रताप मोहता आये। उसने कहा कि नरसिंगदासजी ने सामान का काम कहा है। काम करने का कबूल किया। डाकगाड़ी से हासानंदजी वर्मा कलकत्ते से आये। उनसे बहुत देर तक बातचीत होती रही। जाजूजी व बिरदीचंदजी आये। अमृतलालजी उपदेशक आदि से बातचीत। फिर हासानंदजी से वार्ता। पैर में दर्द कम था। शिवभगवान ने कुछ रही बातें कहीं। उसके कहने पर विश्वास नहीं हुआ, गंगाबिसन को मारवाड़ी अक्षर जमाने के लिए समझाकर व जोर देकर कहा।

२०-११-१२

पैर में दर्द कम था। भगतजी बागवान को समझाया। नया मकान व जीन

---

१ ज्वार की एक किस्म, जो बहुत मीठी होती है और उसके भुट्टे भूनकर खाये जाते हैं।

होते हुए घर आये। गाडगील साहब आये। उनसे पार्टी के संबंध की बातें हुई। टर्मिनल टैक्स की मीटिंग थी। पर पैर-दर्द के कारण जाना नहीं हुआ। फिर मीटिंग की नोटिस भी देर से मिली थी, जो गैरकानूनी थी। बिरदीचंदजी पोद्दार आये। उनसे मारवाड़ी-जाति के सुधार के बारे में बातें हुई। उन्होंने कमाई में से १० फीसदी मेरी इच्छा से खर्च करने को कहा। बाद में दत्तूजी के सगे कटनीवाले चनडिया मिलने आये। उनसे बातचीत की।

बगीचे गया। वहां वाणी का हुरड़ा खाया। साथ में मूली भी खाई। घर आकर भोजन किया। विसोबा थोंडगे आया। उससे अधिक बात नहीं की। द्वारकादास के रोकड़ में दो सौ रुपया बढ़ते थे, उसकी देखभाल की भूल नज़र नहीं आई।

२१-११-१२

लीलाधर विद्यार्थी को समझाया। बगीचे में श्री धारमकर व सर्कल आये। बिरदीचंदजी आये, उनके साथ दत्तूजी के सगों के यहां गये। घर आये। पार्टी के निमंत्रण-कार्ड भिजवाये।

कलकत्ते से स्टोअर बेचनेवाला यूरोपियन आया। उसकी नम्रता व बात करने की सफाई देखकर आश्चर्य हुआ। बगीचे जाकर कार्य का निरीक्षण किया। घर आकर पत्र पढ़े और बाद में भोजन किया। केदार विद्यार्थी को समझाया। आर्वीवाला छोटा केदार लक्ष्मीनारायणजी चोमवाल के विरुद्ध लांच्छनास्पद रिपोर्ट लाया। कुछ सच्ची भी मालूम दी। जाजूजी आये, उनकी सलाह से चीफ कमिश्नर की पार्टी के निमंत्रण की यादी (सूची) बनाई और उनसे बातें भी कीं।

२२-११-१२

टाउन हाल में मेमोरियल की सभा थी, वहां गया। पाठकसाहब ने बिल्डिंग का नक्शा वगैरा समझाया। ११ बजे तक वाद-विवाद होता रहा, बाद में कार्यवाही पूर्ण हुई। शंकरराव मोघे से बातचीत हुई। उन्होंने मराठा बोर्डिंग की हाल की कार्यवाहियों से असंतोप प्रकट किया। घर आकर भोजन

किया।

मारुती दलाल ने आकर पैर पड़ना शुरू किया। पत्र लिखे। मराठा बोर्डिंग के समारोह में गये। थोड़ी देर बैठे। बारिश शुरू हुई, थोड़ी देर तक ज़ोरों की हुई।

स्टेशन मेल पर गये। कमिश्नर बाकरसाहब आ गये थे। उन्हें दूर से मराठा बोर्डिंग दिखाया। देवधर को छोड़कर पाठक से मिलने गये। रास्ते में कमिश्नरसाहब की गाड़ी खड़ी थी। बंबावाला के पास गये और उनके साथ बरट सिविल सर्जन के यहां गया। वहां बहुत-सी बातें हुई। बंबावाला को क्लब छोड़कर घर आया।

२३-११-१२

चीफ कमिश्नरसाहब आनेवाले थे। गाड़ी डेढ़ घण्टा लेट थी। इसलिए हाईस्कूल गये।

खरे के साथ विद्यार्थियों को मिठाई बांटी। स्टेशन गये। नौ बजे चीफ कमिश्नरसाहब आये।

घर आकर मथुरादास मोहता के साथ भोजन किया और टाउन हॉल गये। चीफ कमिश्नरसाहब के हाथ से किंग एडवर्ड हॉस्पिटल का शिलान्यास हुआ। घर आकर पाठकसाहब के यहां गया। वहां से टाऊन हॉल गये। वहां म्युनिसिपैलिटी तथा डिस्ट्रिक्ट कौंसिल की ओर से चीफ कमिश्नरसाहब को मानपत्र दिया गया। उन्होंने उसका संतोषजनक उत्तर दिया। वहां से मराठा बोर्डिंग में गये। वहां भी उनके हाथ से शिलान्यास आनन्द से हुआ। वहां से नरसिंगदासजी मोहता ने पार्टी दी थी, वहां गये। जल्सा अच्छा हुआ। आतिशबाजी छोड़ी गई थी। पाठकसाहब तथा खरे के द्वारा चीफ कमिश्नरसाहब ने विद्यार्थी-गृह के निरीक्षण को आने को कहा। दूसरे दिन के काम का इन्तजाम किया।

२४-११-१२

सर बैंजामिन राबर्ट्सन के० सी० आई० चीफ कमिश्नर मंदिर का निरीक्षण कर ऊपर के हॉल में आये। विद्यार्थियों का भली प्रकार निरीक्षण किया।

संयम आदि विषय पर चर्चा की। करीब-करीब डेढ़ घण्टा बैठे।
खरे व बंबावाला से बातचीत की। फिर भुसान के आफिस जाकर चीफ कमिश्नर तथा कमिश्नर से सर्किट हाऊस में मिलने गये। उनसे टर्मिनल टैक्स के बारे में कहा।
बगीचे जाकर पार्टी की तैयारी की। चीफ कमिश्नर तथा कमिश्नर ५॥ बजे आये। गांधर्व विद्यालय के छात्रों का गायन-वादन १ घंटा हुआ। चीफ कमिश्नर तथा अन्य सब सज्जनों ने बहुत तारीफ की। हार पहनाया। ७॥ बजे मोटर से विदा हुए। जल्सा अच्छा हो गया। प्रसन्नता हुई। चीफ कमिश्नरसाहब ने विद्यार्थी-गृह की बाकरसाहब तथा पाठकसाहब से सिफारिश की।

२५-११-१२

सबेरे बगीचे से लोगों की कुर्सियां आदि भिजवाईं। दूकान से लाया गया सामान भी वापस भिजवाया। बगीचे का दृश्य अच्छा मालूम होता था। मथुरादास मोहता व मोतीलालजी कोठारी हिंगनघाटवाले साथ थे। निपटकर घर आये। रावबहादुर खरे के यहां गये। प्रोफेसर चिंतामणराव भानु, जिन्होंने गीता का अनुवाद किया, उनसे मुलाकात व बातचीत की। कल मन्दिर में उनका व्याख्यान कराने का निश्चय हुआ। मन्दिर में दर्शन करके बोर्डिंग में भोजन किया।
गांधर्व-विद्यालय के विष्णु दिगम्बर पलुस्कर विद्यार्थियों को लेकर आये। उनके फंड में ७५ रु० अपनी ओर से व ५० रु० बिरदीचंदजी के तरफ से दिये। उनसे बातें हुईं। उनको कल चीफ कमिश्नरसाहब से अच्छी तरह से मिला दिया था। दत्तूजी के सगे कटनीवालों के यहां गये। जीमणवार का काम अच्छी तरह हुआ।

२६-११-१२

बाजार की इमारत का काम देखा। ठीक नहीं था। मुनीमों के साथ कटनी-वालों के यहां गये। बारात की निकासी के लिए ताकीद कर जल्दी निकलवाई।

पन्नालाल सरावगी बीमार था, उससे मिले। उसे मृत्युपत्र की सलाह दी। उसने मंजूर किया। बगीचे में थोड़ी देर टेनिस खेला। दत्तूजी के यहां वाणी का हुरडा खाया। करीब १।। घण्टे बैठे। घर आकर भोजन किया। लक्ष्मीनारायण-मन्दिर में पूनावाले प्रो० भानु का व्याख्यान ८। बजे शुरू हुआ। व्याख्यान उत्तम था। उन्होंने बताया कि आज के समय में मनुष्य का क्या कर्त्तव्य है। दो पैर के पशुतुल्य मनुष्य का आचरण कैसा खराब है, इस विषय को भली-भांति समझाया। मनुष्य के लिए विद्या की अत्यन्त आवश्यकता बताई। सचाई के साथ उद्योग करने पर बहुत बल दिया। केवल डाक्टर या ग्रेज्युएट हो जाने मात्र से देश व समाज का कुछ लाभ नहीं है।

प्रो० भानु ने खरे के साथ विद्यार्थी-गृह का निरीक्षण किया।

२७-११-१२

जीनप्रेस का निरीक्षण किया। सुजातखां व गणपतराव को समझाया। घर आकर पत्र पढ़े। व्यवहार-कार्य और भोजन। आराम के बाद व्यवहार-कार्य कर टाउन हॉल होते हुए पोद्दारों के बगीचे गया। वहां वाणी के हुरडे खाये। लॉन में बातचीत।

प्रो० भानु का व्याख्यान व दलीलें अधिकांश लोगों को सीधे पसन्द नहीं आई। वहां से दत्तूजी के यहां विवाह की जीमनवार में गये। जाजूजी के साथ भोजन किया। दत्तूजी व उनके सगों से बातें हुईं। घर आकर पढ़ते रहे।

२८-११-१२

भोजन कर दत्तूजी के यहां गये। भुसान के बंगले से आने पर बिरदीचंदजी से बातचीत की। उन्होंने मारवाड़ी जाति के हित के लिए पन्द्रह हजार रुपये दिये।

जाजूजी के यहां विश्राम किया।

वल्लभदासजी के मुनीम सुजानमलजी नागपुर से आये। जाइंट का कच्चा लिखित हुआ। डेप्युटेशन लेकर नरसिंगदासजी के यहां गये। उन्होंने पहले तो सफाई और चालाकी की बातें कीं, बाद में मुश्किल से हमेशा के लिए गाड़ी हाथ-

करघे पीछे आध आना कबूल किया। त्रिभुवन ने कबूल किया। वल्लभदासजी के जीन में गये। वहां दो आढ़तियों ने कबूल किया। घर आये। नायडू वकील आये, उनसे बातचीत। दत्तूजी के घर जाना। वहां से मंदिर में वृंदावन के पंडित की कथा थोड़ी देर सुनना।

२६-११-१२

गंगाविसन से बातें। पोद्दारों के यहां होते हुए जल्दी भोजन कर दत्तूजी के यहां पहरावणी में गये। वहां के कार्य से निवृत्त हो घर आये। शंकरराव करमरकर आगरा से आये। उनसे बातें हुईं। उस समय नायडु भी थे। बंगाली से बहुत-सी बातें हुईं। जाजूजी के पास गये। विल बनाया। तुतारी (आर)[1] के बारे में दरखास्त लिखने को कहा। जीन में आज चिमनी लगी। घर आये। नायडु वकील आये। बगीचे में टेनिस खेले।

खरेसाहब के यहां बातचीत की। मोरोपंत दीक्षित आये। खरेसाहब को आनरेबल मेंबर बनाने का विचार हुआ। दत्तूजी के यहां दूकानवालों को लेकर जीमने गये। भोजन किया। उन्होंने तिलक[2] किया। घर आकर 'महाराजा लायबल केस' पढ़ी।

३०-११-१२

सज्जनगढ़ गये। श्रीधर पंत नहीं मिले। पोद्दारों के यहां दूध पिया। कन्या-पाठशाला का निरीक्षण कर घर आये। नायडु वकील, स्कोडा आदि से बातें कीं। बिसेसरलालजी, सुखजी, गंगाधरजी, ब्रजमोहन कामठीवालों के साथ भोजन किया। 'महाराजा लायबल केस' पढ़ी।

शिवभगवान ने आगे चोरी न करने की प्रतिज्ञा की। कीलनर हाटेलवाला आया। उसे लेकर बरटसाहब के पास गये। उन्होंने भी कहा कि बिल बहुत

---

१ किसान लोग बैल को तेज चलाने के लिए लकड़ी के सिरे पर कील लगाकर उसे बैल को चुभोते हैं। इसके विरुद्ध आंदोलन हुआ था।

२ जमनालालजी इनके यहां के जंवाई होते थे, इस कारण प्रथा के अनुसार तिलक किया।

ज्यादा है।

घर आये। भोजन किया। करंजेवाले पालीवाल, हरमल देवकरणवाले व देवराव वकील से बातचीत की। 'महाराजा लायवल केस' पढ़ी।

१-१२-१२

टाऊन हॉल में को-आपरेटिव बैंक की साधारण सभा थी। वहां गये। ८ डायरेक्टर चुने गये—खरे, कृ० देशमुख, नायडू, जाजूजी, बिरदीचंदजी पोद्दार, रामनाथजी व मैं। दुबे तहसीलदार के साथ घर आये। कुछ हँसी-मजाक हुआ। फिर भोजन किया।

लक्ष्मीनारायण को बहुत समझाया। उसने दो वर्ष के लिए प्रतिज्ञा की। भिडे मास्टर से बातचीत की। जाजूजी आये। मारवाड़ी हाई स्कूल की सभा का कार्य हुआ। बाद में जाजूजी के साथ पाठकसाहब के यहां गये। सराय-संबंधी बातें हुईं। उन्होंने खुलासा किया। खुशी के साथ काम शुरू करने में हर्ज नहीं। और भी बातें हुईं। बंबावाले व बरटसाहब मिलने आये। वे भुसानवाला बंगला देखने आ रहे थे। गाडगिलसाहब डा० बापट के यहां खड़े थे। उनसे बहुत-सी बातें हुईं। उन्होंने रामलालसाहब के बारे में सब हाल बताया। उनको साथ लेकर बगीचे गया और टेनिस खेले। घर आये। बिरदीचंदजी मिले, उनके यहां भोजन किया। पेपर वगैरा पढ़े।

२-१२-१२

बगीचे से वापस लौट रहे थे कि रास्ते में नायडु तथा मेघे मिले। वोट-संबंधी बातें हुईं। घर आकर जाजूजी के यहां गया। श्री कृष्णबुवा के शिष्य से भजन सुने। घर आकर भोजन करके देवराज, दत्तूजी व अब्दुल हुसैन को साथ लेकर जिला कचहरी गये। एकनाथ थोडगे को समझाया। कामा-सम्हब से बातें हुईं। वह विरुद्ध रहे। आखिर सात वोटों से नागपुर जाने का निश्चय हुआ। पोद्दारों के यहां होते हुए घर आये। पुलगांव का मुनीम आया। बातें हुईं। चूडामणराव से स्टोअर-संबंधी बातें।

३-१२-१२

पुलगांववाले सुरजा से ग्याना जाट के बारे में बातचीत की। स्नान-पूजन के

बाद हुरडा खाया। घर लौटते समय बाजार के मकान का निरीक्षण किया। रसोईघर कहां बने, यह बताया। बाद में, पन्नालाल सरावगी मर गया, वहां गये। उसने अपने हाथ से विल बना दिया था, सात ट्रस्टियों के द्वारा काम होने को लिखा था। बालूजी के यहां ब्राह्मण-पंचायत थी। वहां जाकर घर आये। अत्रे वकील के साथ भोजन किया। पन्नालाल का विल उसका मुनीम ले आया, वह पढ़ा।

ब्राह्मणों की पचायत का निपटारा करने के लिए रामसुख को बुलाया। निपटारा होने का रंग नहीं लगा। जीवराजजी पोद्दार आये थे। उनसे मिलने गया। थोड़ी देर बातें हुई। घर जाकर प्रेस में गये। गाठें बेचने का प्रयत्न किया। सौदा नहीं हुआ।

पुलगांव ४-१२-१२

डाकगाड़ी से पुलगांव गये। वहां के काम का निरीक्षण किया। जीन की ट्रायल थीं। खरीदी बंद करने को कहा। भुसान के खाते में सौ गांठें खरीदीं। जीन प्रेस के बारे में आत्माराम को व दूकान के बारे में मुनीम को समझाया। गाड़ी १। घंटा लेट थी। ६। बजे वर्धा पहुंचे। रेल में कर्णिकसाहब से बातें हुईं।

५-१२-१२

जाजूजी के यहां गया। वहां से आकर व्यवहार-कार्य देखा। भोजन कर प्रेस में गये। आकर विश्राम किया। पोद्दारों के यहां गये। थोड़ी देर के बाद बिरदीचंदजी से बातचीत की। ८०० गांठों में ८४०० रुपये मुनाफा वह देते थे। घर आकर पत्रादि लिखे। डिप्टी कमिश्नर की घारपुरे के विषय में चिट्ठी आई। लिखा कि घारपुरे ने दरखास्त ४।। बजे की, जो कानून के अनुसार ठीक नहीं थी। उस विषय में बात करने बुलाया था। इस विषय में बात करके बगीचे जाना।

नायडू, जाजूजी, आगाशे, करमरकर, देवराव आदि आये। बातें हुईं। घारपुरे की दरखास्त खारिज हुई थी, इसलिए उसकी ओर से बैरिस्टर मोरोपंत दीक्षित आये थे। दुबे तहसीलदार से बातें।

मंदिर में गायनवाला आया। उसका गायन सुना। 'महाराजा लायबल केस'

पढ़ते हुए १०॥ बजे तक सोया ।

रात को २-३ बार चौंककर उठा। पहरा ठीक है या नहीं, यह देखा ।

हिंगनघाट ६-१२-१२

घोड़े के तांगे से स्कोडा के साथ स्टेशन जा रहे थे । बुढिया तांगे के नीचे आ गई । गाजी ने बहुत घंटी बजाई, आवाज दी परंतु बुढ़िया ने सुना ही नहीं । गाजी की होशियारी से बुढ़िया को चोट नहीं आई । बच गई ।

हिंगनघाट गये । रास्ते में 'महाराजा लायबल केस' पढ़ा व स्कोडा से बातें कीं । श्री वल्लभजी के पास गये । भाभी बीमार थी, उसके पास बहुत देर तक बैठे । गाड़ी का समय होने तक पोद्दारों की दूकान, रुई-बाजार होते हुए स्टेशन गये । श्री वल्लभजी से बातें होती रहीं । वर्धा २ बजे पहुंचे । प्रेस होते हुए घर आये । जीन व जावरा जीन होते हुए बगीचे गये । टेनिस खेल रहे थे कि हल्ला सुना कि बैल के जूने कोठे में आग लग गई । दौड़ते हुए गये । प्रेस से फायर इंजिन पाइप बुलाकर १॥ घंटा तक खड़े रहकर आग बुझवाई । घास जल गई, और भी थोड़ी हानि हुई । घर आकर भोजन किया ।

७-१२-१२

बगीचे जा रहे थे । पोद्दारों की दूकान के आगे लाल बैल चल नहीं रहा था । जागो मारने लगा, उसे छुड़ाया । बगीचे गये । लाल बैल मर गया । चित्त अस्वस्थ रहा । घर आये । जाजूजी के घर होते हुए भोजन कर बाजार में गये । कोशिश कर कपास का भाव १०२ निकलवाया ।

८-१२-१२

म्युनिसिपल कमेटी में गये । नाके बाजार आदि विषय निकले । घर ११॥। बजे गये । भोजन व विश्राम । पत्र-व्यवहार देखा । हाजिरी देखी । त्र्यंबकराव बंबेवाले से बातचीत । करीमभाई का एजंट आया । कलेवा किया । गिगली (बच्ची) कमला का फोटो खिचवाया । आज बारिश का रंग बहुत ज्यादा था । जीन में २-३ आदमी कपास ढांकने भेजे । बारिश और हवा बहुत जोरों की आई ।

जाजूजी आये। विद्यार्थियों के व्यायाम विषय पर व्याख्यान हुए। ५-६ लोग अच्छा बोले।

९-१२-१२

बालुजी आये। बंगाली को एक तरफ ले जाकर समझाया, रुई बाजार में गये। कपास का भाव १०१ निकला था, लेकिन कोशिश कर १०० निकलवाया। श्रीलाल माहेश्वरी आया। उसने अनाज के रोजगार के लिए रुपये मांगे। आठ आने पत्ती के लिए भी कहा, विचारकर उत्तर देने को कहा। उसने गांव की और बातें भी कहीं। फिर कुछ गुप्त बात भी सौगन्ध खाकर कही। आश्चर्य हुआ। म्यु० ऑफिस व नई दूकान गये। बद्रीनारायणजी पुलगांव से आये थे। उनसे जीन वगैरा की बातें कीं। बद्रीनारायणजी से पूछकर राठीजी व माधोजी का जमाखर्च कराया। रात में जाजूजी के यहां गये।

१०-१२-१२

बगीचे से निवृत्त होकर घर आया। रास्ते में डिप्टी कमिश्नर आदि नाली देख रहे थे। सीतारामजी आर्वीवाले आये। खरे वकील के यहां से बुलावा आया। वहां गये। वहां से पोद्दारों के यहां गये।

भुसान का अमरावती का साहब आया। अत्रे वकील आये, उनसे बातें कीं। श्रीधर खरे, गणपतरावजी आये। पोद्दारों के यहां भोजन को गये। टुनिया की सगाई के लड्डू बांटे थे।

रात में सुजानखां, इंजीनियर आगरेवाले आदि को कोल्हासाहब के विषय में कहा। सुना कि उन्हें दो रोज की मोहलत दी।

११-१२-१२

जाजूजी के यहां जाकर हाईस्कूल कमेटी की मेम्बरी के लिए उन्हें कहा। उन्होंने मंजूर किया। खरेसाहब को कहा। बात उनके ध्यान में आ गई। भुसान कम्पनी के अमरावती का तथा जापान का साहब आया। उनसे बातें हुईं। दत्तूजी आये। म्युनिसिपल आफिस गये। वहां दो घण्टे रहकर सराय वगैरा के कागजात देखे। भोजन कर पू० जीवराजजी से मिलने गये। कई तरह की बातें हुईं। बद्रीदास बलभद्र के रुपयों के बारे में भी उनसे कहा।

उनका उत्तर सुनकर चित्त को बहुत बुरा मालूम हुआ। पैसों के आगे मनुष्य को कुछ भी खयाल नहीं रहता।

१२-१२-१२

हाईस्कूल से बुलावा आने से वहां गये। रावबहादुर खरे का 'राजभक्ति' पर विद्यार्थियों व अध्यापकों के लिए बहुत अच्छा उपदेश हुआ। ५वें जार्ज के राज्य-आरोहण की यादगार में लायब्रेरी की स्थापना की गई।

ढाई बजे स्कूल से हैडमास्टर का बुलावा आया, इसलिए वहां गये। राज्य आरोहण के निमित्त लड़कों के खेल हुए। मेरे हाथ से इनाम बांटे गये। हाकी का खेल अच्छा हुआ। जीन होकर बगीचे गये। वापिस आकर भोजन किया। जाजूजी आये, उनसे नागपुर की बातें हुईं। उन्होंने दीवान बहादुर वल्लभदासजी की बातें कहीं।

शाम को नायडू, करमरकर, अगाशे, अत्रे आदि आये।

१३-१२-१२

सोराबजी, रतनशा, आदि मिलने आये। नरसिंगदासजी की गांठों का सौदा किया। वह माल देखने गये। १२१ गांठें १२७ से देना निश्चय हुआ। उससे बहुत-सी बातें हुईं। उसने सेठजी का पूर्णतया उपकार कबूल किया। रामा शेंडे आया, जाजूजी आये। बगीचे में विद्यार्थियों का फुटबाल का खेल देखा। गोपीजी की चिट्ठी आई। वहां को-आपरेटिव बैंक की बात हुई। गीगाजी आये। उन्हें फाटका (सट्टा) न करने को भली प्रकार समझाया।

नागपुर १४-१२-१२

७-४५ की गाड़ी से जाजूजी के साथ नागपुर गये। गोपीजी बीमार थे। को-आपरेटिव बैंक की सभा थी। नागपुर पहुंचकर पोद्दारों के बंगले गया। ८ रुपये में तांगा ठहराया। सभा के लिए अजायबघर गये। सभा का कार्य १२॥। तक चला। वहां २-४ लोगों से मिले। कई विषयों पर वल्लभदासजी जबलपुरवालों से बातें कीं। वहां से मारवाड़ी प्रेस होते हुए घर आये। गोपीजी से मिले। बहुत देरतक बैठे। दो रोज से तबीयत ठीक बताई। डाक्टर राघेबाबू आये। उनसे बातें कीं। बंगले होते स्टेशन आया। ५॥

बजे की गाड़ी से वर्धा आया। रेल में बम्बई के पारसी से बहुत-सी बातें होती रहीं।

वर्धा १५-१२-१२

रा० ब० बापट सीविल सर्जन आये। कमला के दोनों हाथों पर माता का टीका लगाया। वह रोई नहीं। बरटसाहब को अचरज हुआ। बरटसाहब से कीलनर हाटेलवालों को चिट्ठी लिखवाई।

स्कोडासाहब आये। उनसे बातें हुई। पुलगांव तार किया। जावरा जीन गये। प्रेस के बारे में सुजानखां को समझाया। उसने सुधार करने को कहा। बगीचे जाने की तैयारी से नई दूकान गये। पर वहां बहुत देर हो गई। बंसीजी से बात कर रहे थे। उस समय एक आदमी शराब पीकर आया। उसे पुलिस में भिजवा दिया।

दानीजी का पत्र आया। उन्हें तार दिया। मंदिर के सामने व्याख्यान हुआ। वह सुना। गंगाबिसन से नियमितता विषय पर बातचीत की।

नागपुर १६-१२-१२

श्री निवासजी जालान ने भोजन के लिए कहलाया। सुना कि गौरीशंकरजी गोयनका खुरजावाले आये हैं। पोद्दारों के बगीचे गये। उनसे वार्तालाप हुआ। प्रेम की कीमत संबंध से कम है, ऐसा बातचीत से मालूम हुआ। घर आकर थोड़ा कार्य कर पोद्दारों के बगीचे गये। गौरीशंकरजी और बिरदी-चंदजी के साथ भोजन किया। उनको घर लाकर सब दिखाया। नागपुर जाना था, इसलिए स्टेशन गया। रेल में आर्वीवाले शालीग्रामजी व कारंजावाले प्रयागजीभाई साथ हो गये। नागपुर तक बहुत-सी बातें होती रहीं। गौरीशंकरजी ने...के बारे में बहुत ही घृणा प्रकट की। नागपुर पहुंचकर पोद्दारों के यहां भोजन कर दीवान बहादुर वल्लभदासजी के पास गये। उनसे विलायत की दूकान-संबंधी १॥ घंटा तक अच्छी तरह बातें हुई। विलायत दो आदमी भेजने का निश्चय हुआ।

१७-१२-१२

चाय पीकर नागरमलजी के साथ मिल में गये। कपड़ा वगैरा बनते देखा।

बंगले जाकर भोजन किया। लार्ड हार्डिंज के हाथ से कौंसिल हॉल का शिलान्यास होनेवाला था, वहां गये। बहुत-से साहब लोगों से मिलना हुआ। इतवारी जाकर गोपीजी की तबीयत देखी और बंगले पर आकर विश्राम किया। जाजूजी आये। कलेवा कर मिल में गये। पांच नंबर की मिल में लाटसाहब आनेवाले थे, उनके स्वागत के लिए नियुक्ति हुई। क्राडकसाहब व मेजसाहब से अच्छी तरह बातें हुईं। लार्ड हार्डिंज तथा लेडी हार्डिंज आये। साथ में सर राबर्ट्सन भी थे। उन्हें भली प्रकार देखा। लाटसाहब से मुलाकात करके सबको खाना खिलाकर स्टेशन आये। जाजूजी के साथ रायपुरवाले नथमलजी आये। उनसे जातीय उन्नति के विषय में बहुत-सी बातें हुई। अमरचंदजी भी आये।

वर्धा १८-१२-१२

जाजूजी के यहां म्युनिसिपैलिटी के काम से गये। बालाराम व नेमिचंद विद्यार्थी को समझाया। म्युनिसिपल सेक्रेटरी, बिरदीचंदजी पोद्दार, दत्तूजी आदि आये। उनसे बातचीत की और जाजूजी के यहां जाकर वापस आये। पत्रादि बहुत-से लिखे। रामनाथजी के यहां बैठने जाने का विचार था, पर शाम हो गई।

आर्वीवाले शालीग्रामजी कामठी से आये। उनसे बातें। जयनारायणजी आये। अयोध्यावालों को २१ रुपये बिदाई दी। जाजूजी के यहां गये। सप्रेजी 'आत्मविद्या' का अनुवाद करके लाये थे। उनसे बहुत देर तक बातें हुईं। आत्म-विद्या के भाषांतर के १५० रुपये निश्चित किये। घर पर पू० शालीग्रामजी से बातें।

पुलगांव १९-१२-१२

आर्वीवाले शालीग्रामजी के साथ बगीचे में बहुत देर तक घूमते रहे। बालुजी की दूकान होकर घर आये। शालीग्रामजी ११ बजे की गाड़ी से गये। डाक-गाड़ी से क्राडकसाहब अपनी मेम व लड़की के साथ दिल्ली गये। उनसे मिलने स्टेशन गये। पुलगांव तक उनके साथ गये। कमर्शियल कालेज के विषय में ध्यान रखने को कहा। पुलगांव में बद्रीनारायणजी से मिले।

भुसान के साहब को जापान के काम के विषय में खुलासेवार समझाया।

वर्धा २०-१२-१२

पुलगांव की गाड़ी से मुनीमजी व मानमलजी आये। जीन के जाइंट के विषय में बातचीत हुई। बापूजी को समझाया। शाम को बगीचे में बापूजी वगैरा आये। सीताराम शेंडे को बुलाया। उसने कल जबाव देने को कहा।

२१-१२-१२

दत्तूजी को हिसाब के लिए बुलाया था। रात को आने को कहा, पर नहीं आये। पुलगांव के मुनीम आये थे। उनसे खर्च कम करने के बाबत बातचीत हुई।

जाजूजी आये। बाद में नायडू, देवराव, करमकर आये। उनसे बातचीत की।

प्रो०अमीन के जादू—मेस्मेरिजम के खेल देखने गये। २-३ काम अच्छे किये। विद्यार्थी-गृह में जाकर नेमीचंद विद्यार्थी की जांच की।

२२-१२-१२

भुसानवाले से एक हजार गांठों के सौदे की बात की, लेकिन भाव बहुत कम रहा। धामणगांव ११ बजे की गाड़ी से गये। वहां सौदा किया। श्रीनारायण को कलकत्ते की परवागी दिलाई। पुलगांव के वंसीधर से सौदा किया। दो बजे भुसान के साहब के बंगले गये। उनसे ६५० गांठों का सौदा किया। उनकी बात से मन में रंज हुआ, क्योंकि वह बात करके बदल गया। दूकान आकर जाजूजी के यहां गया, उनसे बातचीत की। वहां से घूमते हुए पोद्दारों के बगीचे गया। आकर विद्यार्थी-गृह में भोजन किया। राठीजी को उधारी वसूल करने को कहा। रामनारायण जमादार की व्यवस्था की।

२३-१२-१२

जाजूजी के यहां गये। कल कलकत्ता जाने का विचार था, लेकिन कुछ खबर सुनने के कारण कलकत्ते २-३ तार भिजवाये। पोद्दारों के यहां गोपीराम व ब्रजमोहन का आपस में मिलाप हुआ।

दोपहर को बद्रीनारायणजी व बंसीधर पुलगांव से आये। उनसे बातचीत।

रात को पन्नालाल सरावगी के घर गये ।

२४-१२-१२

प्रो० अमीन से टुनिया की मां की बीमारी के विषय में बगीचे में बातचीत की। कलकत्ते जाने का विचार स्थगित रहा। रात को प्रो० अमीन के मेस्मेरिजम के खेल ऊपर के बंगले में करवाये ।

२५-१२-१२

बगीचे में गाडगिलसाहब मिले। लार्ड हार्डिंज पर २३ तारीख को दिल्ली में बम फेंका गया। थोड़ी चोट आई। यह खबर सुनकर चित्त को रंज हुआ। बम्बई-समाचार में पढ़ा। ३ बजे टाउन हॉल में जाकर चीफ कमिश्नर के मार्फत, लाटसाहब को चोट आई, उस बारे में तार दिया। पोद्दार के यहां कलेवा किया।

पन्नालाल सरावगी की एस्टेट के बारे में सभा थी। इसलिए उसके घर गये। चित्रकूट का पण्डा बाबूराम आया।

२६-१२-१२

जावरा जीन प्रेस होते हुए बगीचे गया। प्रेमराज ने मकान लिया, सो देखा। पोद्दारों के यहां प्रो० अमीन व भुसान के यहां जापान का साहब आया, उससे मिले। प्रेस वगैरा दिखाया।

बामणगांववाले किसनलाल, महादेवजी से बातें। भुसानवालों से बातें। गीगाजी के लिए नथूसिंह का मकान देखा। भुसान का अमरावती का साहब आया। उधारी वसूल की, सब जिम्मेदारी चिमणीराम राठी के सुपुर्द की।

पुलगांव व आर्वी २८-१२-१२

पुलगांव १०।। की गाड़ी से जाजूजी के साथ गये। वहां पहुंचने पर काटन मर्केट की जबरदस्त शिकायत सुनी। रुई-बाजार में गये। सेक्रेटरी को जाजूजी ने समझाया। वह मान गया।

खुशालचन्दजी के तांगे में आर्वी रवाना हुए। टांगे की रस्सी ढीली होने से रास्ते में डर रहा। जाजूजी से कई तरह की बातें हुईं। आर्वी चिमणीरामजी के यहां गये। उनको बहुत समझाया। फिर पू० शालीग्रामजी के यहां गये।

वहीं ठहरे। रात को उनसे बातें हुईं।

आर्वी २९-१२-१२

सत्यनारायण-मन्दिर में स्नान व पूजन और धर्मशाला, जीन प्रेस, रुई-बाजार सीतारामजी वगैरा से मिलते हुए पू० शालीग्रामजी के यहां आये। भोजन हुआ। आर्वी में मारवाड़ी विद्यार्थी-गृह स्थापित करने का पक्का निश्चय हुआ। चन्दा मंडवाना शुरू हुआ। सीतारामजी को बहुत समझाकर ५००० रु० मंडवाये। शालीग्रामजी आदि ने मांडे। वाठोडा श्री किसनदास-जी की तरफ डेप्युटेशन लेकर गये। उन्होंने २१०० रुपये मांडे। रात में सभा हुई। सभापति वगैरा का निश्चय हुआ। १२ बजे तक विद्यार्थी-गृह का कार्य अच्छी तरह चलता रहा।

आर्वी-पुलगांव ३०-१२-१२

सवेरे बगीचे में शालीग्रामजी से बहुत-सी बातें। रुई-बाजार होते हुए उनकी दूकान गये। जीतमल माहेश्वरी से ५०० रुपये मंडाये। सीताराम के यहां जाजूजी शालीग्रामजी के साथ भोजन को गये। वापस आकर आराम किया। और १-२ लोगों से चन्दा मंडवाकर २॥। बजे पुलगांव रवाना हुए। पुलगांव ५॥। बजे पहुंचे। आर्वी में मारवाड़ी विद्यार्थी-गृह के लिए १९००० रुपये हुए।

वर्धा ३१-१२-१२

नये प्रेस व जावरा जीन में गये। वहां सुजानखां व चूडामण के ऊपर बहुत नाराज हुए। भुसानसाहब के यहां कड़क बातें हुईं।
श्रीनिवासराव नायडू आये। उनसे बातें। सीताराम शेंडे, शिवनारायणजी, बंसीधरजी आये। व्यवहार की बातें। बस्ती होते हुए बगीचे गया। गोपी-चन्दजी से बातें। घर पर भोजन किया। बाद में पोद्दारों के यहां गया।

नोट—१९१३ की डायरी उपलब्ध नहीं है।

१९१४

वर्धा १-१-१४

बगीचे में नित्यकर्म से निवृत्त हुए। भुसानवाले छोटे एजेंट से बहुत-सी बातें हुईं। आज से मंदिर में बालचन्द्रजी की कथा आरम्भ हुई। रात को १०॥ बजे सोया।

२-१-१४

९ बजे दूकान का काम देखा। आज कंजर से एक घोड़ी ३४०) में मोल ली।

जीन प्रेस होता हुआ बगीचे गया। टेनिस, ब्रिज खेला। रात को ९॥ बजे सोया।

३-१-१४

आज बंबई से माटसुसका आया था। बहुत-सी बातें हुईं। वहां से बंबईवाले भुसानसाहब से मिलने गये। बातें हुईं। तीन जापानी साहब और आये थे। उनसे बातचीत हुई। घर पर मंदिर में ज्ञानेश्वरी पर विष्णुबुवा जोग की कथा सुनी। विषय-वासना पर अच्छे दृष्टांत सुनाये थे। बाद में विद्यार्थियों के भजन हुए।

कल जो घोड़ी ली थी, उसे चोट आ गई।

६-१-१४

शाम को डिप्टी इन्स्पेक्टर जनरल पुलिस से मिलने गये। बहुत-सी बातें हुईं।

७-१-१४

४॥। बजे नागपुर डिविजन के डिप्टी इन्स्पेक्टर जनरल हेलेटसाहब व

चंदावाले स्कूल और बोर्डिंग देखने आये। १॥ घंटे तक देखते रहे, बहुत खुश हुए।
घर पर गीता सुनी। रात को १०॥ बजे सो गया।

८-१-१४

जावरा जीन से सा०तुलाराम के बगीचे गया। वहां तुलारामजी, गौरीशंकरजी से बहुत-सी बातें हुईं। पोद्दारों के यहां भोजन किया। शाम को पोद्दारों के बगीचे होते हुए तुलारामजी के पास गये। थोड़ी देर तक बातें होती रहीं। गौरीशंकरजी भी साथ थे। घर गौरीशंकरजी जीमने आये। आनन्द के साथ भोजन किया और बातें हुईं। गायन-वादन के बाद १० बजे सोने गया।

९-१-१४

जापान का बीमावाला साहब बिलासपुर के पास फर्स्ट क्लास में ऊपर की सीट पर से गिर पड़ा, ऐसा तार आया। नागपुर से शाम तक डाक्टर वगैरा की तजवीज की।
टेनिस, बैडमिंटन, ब्रिज खेला। रात को ज्ञानेश्वरी पढ़ी और इंग्लिश का अभ्यास किया।

१०-१-१४

कारोनेशन के खेलों के उपलक्ष्य में बोर्डिंग के लड़कों को इनाम दिया गया। एक घंटा जीन में लगा। जाजूजी के यहां भोजन किया। जापान के बीमा-वाले साहब को, जिन्हें कल चोट आ गई थी, मेल से रवाना किया। घर पर किसनलालजी के साथ भोजन किया। जाजूजी से घर के बारे में बहुत-सी बातें कीं।

वर्धा-देवली ११-१-१४

टाऊन हॉल में मेम्बरों का चुनाव था। बाद में ११ बजे तक कमेटी में गया। बोर्डिंग में भोजन किया। बिरदीचन्दजी की तरफ से पार्टी थी। ३॥ बजे के अन्दाज घोड़े के तांगे से देवली रवाना हुए। ५। बजे के करीब देवली पहुंचे। जीन वगैरा देखी।

देवली १२-१-१४

नित्य कर्म से निपटकर आज वाल वनवाये। जीन में पीले हुए (लोढ़े हुए) माल का बन्दोवस्त किया। स्नान, पूजन, विश्राम और मिलनेवालों से बात-चीत की। सरकी (विनौला) का सौदा किया। १।। वजे पैदल खेत देखने गया। नदी पर निपटे और दूसरा खेत देखा। पैदल वापस आये और जीन में गये। वाद में देशमुख के यहां पान-सुपारी को गये। घाटआंजी जाने को गौरीलाल व लक्ष्मणराव को कहा।

देवली-वर्धा १३-१-१४

कई जने मिलने आये। डाक्टर, रजिस्ट्रार, म्युनिसिपल सेक्रेटरी, हैडमास्टर आदि से वातें हुईं। घोड़े के तांगे से रवाना हुए। सालोड (गांव) में थोड़ी देर रुके। वाद में गोपालजी के साथ वर्धा आये।

वर्धा १४-१-१४

नित्यकर्म से निवृत्त होकर ११ वजे तक गोरक्षण के मेले में रहा। चन्दा वसूल किया।

१६-१-१४

घर पर नित्यकर्म से निवृत्त होकर रामायण सुनी।
श्रीनारायणजी अमरावतीवाले से वातें हुईं। विरदीचन्दजी पोद्दार के साथ रामनाथजी के लड़के मोहन को देखने गये। वगीचे में स्वामीजी से वातें कीं। ११ वजे सोया।

१७-१-१४

घर पर नित्यकर्म से निवृत्त होकर वाल्मीकि रामायण सुनी। जाजूजी के यहां भोजन किया। शिवभगवान का गीता पर उपदेश सुना। पत्र आदि के वाद जयनारायण केजडीवाल के यहां वैठने गये। वगीचे में टेनिस, व्रिज आदि खेलने के वाद भोजन करके खरे के पास पढ़ा। नरसिंहदासजी मोहता मिलने आये। १०।। वजे तक वातें होती रहीं। ११ वजे सोया।

१८-१-१४

नित्यकर्म से निवृत्त होकर रामायण सुनी। चुन्नीलाल हिंगनघाटवाले से

वातें हुईं। नरसिंहदासजी मंदिर आये, मामूली वातें हुईं। दोपहर को बाल वनवाये। टाऊन हॉल में, शंकरराव मेघे विलायत जानेवाले हैं, इसलिए मराठा वोर्डिंग की तरफ से सभा हुई। शंकरराव की वहुत देर तक राह देखी, पर नहीं आये। एक सेट टेनिस का खेलकर जाजूजी के साथ रामनाथजी के यहां मोहनलालजी की तवीयत देखने गये। रात को पढ़ाई और वाद में सोना।

२०-१-१४

घर पर नित्यकर्म से निवृत्त होकर सीत्या महार का माल देखा। नरसिंहदास-का सौदा ३०० गांठों का ३०९ में सैटल किया। २॥ वजे के करीव राम-नाथजी के वगीचे गये, मोहनलाल की तवीयत देखने ५। वजे तक वहां रहे। रामनाथजी वगैरा को भोजन कराया। दिलासा दिया कि मोहनलाल को आराम हो जायगा। वह किसी प्रकार अच्छा हो, ऐसी हार्दिक इच्छा थी। पर मन में फिकर थी। घर आकर भोजन किया। वाद में सुना कि मोहन-लाल का शरीर शांत हो गया। वड़ी फिकर हुई। १० वजे सोये।

२१-१-१४

जल्दी उठकर रामनाथजी के वगीचे गये। वाद में भगवानदासजी के वगीचे गये। ११॥ वजे घर आकर स्नान करके १२ वजे भोजन किया। स्त्रियों का रुदन बड़ा ही भयानक था। जीन वगैरा होता हुआ वगीचे में स्वामीजी से वातें कीं। टेनिस, व्रिज आदि खेले। घर पर भोजन, मंदिर में गायन आदि सुनने के वाद १०॥ वजे रात को सोया।

२२-१-१४

निवृत्त होकर कथा सुनी। रामनाथजी के यहां गये, १॥ घंटे तक वातचीत होती रही। मोहनलाल की वहू को समझाया। घर पर भोजन किया, फिर वालकट से सौदा तय किया। शाम को सुना कि डेडराज व्राह्मण का देहांत हो गया।

नागपुर जाने का विचार था, सो तैयारी की और ११ वजे सोया।

नागपुर २३-१-१४

जल्दी निवृत्त होकर मेल से नागपुर रवाना हो गया। रेल में मोतीलाल कोठारी से वहुत-सी वातें हुईं। शिवनारायणजी राठी से मिले। उन्हीं के यहां भोजन किया। मारवाड़ी बोर्डिंग हाउस देखा। वरोरा नागपुर का रुई-बाजार देखा। बाद में वालकट का जला हुआ माल देखा। वालकट के एजेंट धनजीभाई व बीमावाले से वहुत-सी वातें हुईं। वमनजी एम्प्रेस मिल के एजेंट मिले। पोद्दारों के यहां जीवराजजी से वातें हुईं। नीलाम हुआ। जोखिम ज्यादा थी। ९ की गाड़ी से वर्धा, १२॥ बजे पहुंचे।

वर्धा २४-१-१४

नित्यकर्म से निवृत्त होकर रामायण सुनी। बंबावाले कप्तानसाहब मिलने आये थे। गंज में गये। कपास का भाव ८०॥। निकला। वंबई में मंदी थी। पोद्दार के यहां बिरदीचंदजी से मिले। बोर्डिंग के लड़कों की हिंगनघाट हाईस्कूलवालों से मैच हुआ, वरावर रही। आष्टी से आये हुए मेहमानों को भोजन कराया। कोआपरेटिव बैंक की मीटिंग हुई। १०॥ बजे सोया।

२९-१-१४

रात को नागपुर की वकील-मंडली ने 'तोत्याचा वड' नाटक खेला, वह देखा। बिरदीचंदजी आदि साथ थे। पार्वतीबाई, हैबतराव, नाना फड़नवीस, वामन भट आदि पात्रों ने अच्छा काम किया। ३॥ बजे घर आकर ४ बजे सोया।

३०-१-१४

शाम को माटसुसका (जापानी) के साथ बगीचे में टेनिस, ब्रिज खेली। रात को मामूली कार्य किया।

३१-१-१४

नित्यकर्म से निवृत्त होकर रामायण सुनी।

आज माटसुसका (भुसान एजंट) वंबई जानेवाला था। उससे बातें कीं। रामनाथजी का आदमी आया था। उनके यहां गया। बावनवीर की कहानी सुनी। वहां से घर माटसुसका से मिले। वह मेल से वंबई गया।

नये डिप्टी कमिश्नर वेचलर मेल से वर्धा आये। भोजन के बाद लक्ष्मी-

नारायण-मंदिर और वहां से राम-मंदिर गये। वहां बालचंद्रजी का व्याख्यान 'स्वधर्म' विषय पर सुना। ११ बजे घर आकर सोये।

१-२-१४

पोद्दारों के बगीचे जाकर विरदीचंदजी से बातचीत की। कोआपरेटिव बैंक के खजांची के लिए पांडे से बात की। कल के व्याख्यान की समालोचना की। घर पर पंडितजी ने एक घंटा वेद सुनाया। बाद में मारवाड़ी विद्यालय की कमेटी हुई। ११ बजे तक चर्चा होती रही। ११।। बजे सोया।

२-२-१४

भोजन के बाद मिस्टर टकाया नागी के साथ ४-५ कंपाउंड में घूमकर कपास और रुई देखी। १ बजे वापस आकर व्यवहार-संबंधी कार्य किया। शाम को पोद्दारों के यहां गया। जापान काटन के एजंट मि० डेसुकी से मिले। घर पर भोजन किया। मिस्टर किटा और मिस्टर सुगाफुबो आये। उनसे मुलाकात की। उन्हें घर पर 'दामाजी' नाटक देखने का निमंत्रण दिया। उन्होंने कबूल किया। व्यवस्था की। वे पौन घंटे तक नाटक देखते रहे। बहुत खुश हुए। ढाई बजे तक नाटक देखकर सोया।

३-२-१४

जापान काटन कंपनी के मैनेजिंग डायरेक्टर मि० किटा बगीचे आये। वहां गये। उनसे बहुत देर तक बहुत-सी बातें हुईं। वह घर आये। उन्हें हार पहनाया। उनके घर डाली (फल आदि) भेजी। २।। बजे की एक्सप्रेस से मि० किटा नागपुर गये। उन्हें पहुंचाने स्टेशन गया। पू० रामगोपालजी के साथ उनकी दूकान गये। बहुत-सी बातचीत हुई।

५-२-१४

नित्यकार्य और कथा सुनी। व्यवहार-कार्य किया। जाजूजी से बातचीत। बगीचे टेनिस खेलकर भुसान के बंगले गये। उपनिषद् पढ़ी।

६-२-१४

कोल्हापुरवाले दौलतराव राणे के समधी मिलने आये। उनसे बातचीत की। बगीचा देखा। विश्राम के बाद व्यवहार-कार्य किया।

८-२-१४

विद्यार्थी-गृह-संबंधी जाजूजी से बहुत-सी बातचीत हुई। विरदीचंदजी नहीं आये।

९-२-१४

तबीयत अस्वस्थ रहने के कारण शिवसामलजी वैद्य की दवा ली। 'जीवन-कर्तव्य' पढ़ा। विचार चलते रहे।
शाम को पोद्दारों के बगीचे खरे की पार्टी थी। वहां गये, थोड़ा खाया। बात-चीत की।

११-२-१४

तबीयत ठीक नहीं थी। बंबावाले कप्तानसाहब व रा० ब० बरट सिविल सर्जन आये। उनसे बातचीत की।

१३-२-१४

तबीयत ठीक थी। बिना पत्ती[१] का कपास छंटवाया। अन्दाज १६०० खंडी था। राठीजी किसन की ओर से उदास होने लगे। उन्हें समझाया। बगीचे में टेनिस, ब्रिज खेली।

१४-२-१४

आज तबीयत ठीक मालूम दी। तेल मालिश करवाई। बोर्डिंग, जीन प्रेस व बगीचे गये। बगीचे में टेनिस ब्रिज आदि खेली। रात के भोजन के बाद मन्दिर में गायन सुना। पोद्दारों के यहां जाकर विरदीचंदजी से बातें कीं।

१७-२-१४

तबीयत साधारण ठीक थी। बालाराम सेक्रेटरी आया। उससे बहुत-सी बातें। बोर्डिंग व जीन प्रेस गया।

१८-२-१४

डिप्टी कमिश्नर के बंगले गये। पहले वाटर नेस्टसाहब से मिले।

---

१ कपास चुनते समय लगा हुआ पत्ते का कचरा।

वहुत देर तक विद्यार्थी-गृह विद्यालय आदि विषय पर वातचीत हुई। वाद में वेचलर—डिप्टी कमिश्नर से मिले। उनके साथ आनन्द के साथ एक घण्टा वातचीत हुई। देश की उन्नति-सम्वन्धी विलायत के वहुत-से उदाहरण उन्होंने दिये।

आज वारिश की वहुत अधिक सम्भावना थी, इसलिए ४ से ६॥ वजे तक जीन में रहे।

१९-२-१४

नित्य कार्य से निवृत्त होकर कथा सुनी। आंखों में दर्द था, इसलिए दवा से सेंक किया। भोजन कर रुई-वाजार में गये। वहां १२॥ वजे तक रहे। भाव ७०॥। का नोट किया गया।

हनुमानगढ़ पर ४॥ वजे गये। गोपाल काला[1] देखा। श्रीधर पंत गुरूजी से वार्तालाप किया। रायपुरवाले माधवराव सप्रे से अध्यात्म तथा आत्म-विद्या-सम्वन्धी वातें। वगीचे में रात को कठोपनिषद सुनी।

२०-२-१४

आज कथा में सीता-हरण के विषय में रामचन्द्रजी का आश्चर्यजनक विलाप का प्रसंग आया।

विरदीचंदजी पोद्दार के यहां गये। उनको अब आगे सौदा-सट्टा न करने के लिए भली प्रकार समझाया। स्कोडा अकोला से आया।

वर्धा, २२-२-१४

म्युनिसिपल कमेटी की मीटिंग थी। मिस्टर वाटरसन आये। शहर वढ़ाने के विषय में वातचीत हुई।

श्रीनारायणजी अमरावतीवालों से वातचीत। भागचन्दजी मिलने आये। दुलीचन्द के विवाह की जनेत (वारात) का काम हुआ।

---

१ महाराष्ट्र में कृष्ण की 'माखन-चोर-लीला' का अभिनय।

२३-२-१४

शिवरात्रि का उपवास था। फलाहार १ वजे किया। उधारी देखी। जाजू-जी से ४ वजे मिले। उनसे वार्तालाप। पोद्दारों के वगीचे गये। लॉन में वातचीत। वजन किया। २ मन ३० सेर हुआ। घर ८ वजे आये। वाद में मन्दिर में विद्यार्थियों के भजन सुने।

२४-२-१४

सोहनी मास्टर के जिमनास्टिक के प्रयोग देखे। ठीक हुए। भिडे मास्टर से वहुत-सी वातचीत की। उनका इरादा दूसरी जगह, अधिक लाभ हो तो जाने का दिखा।

पोद्दारों के यहां विरदीचंदजी से वातचीत। उनके साथ वोर्डिंग गया। उन्होंने भी सोहनी के प्रयोगों को ठीक वताया।

२५-२-१४

भुसान के एजेंट से वातचीत। जीन प्रेस व वगीचे गया।

२६-२-१४

सोहनी के प्रयोग देखकर उसकी रीति आदि उनसे पूछी।

काडक हाईस्कूल में स्कॉलरशिप का टेस्ट (परीक्षा) था। मुकुन्दराम मास्टर वुलाने आये थे। वहां गये। जोन्ससाहव से मिले।

राजा टोडरमल का इतिहास पढ़ा। रात को नींद ठीक नहीं आई।

२७-२-१४

टक्यामानागी के साथ जीन प्रेस गया। भोजन के वाद विश्राम व व्यवहार-कार्य।

१-३-१४

म्युनिसिपल कमेटी में गये। हिन्दी स्कूल अप्रैल से शुरू करने का निश्चय हुआ। टाऊन हॉल में एम० ए० पढ़े सज्जन का अंग्रेजी में व्याख्यान हुआ। व्याख्यान ठीक रहा। खरेसाहव की समालोचना भी ठीक मालूम हुई।

२-३-१४

पूज्य रामगोपालजी से मिले। उनसे वातचीत हुई। पू० जीवराजजी से

मिले। वह दिल्ली गये।

शाम को हाईस्कूल की स्कॉलरशिप का टेस्ट था, वहां गये। टाऊन हॉल में बैंच के मुकदमे करने गया। शरीर में थकावट थी, इसलिए जल्दी सो गया।

३-३-१४

चार बजे आंख खुल गई। भजन वगैरा किये।

जाजूजी के यहां तथा बोर्डिंग में गया। नथमलजी जाजू से आर्वी बोर्डिंग के फंड के विषय में बातचीत की। नागरमलजी पोद्दार आये। उन्हें बोर्डिंग दिखाया। भोजन करके नागरमलजी से मिलने गये। दूकान से रुपये भेजने को कहा अथवा पू० जमनाधरजी के हाथ की चिट्ठी भेजने को कहा।

६-३-१४

टवयामानागी से काफी बातें कीं। वह कल बम्बई जा रहा है।

७-३-१४

विद्यार्थी-गृह में पेपर देखे और गायन सुना। पत्रादि लिखे। भुसान का एजेंट टवयामानागी आज बम्बई गया। उसे पहुंचाने स्टेशन गया।

बिरदीचंदजी के साथ बगीचे गये। जावरा जीन होते हुए मराठी वर्नाक्युलर स्कूल का रिजल्ट देखने गये। आज टुनिया व केशव पास हुए, इसलिए पोद्दारों के यहां चासनी के चावल का भोजन हुआ। दूकान पर राठीजी से खरीदी के विषय में बहुत-सी बातों की चर्चा।

८-३-१४

बिरदीचंदजी के यहां गया और उनसे बातचीत की। जीन प्रेस आदि में गया। भोजन के बाद रात को उपनिषद पढ़ी। बाद में बिरदीचंदजी पोद्दार व बालचन्द्रजी के साथ सन्त तुकराम नाटक देखने गये। नाटक ठीक हुआ। विद्यार्थीगृह के लड़कों की देख-भाल कर ३ बजे सोया।

९-३-१४

रात का जागरण था, इसलिए भोजन के बाद सोया।

पूनावाला व्यंकटराव एक्सप्रेस से आया।

१०-३-१४

औरंगाबाद, पैठण, एलोरा, पंढरपुर, हैदराबाद की तरफ घूमने को जाने के विचार से नक्शा आदि देखा।

बिरदीचंदजी पोद्दार आये। उनसे बातचीत की। उनके साथ उनके तथा अपने बगीचे गया। उनसे भविष्य की दृष्टि से प्रश्न किया। उन्होंने समाधानप्रद उत्तर दिया। उन्होंने अपने मन का दुःख बताया। ब्रिज खेली।

११-३-१४

पूज्य कनीरामजी काकाजी से देवली के रोजगार के हिसाब की बातें। जाजूजी से गुलाबचन्दजी नागोरी के विषय में बातचीत की। रात्रि के व्याख्यान की तैयारी की। बालचन्द्रजी शास्त्री का होलिका-विषय पर व्याख्यान हुआ। सभापति खरे थे। व्याख्यान ठीक हुआ। पीछे से स्वजातीय लोग भी सुनने आये।

कल रंग गुलाल के साथ भजन करते हुए मेला (जुलूस) निकालने का निश्चय हुआ। लोगों को होली धूल-माटी से न खेलने को समझाया और प्रार्थना की कि जुलूस पर लोग कृपाकर धूल-कीचड़ न फेंकें।

आरती पहले ही हो गई। पूजन में गये।

१२-३-१४

९ बजे तक बोर्डिंग के लड़कों के खेल देखते रहे। बाद में भोजन किया। विद्यार्थी तथा महाराष्ट्रीय सज्जनों ने मिलकर १० बजे भजन करते हुए व गुलाल उड़ाते हुए जुलूस निकाला। पोद्दारों की दूकान के पास मारवाड़ी समाज की तरफ से जुलूस पर धूल-मिट्टी आई और एक विद्यार्थी को मार भी लगा, जिससे झगड़ा हुआ। मैं बापट के यहां पटवर्धन से बातें कर रहा था। पर झगड़े का शोर सुनकर वहां गया। जुथालालजी आदि सज्जनों का दृश्य देखने योग्य था। उनके मुखारविन्द से जो शब्द निकल रहे थे, उनसे कानों के कीड़े झड़ते थे। जांच करने पर झगड़े का कारण मालूम हुआ। उन लोगों को रात के व्याख्यान का गुस्सा था। इस प्रतिक्रिया की उम्मीद नहीं थी। मास्टर लोगों ने भी एक-दो लोगों की पोटली पकड़ी और

धमकाना चाहा। इससे तकरार वढ़ गई, पर ईश्वर-इच्छा से शान्त हो गई। चित्त में ग्लानि रही। पू० रामगोपालजी, विरदीचंदजी आदि घर आये। वोर्डिंग की तरफ से गलती तो हुई पर मारवाड़ी समाज के वहुत-से सज्जनों की इच्छा मालूम हो गई। अच्छे कामों में विघ्न तो आते ही हैं। इतने से ही संतोष माना।

वर्धा, २६-३-१४

मेल से वर्धा पहुंचे। नित्यकर्म से निवृत्त होकर डाक पढ़ी। यवतमालवालों से वातचीत की। गौरीलाल की परिस्थिति उन्हें वता दी।

आज गणगोर निकलनेवाली थी। उसकी तैयारी की। शाम को गणगोर उत्साह के साथ निकाली गई। एक-दो लोगों को छोड़कर सभी आ गये थे। आज पू० रामगोपालजी भी मिले थे, उनसे वातें हुईं। वृद्धिचन्द्रजी का पत्र भगवानदासजी ने दिया। पढ़कर चिन्ता व शोक हुआ। कुछ देर बाद समाधान हुआ।

३०-३-१४

विद्यार्थी-गृह गये। पूना के वापूराव कोलगांवकर हिंगणे[1] की संस्था के लिए आये। दस रुपये चंदे में दिये। जैन वोर्डिंग के सुपरिंटेंडेंट से वातचीत हुई।

१-४-१४

वोर्डिंग का व्याख्यान-कार्य देखा। भोजन व विश्राम के बाद विप्रदेवी मास्टरनी से व्यवस्था-कार्य-सम्वन्धी बातें। रजिस्ट्रार की कचहरी में गये। विद्यालय का पावर ऑव अटर्नी रजिस्टरी करवाकर वम्वई भेजा।

शाम को बंबेवाले के यहां गये। वह नहीं मिले। त्र्यंबक की माता से थोड़ी देर वातचीत की। वगीचे में पूना के कोलगांवकर तथा पाठक आये। रात को व्याख्यान में नागपुरवाले दीनदयालु वाजपेयी ठीक वोले।

८-४-१४

पौनार के वगीचे तक घूमने गया। वापस आते रामनाथजी से मिला। इनसे

---

१ श्री कर्वेजी द्वारा स्थापित स्त्री-शिक्षा की संस्था।

बातें हुई। कार्णिकसाहब दत्तापुर जा रहे थे। ढोवलेसाहब से मिले।

धामणगांव ११-४-१४

सहकुटुम्ब धामणगांव गया। वहां पहुंचकर श्रीनारायण के बंगले में ठहरे। ब्राह्मण-भोजन भलीभांति देखा। शाम को श्रीनारायण के ऊपर के हाल में आनन्दपूर्वक भोजन। रात में बंदोरी[1] के साथ गये।

१२-४-१४

नित्यकर्म से निवृत्त होकर मंदिर के दर्शन किये। बाद में भोजन, विश्राम और बातचीत। नारायणदास फत्तेचन्द के बगीचे मिलने आये। स्पेशल ट्रेन, भागचन्दजी को नया बंगला, जाइंट आदि विषयों पर बातें। रामगोपालजी के डेरे बंदोरी थी। जीमणवार होती रही। पक्की व कच्ची रसोई जीमकर बंदोरी में गये।

वर्धा १३-४-१४

एक्सप्रेस से वर्धा आये। कलकत्तावालों के तार का जवाब आया। थोड़ी देर तक पं० बालचन्द्रजी व रामनारायणजी का शास्त्रार्थ सुना।

१४-४-१४

धामणगांव से बारात के टिकिट आदि की व्यवस्था करवाई।

शिवनारायणजी लध्धड़ मिलने आये। उन्होंने सीर (साझे) में काम करने की इच्छा प्रकट की। उनसे खुलासेवार बातें हुईं। नक्की करने के लिए बम्बई जाने का निश्चय हुआ। कलकत्ता जाने की तैयारी करके ७। बजे स्टेशन पहुंचे। स्पेशल ट्रेन १। घंटा लेट आई। व्यवस्था ठीक नहीं थी। सबको बैठाकर बैठे। रामचरितमानस पढ़ा। नागपुर में डा० हरदास उतर गये। नागरमलजी आदि आये। ट्रेन रात को ११ बजे चली।

कलकत्ता जाते हुए १५-४-१४

रायपुर में आंख खुली। बिलासपुर स्टेशन पर उतरे। बम्बईवाले साहब की व्यवस्था की। शिवमुखरायजी जाजोदिया के साथ गांव में गये। स्नान

---

१ शादी के समय वर का जुलूस।

आदि कर उन्हींके यहां भोजन किया। दो बजे गाड़ी वहां से रवाना हुई। रास्ते में ब्रिज खेले और कुछ वाचन किया। चक्रधरपुर में साग-पूड़ी खाई और खिलाई।

कलकत्ता १६-४-१४

खड़गपुर में नींद खुली। अंडुल में लक्ष्मीनारायणजी आदि मिले। उनके साथ मोटर से, रेलगाड़ी के हावड़ा पहुंचने के पहले ही पहुंच गये। ओंकारमलजी जटिया के यहां ठहरे। भोजन आदि कर विश्राम लिया। लक्ष्मीनारायणजी, ओंकारमल और उनके भाई आदि मिलने आये। उनसे बातचीत। निकासी के साथ गये। बाद में ओंकारमलजी के साथ मोटर में घूमने गये। वापस आकर भोजन किया।

१७-४-१४

सवेरे ४।। बजे फेरे में गये। निवृत्त होकर पू० रामगोपालजी के पास गये। वहां २।।-३ घंटा वादविवाद होता रहा। हरीरामजी साहब का कहना ठीक था। वहां से शिवप्रसादजी गाडोदिया के साथ पोद्दार की दूकान गये। भोजन करके डेरे आये। लक्ष्मीनारायणजी सराफ व उनके भाई आदि से बातें कीं। शाम को नोखीरामजी से मिलने गया, उनके साथ किले की तरफ घूमने गये।

आज शाम को श्री दयानंद विद्यालय देखा। प्रभुदयालजी हिम्मतसिंहका, ज्वालाप्रसादजी कानोड़िया आदि से बहुत-सी बातें शिक्षा-प्रचार व समाज-सुधार के विषय में हुईं। उनके साथ बगीचे घूमने गये। श्रीराम की सगाई की बात भी हुई।

१८-४-१४

हिंदी-क्लब का निरीक्षण किया। मारवाड़ी जाति में यहां व्यायाम का क्रम व रुचि देखकर आनन्द हुआ। वहां जुगलकिशोरजी बिड़ला से बातचीत की। श्री गंगाजी स्नान करने गये। वहां से श्रीराम केया के साथ डेरे पर आये। जोखीराम के यहां भोजन करने गये।

जुगलकिशोरजी बिड़ला डेरे पर मिलने आये। बहुत देर तक बातें होती

रहीं। भंडार गये। वहां कई सज्जनों से मुलाकात हुई। जुगलकिशोरजी बिड़ला के साथ घूमने गये। देवीप्रसादजी व दुर्गाप्रसादजी खेतान आदि से मिले। मारवाड़ी क्लब में टेनिस खेली। घूम-फिरकर ७। बजे कच्ची रसोई जीमी। सज्जन गोठ में गये।

शिवप्रसादजी झुंझुनवाला व कन्हैयालालजी मुसद्दी, हिंदू क्लब के गायनाचार्य व देवीप्रसादजी सराफ भी आये।

१९-४-१४

जयनारायणजी पोद्दार व रामचन्द पोद्दार आये। उनसे बातचीत की। ओंकारमल सराफ, गजाधरजी जटिया, बद्रीप्रसादजी गोयनका आदि आये, उनसे बातें हुईं। बद्रीप्रसादजी के साथ गये। हरिरामजी रूईया के यहां भोजन किया।

बेनीप्रसादजी सराफ, ओंकारमलजी जटिया, कन्हैयालालजी मुसद्दी आदि डेरे पर मिलने आये। उनसे बातचीत की। तबीयत कुछ अस्वस्थ थी। ९ बजे बारात को रवाना करने स्टेशन गये। स्टेशन पर रुक्मानन्द बजाज व रंगलाल पोद्दार की लड़ाई हो रही थी। अमृतलालजी का रामगोपालजी ने अपमान किया, इसलिए गरम हो रहे थे। उन्हें समझाया। गाड़ी रवाना हुई।

२१-४-१४

ओंकारमलजी जटिया के साथ सिटी फ्लोअर मिल मोटर से देखने गये। वहां के मैनेजर गजाधरजी जटिया ने मिल भली प्रकार दिखाई। काम पसन्द आया। डेरे आकर भोजन किया।

प्रभुदयालजी हिम्मतसिंहका व महादेवजी पोद्दार मिलने आये। वे भी डेरे पर ही जीमे। वार्तालाप हुआ। मूलजी जेठावाले तथा और लोग मिलने आये। उनसे वार्तालाप हुआ। शाम को जुगलकिशोरजी बिड़ला आदि भी मिलने आये। शाम को उन्होंने लिलुवा में गोठ की। कृष्ण गोशाला देखी। हासानन्दजी से बातचीत। बिड़लाजी के यहां भोजन, गायन आदि आनन्द के साथ हुआ। फूलचन्दजी चौधरी आदि से परिचय करवाया। उनसे

बातचीत।

२२-४-१४

दुर्गाप्रसादजी खेतान से बातचीत हुई। सेठ राधाकिसनजी पोद्दार,जुहारमलजी खेमका, दौलतरामजी व रामदेवजी चोखानी से मिले। बहुत-सी बातें हुई। रात को पुरजे का भुगतान बंद होने के विषय में बातचीत की। कालुरामजी केया के यहां भोजन किया। तुलारामजी गोयनका मिलने आये। बहुत देर तक बातचीत हुई। बाद में लक्ष्मीनारायणजी सराफ के यहां गये। दो-तीन घंटे बातचीत हुई। सिलकिया जाना था, पर बारिश आ गई। आर्वी वाले शालीग्रामजी जगदीशजी गये। दुर्गाप्रसाद खेतान के यहां भोजन के लिए गये। आनंद के साथ भोजन और बातचीत की। बाद में फूलचंदजी के साथ बातचीत करते हुए घर आया।

२३-४-१४

रामदेवजी चोखानी व फूलचंदजी मिलने आये। उनसे बातचीत हुई। फूलचंदजी चौधरी के साथ धन्नूलालजी अटर्नी, जगन्नाथजी झुंझुनवाला, तथा रूडमलजी गोयनका के यहां मिलने गये। बहुत-सी बातचीत हुई। डेरे पर १२ बजे भोजन व विश्राम। जो लोग मिलने आये, उनसे बातचीत।
शाम को लक्ष्मीनारायणजी सराफ के बगीचे भोजन के लिए जाना हुआ। बहुत-से सज्जन आये थे। एक बंगाली ने नक़ल का काम बहुत बढ़िया किया था। आनंद से भोजन हुआ।

२४-४-१४

सर्दी मिटी नहीं। हावड़े गये। रामप्रसादजी सुरेका, भौमाबाई, तुलारामजी गोयनका आदि से मिले। डेरे पर भोजन किया। मिलनेवाले आये।
रामनिवास पोद्दार के साथ लक्ष्मी काटन मिल में जाना हुआ। वहां दोसौ गांठों का सौदा हुआ। गाड़ी के घोड़े को चोट आई। डेरे आये। महादेवप्रसाद पोद्दार, शोदयाल सेक्सरिया आदि के साथ 'भारत मित्र' आफिस में गये। वहां बातचीत की। वहां से मिल देखने गये। शोदयाल के साथ दुलीचंद का बगीचा देखा। ओंकारमलजी जटिया के यहां भोज था। वहां मोटर

में गये। आनंद के साथ मित्रों-सहित भोजन किया।

२५-४-१४

जयनारायणजी व रामचंद्रजी पोद्दार मिलने आये, बहुत देर तक बातचीत हुई। उन्होंने भोजन के लिए बहुत आग्रह किया, लेकिन समझा दिया। शिवप्रसादजी गाडोदिया व मेघराजजी सराफ से मिले। बातचीत हुई। लक्ष्मीनारायणजी सराफ के घर गये। उनके माता, पिता, बहनों आदि से भली प्रकार मिले। डेरे आये। वहां ओंकारमलजी जटिया, गंगाधर, कन्हैया-लाल, चंपालाल आदि मिलने आये। उनकी तरफ से ओंकार आदि स्टेशन पहुंचाने आये। जयनारायणजी, रघुनाथप्रसादजी पोद्दार, बद्रीप्रसादजी गोयनका, जुगलकिशोरजी बिड़ला, फूलचंद चौधरी, ज्वालाप्रसादजी, बैज-नाथजी, कालूरामजी केया, लक्ष्मीनारायणजी सराफ, ओंकारमल गजाधरजी वर्मा व मूलजी जेठावाले स्टेशन पहुंचाने आये थे। ४।। बजे हावड़ा से रवाना हुए। रास्ते में डाब पी।

रेल में २६-४-१४

बिलासपुर स्टेशन पर स्नान किया। रायपुर में साग-पूड़ी खाई। रतनचंदजी बागड़ी से बातचीत हुई। नागपुर में फल लिये। वर्धा ४।। बजे पहुंचे। घर जाकर निवृत्त होकर पत्र पढ़े।

वर्धा २७-४-१४

नित्य कार्यों से जल्दी ही निवृत्त होकर पूज्य जीवराजजी पोद्दार से मिलने गये। घर आकर भोजन, विश्राम व व्यवहार-कार्य किया।

२८-४-१४

आज बालचंदजी शास्त्री द्वारा विद्यार्थी-गृह में १९ विद्यार्थियों का यज्ञोपवीत हुआ। विद्यार्थियों में बड़ी स्फूर्ति मालूम दी।
जाजूजी के साथ भोजन किया। बोर्डिंग में ही विश्राम किया।
शाम को घर पर छत के ऊपर भोजन किया।

२९-४-१४

हैदराबाद व कलकत्ते के हिसाब का जमा-खर्च करवाया। शाम को बोर्डिंग में

भोजन किया और संतरे खाये। पंडितजी व बालुजी से बातचीत की। गोरे-लाल के विवाह का प्रबंध किया। पोद्दारों के यहां मिलने के लिए गया।

३०-४-१४

वामनराव घारपुरे व कृष्णराव काणे के यहां यज्ञोपवीत में गये। आज शरीर कुछ अस्वस्थ मालूम दिया, सर में थोड़ा दर्द था। पू० कनीरामजी काकाजी आज देश गये। उनने बातचीत की। शाम को उन्हें स्टेशन पहुंचाने गये।

२-५-१४

बालूजी की मां से मिलने गये। पोद्दारों के यहां भोजन किया। रात में विद्यार्थियों के भजन सुने।

आज रामनाथजी की बड़ी लड़की गुजर गई।

३-५-१४

जीन में गये। घर पर पत्र-व्यवहार किया। रुई के नमूने भिजवाये। वर्षा ठीक हुई, ठंड भी थी। जाजूजी के साथ छत पर आनंद के साथ भोजन और विद्यार्थी-गृह-संबंधी कई प्रकार की बातें हुई।

४-५-१४

कृष्णराव काणे के भाई, जो डाक्टर हैं, की लड़की की शादी थी। वहां गये। ढोबलेसाहब आदि मिले।

रामनाथजी के यहां गये। वहां से पोद्दारों के बगीचे गया और जाजूजी से बातचीत की।

६-५-१४

आज प्रस चालू हुआ। भोजन के बाद व्यवहार-कार्य। २ से ६ बजे तक मुक़-दमे का काम करते रहे। जो नई घोड़ी व नई बग्गी खरीदी थी, नागरमलजी के साथ उसमें बैठकर बोर्डिंग गये। वहां बहुत देर तक नागरमलजी, पंडितजी व जाजूजी के साथ बातचीत हुई और बाद में पोद्दारों के यहां भोजन।

७-५-१४

जैराम फोटोग्राफर, खरे, काणे आदि से बातचीत। मुकदमे का काम-काज किया।

बम्नूराव खरे से वकीली व साहूकारी (लेन-देन) के विषय में वादविवाद हो गया। निश्चय किया कि वादविवाद करना ठीक नहीं।

बालजी से गौरीलाल के विवाह का प्रबंध कराया। रात को १॥ बजे तक फौजदारी मुकदमे की लिखा-पढ़ी का काम किया।

८-५-१४

नित्यकार्य व व्यवहार-कार्य किया।

६ बजे तक कचहरी में मुकदमे का कार्य किया। मंदिर में आज नरसिंह चतुर्दशी का उत्सव था।

९-५-१४

शिवनारायणजी लव्धड़ ने आकर कहा कि सीर में काम होना चाहिए। कबूल किया। पर कहा कि सीर की शर्तों का पहले से खुलासा होकर लिखा-पढ़ी हो जानी चाहिए, जिससे आगे गलतफहमी न रहे। उन्होंने मंजूर किया।

शाम को डा० बरट के यहां गये। बहुत-सी बातचीत हुई। कमला वहां गिर गई। उसको थोड़ी चोट आई।

बगीचे गये। शिवनारायणजी से जो बातचीत हुई थी, वह जाजूजी को बताई।

१०-५-१४

बंबई जाने पर पीछे काम किस प्रकार किया जाय, इसकी व्यवस्था की।

यवतमालवाले गौरीलाल के साले आये, उनसे बातचीत की।

जयदेव चंदौसीवाले, नारायणदासजी पोद्दार बंबईवाले तथा यवतमालवालों से बातचीत। शिवनारायणजी लव्धड़ से सीर में दूकान करने के सम्बन्ध में खुलासेवार बातचीत दत्तूजी के सामने हुई। उसकी लिखा-पढ़ी की।

रेल में ११-५-१४

शामराव इंजीनियर को तीनों कारखाने संभालने के लिए १३०० रुपये देने का निश्चय हुआ। उसने कहा कि वह अब ज्यादा वेतन नहीं मांगेगा तथा इमारत (मकान) के काम में गड़बड़ी नहीं करेगा।

बम्बई की तैयारी की। दत्तूजी आये। अनुपस्थिति में काम की व्यवस्था उनको समझाई। पू० रामगोपालजी से मिले। मेल से रवाना हुए। स्टेशन पर पहुंचाने बहुत-से लोग आये थे। पुलगांव में जलपान लेकर बंसीलाल आया। उसे कलकत्ते की बात समझाई और कलकत्ते जाने को कहा। धामणगांव में भागचंदजी व बडनेरा में कोठारी आये। अकोला में श्रीराम रामधनजी व सेगांव में जुहारमलजी मुरारका जल व दूध लेकर आये। भुसावल में राम-भाऊ की तरफ से जल और दूध लेकर आये व मनमाड में राधाकृष्ण आये। रात को निद्रा ठीक नहीं आई। कमला की मां की तबीयत अस्वस्थ रही।

बंबई १२-५-१२

इगतपुरी में आंख खुली। पहाड़ का दृश्य देखते रहे। कमला खेल रही थी। दादर स्टेशन से सामान रेल से भेजा और मोटर में बैठकर बंगले गये। बंगला तो ठीक मालूम दिया, पर रास्ता ठीक नहीं था।

शाम को पोस्ट आफिस मार्केट आदि घूमकर घर गये। जोरावरमलजी पोद्दार, हरिबगसजी, बैजनाथजी के मुनीम मिलने आये। उनसे बातचीत।

१३-५-१४

वर्धावाले रुक्मानंदजी बजाज आये। उनसे बातचीत करके फत्तेचंदजी रूइया के यहां मिलने गया। वहां बातचीत की और भोजन किया।

११-१५ की गाड़ी से बंबई गये। रास्ते में रामनारायणजी व सूरजमलजी की दूकान पर गये और वहां व्यवहार-सबंधी बाते कीं। सीतारामजी सिंघा-निया के यहां बैठने गये। वहां से भुसान के आफिस। फुलगोरी २० तारीख को जापान जा रहे हैं। फिर गुलाबचंदजी ढड्ढा आदि से मिलकर कुलाबा गये। वहां से कुसुमाटो से मिले। ५।। बजे की गाड़ी से अंधेरी रवाना।

१४-५-१४

सबेरे वरसोवा की सड़क तक घूमने व निपटने गये। तालाब पर हाथ धोये। मालिश करवाकर नीम के पत्ते के पानी से स्नान किया। ५ बजे तक अंधेरी ही रहे। बंबई ५-५७ की गाड़ी से गये। चर्नीरोड सोनीराम के साथ उतरे। वहां से तारदेव जाकर मगनबाई से मिले। माणकचंदजी सोलापुरवालों से

बातचीत की। कन्याओं की पढ़ाई कैसी होनी चाहिए, इस संबंध में बहुत देर तक बातचीत हुई। वहां से दानीजी के यहां गये। वहां उनसे तथा वल्लभनारायणजी से विद्यालय-संबंधी तथा दूसरी बातें हुईं। स्टेशन पर आये, लेकिन दस सेकंड पहले गाड़ी चली गई। बाद में एक घंटे बाद गाड़ी मिली। स्टेशन से दूर खुली हवा में बैठे। सोनीराम से बोर्डिंग-संबंधी खानगी में पूछताछ की। वह पहले से काफी सुधर गया मालूम होता है। रेल में गजाधरजी बागला मिले।

१५-५-१४

सबेरे जल्दी उठकर दादाभाई नवरोजजी के बंगले तक पैदल ही गये। वहां विश्रामकर माणकबाई से बातचीत की और पैदल ही वापस आये। व्यायाम ठीक हो गया। बंबई में सीतारामजी के यहां खर्च (मृत्युभोज) की दक्षिणा रामबाग में बंट रही थी। व्यवस्था ठीक नहीं थी। दक्षिणा फी ब्राह्मण दो रुपये थी। सीताराम आदि मिले। रामनारायणजी की मोटर में उनकी दूकान जाकर जलपान किया और जापान काटन के आफिस में कुसुमाटो से रुई के सौदे व मि० किटा-संबंधी बहुत-सी बातें हुईं। दानीजी के यहां विद्यालय के हेडमास्टर मिल गये। उन्हें घुमा-फिराकर सीताराम के सुपुर्द किया। सीताराम के यहां चने-मुरमुरे खाये। वहां से खेतवाड़ी टोपीवाला की चाल, तथा सखारामजी की चाल में अमृतलालजी चक्रवर्ती का बहुत देर तक पता लगाया, वह नहीं मिले। विद्यालय की नींव देखकर चर्चगेट से अंधेरी आये।

१६-५-१४

रुक्मानंदजी से बातचीत। रामकृष्ण पुंजाजी आदि के साथ ११-५ की गाड़ी से बंबई गया। सूरजमलजी से वर्धा छोटी दूकान में सीर रखने की बात हुई। उनके नहीं जंची।

भुसान आफिस में मि० माटसुसका से बातचीत। स्वदेशी स्टोर, क्राफर्ड मार्केट, होते हुए हरनंदराय सूरजमलजी की दूकान पर जलपान व बातचीत। पंचायतवाड़ी में गये। वहां जावरेवाले आये थे। उनसे मुलाकात व बातचीत की। वहां से मिस जोशी के यहां गये। वह नहीं मिली।

रेल में शिवदत्तराय किसनलाल रूइया आदि से समाज-सुधार पर चर्चा। शाम को सोनीराम सीताराम के भजन व गायन सुने। फत्तेचंद, किसनलाल जोरावरमलजी पोद्दार से १०। बजे तक समाज के विषय में बातचीत।

१७-५-१४

पगड़ी बांधना सीखने का प्रयत्न किया। फुलगोरी व उसके परिवार से परिवार-सहित मिलकर आया।

मारवाड़ी वाचनालय की सभा थी। नियम वगैरा बनाने थे। इसलिए वहां गये। वहां दो-तीन घंटे लगे। केशवदेवजी नेवटिया आदि से परिचय हुआ। वहां से दानीजी के यहां गये। वहां जलपान किया। माधोबाग में पं० बनवारीलालजी, अमृतलालजी चक्रवर्ती व गणेशरामजी बीकानेरवालों के संस्कार पर भाषण हुए। चक्रवर्तीजी का अधिक प्रभावशाली हुआ। किंतु कन्या-विवाह पर उन्होंने जो कहा, वह अनुचित था।

केशवदेवजी के साथ अंधेरी आया।

१८-५-१४

आज बम्बई नहीं गये। सांताक्रुझ तक पैदल घूमे। वापस रेल में लौटे। शाम को १० बजे पुरुषोत्तमदासजी के यहां भोजन किया। गंगाधरजी बागला भी आनेवाले थे। वह कार्यवश नहीं आये। वहां बहुत-सी बातचीत हुई।

१९-५-१४

१२-५ की गाड़ी से बम्बई गया। बोरीबंदर होकर भुसान के दफ्तर गये। फुलगोरीसाहब की मेम के लिए घड़ी खरीदी। स्कोडा के साथ व्यंकटेश्वर आफिस व जावरेवालों के यहां होकर कुलाबा गये। वहां फुलगोरीसाहब का सम्मान-समारोह था। व्यापारी लोगों ने पान-इत्र बड़े उत्साह के साथ दिया। बहुत-से लोग एकत्र हुए थे। मैंने थोड़ा हिंदी में कहा। रामनारायणजी रूइया के साथ अंधेरी आये। रास्ते में बातचीत की।

२०-५-१४

नित्यकार्य से जल्दी निवृत्त होकर ९ बजे की गाड़ी से चर्चगेट गया। घड़ी पर नाम खुदवाया। घड़ी भुसान के दफ्तरवाले कई लोगों ने देखी। उन्हें

पसंद आई। फुलगोरीसाहव से बातचीत की। उनका प्रेमल चेहरा और बातों से हृदय आकर्षित होता रहा। मेमसाहव को घड़ी भेंट दी। उनसे थोड़ी देर तक बातें की। वाद में स्टीमर पर पहुंचाने गये। वहां वंवई के बड़े-बड़े व्यापारियों ने, जिनमें यूरोपियन भी थे, वड़े समारोह के साथ उनको विदाई दी। लोगों का कहना था कि अवतक किसी व्यापारी का इतना सम्मान नहीं हुआ था।

वोरीबन्दर होकर जावरेवालों के यहां गये। वहुत देर तक उनसे बातचीत हुई। कलेवा किया।

२१-५-१४

पत्र पढ़े। ११-२० की गाड़ी से वम्वई किले में घूमकर जावरेवालों के यहां गये। करीव ५ घण्टे वहां थे। फेरे (सप्तपदी) का कार्य शुरू होनेवाला था। उस समय चर्नीरोड होकर अंधेरी आये।

२३-५-१४

भोजन के वाद आराम करना चाहते थे कि श्रीनिवासजी जाजोदिया आये। उनसे वातचीत की। कुछ देर वाद चिरंजीलालजी आये। उनसे बातचीत हुई।

५-५५ की गाड़ी से चर्चगेट आये। उन्हें घुमाकर और पंचायतवाड़ी पहुंचाकर मरीन लाईन्स से अंधेरी गये। अंधेरी में भोजन के वाद भजन करके सोया।

२४-५-१४

तेलमालिश करके बाल बनवाये। भोजन के वाद विश्राम कर पत्र-व्यवहार किया। २-१७ की गाड़ी से वम्वई गये। सूरदास नाटक देखा। नाटक अच्छा हुआ। वहां से पंचायतवाड़ी जाकर जावरावालों के यहां भोजन किया। सीताराम पोद्दार, मीठामल, व्रजमोहनजी आदि भी वहां थे। मीठामल के साथ १०-२० की गाड़ी से अंधेरी आये।

२५-५-१४

कलकत्ते से कपड़े आये। मीठामल पोद्दार कमला वगैरा के साथ वरसोवा

गये। दरिया पर स्नान किया और वहुत देर तक ठहरे। घर लौटकर भोजन किया।
४-३३, की गाड़ी से वम्वई गये। ६॥ वजे के गाड़ी से वापस लौटे। रास्ते में पं० बनवारीलालजी से वहुत-सी वातें, सीताराम के विवाह के विषय नें होती रहीं। केशवदेवजी नेवटिया से भी वातें।

२६-५-१४

पुरुषोत्तम जाजोदिया को भली प्रकार समझाया। उनके लिए जो विचार थे, वे अब नहीं रहे।
श्रीनिवासदासजी जावरेवाले आये। उनसे वहुत-सी वातें हुई।
१-२० की गाड़ी से वम्वई गया। चेनीराम जेसराज की दूकान, भुसान के दफ्तर, मर्चेंट वैंक होकर श्रीनिवासजी के साथ पंचायतवाड़ी में आया। वहां बहुत-सी वातें हुईं। वच्चों को कुछ दिया।
५ बजे की गाड़ी से रामेश्वरदासजी विड़ला व केशवदेवजी के साथ माटुंगा गये। वहां कार्ड[1]-सम्बन्धी बहुत-सी बातें हुई।
भोजन के वाद फत्तेचन्द रूइया से बातचीत।

२७-५-१४

रामनारायणजी से मिलने गये। उनसे वातें कीं। वाबूराम खरे, उनकी पत्नी व बालक नासिक से आये। उनकी व्यवस्था की। भोजन के बाद विश्राम। फिर स्वामी रामतीर्थ का जीवन १२॥ वजे तक पढ़ा और पत्र-व्यवहार किया।
२ वजे की गाड़ी से वम्वई गया और कुलावा होकर वापस आया।

२८-५-१४

बाबूराव खरे से बातचीत की। २-१५ की गाड़ी से चर्चगेट स्टेशन उतरे। रास्ते में गोवर्धनदास तेजपाल आदि से वातचीत।
किले में घूमकर ६-८ की गाड़ी से मरीन लाइन्स से वैठे। साथ में मीटामल

---

१. शेयर-बाजार या रुई-बाजार का प्रवेश-पत्र

पोद्दार था। माटुंगा उतरे। फत्तेचन्द रूइया और केशवदेवजी नेवटिया भी साथ थे। रामेश्वरजी विड़ला नहीं मिले। दादर से अंधेरी आये। रास्ते में भुने हुए पिश्ते खाये।

भोजन के बाद मीठामल पोद्दार से बातचीत। नींद १॥ वजे आई।

२९-५-१४

रामनारायणजी से मिले। सूरजमलजी से व्यवहार-सम्बन्धी बातचीत। उन्होंने बातचीत में 'गरज' शब्द का प्रयोग किया, वह अनुचित लगा। निर्णय उनपर ही छोड़ दिया। मीठामल पोद्दार के साथ भोजन। पं० अमृतलालजी चक्रवर्ती आये। उनसे बातचीत। २-१५ की गाड़ी से ग्रांट रोड उतरकर गांधर्व विद्यालय होते हुए कुलावा गये। बाजार ठीक था।

६-३२ की गाड़ी से अंधेरी आये। रामनारायणजी ने अपने घर का व सूरज-मलजी, बैजनाथजी का सब हाल बताया। रात को भोजन के बाद अखबार पढ़ा। चन्दन के तेल की मालिश करवाई।

३०-५-१४

वेडमिंटन की पुस्तक पढ़ी। २-१५ की गाड़ी से चर्नीरोड उतरे। रामेश्वरजी विड़ला से मिले और बातचीत की। केशवदेवजी नेवटिया और दानीजी से मिले। मित्रों को टेलीफोन किया। कल भोजन के लिए आने का निमन्त्रण दिया।

वल्लभनारायणजी दानी कुलावा से अंधेरी साथ ही आये। रात को अंधेरी ही रहे। उनसे बहुत-सी वातें हुईं। विद्यार्थियों के भजन हुए। फत्तेचन्द आदि भी आ गये थे।

३१-५-१४

आज प्रीतिभोज था। वल्लभनारायणजी दानी से विद्यालय की रिपोर्ट का मसविदा सुना। उसमें कुछ परिवर्तन किया। भोजन के बाद माधोप्रसादजी शर्मा, केशवदेवजी नेवटिया, फत्तेचन्दजी, किशनलाल, रामेश्वरजी विड़ला, घनश्यामदासजी आये। जलपान किया। मारवाड़ी पुस्तकालय के नियम बनाये। मित्रों का आगमन हुआ। ढड्ढाजी, श्री मोहनजी, रघुनाथभाई,

वालूभाई, दुलीचन्दजी, लक्ष्मणदासजी डागा, पण्डित गणेशदत्तजी बीकानेर-वाले पुत्रसहित, सीताराम पोद्दार, हैडमास्टर आदि कई सज्जन आये। आनन्द के साथ वार्तालाप हुआ। गांधर्व विद्यालयवालों का गायन, भजन, ठंडाई आदि के वाद वड़े आनन्द के साथ भोजन हुआ। रसोई उत्तम हुई। आज बाबूराव थत्ते आदि १३-१४ सज्जन आ गये थे। उन्हें भी प्रेम से भोजन कराया। सभी वहुत खुश हुए।

२-६-१४

२-१५ की गाड़ी से ग्रांट रोड उतरे। रेल में गोवर्धनदास सेठ साथ थे। दुलीचन्दजी कलकत्तेवालों से मिले। उनसे वातचीत। कुलावा होकर अंधेरी आया।

दुलीचन्दजी की वृत्ति में कुछ फर्क दिखाई दिया। वह रामायण पढ़ते थे और ज्ञान के विषय में उनकी वार्ता सुनी।

३-६-१४

विलेपार्ले स्टेशन तक पैदल आकर ४-४१ की गाड़ी से चर्चगेट कुलावा आदि गया। एक्सलसियर सिनेमा देखा। ८-२० की गाड़ी से अंधेरी वापस आया।

४-६-१४

४ वजे की गाड़ी से वम्वई गया। चर्चगेट से कुलावा। सीताराम पोद्दार मिले। उनसे बातचीत हुई।

पण्डित बनवारीलाल को ११ रुपये विदाई दी। माधोवाग होकर ग्रांट रोड से अंधेरी आये। आज अमरस-पूड़ी का भोजन किया।

५-६-१४

रामनारायणजी रूइया, सूरजमलजी, आनरेवल लल्लुभाई आदि से मिले।

४ बजे की गाड़ी से बम्बई गये। स्वदेशी स्टोअर होकर गेइटी थियेटर। वहां सिनेमा, मिस लेसी का नाच, कसरत आदि देखी। ६-१७ की गाड़ी से अंधेरी आया। रेल में सॉलिसिटर रोमर मिले। उनसे थोड़ी बातचीत हुई। उसी डिब्बे में थाना के डी० एस० मिले, उनसे बहुत-सी बातचीत हुई।

योग्य सज्जन मालूम दिये। उन्हें फिर से मिलने को कहा।

६-६-१४

सवेरे पुस्तक पढ़ते रहे। बाद में भोजन और आराम। पत्र लिखकर अख़-बार पढ़े।

६ बजे पैदल अंधेरी गुफा देखने गये। रास्ते में झाड़-फूल आदि बड़े ही मनोहर लगते थे। गुफा अच्छी तरह देखी। छोटी और साधारण थी। वहां एक साधु रहता था। उससे बातचीत की। जल पीकर आहिस्ता-आहिस्ता सड़क के रास्ते होकर, सोनीराम व सीताराम विद्यार्थी के साथ बातचीत करते हुए बंगले पहुंचे।

आज करीब ९-१० मील घूमना हुआ।

७-६-१४

पत्र व डायरी लिखी। २-१७ की गाड़ी से चर्नीरोड उतरकर दानीजी के यहां गये। वहां पण्डित गणेशदत्तजी बीकानेरवाले व लक्ष्मणदासजी डागा थे। उनसे बहुत-सी बातचीत हुई। बाद में दानीजी के साथ सर्वेंट ऑव इंडिया सोसायटी में गये। देवधर से मिले। वहां का कार्य देखा। कालबादेवी में एक तसवीर ली, बाद में पालवा घूमने गये। थोड़ी वर्षा हुई। वहां से कुलाबा होकर चर्चगेट पैदल आये। दानीजी के साथ उनके एक पण्डित मित्र आये। उनसे भी बहुत-सी वार्ता हुई। गिरगांव में पण्डित धेनुलाल सरावगी से मारवाड़ी विद्यालय-सम्बन्धी बातें कीं।

चर्चगेट के पास नागपुरवाले सर गंगाधरराव के पुत्र माधोराव चिटनवीस पत्नी-सहित बैठे थे। उनसे बातचीत। उन्होंने मंगलवार को अंधेरी आने को कहा।

८-६-१४

१-२० की गाड़ी से बम्बई गये। रुई के नमूने साथ ले गये थे। भुसान के आफिस गये। फिर गोदरेज के यहां जाकर एंपायर होटल में जोशी सब-जज से मिले।

शेयर-बाजार गये। भगवानदास से मिले। उसने रुपये देने के बाबत संतोष-

जनक उत्तर दिया। १५-२० रोज में चुकती रकम देने को कहा। वहां से कुलावा गये। बाजार की रंगत देखी। नरम माल बेचने की कोशिश की। सौदा नहीं हुआ। ना० पोद्दार के साथ माधोबाग जाने के लिए रवाना हुए। रास्ते में एंपायर होटल में माधोराव चिटनवीस से मिले। उनसे बातचीत हुई। उन्होंने कल आने को कहा। बाद में बाबूराव से मिले। उनकी तबीयत ठीक नहीं थी। वर्षा शुरू हो जाने से माधोबाग नहीं गये। चर्चगेट से अंधेरी आ गये। रास्ते में फल खरीदे। घर पर दामोदरदासजी राठी व पण्डित अमृतलालजी चक्रवर्ती बैठे थे। थोड़ी देर बैठकर सबने भोजन किया व सबसे बातचीत की।

९-६-१४

दामोदरदासजी राठी, अमृतलालजी चक्रवर्ती व डागाजी मुंबई गये। माधोराव चिटनवीस पत्नी-सहित आये। उन्हें चाय पिलाई और बाद में भोजन कराया। उनसे बातचीत व बाद में पत्र-व्यवहार किया।

४ बजे उनके साथ बम्बई गये। उनसे बहुत-सी बातें होती रहीं। उनकी पत्नी का स्वभाव संस्कारी मालूम दिया। चर्चगेट से उन्हें एंपायर होटल में पहुंचाकर शेयर बाजार होते हुए दानीजी से मिले। उनसे दामोदरदासजी राठी से मिलने का समय निश्चित किया। भगवानदास के यहां गये। वह नहीं मिले।

खेतवाड़ी से राठीजी व अमृतलालजी को लेकर दानीजी के यहां गये। राठीजी व दानीजी से व्यवहार-सम्बन्धी बातचीत हुई। चक्रवर्तीजी को उनके ठिकाने पर छोड़कर ग्रांट रोड से अंधेरी आया। रास्ते में गोवर्धनदास सेठ आदि से बातचीत।

१०-६-१४

दामोदरदासजी राठी की दाढ़ी-बाल वगैरा मुश्किल से निकलवाये। ४ बजे उनके साथ चर्चगेट गया। रास्ते में बांदरे से ... साहब साथ हुआ। पुराने स्टॉक के काम के लिए उसे पांच हजार रुपये देकर भागीदार होने को कहा, लेकिन उसने इन्कार किया। भगवानदास मगनभाई इंडिया इंजिनियरिंग

कंपनीवालों से मिले। उसने १५-२० रोज में रुपये देने को कहा।
कुलावा में हाजर का वाज़ार कड़क था। १०० गांठ जीन की हुई, २९० में देने के लिए नमूना दिया। पालवे में राठीजी नहीं मिले। वर्धावाले वावूराव खरे मिले। उनकी प्रकृति अस्वस्थ थी। राठीजी सीधे अंधेरी चले गये होंगे, समझकर चर्चगेट से ७-५५ को अंधेरी पहुंचे। रामनारायणजी से वातचीत की। राठीजी १०। वजे आये।

१२-६-१४

प्रताप का पत्र आया। परीक्षा में पास होने के विषय में लिखा।
पत्र आदि लिखे। ४ वजे की गाड़ी से चर्चगेट आये। एंपायर में चिटनवीस के समाचार लिये। कुलावा का वाज़ार ठीक था। वहां से रामप्रतापजी मोहता, मगनीराम पंपालिया, नरसिंगदास के मुनीम साथ हुए। आर्यन होटल में वावूराव को देखने गये। मालूम हुआ कि वह अंधेरी गये हैं। कावस जी हॉल में 'लीडर' पत्र देखने गये। अमरचन्दजी का रिजल्ट देखा। नहीं मिला।
चर्चगेट से ७-५ की गाड़ी से अंधेरी आये। वर्षा थी, वावूराव आदि ७ जने वहां आये थे। सव मिलकर १६ आदमी पंगत में भोजन के लिए बैठे। आनन्द से भोजन किया। रात में सवने मिलकर वातचीत की। ग्रामोफोन आदि सुना। चक्रवर्तीजी भी आ गये थे।

१३-६-१४

वावूराव खरे से वातचीत की। सबके साथ वैठकर भोजन किया। वावूराव आदि छः जने, हेमराज सोनीराम अंधेरी से ११-१५ की गाड़ी से वर्धा के लिए रवाना हुए। वहुत-सी वातचीत हुई। पत्र दिये।
१२-५ की गाड़ी से रवाना। वांदरे में रेल में थाने के कप्तानसाहव मिले, उन्हें मारवाड़ी और गोडवाळ का फर्क समझाया। उन्होंने वचन दिया कि मुझे लिखकर भेजो, मैं पुलिस-गजट में छपवा दूंगा। यह फरक अवश्य प्रकाश में आना चाहिए। वांदरे उतरे व मिसेस पाठक से मिले। वहुत-सी वातें हुई। उन्होंने कमला आदि को मिलने वुलाया।

राठीजी से वातचीत। ५ बजे की गाड़ी से चर्चगेट आये। दानीजी से मिले। मारवाड़-गोड़वाळ के बारे में चर्चा की। कल वालकेश्वर में एकत्र होने का निश्चय हुआ। ६ बजे कमला आदि आनेवाले थे, इसलिए ६ बजे चर्चगेट गया। गाड़ी लेट थी। माटुंगा दादर में डिब्बा गिर गया। इसलिए चिन्ता हुई। ग्रांट रोड में बगीचे, कमरा आदि देखे। कुलावा तक उनके साथ गये। आनन्द से फल खाये। वापस अंधेरी आये। बारिश जोरों की थी। बांदरा तक रेल में, बाद में घोड़ा-गाड़ी में अंधेरी गये।

१४-६-१४

राठीजी से बातें। २-१७ की गाड़ी से चर्नीरोड गये। ग्रांट रोड से राठीजी साथ थे। वालकेश्वर दानीजी के बंगले गये। मारवाड़ी-गोड़वाळ का फरक निश्चय कर जाहिर करने की तजवीज करने का निश्चय हुआ। ढड्ढा-जी कार्यवश नहीं आ सके। वहां से खेतवाड़ी में राठीजी के डेरे गये। चक्र-वर्तीजी ने वेंकटेश्वर समाचार सुनाया।

१५-६-१४

राठीजी से वातचीत। १-२० की गाड़ी से वम्बई जाना। क्राफर्ड कम्पनी में मोटर का नीलाम था। वहां गये। मेघराज की मोटर नाथनसाहब ने ३६०० में ली। दूसरी १४०० में दूसरे ने ली। आलमारी ४० में ली। मर्चेंट बैंक जाना। वहां राठीजी, दोनों दानीजी, ढड्ढाजी, रामनारायणजी रूइया आदि से मारवाड़ी-गोड़वाड फरक-सम्बन्धी चर्चा। मि० वाच्छा को लायब्रेरी में से कुछ जानकारी लाने को कहा।
कुलाबा बाज़ार ठीक था। बंगला देखने वालकेश्वर गये। शोसामलजी का बंगला १ जुलाई से तय किया।
चर्नीरोड से अंधेरी। राठीजी के साथ भोजन किया।

१६-४-१४

सुबह ही गेंदोली की तरफ भाड़े से बंगला देखने गये। ६। बजे वापस घर। रामनारायणजी से मिलते हुए भोजन। बाद में बांदरा, विलेपार्ले मोटर में, कमला-सहित १-२० की गाड़ी से अकेले बम्बई। मुसान जफान आफिस।

टाइपराइटर लिया। कोलाबा २५० गांठें कल पर रहीं। वाटरप्रूफ कोट व्हाइटवे लेडला से लिया। वालकेश्वर गये। देवड़ा का कमरा भाड़े से लिया। अंधेरी में वर्षा हुई। कोट पहनकर घर।

भोजन, ६।। बजे शयन। आज दा० राठीजी कार्यवश दो रोज के लिए किसी गांव गये।

१७-६-१४

वर्षा ज़ोरों की थी। १५ तारीख तक के पत्र छांटे। जवाब लिखे। ४ बजे की गाड़ी से कुलाबा गये। वर्षा हो रही थी। भुसानवालों से मिले। वह जल्दी ही चले गये। सौदे का रंग नहीं दीखा।

एंपायर होटल से क्राफर्ड-मार्केट गये। फल खरीदे। सरदारगृह में माधवराव चिटनवीस से मिले।

मरीन लाइन से अंधेरी के लिए बैठे। रेल में रामनारायणजी से बातचीत। आज रेल में श्री टिलक के छोड़े जाने की चर्चा हो रही थी।

घर भोजन कर सोये। २।। बजे उठकर निवृत्त हुए। ४।। बजे तक बातचीत।

१८-६-१४

भोजन आदि से निवृत्त होकर कमला वगैरा को लेकर मिसेस पाठक से मिलने गये। अनेक विषयों पर बातें होती रहीं। इनकी भावना बड़ी ही उत्तम थी। प्रेम के साथ कई बातें बताईं। कमला आदि को बांदरा स्टेशन से घोड़ागाड़ी में अंधेरी भिजवाया और मैं स्टेशन से चर्चगेट गया। वहां से मूलजी जेठा के आफिस में गया। जीवनदासजी नहीं मिले। कुलावा में रुई का बाज़ार ठंडा था। लेवाली नहीं थी। वहां से जल्दी रवाना होकर तसवीर-वाले के यहां गये। ६५ रुपये में बारह तसवीरें छांटी। वहां से स्वदेशी स्टोअर गये। खिलौने लिये। सरदारगृह में चिटनवीस से मिले। उन्हें भेंट में एक खिलौना दिया। वहां से गांधर्व विद्यालय में गये। पार्टी के लिए २० रुपये दिये। बातचीत की। फिर श्राविकाश्रम गये। मगनबाई नहीं मिली। ग्रांट रोड गये, पर गाड़ी लेट थी। ८।। बजे रवाना होकर १० बजे अंधेरी पहुंचे।

१९-६-१४

आज ४ वजे की गाड़ी से चर्चगेट उतरे। कुलावा का रुई-बाजार बन्द था। श्राविकाश्रम गये। मगनबाई नहीं मिली। रिपोर्ट आदि पढ़ी। वहां से सेवा-सदन (चौपाटी) चर्नीरोड से मरीन लाइन तक पैदल गये और वहां से रेल में अंधेरी गये। रात में बालकिशन द्वारकादास आदि से बातचीत।

२०-६-१४

सवेरे रामनारायणजी से मिले। श्री राठीजी को लेने मगनीरामजी पंपालिया के साथ स्टेशन गये। १।। घंटे तक राठीजी नहीं पहुंचे थे। १० बजे पहुंचे। ११।। बजे भोजन व राठीजी से बातचीत। पुरुषोत्तम गनेड़ीवाल से बात करनी है। २-३५ की गाड़ी से बम्बई गये। राठीजी अंधेरी ही रहे। ग्रांट रोड से श्राविकाश्रम आये। बालकिसन तथा द्वारिकादास साथ थे। वहां मगनबाई से मिले व बातचीत की। मगनबाई को साथ लेकर जमना-बाई से मिलने गये। उनके पति नगीनदासभाई का स्वर्गवास हो गया था। इसलिए उनसे सहानुभूति प्रदर्शित करने गये। वहां से ग्रांट रोड होकर अंधेरी आये। साथ में रूइयाजी थे। घर पर राठीजी से बातचीत की।

२१-६-१४

मगनबाई बम्बई से मिलने आई। बातचीत की। बाद में सबके साथ बैठकर आनंद से भोजन किया। भोजन के समय श्लोक आदि बोले। फिर स्त्री-शिक्षण व कई विषयों पर मगनबाई व राठीजी में वार्तालाप होता रहा। ४ बजे फलाहार। मगनबाई बम्बई गई।

पुरुषोत्तमदासजी गनेडीवाल से मिले। सुधार आदि कई विषयों पर बहुत-सी बातचीत हुई। बोर्डिंग व विद्यालय के कार्य में सहानुभूति बताई। रतन व नर्मदा को देखकर घर आया। घर पर राठीजी से बातचीत।

२२-६-१४

सर्दी लगने से स्नान नहीं किया। राठीजी से बातचीत।

अंधेरी गुफा देखने गये। राठीजी, बालकिसन, द्वारकादास ने गुफा देखी। वहां से ६ मील पर गेंदोली के रास्ते पर एक तालाब है, उसे देखने गये।

वहां से वम्बई के लिए पानी आता है। दृश्य अच्छा था। करीब ५।। बजे वापस आये। रामनारायणजी व सूरजमलजी से बातचीत। घर आकर फलाहार किया और कार्य-सम्बन्धी बातचीत की। भोजन नहीं किया। राठीजी से बातें।

२३-६-१४

राठीजी जल्दी भोजनकर वम्बई गये। सभी पत्रों के उत्तर दिये। करीब १३ कार्ड लिखे। सामान वम्बई भेजना शुरू किया। वम्बई घूमकर आये। आज मामूली काम हुआ।

बम्बई २४-६-१४

आनरेबुल लल्लुभाई मिलने आये। उनसे बातचीत। राठीजी से बातें कीं। ४ बजे वम्बई आये। तीन तसवीरें लीं। कुलावा गये, पर बाजार बन्द था। स्वदेशी स्टोअर जाकर गेइटी सिनेमा देखने गये। कमला आदि आ गईं। वहां से मोटर से चौपाटी पर बंगले आकर साग-पूड़ी का भोजन किया। रात को वम्बई ही रहे।

रेल में २५-६-१४

६ बजे ग्रांट रोड से अंधेरी आये। राठीजी से बातचीत। सभी कामों से निवृत्त होकर ११-१५ की गाड़ी से मरीन लाइन आये। राठीजी, सूरजमलजी, फत्तेचंद आदि आये। १ बजे नागपुर मेल से वर्धा रवाना। वर्षा शुरू हुई।

वर्धा-धामणगांव २६-६-१४

सवेरे मेल से वर्धा पहुंचे। जाजूजी के साथ भोजन किया। वोर्डिंग से जनेत की निकासी हुई। ११ बजे की गाड़ी से जनेत को रवाना किया। रामनाथजी पोद्दार आदि के घर जाकर जनेत में चलने को कहा और मेल से धामणगांव गये। जनेतियों को बैलगाड़ी व मोटर में बैठाकर रवाना किया। कुछ किराये के तांगे किये थे, वे नहीं आये। इसीलिए रात को धामणगांव में रुकना पड़ा। नींद नहीं आई। बारिश भी थी। ११ बजे तक भागचंदजी के साथ गप्पें होती रहीं।

यवतमाल २७-६-१४

सुबह ५।।। बजे किराये के तांगे से रवाना हुए। साथ में अमरचंदजी व निहालचंद रोकड़िया थे। रास्ते में निपटे, मुंह-हाथ धोया, ११। बजे जनेत के डेरे पहुंचे। स्नान-पूजन आदि कर १२।। बजे जीमे, ऊपर डेरा जमाया, सगों से वार्ता। ४।। बजे रथ लेकर आये। जाजूजी, श्रीनारायण वगैरा भी मौके पर आ गये। ढकाव व निकासी बहुत ही बढ़िया तौर से हो गई। सगों के घर से पैदल क्लब, लाइब्रेरी आदि घूमकर डेरे। क्लब में मूलचंदजी ने ४-५ लोगों से परिचय करा दिया। रामधनजी बाजोरिया से बहुत-सी वार्ता। वहां का कार्य निपटाकर १२। बजे रात में डेरे पर आकर शयन।

२८-६-१४

अंबराई में निवृत्त। सर्दी का जोर होने के कारण डाक्टर प्रधान की औषध ली। आज स्नान व भोजन नहीं किया। डेरे पर ही मिलने आये, उनसे वार्ता। एरणागोती विद्यार्थी से वार्ता। शाम को साग फुलके जीमे। रात में फेरों की जीमणवार में जीमे। जीमणवार ठीक हुई। सगों ने जनेत की खातिरदारी अच्छी की। ११ बजे घर, जाजूजी से वार्ता। सगे आये, उनसे वार्ता। १२ बजे शयन।

२९-६-१४

अंबराई में निवृत्त। अणेवकील आये, उनसे वार्ता। मूलचंदजी के यहां भोजन। जाजजी डाक-टांगे से वर्धा रवाना हुए। अमरचंदजी थोड़ी देर बाद आये। परीक्षा का रिजल्ट इनकी तरफ नहीं हुआ। बहुत उदास हुए, रोने लगे। बहुत देर तक समझाया, हिम्मत दी, उनके पहरे पर प्रतापचंद को बैठाकर गांव में मिलने गये। एरणगोती भाइयों से और मेल-मुलाकातवालों से मिले।

पेंढारकर साहब, जोशी, मुन्सिफ, शिवराम पंत, हैडमास्टर आदि से मिले। सजन गोठ में गये। सजन गोठ की तैयारी की थी। सजन गोठ बहुत ही बढ़िया हुई।

निवृत्त होकर डिप्टी कमिश्नर पनीमसाहब से घनश्यामदासजी की टमटम में बैठकर मिलने गये। वह घर पर नहीं मिले। बाद में अणे वकील से मिले। वह पहले मिलने आये थे, वहां से फिर डिप्टी कमिश्नर के यहां गये। थोड़ी देर बाद साहब आये। मुलाकात हुई। बहुत देर तक वार्ता, स्कूल, बोर्डिंग आदि तथा विद्यार्थियों को विलायत के समान कुछ अच्छे नियम पालने के लिए उन्होंने तरीका बतलाया-समझाया।

वहां से घनश्यामदासजी के यहां। शिवराम पंत हैडमास्टर मिलने आये, वार्ता। प्रधान डाक्टर से वार्ता। घनश्यामदासजी के यहां भोजन, बाद में वर्धावालों को ४ टांगों में रवाना किया। १२॥ बजे के अन्दाज गोकुल छगन के साथ उनके टांगे में रवाना हुए। रास्ते में घोड़े अड़े। बाकी ठीक से गये। ५ बजे धामणगांव बोर्डिंग। पसेंजर से वर्धा।

१-७-१४

मामूली कार्य। भोजन। बाद में जाजूजी से वार्ता। काडक हाईस्कूल के हैड-मास्टर से मिले। छगन वगैरा के लिए संतोषकारक जवाब नहीं मिला। व्यवहार-कार्य बोर्डिंग वगैरा का किया। शिवनारायणजी के साथ नाट्यकला कंपनी का तारा नाटक देखा, ठीक था। दो लड़कों ने अच्छा काम किया। ३॥ बजे रात में घर आये। सर्कल इंसपेक्टर दारू में चूर होकर वहां अजब पोशाक में आया था, दृश्य देखने योग्य था।

हिंगणघाट, वरोरा २-७-१४

बम्बेवाले कप्तानसाहब के यहां हरिभाऊ वकील को ले जा रहे थे। कप्तान-साहब नहीं मिले। घर कलेवा कर हिंगणघाट गये, पोद्दार के यहां। शाम को ४॥ बजे सर कस्तूरचंदजी डागा से मिले। मारवाड़ी शिक्षा मंडल के उद्देश्य, नियम वगैरा सुनाये। बहुत-सी बातें हुई। उन्हें अध्यक्ष होने के लिए कहा। पहले तो इन्कार कर गये, बाद में सोचकर जवाब देने को कहा। जीवराज-जी भी साथ थे। वहां से दुलीचंदजी से वार्ता। बाद में वरोरा रवाना हुए। पूज्य बिरदीचंदजी स्टेशन पर आये थे। उनके साथ उनकी दूकान गये, भोजन

किया। तीन घंटे तक वार्ता, वाद में पैदल ही स्टेशन। बिरदीचंदजी, गोविंद-राम के साथ १ वजे तक वार्ता। गाड़ी रवाना हुई। ४ वजे वर्धा पहुंचे।

वर्धा ३-७-१४

छोटमलजी ओसवाल रायपुरवाले साथ वगीचे गये। वहां से निवृत्त होकर दर्शन कर घर। छोटमलजी को विद्यार्थी-गृह का मकान दिखलाया। इन्होंने प्रसन्नता से १००१ रुपये एकदम व सालाना ५१ रुपये देना स्वीकार किया। वाद में ११ वजे सब मिलकर जीमे। वार्ता। थोड़ा विश्राम। नायडू वकील व कृष्णराव देशमुख आये। बहुत ही आग्रह किया, इससे कचहरी गये। डिप्टी कमिश्नर के बंगले गये और देशमुख के लिए कौंसिल में खड़े होने के लिए अनुमोदन किया। वहां से मोटर में घर आये। कपड़े ठीक करके स्टेशन। मेल से कमिश्नरसाहब आये। उन्होंने सराय का मौका देखा। वाद में घर, शाम को वगीचे जाते ही थे कि इतने में जीवनदासजी जवलपुरवालों ने टांगा बुलाया। वाद में नायडू मोटर लेकर आये। पवनार ले गया। वहां थोड़ी देर तक घूमे, फिर वगीचे। वगीचे से पैदल अमरचंदजी के साथ पोद्दारों के बगीचे। वार्ता, घर पर विद्यार्थियों के भजन, बाद में भोजन।

४-७-१४

जल्दी उठे, निवृत्त होकर पैदल स्टेशन। मेल थोड़ी लेट आई। चीफ कमिश्नरसाहब आये। सराय का नक्शा देखा। कमिश्नर और डिप्टी कमिश्नर से इस विषय में वार्ता की। बाद में नया अस्पताल देखकर बस्ती घूमने गये। फिर स्टेशन। गाड़ी रवाना होने के पहले हार वगैरा उन्हें भली प्रकार पहनाये। आज एकादशी का उपवास किया। नाट्यकला प्रवर्तक नाटक कम्पनी के मालिक माधोराव, गोपालराव आदि मिलने आये। उन्हें मकान-बोर्डिंग दिखलाई, बाद में मास्टर लोग मिलने आये। ४॥ बजे बम्बावाले साहब के यहां नये टांगे में बैठकर गये। बहुत-सी वार्ता। वहां से सिविल स्टेशन बंगले होते हुए बगीचे, वार्ता। वहां कम्पनीवाले और भी लोग आ गये थे। वहां से घर। जाजूजी से बहुत-सी वार्ता। रात में नाटकवालों के आग्रह के कारण संत सखुबाई के दो अंक देखे।

वगीचे निवृत्त हुए। सदाशिवराव के साथ हरिभाऊ वकील के यहां बैठने गये। वहां से छोटी दुकान होकर थोड़ी देर मोतीलाल, वापट, पोद्दार की दूकान होते हुए मंदिर जाकर दर्शन किये। वाद में भोजन। जाजूजी के साथ वातचीत वहुत देर तक की। नाथूसिंह रुपये मांगने आया, उसे 'ना' कहा। जाजूजी के पास गये। वहुत खानगी वर्ताव-संवंधी वार्ता हुई। घर पर आकर वम्वई की तैयारी की।

मिलनेवालों से वातचीत व फलाहार किया। मिस्टर व मिसेस कामा, वम्वेवाले व वैरट दादाभाई आदि से मुलाकात।

पुलगांव में वद्रीनारायणजी वगैरा मिलने आये। धामणगांव में श्रीनारायण वगैरा व सेगांव में जुहारमलजी आये। वर्धा से मनमाड तक वालारामजी भी इसी गाड़ी में थे।

वंवई ६-७-१४

१०॥ वजे गाड़ी वोरीवंदर पहुंची। सूरजमलजी की गाड़ी में वैठकर चौपाटी गये। घर पर स्नान-पूजन व १२ वजे भोजन। वाद में विश्राम व शयन। ३ वजे मर्चेंट वैंक में दानीजी से मिलकर कुलावा गये। वाजार का रंग वहुत ही मंदा दिखा। सवसे मिले, वाद में चौपाटी पैदल गये। दानीजी के साथ घर पहुंचे। दामोदरदासजी राठी अंधेरी से आये थे। उनसे थोड़ी देर वार्ता। वह वापस अंधेरी गये। भोजन, ११ वजे शयन।

७-७-१४

पानी वरस रहा था। वाटरप्रूफ कोट पहनकर घूमने गया। ह्य ुजेस रोड पर मि० कामा वैरिस्टर की लड़की आलमाइटी से मिले। वाद में ग्रांट रोड गोवर्धनदास सेठ के साथ मोटर में उनके मंदिर गये। दर्शन कर ग्रांट रोड से उनकी मोटर में वापस घर आये। भोजन के वाद मर्चेंट वैंक गये। वहां से वल्लभनारायणजी के साथ मि० भडा से मिले। लल्लूभाई सेठ ने पहचान करवा दी। उनसे वातचीत की। वहां से वैंक होकर घर। थोड़ी देर वाद दामोदरदासजी राठी आये। उनसे वातचीत। उन्होंने वीविंग मास्टर व

मैनेजर व्यक्तिगत काम के लिए रखा। उनके साथ भोजन करके ८ बजे बोरीबन्दर गये। दामोदरदासजी से बहुत-सी बातें होती रहीं। वह ९ बजे की मेल से गये। ट्राम से वापस। सैंडहर्स्ट रोड से घर पैदल आया।

८-७-१४

निवृत्त हो घूमने गये। रिज रोड, मलबार हिल, ह्यू जेस रोड होते हुए घर आया। साथ में वल्लभनारायणजी व जयदेव थे। ११ बजे भोजन। बाद में फिर वल्लभनारायणजी वगैरा आये। गाड़ी नहीं आई। उनके चौपाटीवाले घर तक पैदल गये। गाड़ी की राह बहुत देखी। पानी शुरू हुआ। कांटे पर वजन लिया। २२४ रतल हुआ। वहां से घोड़ागाड़ी में बैठकर बैंक गये। बाद में मेहरबानजी के यहां गये। वृद्धिचंद्रजी के बारे में कोई २॥ घंटे तक उनसे बातचीत व सलाह होती रही। वहां से टेलीफोन आफिस गये। बाद में घर वापस आये। भोजन करके चौपाटी घूमने गये। पानी आ गया। माणिकचन्दजी जव्हेरी से मिले। विद्यालय में शामिल होने के सम्बन्ध में उनसे बहुत-सी बातें हुईं। घर आकर सोये।

९-७-१४

सुबह घूमते हुए सीताराम पोद्दार के यहां गये। उनसे वार्ता के बाद रिज रोड होते हुए घर आये। करीब २॥। मील चले। वल्लभनारायणजी, जयदेवजी के साथ भोजन। दौलतरामजी भरतिया, श्रीनिवासजी मिलने आये। श्रीनिवासजी से वृद्धिचंद्रजी के काम के बारे में बातचीत। डाक्टर पोपट आये। कमला को दिखलाया। भाड़े की गाड़ी से किले गये। मेहरबानजी सॉलिसिटर के पास गये। उन्होंने वृद्धिचंद्रजी के कार्य में बहुत सोच-विचार कर सलाह दी। करीब २-२॥ घंटे वहां लगे। मर्चेंट बैंक में गये। वहां से वल्लभनारायणजी के साथ सर्वेंट ऑव इंडिया सोसायटी में गये। मि० देवधर से मिले। वार्ता। घर पर भोजन करके कमला वगैरा के साथ एम्पायर सिनेमा देखने गये। घर पर रात में बालुभाई आये, उनसे बहुत देर तक बातचीत होती रही।

१०-७-१४

सुबह चर्चगेट स्टेशन तक वल्लभनारायणजी व जयदेवजी के साथ पैदल घूमने

गये। चर्चगेट से रेल में ग्रांट रोड आये। वहां से श्राविकाश्रम होकर घर आये। स्नान-भोजन कर विश्राम किया। मूलजी जेठा आफिस में किले गये। शामराव इंजिनियर साथ था। हिंगनघाट के जीन इंजिन-बायलर के सौदे की पक्की बातचीत हुई। वहां से सॉलिसिटर के आफिस वृद्धिचंद्रजी के लिए गये। उन्होंने सलाह वगैरा करके चिट्ठी लिख दी। मर्चेंट बैंक में रजिस्ट्री वगैरा कर दी। दानीजी से वार्ता। डाक्टर पोपट के यहां होते हुए बंगले गये। ९॥ बजे शयन।

११-७-१४

वल्लभनारायणजी के साथ घूमने गया। विद्यालय के चपरासी को पुलिस ने पकड़ लिया। इसलिए वल्लभनारायणजी गिरगांव पुलिस में गये। उनके साथ वहां गये। करीब पौन घंटा वहां रहे। वहां से भूलेश्वर मार्केट साग, तरकारी, फल आदि खुद खरीदकर बंगले आये। भोजन के बाद थोड़ा विश्राम।

डाक्टर पोपट आये। उन्होंने, उंगली पर आटन (यानी कड़ी जगह) हो गई थी, उसका आपरेशन किया। थोड़ा दर्द हुआ। खून निकला। पट्टी वगैरा बांध दी। ३-४ घंटे सोने को कहा।

श्रीनिवासजी जालान आये। उनसे बैंक-संबंधी बातचीत। बाद में दौलतरामजी भरतिया वगैरा आये। उनसे वार्तालाप हुआ। शाम को भोजन के बाद कमला वगैरा के साथ पालवा तक घूमकर एक्सलसियर सिनेमा देखा। अच्छा था। वहां एक स्त्री नायिका बैठी थी। उसके आगे उसका प्रेमी बैठा था। उनका व्यवहार देखने योग्य था।

१२-७-१४

पैर में दर्द था, इसलिए घूमने नहीं गये। भोजन के बाद विश्राम। डाक्टर पोपट आये। दवा वगैरा लगाई। आज 'वसंतप्रभा' और 'सुकन्या सावित्री' का खेल देखा। कमला वगैरा सुकन्या सावित्री में गई थीं।

१३-७-१४

वल्लभनारायणजी कापड़िया से वार्ता। डाक्टर पोपट के यहां पट्टी बदल-

वाने गये।

श्रीमती लेडी हार्डिज की अकाल मृत्यु सुनकर रंज हुआ।

घर पर भोजन किया। पत्र वगैरा लिखकर २।। वजे गोविंदा की गाड़ी से, जो आज से रखी है, किले गये। आज कुलावा वंद था। किले में दानीजी की मोटर में घूमकर गोंडल राज्य के दीवान श्री पटवारीजी से वल्लभनारायणजी के साथ मिले। वार्ता व परस्पर परिचय। वाद में घर आये। भोजन करके चौपाटी व्रजमोहनजी से वातचीत की। विद्यालय आदि के संवंध में वातचीत करने श्रीनिवास जालान आये। उनसे वार्ता। १०।। वजे शयन।

१४-७-१४

चुन्नीलाल कापडिया आया। डायरेक्ट मेथड[1] से थोड़ा समझाया। विल्सन कालेज का वोर्डिंग हाऊस देखा। १४'×६' की एक खोली एक विद्यार्थी के लिए है। मि०नायक से मिले। भोजन के वाद १२।। वजे भूलेश्वर से फल खरीदे। वाद में रामनारायणजी रूइया के यहां गये। १ घंटे तक मिल व विद्यालय-संवंधी वातें। वाद में किले, कुलावा, वंवई समाचार आफिस। ६ वजे वालकेश्वर गये। चौपाटी पर चने, मूंगफली व फल खाये। दानीजी से स्ट्रेंड वैंक-संवंधी वातचीत। उन्होंने खानगी में कीमत कही। घर पर भोजन, शयन।

१५-७-१४

मरीन लाइन तक पैदल घूमने गये। वल्लभनारायणजी मि० कापड़िया साथ थे, पैदल घर तक वापस आये। अंग्रेजी में वातचीत करने का प्रयत्न किया। कामर्स कालेज के नियम सुने। अखवार पढ़ा। भोजन-विश्राम। सूरजमलजी की दूकान पर गहना-जेवर लेकर गये। उनको समझा दिया। वहां से किले, कुलावा होकर चौपाटी घूमते हुए घर आये।

१६-७-१४

घूमकर आये। भोजन के वाद पत्र-व्यवहार व विश्राम।

---

[1] अंग्रेजी पढ़ाने का एक तरीका।

डाक्टर देशमुख का छोटा भानजा और नागूताई जोशी आये। आध घंटा बैठे। वार्ता। फल खिलाये। बाद में किले। कोलावा होकर चौपटी आये, वहां डाक्टर देशमुख के घर गये। डाक्टर के मित्र मि० दयामयराव दाते, डाक्टर, उन के पिता-भ्राता से बहुत देर तक वार्तालाप हुआ। घर आते समय मगनबहन मिली। चौपाटी पर बैठकर बहुत देर तक अध्यापिका वगैरा के संबंध में बातचीत की। ६॥ बजे घर, भोजन, वार्ता, शयन।

१७-७-१४

थोड़ी देर घूमकर दानीजी के बंगले पर बातचीत। जीवनदास के डेरे होते हुए डाक्टर पोपट से दवा ली, क्राफर्ड मार्केट होते हुए कुलावा गये। हाजर की लेवाली नहीं थी। भुसान जापान कंपनीवालों से मिलकर मर्चेंट बैंक में गये। दानीजी, वल्लभनारायणजी वहीं थे। करीब २ घंटे उनसे व्यापार व दुकान-संबंधी बातचीत हुई। कई बातें उन्होंने कहीं, वे जंच गई। कई बातों का खुलासा करना रहा, इसलिए उनके साथ गाड़ी में बैठकर चौपाटी से घर तक उनसे बात करते आये। उनको कहना पड़ा कि दुकान करने में जोखम नहीं। शंका का समाधान हुआ। वल्लभनारायणजी को अपनी दुकान के काम में रखने की आज स्वीकृति दी।

१८-७-१४

सुबह घूमने गये। कापड़िया से सेठ माणकचन्दजी हीराचन्द जैन के गुजर जाने का सुना, फिकर हुआ। जीवनदासजी जबलपुरवालों से मिलने गये। वह नहीं मिले। बाद में मगनबाई के पास बैठने गये। इनके पिताजी की अचानक मृत्यु का हाल सुनकर रंज और आश्चर्य हुआ। उनसे वार्ता करके चौपाटी आये। वहां वल्लभनारायणजी से दुकान-सम्बन्धी बहुत-सी बातों का खुलासा किया। बाद में १२। बजे बोरीबन्दर जीवनदासजी से मिले, बातचीत की। उनके ठाट-बाट अजीब मालूम हुए। कलकत्ता जाने में अन्दाजन १००० रुपये टिकट के लगे। वेंकटलाल इनके साथ था। वहां से दुकान आये। बहुत-से पत्र लिखे। किले मूलजी जेठा आफिस होकर मर्चेंट बैंक गया। दानीजी से व्यापार-सम्बन्धी बहुत-सी खुलासा बातें हुई। वहां से कुलाबा

भुसान आफिस फत्तेचन्दजी साथ। चौपाटी होकर घर। सीताराम पोद्दार आया। यहीं वे तीनों जीमे। जिद में ज्यादा खा गया। रात में केशवदेवजी नेवटिया वगैरा मिलने आये, वातचीत।

१९-७-१४

मामूली घूम आये, भोजन किया। इतने में वल्लभनारायणजी आ गये। बहुत-सी वार्ता। उनके साथ मारवाड़ी हिन्दी लायब्रेरी गये। साधारण सभा थी। वहां करीब २। घंटा लगे। नियम तय हो गये। वहां से महाश्वेता कादम्बरी नाटक देखा। मित्रतावाला दृश्य अच्छा था। घर पर भोजन।

२०-७-१४

सुबह बोरीबन्दर पैदल गये। वल्लभनारायणजी साथ थे। राठीजी आनेवाले थे। ट्रेन २ घंटा लेट थी। वापस दानीजी के बंगले आये। वातचीत होती रही। घर पर आकर बाल बनवाये। तेल-मालिश, भोजन, विश्राम व पत्र-लेखन। बाद में मर्चेंट बैंक में व्यवहार-सम्बन्धी दानीजी से वार्ता। कुलाबा बाजार का रंग मंदा ही था। वहां से डाक्टर के यहां होते हुए विट्ठलवाड़ी राठीजी को देखने गये। वह नहीं मिले, पर घर पर राठीजी पहले पहुंच गये थे। उनको भोजन करवाया। १०।। बजे रात तक उनसे व्यवहार-सम्बन्धी वार्ता।

२१-७-१४

जयदेवजी सहदेव हिसारवाले के साथ समुद्र-स्नान। घर पर भोजन। बाद में पावेल कंपनी होते हुए मारवाड़ी विद्यालय गये। १।।-२ घंटे तक निरीक्षण किया, बाद में सूरजमलजी के साथ उनके इंजिनियर के यहां मकान का प्लान देखा। वर्षा बहुत जोर की थी, वहां से कुलाबा गये। विट्ठलवाड़ी होकर घर आये। राठीजी पहुंच गये थे। भोजन, फल आदि लिये टैक्सी से कुलाबा गये। उन्हें भली प्रकार एक्सप्रेस में रवाना किया। घर आकर १०।। बजे शयन। आज राठीजी से बहुत-सी बातें कीं।

२२-७-१४

सूरजमलजी रूइया आये। उन्होंने विल (मृत्युपत्र) बनाने की इच्छा प्रकट

की। नोट करा लिये। कई वातें उन्हें समझाई। भोजन के वाद जयनारायणजी दानी व वल्लभनारायणजी आये। व्यवहार-सम्वन्धी वार्ता। ३ बजे मर्चेंट वैंक में दानीजी के साथ गये। वार्ता। वहां से ग्वालियर के श्रीनिवासदासजी वावरी से मिलने दानीजी के साथ गये। परिचय व वार्ता। वहां से खेमराजजी के यहां गये। उन्होंने वैठा लिया। कालीप्रसादजी खेतान-सम्वन्धी वातचीत। वहां से मर्चेंट वैंक, वाद में फनसवाड़ी गली में सूरजवाई से मिलकर चौपाटी आया। देवड़ा आये। जीन प्रेस की वार्ता की। वाद में दानीजी के यहां गये। वहां ११ बजे तक रामेश्वरजी विड़ला, सीतारामजी पोद्दार आदि से व्यवहार-सम्वन्धी वातचीत। घर आकर ११॥ वजे शयन।

२३-७-१४

वल्लभनारायणजी वगैरा आये। व्यवहार-सम्वन्धी वातचीत। धर्मशास्त्र पढ़ते थे, इतने में रामनारायणजी रूइया, सूरजमलजी रूइया व्यक्तिगत सलाह के लिए आये। सूरजमलजी को विल लिख दिया। भोजन के वाद श्रीनिवासजी वगैरा आये, थोड़ी वार्ता। सूरजमलजी का मसौदा वरावर तैयार करके उनकी दुकान गये। उन्हें सुनाया। उनके ध्यान में वरावर आ गया। वाद में उनके साथ उनके सॉलिसिटर मट्टुभाई जमियतराम सॉलिसिटर को विल सुनाया, उसने पसन्द किया। गुजराती में करने को कहा। कुलावा कालीप्रसादजी के आगमन की व्यवस्था करके घर आ गये।

२४-७-१४

७॥ बजे पूजन। दूध लेकर सूरजमलजी की मोटर में कालीप्रसादजी खेतान वार-एट-लॉ को लेने गये। वहां जाने पर मालूम हुआ कि जहाज २-३ घंटा लेट है। वहां से वल्लभनारायणजी को घर पहुंचाकर खेतवाड़ी खेमरामजी के पास गये। अखवार में कालीप्रसादजी की खवर देनी थी, पर वह छप चुका था। वहां रा० व० नौरंगरायजी मिले। आज ही वह श्रीरामेश्वरजी से आये थे। उनको घर ले आये, साथ में भली प्रकार भोजन करवाकर फल वगैरा खाये। वाद में दानीजी के यहां गये। वहां से वोट पर गये तो वोट का पता

नहीं था। मर्चेंट बैंक आकर व पानी पीकर वापस डॉक पर आये तो जहाज आने के लिए जो निशान चढ़ाया गया था, वह उतार दिया गया था। बोट आने का समय अनिश्चित समझकर दानाजी को पहुंचाकर मोटर में सूरजमलजी की दूकान पर गये। वहां विश्राम किया। इतने में बोट आने का टेलीफोन आया। मोटर आने में थोड़ी देर हुई। बोट पर पहुंचे। कालीप्रसादजी बोट से नीचे उतर चुके थे। विलायत से आये थे, देखकर खुशी हुई। उन्हें मानपत्र सुनाया। मोटर से उन्हें खेतवाड़ी स्वागत के साथ पहुंचा दिया। सुबह बहुत ज्यादा लोग स्वागत के लिए आये थे, लेकिन बोट के आने में देरी होने से चले गये। शाम को भी बहुत लोग आये थे। बाद में फिर उनके पास गये। रात को १० बजे तक कालीप्रसादजी व नौरंगरायजी को घुमा-फिराकर घर पहुंचा दिया।

२५-७-१४

भोजन करके ११॥ बजे नौरंगरायजी व कालीप्रसादजी के पास गये। प्रायश्चित्त का निश्चय करवाया। उनके साथ ५-७ जगह मिलने जाना था। परन्तु श्रीनिवासजी गोविन्दराम घनश्यामदासवाले, ताराचंद रामगोपालजी वगैरा वहां मिलने आ गये, बाद में कालीप्रसादजी को साथ लेकर घूमने गये। रामेश्वरजी बिड़ला भी साथ थे।

मर्चेंट बैंक में दानाजी से बहुत-सी वार्ता। बाद में पवन-चक्की होकर घर आये। १॥ घंटा तक वार्ता। फल वगैरा खाकर खेतवाड़ी गये। नौरंगरायजी से वार्ता। प्रायश्चित्त की बात उनके गले उतर गई। खेमराजजी को बुलवाया उनके दिल का पता नहीं लगा। बहुत समझाया, पर आखिर उनकी मर्जी पर छोड़ दिया जाय तो शायद ८-१० रोज में विचार हो जाय। ज़रा गुस्से में कड़क बात कही। फिर कुछ नहीं बोले। समझ गये। वल्लभनारायणजी भी वहां थे। वहां से घर आये, भोजन करके शयन।

२६-७-१४

९ बजे बाणगंगा गये। वहां कालीप्रसादजी विलायत जाकर आये थे, उसका पण्डितों द्वारा शास्त्रोक्त विधि से प्रायश्चित्त ३॥ बजे तक हुआ। वहीं रहे।

वहीं स्नान किया। कालीप्रसादजी तथा एक पण्डित के साथ सीताराम पोद्दार के यहां आनन्द से भोजन। वाद में कालीप्रसादजी को 'अनसूया' नाटक दिखाने ले गये। ठीक था। वहां से रामेश्वरजी के साथ घूमते हुए खेतवाड़ी। रा० व० नौरंगरायजी से एक घण्टा वातचीत। घर पर आये। भोजन किया।

२७-७-१४

दानीजी के यहां वालासाहव सरदार, जो कोल्हापुर से आये थे, उनसे परिचय हुआ। वाद में गोपालदासजी (अकोला मिलवाले) आये। उनसे अकोला मिल-सम्बन्धी वार्ता। भोजन के वाद कालवादेवी गये। पत्र वगैरा लिखे। इतने में रा० व० नौरंगरायजी व कालीप्रसादजी आ गये, उनके साथ ५-६ जगह गये। गोविन्दरामजी मुनीम से कालीप्रसादजी के मानपत्र के विषय में वातचीत की। उन्होंने वहुत खुशी प्रकट की और जोर देकर कहा कि यह काम जरूर हो जाना चाहिए। वाद में कुलावा जाकर रामनारायणजी वगैरा से वार्ता। सव लोगों ने उत्साह से वात की। रामनारायणजी वगैरा ने खुशी के साथ इच्छा प्रकट की। वहां से प्रार्थना-समाज गया। साइन्स पर शिरीनवाई एम० ए० का व्याख्यान हुआ। विल्सन कालेज के प्रिन्सिपल से परिचय हुआ। कालीप्रसादजी के साथ घर पर भोजन। विलायत की कई वातें वताईं। वल्लभनारायणजी, रामेश्वरजी, फत्तेचन्दजी आये। वहुत देर तक वार्ता। वर्षा वहुत जोर की थी। वावुलनाथ की झांकी के अद्भुत दर्शन किये। ११।। वजे शयन।

२९-७-१४

पत्र-व्यवहार। कल अपने यहां नौरंगरायजी साहव के सन्मानार्थ भोजन का निश्चय किया। न्यौते मांडे। सामान की तजवीज की। भोजन के वाद नौरंगरायजी साहव से मिलकर न्यौते रूवरू व टेलिफोन से किले, कुलावा में दिये। वहुत-से मित्र कालीप्रसादजी वगैरा तो नरसिंगदास जोधराज के यहां जीमने गये।

३०-७-१४

जीमने की व्यवस्था की। नौरंगरायजी साहव को व खेमराजजी को स्वतः जाकर निमन्त्रण दिया। ११॥ वजे घर से निकलकर पूज्य रामगोपालजी से मिले, उनसे वार्ता। भोजन के लिए कहा। कवूल किया। वाद में मोतीलालजी नेवटिया से मिले। उन्होंने भी कवूल किया।

नाथूरामजी की वाड़ी में कालीप्रसादजी की तरफ से जो ब्रह्मभोज था, वहां गये। वहुत-से पंच जमा थे। ब्रह्मभोज में कार्य आनन्द से हो रहा था। मानपत्र का वहां निश्चय हो गया था।

सूरजमलजी रामनारायणजी से मिलकर फिर कुछ सौदा लेकर घर आये। कालीप्रसादजी साथ में थे। उनकी माताजी भी आ गईं। अमृतलालजी से थोड़ा वाद-विवाद हो गया। घर पर भोजन का प्रवंध किया। जिन्हें न्यौते दिये थे, वे सव आ गये। ६॥ वजे पंगत वहुत आनन्द से हुई। सीताराम पोद्दार, रामेश्वरजी ने वहुत मदद की। करीव ७२ लोग जीमे।

३१-७-१४

दानीजी के यहां गये। अकोला मिल-सम्वन्धी वार्ता। भोजन करके रा०ब० नौरंगरायजी के पास गये। सोमवार को चलने का निश्चय किया। नौरंगरायजी डालमिया के यहां मिलनी देने गये। वाद में व्यवहार-कार्य। किले, कुलावा आदि सव जगह मिल लिये। मानपत्र की कार्यवाही की।

१-८-१४

डाक्टरनी के यहां गये। उससे वातचीत। वापस आने पर कालीप्रसादजी व अमरचन्दजी पुंगलिया आये। भोजन के वाद रामनारायणजी के वंगले गये। उनके यहां वंगले की वास्तुपूजा थी। मिले। वहां से मोटर में घर आकर जलपान किया। किले आये और कालीप्रसादजी का ग्रिन्डले कम्पनी से हिसाव तय किया। भुसान आफिस में काम की वातचीत की। मर्चेंट वैंक में गये। वहां से डाक्टरनी के यहां साथ गये। कमला वगैरा को दिखलाया। दवा ली। वहां से किले जाकर कमला के लिए खिलौने वगैरा लिये। कुलावा में रुई का रंग शोचनीय था। मानपत्र के लिए खटपट की। रघुनाथभाई के

साथ बंगले गये। शिवदयालजी देवड़ा व ब्रजमोहनजी से मानपत्र व जीन प्रेस-सम्बन्धी वार्ता। बाद में पंसारी आये, उनसे मानपत्र की वार्ता। मसविदा बनाने का निश्चय हुआ। रामेश्वरजी के यहां से वापस आये तो मसविदा एकदम देवड़ा ले गये। आश्चर्य हुआ।

आज दो स्थानों के निमन्त्रण मिले। रेल से नहीं जा सके।

बम्बई २-८-१४

खेमराजजी, गुलाबचन्दजी ढड्ढा, वल्लभनारायणजी दानी घर पर आये, मानपत्र की कार्यवाही का निश्चय हुआ। रामेश्वरजी बिड़ला भी आये। दानीजी के यहां भोजन। स्टैंडर्ड बैंकवाले वहां आये। उनकी बात सुनी। बाद में मानपत्र की कार्यवाही, ७ बजे हुई। पंचायती से व पुस्तकालय से रा० ब० नौरंगरायजी व कालीप्रसादजी को बड़े ही समारोह के साथ सब पंचों ने हार्दिक सहानुभूति के साथ मानपत्र दिये। पुस्तकालय की तरफ से अध्यक्ष का काम करना पड़ा। बाद में पुस्तकालय में व्याख्यान वगैरा हुए। रामनारायणजी भी आ गये। बड़े ही आनन्द के साथ कार्य समाप्त हो गया। फिकर मिटा। कार्यवाही में सफलता मिली। रात में कालीप्रसादजी के घर पर भोजन और वार्ता। सब मित्र आये, किलेवाले गोयनकाजी भी आये थे। १२ बजे तक कार्यक्रम रहा।

रेल में ३-८-१४

रामेश्वरजी बिड़ला, खेमराजजी, मगनबाई, दानीजी आदि से मिलकर १२॥ बजे स्टेशन आये। रामनारायणजी, सूरजमलजी, गोविंदरामजी आदि बहुत-से प्रतिष्ठित सज्जन भी पधारे थे। रा० ब० नौरंगरायजी व कालीप्रसादजी भी आ गये। सभीको फर्स्ट क्लास में बैठाया, बाकी तीनों सेकण्ड क्लास में आनंद से बैठे। वहां से विदा हुए। हार-फूल पहनाये। रास्ते में विलायत की कई तरह की चर्चा हुई।

छिंदवाड़ा के मथुराप्रसादजी मिल गये, उनसे वार्ता। फल लिये। भुसावल में शयन।

वर्धा ४-८-१४

धामणगांव में श्रीनारायण आया। पुलगांव में वंशीलाल आया। वर्धा समय पर पहुंचे। रायवहादुर नौरंगरायजी व कालीप्रसादजी के साथ वगीचे में गये। वोर्डिंग वताई। भोजन, विश्राम और वार्तालाप। जीवराजजी आदि मिलने आये। शाम को वोर्डिंग में कसरत, मलखम, कुश्ती, रामरक्षा पाठ आदि दिखलाये। वाद में २५-३० मंडली-सहित सप्रेम भोजन व वार्ता। रात में मंदिर में विद्यार्थियों के भजन १०। तक। वाद में विद्यार्थियों के व कालीप्रसादजी के व्याख्यान। १२ वजे रात में शयन।

५-८-१४

रायवहादुर नौरंगरायजी व कालीप्रसादजी खेतान से वार्तालाप। भोजन करके ११ की गाड़ी से इन्हें अमरावती विदा किया। श्रावणीकर्म कर २।। वजे भोजन किया। जाजूजी से वार्ता। पूज्य जीवराजजी से बहुत-सी वात-चीत। पोद्दार के यहां रक्षा वांधी। रात में मंदिर गये। १०।। वजे शयन।

६-८-१४

नित्यकार्य, जीवराजजी, श्रीधरजी, वंशीधरजी हरलालका, जाजूजी आदि से वार्ता। टुनिया की माजी को दिलासा दिया। वंवावाले साहव के यहां गये। करीव दो घंटा वार्तालाप। शाम को वगीचे। यवतमाल से रामधनजी वाजोरिया आये। रात में वंवावाला साहव मंदिर दर्शन करने आये, उनसे व्यवहार की वार्ता। ११।। वजे शयन।

७-८-१४

वोर्डिंग की भली प्रकार देखभाल की। वंवावाले के यहां गये। वहां से आकर वाल वनवाये। पंडित भागीरथजी मिले। भोजन के वाद कचहरी जाकर जयनारायणजी सा० से मिले। सराय-संवंधी वार्ता। वगीचे घूमकर स्टेशन गये। नानी से वार्ता। शाम को खरेसाहव वकील से मिले। पुल-गांव मिल-संवंधी वातचीत।

आज ज़रा तबीयत अस्वस्थ मालूम हुई, इसलिए ज़रा देर सो गये। हीरालालजी ओसवाल एकाएक बीमार हो गये, यह सुना तो वहां गये। बीमारी तो ज्यादा थी, बाकी इलाज मारुतिराव डाक्टर ने ठीक किया। रात में ११। बजे वहां से आकर शयन।

८-८-१४

हीरालालजी ओसवाल के यहां गये। उनके पास करीब १। घंटा बैठे। तबीयत ठीक मालूम हुई।

घर पर नित्य व व्यवहार-कार्य। चुन्नीलालजी हिंगनघाट से आये। हिंगणघाट जीन बेचने-संबंधी खुलासा। बातचीत होकर निश्चय हुआ कि कम-अधिक में नक्की कर डालना। गांधर्व विद्यालय नागपुरवाले आये, उनसे वार्ता।

९-८-१४

सुबह पैदल घूमने गये। धर्मदास विद्यार्थी साथ था। अमरचंदजी नागपुर गये। दोपहर को घर पर व्यवहार-कार्य व व्यवसाय संबंधी-विचार। शाम को स्टेशन गये। कालीप्रसादजी धामणगांव से आ गये, घर पर भोजन वार्ता। फ्रेजरसाहब को पत्र। खरे सा० के यहां कालीप्रसादजी को ले गये। वहां १०॥ बजे तक रा० ब० खरे, अत्रे आदि से वार्तालाप। रात में ११ बजे शयन।

१०-८-१४

कालीप्रसादजी आज जानेवाले थे, परंतु बालप्रबोधिनी सभा के सभासदों के आग्रह से ठहर गये। पोनार तक टांगे में घूमने गये। उन्हें नदी वगैरा दिखलाई। नदी-किनारे से वर्धा की सरहद देखी। वहां से आकर भोजन के बाद थोड़ा विश्राम। कालीप्रसादजी को मानपत्र देने का निश्चय हुआ। उसका प्रबंध किया। शाम को उन्हें जाति-भाइयों के यहां ले गये। बंबावाले से मिलाया। रात को ९ बजे से अभिनन्दन-पत्र का कार्य शुरू हुआ। विद्यार्थी-गृह में बड़े ही समारोह के साथ मानपत्र दिया। समारोह में बहुत-से मारवाड़ी आ गये थे। वकील वगैरा की मंडली थी। ११ बजे तक कार्यक्रम

चला। कार्यक्रम बहुत ही ठीक से हुआ। ११॥ बजे रात में शयन।

११-८-१४

सुबह मेल ट्रेन से कालीप्रसादजी बैरिस्टर चांडिल के लिए रवाना हुए। टांगे में घूम-फिरकर आये। सुस्ती मालूम हुई। सो गये। भोजन के बाद थोड़ी देर फिर शयन। शाम को पोद्दारों के बगीचे गये।

१२-८-१४

गंगाबिसन के साथ घूमने गये, बैरिस्टर जाल ने बुलाया। उससे थोड़ी देर वार्ता। गंगाबिसन को समझाया। घर पर बाल बनवाये। बंशीधरजी हरलालका आया। जमा-खर्च करवाया। बाद में पत्र-व्यवहार किया। रुक्मानंदजी आये। उनसे बातचीत। बगीचे में मकई के भुट्टे खाये। राधाकिसन नंदा अहीर के साथ देश गया। उसको पहुंचाया। भोजन किया, अखबार पढ़े। चिरजीलालजी से वार्ता। ६॥ बजे शयन।

१३-८-१४

सबेरे चंदूलाल विद्यार्थी के साथ घूमने गये। पोद्दार के यहां टुनिया की मांजी से मिले। घर डाक्टर बापट व वारट आये। श्यामराव इंजिनियर के लड़कों को, डालूराम को, कमला को व चार-पांच विद्यार्थियों को बताया। भोजन करके कचहरी बार-रूम गये। वहां चर्चा।

आज वजन लिया। २॥ मन ५॥ सेर।

१४-८-१४

नेमीचंद विद्यार्थी के साथ घूमने गये। उसने गलती कबूल की। किंतु खुलासा नहीं बतलाया। रास्ते में जयनारायण सा० से मिले। बहुत देरतक, बहुत-सी बातें होती रहीं। वहां से रामनारायणजी से मिलकर घर आये। एडवर्ड मेमोरियल की मीटिंग में गये। वहां से घर आकर स्नान-भोजन किया। दोपहर को फल वगैरा खाये। शाम को भोजन नहीं किया। बोर्डिंग में ताश खेले। रात में १२॥ बजे तक मंदिर में थे, गोकुलाष्टमी का उत्सव हुआ। १२॥ बजे रात को पूड़ी वगैरा का भोजन करके शयन।

१५-८-१४

वोरगांव के तरफ जयनारायण सा० के साथ घूमने गये। प्लेग्राउंड की ज़मीन देखी।

यूरोप की लड़ाई के कारण बंबई के रुई बाजार पर खराव परिणाम हुआ। चित्त में थोड़ा विचार रहा। शाम को पोद्दारों के बगीचे गये। रात में चित्त ठीक नहीं मालूम हुआ। अकोलेवाले मिलने आये। शिवनारायणजी के साथ 'पिंगला' नाटक देखने गये। नाटक ठीक हुआ। ४ बजे रात को घर जाकर शयन।

१६-८-१४

८ बजे उठे। मुंह-हाथ धोकर स्नान किया। पत्र पढ़े। भोजन कर शयन। १॥ बजे उठे। पसीने में जल पिया गया। बाद में लघुशंका करने छत पर गये। लघुशंका करके उठे, कुल्ला किया कि वहुत जोर का चक्कर आया व बेभान होकर गिर गया। १॥ मिनिट मूर्छा रही। थोड़ी चोट भी आई। पत्नी वगैरा घबरा गई। नीचे से लोग एकदम आये। सुधि आई। लोगों को नीचे भेज दिया। बापट डाक्टर को बुलाया, उसने आकर देखा। 'हार्ट' कमजोर बतलाया। दवाई वगैरा दी। तबीयत ठीक मालूम हुई। शाम को नीचे आये, आज कुछ नहीं खाया। चित्त में अक्सर विचार आते रहने से चक्कर आया होगा, ऐसा लगा।

१७-८-१४

तबीयत साधारण ठीक थी। बंशीधरजी पुलगांव से आये, उनसे वार्ता। हिसाब वगैरा देखा। भोजन के बाद विश्राम और उनसे वार्ता। शाम को थोड़ा खाकर नीचे बैठे। ९ बजे शयन। रात में पीठ के दोनों तरफ की नसों में दर्द रहा, रात में नींद ठीक नहीं आई।

१८-८-१४

मुंह-हाथ धोया। डाक्टर बापट आया। उसे कहा कि रात में दर्द रहा। उसने पेन किलर लगाकर सेंक करने को कहा। सेंक कर स्नान किया। थोड़ा भोजन किया। १०१ डिग्री बुखार था। शाम को पसीना आकर बुखार उतर गया। कपड़े पहनकर नीचे ९ बजे तक बैठा रहा। बाद में

शयन।

तेल लगाने, वाल वनाने, गर्म पानी से नहाने के लिए डाक्टर ने कहा। रात में ठीक से नींद नहीं आई। खुजली चलती रही।

१६-८-१४

निवृत्त होकर बाल वनवाये व तेल-मालिश करवाई। गोपालरावजी देश-मुख आये, उनसे व्यवहार-संवंधी वातचीत। नीम के पत्ते उवालकर सिकाई वगैरा से स्नान किया, इससे थोड़ा अच्छा मालूम हुआ। भोजन ऊपर ही किया, थोड़ा विश्राम किया। १। बजे उठे। शरीर भारी मालूम हुआ। दूकान पर आये, १५-२० मिनट तक वातें कीं। वाद में शरीर में दर्द होने लगा, ऊपर गये। देखा तो बुखार १०३ डिग्री तक आया। सो गये। जाजूजी आदि आये। उनसे वार्ता। डा० बापट आया, दवा दी, पर रातभर बुखार उतरा नहीं। रात को हीरालालजी, वालूजी वगैरा आये थे। नींद ठीक नहीं आई।

२०-८-१४

सुवह बुखार नहीं था। वापट ने भी देखा। १० वजे अंदाज फिर जोर देकर बुखार आया। सिविल सर्जन आये। बापट भी आये, बुखार देखा तो १०४ डिग्री था। सिर में बड़ा दर्द था। उन्होंने दवा बताई, सिर पर कोलन वाटर की पट्टी रखने को कहा। वैसा ही किया। ५ बजे बुखार कम पड़ा, १०२ डिग्री रहा, रात में भी १०२ डिग्री ही रहा। नींद ठीक नहीं आई।

२१-८-१४

सुबह बुखार नहीं था। डाक्टर बापट आये। बाद में सिविल सर्जन खुद ही देखने आये। अत्रे, जाजूजी वग़ैरा बैठे थे। डा० बापट भी १॥ घंटा करीब बैठे रहे। दवाई दी। आज ज़रा तबीयत ठीक मालूम होती थी। सुस्ती वहुत हो गई। थोड़ा साबूदाने के सिवा कुछ भी नहीं खाया। मिलने-भेंटने-वाले आये। रात में साधारण निद्रा।

२२-८-१४

बाहर तो बुखार नहीं था। कमजोरी थी। डाक्टर ने कहा कि अन्दर बुखार

ई। दवा दी, आज थोड़ी-सी खिचड़ी व मुंगोड़ी खाई। ठीक लगी। तबीयत साधारण रही, दोपहर को गिगाजी, मिश्रजी वगैरा बहुत लोग आये थे। उनसे वार्ता। पत्र आदि लिखे। शाम को भी थोड़ी खिचड़ी ली। रात में नींद आ गई। आज लड़कों का पोला हुआ। कमला को आज बुखार आ गया, जिससे चित्त में चिंता रही।

२३-८-१४

हाथ-मुंह धोया। अत्रे, तानबा जवड़े वकील आये। उनसे बहुत-सी वार्ता। उनसे वर्धा में एक सार्वजनिक सभा कर लड़ाई के लिए सहानुभूति प्रकट करने के लिए कहा। उन्होंने कबूल किया। दत्तूजी, बंशीधरजी हरलालका आये। उनसे वार्ता। इतने में रा० ब० बम्बावाले कप्तानसाहब मिलने आये। वह करीब एक घंटा बैठे। उनसे तबीयत-सम्बन्धी व लड़ाई-सम्बन्धी बहुत-सी बातें हुईं। बाद में १०॥ बजे खाकर थोड़ा विश्राम किया।

२४-८-१४

तबीयत ठीक थी। पर कमजोरी थी। मुंह-हाथ धोकर १०॥ बजे थोड़ा भोजन किया। बाद में ११ बजे स्कूल खाते के डायरेक्टर व इन्स्पेक्टर मारवाड़ी विद्यालय में आनेवाले थे, इसलिए वहां गया। वे लोग आये। वहां से १२। बजे वापस। डायरेक्टर सादा व अच्छा मालूम होता था। पांचवें क्लास की परवानगी देना मंजूर किया। विश्राम, ३॥ बजे पत्र आदि लिखे। शाम को बोर्डिंग में गये। बाद में जल्दी ही शयन।

२५-८-१४

तबीयत सामान्य ठीक थी। स्नान, भोजन व विश्राम। १२॥ तक व्यवहार-कार्य। शाम को मन्दिर, बोर्डिंग। गणपति के दर्शन करके भोजन किया। बाद में व्यवहार-सम्बन्धी वार्ता। १० बजे रात को शयन।

२६-८-१४

नित्य कार्य। भोजन के बाद विश्राम। ११॥ बजे तक व्यवहार-कार्य पत्र या बिल वगैरा लिखकर जाजूजी को दिया।

२७-८-१४

सुना कि बम्बावाले साहब की बदली हो गई। उनसे मिले। बातचीत हुई। इतवार को अपने यहां भोजन का आमन्त्रण दिया।

२९-८-१४

विल (मृत्युपत्र) फिर से ठीक से लिखकर तिजोरी में रखा। तीन घण्टे लिखने में लगे।

व्यवहार-कार्य। रुस्तमजी पारसी हिंगनघाट से मिलने आया। गांठों का भाव वगैरा पूछा।

मेल से हैलेट साहब डिप्टी इन्स्पेक्टर जनरल आनेवाले थे, इसलिए स्टेशन गया। वह आये। इनसे बातें हुई। उन्होंने लड़ाई के एक महीने में खतम होने की बात कही। बगीचे में पत्ते आदि खेले, घर पर भोजन, व्यवहार-वार्ता, बोर्डिंग में गये।

३०-८-१४

व्यवहार-कार्य, बम्बावाले साहब को शाम को भोजन को बुलाया था। प्रबन्ध किया। टाऊन हॉल में श्रीयुत खापर्डे (अमरावतीवालों) का व्याख्यान सुना। ठीक मालूम हुआ। जल्दी ही घर आये। बम्बावाले, सिविल सर्जन, रा० ब० खरे आदि आमन्त्रित सज्जन आये। ८ से १०॥ तक भोजन, पान, सुपारी आदि कार्य आनन्द से हुआ। ११॥ बजे शयन।

३१-८-१४

लोथेसाहब का आदमी बुलाने आया। उनसे मिले। बहुत-सी लड़ाई-सम्बन्धी वार्ता। पूज्य जीवराजजी से मिले।

आज जलझुलनी ग्यारस थी। ठाकुरजी के विमान के साथ ४॥ से ७ तक जुलूस में रहे, जुलूस अच्छा रहा। रात को भोजन नहीं किया। आज हथरसी ब्रिजवालों का रास मन्दिर में था। भीड़ अधिक होने के कारण हरिचन्द्र-लीला दुकान के सामने आंगन में हुई। पूज्य जीवराजजी भी देखने आये थे। रात में २-३ घण्टा निद्रा हुई।

१-९-१४

बंशीधरजी हरलालका से वार्ता। भोजन करके १२ वजे तक शयन। वम्वई जाने की तैयारी। गामडिया के मैनेजर से जाइंट-सम्वन्धी वार्ता। जाजूजी से बिक्रीपत्र की वार्ता। वल्लभदासजी जवलपुरवालों के गुमास्ते मिलने आये। उनसे वार्ता। बगीचे गये। रात में पुलगांववाले वंशीलाल से वार्ता। दुकान का कार्य-प्रवन्ध वतलाया। १० वजे शयन।

रेल में २-९-१४

वम्बई की तैयारी, कागज-पत्र जंचाये। पीछे से करने का कामकाज समझाया। हीरालालजी केशव की माजी आदि से मिले। ३॥ वजे आनंदपूर्वक भोजन किया। प्रेम-पूजन-सहित ऊपर से विदा होकर नीचे आये। पूज्य राम-गोपालजी से मिलकर स्टेशन। उन्होंने आनंद से वातचीत की। गाड़ी थोड़ी लेट आई। वम्बावाले कप्तानसाहव से स्टेशन पर भली प्रकार मिले। आनन्द से रवाना हुए। पुलगांव पर दुकानवाले मिलने आये। उनसे वात-चीत हुई। धामणगांव पर मोटे नारायणराव साहव गाडगिल मिले। उनसे वार्ता। अकोला दौलतरामजी भरतिया मिलने आये। साथ में जल-पान भी लाये थे। भुसावल में अकेले डिव्वे में रह गये, जिससे कुछ चिंता रही। मनमाड़ में दूसरे डिव्वे में जाकर सोये। कसारा पर उठे।

बंबई ३-९-१४

९॥ वजे वोरीवन्दर पहुंचे। वल्लभनारायणजी दानी लेने आये थे। उनके साथ वंगले गये। निवृत्त होकर भोजन किया और ११॥ वजे दूकान गये। सूरजमलजी के यहां गये। उनके मुनीम नागरमलजी से वार्ता की। उन्होंने रामनारायणजी से मिलकर जवाव देने को कहा। वहां से फिर भुसान आफिस, कुलावे आदि गये। चित्त में विचार रहा। शाम को कुलावा आकर चौपाटी पर गणपति-विसर्जन-उत्सव भली प्रकार देखा। वंगले आये, भोजन करके १० वजे शयन।

४-९-१४

निवृत्त होकर घूमने गये। रामेश्वरजी बिड़ला आते हुए मिले। उन्हें लेकर

मगनबाई के यहां गये। वहां बहुत-सी बातें हुईं। वहां से रामेश्वरजी के यहां गये। वहींपर भोजन किया। थोड़ी देर वार्ता कर बंगले जल वगैरा लिया व दुकान गये। नागरमलजी से थोड़ी वार्ता। वहां से भुसान आफिस व मर्चेंट बैंक आदि होकर त्रिपाठी के यहां से पुस्तकें लेकर बंगले आये। मुरलीधरजी सिंघानिया कानपुरवाले आये। अपने यहां उतरे। उनसे वार्तालाप। दानीजी आदि से मिलकर ९॥ बजे तक बातचीत। बाद में ग्रहण समाप्त होने पर स्नान करके भोजन किया। थोड़ी देर वार्ता, ११॥ बजे शयन। आज भी चित्त में थोड़ा विचार रहा।

५-९-१४

अखबार पढ़े व बाल बनवाये। १०॥ बजे मुरलीधरजी के साथ भोजन किया। बाद में दुकान गये। वहां से रामनारायणजी से मिलने गये। व्यवहार-संबंधी व रुई के संबंध में उनसे भली प्रकार एकान्त में बातचीत की। उनकी बात ठीक लगी। रात को मिलने को कहा। भुसान-आफिस व मर्चेंट बैंक आदि होते हुए कुलाबा गये। आज ज़रा लेवाली ठीक थी। ८१ गांठें अपनी २७५ में बिकीं। वहां से मगनबहन से मिलने गये। बहुत देर तक बातचीत करके बंगले आये। आज करीब दो हजार नेपाली पलटन यूरोप जाने के लिए आई, उसे देखा। रात में भोजन करके रामनारायणजी के यहां गये। थोड़ी देर बाद उनसे वार्ता हुई। उनको आज कुछ सख्त बातें भली प्रकार सुनाईं। उन्होंने बहुत ही सहानुभूति बतलाई। रुपये ५० हजार ले जाओ, तुम्हारी मर्जी आये तब देने को कहा। मैंने कहा, अभी जरूरत नहीं। १२॥ बजे तक बहुत-सी बातें हुईं। उनसे बातचीत होने पर चित्त को शांति मिली।

६-९-१४

निवृत्त होकर मुरलीधरजी सिंघानिया को साथ लेकर जापान काटन के बंगले होते हुए ज़ापान जीमखाने गये। वहां उन्होंने सबसे मिलाया। खेल-कूद देखी। वहां से क्राफर्ड मार्केट होकर दुकान होते हुए डेरे पहुंचे। गुलाबचंदजी ढड्ढा व मारवाड़ी विद्यालय के हैडमास्टर आये। विद्यालय-संबंधी बहुत-सी बातचीत। सबने साथ मिलकर भोजन किया। फिर वार्ता, बाद

में विश्राम। २॥ बजे उठे। फल वगैरा खाकर 'बुद्धदेव' नाटक देखने गये। नाटक अच्छा उपदेशप्रद था। वहां से दुकान होते हुए बंगले जाकर भोजन किया। थोड़ी देर दानीजी से वार्ता, बाद में 'आंख की किरकिरी' पढ़ते रहे। १०॥-११ बजे शयन।

८-६-१४

भोजन, विश्राम करके १२॥ बजे दुकान पर गये। पत्र आये हुए थे, उनके जवाब दिये। रामनारायणजी की माजी का ब्रह्मकाज था। वहां एक घंटा करीब ठहरकर किले व कुलाबा होते हुए वालकेश्वर गये। वहां भोजन, वार्ता व पुस्तक पढ़ी। १०॥ बजे रात में शयन।

६-६-१४

भोजन के बाद विश्राम करके कालबादेवी दुकान पर आये। पत्र पढ़े, जवाब दिया। माधोबाग होकर किले भगवानदास से मिले। भुसान आफिस में कानुसाहब को हार पहनाया। उसकी आफिस के लोगों ने तारीफ की, वह सुनी। बड़ा साहब मि० मोरआका, इंग्लिश ठीक बोलता मालूम हुआ। वहां से कुलाबा गये व मर्चेंट बैंक से दानीजी को साथ लेकर माधोबाग, रामनारायणजी नंदलालजी, जमनजी से वार्ता। बाद में रामनारायणजी से वार्ता। हेडकोरे-संबंधी कई बातें खूब सुनाईं। ६॥ बजे रामनारायणजी के साथ में भोजन। १०॥ बजे वहां से वल्लभनारायणजी के साथ गिरगांव तक पैदल आया। बंगले गाड़ी में आया। १०॥ बजे शयन।

१०-६-१४

मोटर में बैठकर कानुसाहब को पहुंचाने स्टीमर गया। वार्ता। अखबार पढ़कर भोजन, विश्राम। बाद में अंदाज ११। बजे कालबादेवी होते मर्चेंट बैंक गये। वहां से भगवानदास को लेकर मेहरबानजी के यहां जाना। कल लिखा-पढ़ी कराने का निश्चय हुआ। वहां से भुसान आफिस आकर स्कोडा से बहुत-सी वार्ता। शरीर ठीक नहीं मालूम हुआ। वहां से दुकान पर आये। पत्रों का जवाब दिया। वालकेश्वर जाना चाहते थे, इतने में कुलाबा से टेलीफोन आया। जापानवालों ने वर्धा की गांठें खरीदने की इच्छा बताई।

तबीयत ज़रा ठीक नहीं थी तो भी कुलावा गये। कुसुमाटो से वातचीत की। २६८ गांठें १७५ रुपये में दीं। ज्यादा बिकतीं, परंतु मिचलवालों ने वरोरा की गांठें १७० रुपये में वेच दीं। ठीक नहीं किया। वाद में माधोवाग रामनारायणजी से मिले। थोड़ी देर तक वातचीत। उन्हें कहा कि शरीर ठीक नहीं है, इसलिए आज भोजन नहीं करूंगा। केशवदेवजी नेवटिया मिलने आये। १२। वजे शयन।

कानुसाहब को पहुंचाने वोट पर ओरिएंटल में गये। वहां बहुत से जापानी लोग आये थे। उनसे परिचय व वार्ता। सिक्खों की पलटन भी इसी वोट से गई।

११-६-१४

चौपाटी घूमकर स्नान किया। चिट्ठी लिखी व पुस्तक पढ़ी। भोजन व थोड़ा विश्राम। दुकान पर चिट्ठियां पढ़ीं, जवाव दिये। व्रजमोहनजी की दुकान पर गये। इंडिया इंजीनियरिंग कंपनी का हिसाव उतरवाया। वहां से भगवानदास के आफिस करीव एक घंटा ठहरे। वह नहीं आया। मेहरवानजी के आफिस में पौन घंटा ठहरे। फिर भी वह नहीं आया। वालुभाई साथ था। वल्लभनारायणजी वहां आये। उनके साथ मर्चेंट वैंक होते वालकेश्वर। डालूराम को कमल का पत्र दिया। कपड़े पहनकर घूमने गये। वल्लभनारायणजी साथ थे। चौपाटी पर हुकुमचंदजी, रायचंदजी वोहरा व रामेश्वरजी आदि से मिले। वापस वंगले आते समय एक मुसलमान गृहस्थ का गुप्त रहस्य वल्लभनारायणजी ने वतलाया। चौपाटी पर दो मारवाड़ियों की गुप्त वातें वल्लभनारायणजी से सुनीं। वंगले के पास एक वूढ़ा पारसी लकवे के कारण व शराव पीने के कारण गिरा था। पारसियों में भी ऐसा होता है, यह देखने का पहला मौका था।

कल पूज्य वच्छराजजी का श्राद्ध है।

१२-६-१४

सीताराम पोद्दार से व दौलतरामजी से मिलने गये। वहुत देर तक वैंक के मामले में वातचीत व सलाह की। उनकी इच्छा कम मालूम हुई। इन

लोगों ने कुछ भी प्रयत्न नहीं किया।

पूज्य दादाजी का वार्षिक श्राद्ध था, स्नान-ध्यान कर उनकी अच्छी आदतों का भली प्रकार स्मरण किया। पंडित माधोप्रसादजी व औरों को बुलाया और तर्पण किया। १॥ वजे भोजन किया। कुछ पढ़कर थोड़ा विश्राम। श्रीनिवासजी को बुलवाया। वैंक-संबंधी बहुत-सी वातचीत। ४॥ वजे के करीव वस्ती में रामनारायणजी से मिले। उनसे रुई-बाजार-संबंधी वार्ता। सीताराम जयनारायण सिंघानिया माल गिरवी रखकर रुपया देने की कोशिश कर रहा है, ऐसा सुना। थोड़ा फिक्र हुआ।

एक्सलसियर सिनेमा देखा, ठीक लगा। लक्ष्मी नाटक के दो अंक देखे। गायन व सभ्यता ठीक नहीं थी। सीताराम पोद्दार, रामेश्वरजी व माधोप्रसादजी आदि आये। १२॥। वजे शयन।

१३-६-१४

नित्य कार्य, हिंगनघाट व नरसिंगदासजी को जाइन्ट-संबंधी व वर्धा पत्र लिखे। भोजन के वाद थोड़ा विश्राम लेकर २ वजे वल्लभनारायणजी को साथ लेकर, द्वारकादासजी का वहुत आग्रह था, इसलिए जापान के दलाल के यहां गये। उसकी मोटर लेने आई थी। वहुत-सी वातचीत हुई और फलाहार किया। उसका वहुत आग्रह रहा, इसलिए विना शकर का थोड़ा खाया। ५०० गांठों का सौदा वर्धा हाजर का किया। सौदा पक्का नहीं हुआ। वहां से मारवाड़ी विद्यालय में आये, ७॥ वजे तक कार्य किया। वहुत-सी वातों का निर्णय हो गया।

१४-६-१४

सुबह घूमने गये। मगनवाई से मिलकर रामनारायणजी से मिले। वर्षा वहुत जोर से हो रही थी।

१२॥ वजे जापान के आफिस में गये। वहां नमूने आ गये थे। वर्षा के कारण ठीक नहीं दिख रहे थे। सव आफिस में विजली की रोशनी हो रही थी। थोड़ी गांठ वहां पास हुईं। वाकी कुलावा में देखने की वात हुई। वहां से भुसान आफिस, मर्चेंट वैंक होते हुए कुलावा गये। वहां कुछ गांठें पास हुईं।

बाजार का रंग साधारण ठीक था। आज नानाभाई शिमले से वापस आये, उनसे मिले। लाटसाहब ने कहा, बनेगा वहांतक जीन प्रेस थोड़े दिन बाद चलाने के लिए बंदोबस्त किया जायगा। आज सट्टा वायदे का बाजार ठीक था। कुलाबा का कार्य होने के बाद घूमते हुए बंगले आये। शाम को थोड़ा खाया।

१५-९-१४

वर्षा जोर की थी, चाय ली। गर्म पानी से शरीर कपड़े से साफ किया। पुस्तक पढ़ी, भोजन नहीं किया। विश्राम किया। २।। के लगभग फरामरोज के घर की तरफ से डाक्टर के यहां होते हुए दुकान और किले गये। माणक के वास्ते खिलौने लिये। स्वदेशी स्टोर से गरम गंजी, फराक व कान बांधने का मफलर वल्लभनारायणजी की लड़की के लिए लिया। कुलाबा न जाकर वापस पोपट डाक्टर के यहां गये। वहां १ घंटा लग गया। उसने दवा दी। मोहनलाल मिला। उससे वार्ता। उसके शरीर के लिए कुछ खतरा मालूम हुआ। बाद में मगनबाई के घर होते हुए बंगले आये। रात में थोड़ा भोजन किया व छुहारा डालकर दूध लिया। १० बजे शयन।

१६-९-१४

पत्र लिखे, अखबार पढ़े। दुकान, भुसान आफिस होते हुए मर्चेंट बैंक गये। वहां लाला हरकिशनलाल, भूतपूर्व मैनेजिंग डायरेक्टर पीपल्स बैंक, लाहौर-वाले मिले। उनसे वार्ता हुई। वह होशियार मालूम हुए। वहीं पर रा० ब० रामनारायणजी राठी पूनावाले आ गये। उनका और दानीजी का कोल्हापुर मिल के सम्बन्ध में कुछ मनोमालिन्य चल रहा था। उसे निकालने का प्रयत्न करते हुए उनके साथ पूना बैंक गये। वहां से कुलाबा गये। बाजार का रंग देखा। थोड़ी गांठें बेचीं। फिर मर्चेंट बैंक गये। वहां से दानीजी के साथ गामडिया के यहां गये। करीब १।। घण्टा वहां लगा। बहुत-सी बातें हुईं। कुछ जाइन्ट-सम्बन्धी बात शुरू करते ही वह बहुत हीं घमंड दिखलाने लगा। डांटकर सख्ती के साथ जवाब दिया। ठंडे हो गये, भाव नक्की हो गया। दानीजी के साथ घर पर भोजन। वार्ता, थोड़ी देर पुस्तक पढ़ी।

१७-९-१४

अखवार व पुस्तक पढ़ी। गामडिया का मैनेजर वरोरा जाने के लिए आया। उससे बहुत देर तक वार्ता। फरामरोज इंजिनियर आया। भोजन के बाद थोड़ी देर पुस्तक व पत्र वगैरा पढ़े। २ वजे के करीव दुकान गये। वहां से रामनारायणजी के पास बहुत-सी गपशप की। इण्डिया बैंक के मैनेजर के डूबकर मर जाने की जानकारी उन्होंने दी। बाद में उनके आफिस गया। सर सासून वेरोनेट से मुलाकात। करीब १॥ घण्टा तक कई तरह की बात-चीत हुई। वह बहुत खुश हुआ। रामनारायणजी से सब खुलासा कर लिया। उन्होंने कहा सासून के यहां तुम्हारा काम नहीं होगा, तो मैं तुम्हारा सब काम भुगता दूंगा। दूसरे से बात न करो। एक लाख तक की हुंडी आधी रात को बिना समाचार मंगाये कर लेना, कोई संकोच न करना वगैरा बहुत-सी बातें स्पष्ट हुई। उन्होंने कहा कि निश्चित ही प्रेम में फरक नहीं पड़ेगा।

कुलाबा में आज १६७ गाठें १७९ में वेचीं।

१८-९-१४

बाल बनवाये, बहुत-से पत्र लिखे। अखवार पढ़े। कलकत्ता जर्मनी का क्रूझर आया। ब्रिटिश के माल ढोनेवाले छह जहाज डुबाये। पढ़कर थोड़ी फिक्र व आश्चर्य हुआ। भोजन, वार्ता। फरामरोज इंजिनियर के बहुत आग्रह के कारण उसके घर होते हुए दुकान और भुसान के आफिस आया।

जापान के आफिस में गये। कुसुमोटा ने १००० गांठों की बात की। ३। वजे कुलाबा गये, नमूना वगैरा निकलवाया। गोदाम देखी। जापानवालों ने ३८६ गांठें लीं। लच्छीरामजी. ब्रजमोहनजी से वार्ता। बाद में ५॥। वजे टाम्यानागी साहब को लेकर पी० कामिसी के एजन्ट जापान काटन एसोसियेशन से मिले। बहुत देर तक वार्ता हुई। वह तथा उनकी मेम बहुत अच्छी तरह पेश आये। हिन्दुस्तान से जापान १४ लाख गांठें जाती हैं, बम्बई से १२ लाख, कलकत्ता से १ लाख और फुटकर १ लाख।

१९-९-१४

वर्धा पत्र लिखे। कुलाबा में आज बाजार का रंग हाजर व वायदे का ठीक था। थोड़ा काम हुआ। बाजार की रंगत देखकर किले भुसान के मैनेजर आदि से मिले। कल नाटक देखने का निश्चय किया। नाटकगृह में जाकर व्यवस्था की। बुद्धदेव नाटक के मालिक लायक मालूम हुए।

२०-९-१४

बाल बनवाये। नहा-धोकर जापान काटन के बंगले कुसुमोटा साहब, उनके मैनेजर व उनकी मेम से मिले। बाद में धरमसी मेघजी का मकान देखा। पानी आने लगा। उनसे वार्ता। उन्होंने सॉलिसिटर का थोड़ा हाल बतलाया। भोजन व विश्राम। बाद में बुद्धदेव नाटक में जाकर सब व्यवस्था की। भुसान के बंगले, सबको लेकर नाटक में। मोरीयका साहब व दूसरों को नाटक बहुत ही पसंद आया। उनका स्वागत भली प्रकार, नाटक के मालिक के तरफ से हार-फूल द्वारा करवा दिया। वहां रंगून के एक बौद्ध साधु आये थे। वह सिर्फ अंग्रेजी व बरमी भाषा ही जानते थे, उनसे परिचय किया। उनको डेरे पहुंचा दिया। रघुनाथ त्रिभुवनदास कवि नडियादवाले, जिन्होंने बुद्धदेव नाटक लिखा था, परिचय व वार्ता। ९॥ बजे घर।

२१-९-१४

पत्र लिखे, भोजन के बाद जल्दी दुकान गया। शिवभगवान को बहुत ज़ोर का बुखार था। थोड़ी देर बैठकर रामनारायणजी के यहां गया। वहां १॥ घण्टा से अधिक कई तरह की बाजार-सम्बन्धी व उनके घर-सम्बन्धी बात कीं। बाद में बैंक होते हुए किले व मर्चेंट बैंक गये। गामडिया से मिले। दानीजी को वहां से कुलाबा आने को कहा। आज लेवाली ठीक थी। वर्धा रेलवे स्टेशन १८३ के भाव में १०० गांठें जापान को बेचीं। भुसान का हाजूर का सौदा नहीं हुआ। ३ गांठों का बाद में कालबादेवी से वर्धा तार करवाया। शिवभगवान की तबीयत की निगाह करते हुए, चौपाटी होकर दानीजी के साथ पैदल बंगले आये। गामडिया से उन्होंने बात की। उसका विचार कम मालूम हुआ।

२२-६-१४

सुबह श्राविकाश्रम पैदल गये। मगनबहन व कुंकुबहन से १।। घण्टा वार्ता। वहां से नूरबाग के पास डाक्टरनी को समझाकर जुलाब की दवा लिखवाई। घर आये। नं० १६३ का विक्टोरियावाला बदमाश था। भाड़े के लिए वह झूठ बोलने और बदमाशी करने लगा। १।। बजे वल्लभ-नारायणजी आ गये थे। उनके साथ केम्प कम्पनी से जुलाब की दवा ली व भुसान कम्पनी गये। बाजार का रुख देखा। जापान कॉटन के आफिस होते हुए मेहरवानजी रोमर सॉलिसिटर के यहां गया। थोड़ी देर में लच्छीरामजी भी आये। इन्कमटैक्स, धर्मशाला, विद्यालय आदि विषयों पर रोमर मेहर-बानजी के साथ वार्ता। वहां से कुलाबा आया। वहां आज रंग ठंडा था, खरीददारों की पालिसी के कारण। वहां से वर्धा तार किया। चिमनीराम को बुलाया। भैंरूप्रसादजी सूरजी से मिले। बहुत-सा समझाया। सुरजी आज भिवानी जाने की तैयारी में थे।

२३-६-१४

४।।। बजे उठकर निपटे। ५ बजे से पत्र लिखना शुरू किया। बाल बन-वाये। पेट गड़गड़ाता था, इसलिए फ्रूट साल्ट लेकर सो गये। ११ बजे दस्त लगा। पढ़ते रहे। १२।। बजे खिचड़ी खाई। १।। बजे दुकान गये। शिव-भगवान को जोर का बुखार था। उसके पास बैठे। दुकानवालों से वार्ता, किले गये। आफिस होकर कुलाबा गये। आज २०० गांठें अन्दाज बेचीं, बाजार नरम था, वहां से मर्चेंट बैंक गये। वल्लभनारायणजी साथ थे। मारवाड़ी हिन्दी पुस्तकालय में आये। ८।। बजे रात तक वहां पुस्तकालय-सम्बन्धी वार्ता व पत्र पढ़े। बाद में वालकेश्वर ९। बजे आये। अल्प भोजन किया। पत्र वगैरा लिखे। ११ बजे शयन।

२४-६-१४

सुबह घूमन गये। पूरणमलजी सिंघानिया के बंगले गये। वह सोते थे। उनके आदमी ने कहा कि ८।। बजे उठेंगे। वहां से गोविन्दलालजी पित्ती के बंगले गये। उनसे करीब १।।-२ घण्टा कई विषयों पर, खासकर जाति-सुधार-

कर्तव्य पर वार्तालाप किया। उन्होंने कवूल किया कि वर्धा आकर मारवाड़ी विद्यार्थीगृह देखेंगे। सीताराम पोद्दार मिला। पुस्तकालय की तथा सर कस्तूरचन्दजी को मानपत्र देने आदि विषय की वार्ता की ॥ १। बजे जापान काटन। वहां से भुसान के आफिस। वापस जापान काटन के यहां आया। वहां १०० गांठों की बिल्टी आई हुई थी। आठ हजार का चेक लिया। ३०० गांठों का फिर नया सौदा किया। १-१॥ घण्टा वहां लगा। गोविन्दलालजी के आफिस से नमूने लेकर गया। वह नहीं मिले। मर्चेंट बैंक होकर कुलावा गये। आज वहां काम नहीं हुआ। चौपाटी पर ८॥ बजे तक बैठे रहे। काणे इंजिनियर मिले। शान्ति आदि घूमने आई थीं। ६॥ बजे भोजन-शयन।

२५-६-१४

पत्र लिखे, बाल बनवाये व अखबार पढ़े। सीतारामजी पोद्दार के पास गये। विद्यालय, पुस्तकालय व व्यवहार-सम्बन्धी बातचीत। वहीं भोजन करके वर्धा से चिमनीराम आये थे, सो उनसे वार्ता की। दुकान होकर गामडिया के आफिस में गये। उसको बहुत प्रकार १॥-२ घण्टे समझाकर जाइन्ट का नक्की किया। उससे लिखा लिया व लिख दिया।
कुलाबा बाजार का भाव ठण्डा था। २०० गांठें भुसान को दीं। ७ बजे तक वहां रहकर मुलतानचन्दजी डागा के यहां लक्ष्मणदासजी से मिले। रामप्रतापजी मोहता ने जाइन्ट पर सही की। नैनसुखदासजी व शिवनारायण के यहां गये। पान वगैरे खाये। वहां से गोरखराम साधूराम के यहां गये। श्रीनिवासजी से जाइन्ट पर सही करवाई। बाद में ६ बजे बंगले पहुंचे।

२६-६-१४

नित्य कार्य किया। सर कस्तूरचन्दजी डागा से मिले। १॥ घण्टा तक वार्तालाप होता रहा। बोर्डिंग की तारीफ उन्होंने की। बाद में रामगोपालजी की दुकान पर गये। जाइन्ट पर सही करवाई और बातचीत की। वहींपर भोजन किया। वहां से सूरजमलजी के यहां व थोड़ी देर बाद रामनारायणजी के यहां गये। चिमनीरामजी के साथ रामनारायणजी से बहुत-सी बातचीत। चिमनीराम के समक्ष सब खुलासा हुआ। एक लाख रुपये तक,

कोई भी समय, बिना समाचार दिये, उनसे उठा सकते हैं कहा। उन्होंने अपने लेने-देने का हिसाब बतलाया। कई तरह की बातें हुईं। वहां से जापान भुसान के आफिस में कुलावा गये। ५०० गांठें भुसान को हाजर की बेचीं। सिनेमा होते हुए बंगले गये। दानीजी से वार्ता, रामेश्वरजी, केशवदेवजी, माधोप्रसादजी आदि मिलने आये। ११॥ बजे तक बातचीत। बाद में शयन।

२७-९-१४

सुबह शीघ्र निवृत्त होकर गुलाबचंदजी ढड्ढा से मिलने विद्यालय में गये। वहां से सूरजमलजी की दुकान गये। बाद में रामनारायणजी रूइया से मिले मोटर में। श्राविकाश्रम मगनबाई व कुंकुबाई से मिले। बंगले भोजन किया। चिमनीराम साथ में था। दानीजी के आदमियों को बिदायगी की। बाद में थोड़ी देर बातचीत। मोटर में लालजीभाई त्रिकमजी मूलजी जेठा-वालों से मिलने गये। कलकत्ते की आढ़त की वार्ता।

स्टेशन पर गया। वहां गोपालदासजी, अकोला मिलवालों से वार्ता। दोनों दानीजी, रामेश्वरजी, माधोप्रसादजी, फत्तेचंदजी, किसनलाल, केशवदेवजी, बजरंगलाल आदि पहुंचाने आये, उनसे वार्ता। १ बजे रवाना हुए। वालकट-वालों का नागपुर का एजेंट, धनजीभाई साथ में था, उससे बातालाप। रुक्मानंदजी बजाज भी साथ आये। इगतपुरी तक बहुत जोर की वर्षा होती थी।

वर्धा २८-९-१४

धामणगांव पर श्रीनारायण ने आकर उठाया। उनसे बातें सुनकर फिकर हुई। पुलगांव में बंशीलाल मिलने आया।

वर्धा पहुंचे। निवृत्त होकर काम-काज देखा व भोजन किया। दशहरा देखकर पोद्दार के बगीचे में सबको सोना दिया। समारोह बहुत ही अच्छी तरह से हुआ। थोडगे का हास्यप्रद विनोद-व्याख्यान हुआ। वहां से दामोदर पंत के साथ घर आया। रामगोपालजी को सोना देने गये। उनसे वार्ता। बालुजी व पोद्दार के यहां जाकर घर आये। ११ बजे शयन।

२९-९-१४

नित्य कार्य। पोद्दारों के यहां नानी व भाभी को बंबई के समाचार कहे। घर पर भोजन व विश्राम। व्यवहार-कार्य। बगीचे घूमने गये।

३०-९-१४

निवृत्त होकर बोर्डिंग में घूमते रहे, देख-भाल करते रहे। सनावद से गोपीकिसनजी, सुंदरमलजी आदि आये। उन्हें बगीचे भेज दिया। उनकी व्यवस्था कर भोजन व विश्राम किया। सनावदवालों से वार्ता व फराल करवाया। शाम को बगीचे में सब मिलकर ताश वगैरा खेले। घर पर भोजन व वार्त्ता।

१-१०-१४

नित्य कार्य। बाबा कोमटी बरोरावाला आया। उससे जमीन के संबंध में वार्ता व भोजन। विश्राम। सनावदवाले गोपीकिसनजी को उलटी हो गई। शिवप्रसादजी को दिखलाकर दवा आदि ली। शाम को बगीचे गया।

२-१०-१४

भागचंदजी मिलने आये। उनसे गणेश प्रेस-संबंधी वार्ता व साथ में भोजन किया। सनावदवालों से वार्ता व विश्राम। रुई के नमूने आदि देखे। चिट्ठियां डलवाईं। पंडित बालचंदजी शास्त्री रामदुर्ग से आये। उनके साथ कलेवा किया। शाम को बगीचे ताश खेले व विनोद चलता रहा। जोखीरामजी खेतान मिलने आये, उनसे बातचीत। बाद में श्रीनारायण व लक्ष्मीनारायणजी आंजनसिंगीवाले आये। भोजन, देर तक वार्ता।

३-१०-१४

बगीचे में जोखीरामजी, श्रीनारायण, लक्ष्मीनारायणजी आदि से वार्ता। स्नान आदि कर जाजूजी को पुलगांव प्रेस का मुकदमा दिखाया। सनावदवालों ने भोजन किया। बाद में जोखीरामजी खेतान व बालचंदजी पंडित से मिलने गये। उनसे वार्ता। शरद पूर्णिमा का कार्यक्रम निश्चित किया। दोनों ने प्रसाद लेने को आने का निश्चय किया। गोपीकिसनजी (सनावदवाले) को बुखार आ गया। घबराने लगे। डाक्टर को दिखाया, दवा आदि की व्यवस्था की। पूज्य जीवराजजी आये। पंडित बालचंद्रजी से वार्ता।

बंशीलाल पुलगांव से आये। कलकत्ते का कार्य समझाया। शरद पूर्णिमा का उत्सव हुआ। विद्यार्थियों के भजन ठीक हुए। आरती, प्रसाद। बाद में श्रीनारायण ने अपनी हकीकत कही। ११ बजे शयन।

४-१०-१४

बगीचे जोखीरामजी खेतान से वार्ता। स्नान, संध्या करके देवदर्शन कर घर आये। बालकट का एजेंट आया। उनसे वार्ता। गोपीकिसनजी सनावदवालों से बातचीत। डाक्टर को बुलाकर उनकी तबीयत दिखलाई। भोजन, विश्राम व पत्र लिखे।

सनावदवालों से हीरजी का फैसला। आपस में बंबई-पंचायत द्वारा होना निश्चय हुआ। श्रीनारायण, लक्ष्मीनारायणजी से वार्ता व लिखा-पढ़ी की गई। डालूराम को बुखार १०४ डिग्री था, गोविंदरामजी को बतलाया। दवा शुरू की। केजड़ीवालों के यहां बैठने गये। उनके बहनोई गुजर गये थे। बापट शास्त्री का व्याख्यान शंकराचार्य व गीता के संबंध में, पंडित बालचंद्रजी शास्त्री की अध्यक्षता में हुआ। वहां से आकर गोपीकिसनजी, सुंदरलाल को पहुंचाने स्टेशन गया। बद्रीनारायणजी मिले, उनसे वार्ता। घूमकर घर आया। घर पर जाजूजी से बहुत-सी बातचीत की।

नागपुर-वर्धा ७-१०-१४

स्नान व पूजन कर दूध लेकर मेल ट्रेन पर स्टेशन गये। स्कोडा के साथ फर्स्ट क्लास में नागपुर रवाना। गाड़ी में लड़ाई व व्यापार-संबंधी बहुत-सी वार्ता। नागपुर में दारासाहब के साथ जीन, एम्प्रेस मिल, दौलतरामजी, बालकट आदि के स्थानों में उसे मिला दिया। हाल-हकीकत से वाकिफ कराया। महाराज बाग होते हुए उसे वहीं छोड़कर बंगले पर १२ बजे भोजन किया। नागरमलजी व बिरदीचंदजी आदि से वार्ता। बाद में इतवारी गये। घर-वालों से मिलकर बंगले में काचरे खाये, जल पिया। मेल से वर्धा वापस आये। जलपान कर स्कोडा के साथ कपास जवारी के झाड़ देखने पौनार बगीचे गये। सब देखा। रात में भोजन के बाद पत्र पढ़े। ९॥ बजे शयन।

वर्धा ८-१०-१४

स्कोडा भुसान के साहब से मिले। उसको रुई के नमूने दिखलाये। बंगले जाकर घर पर भोजन करवाकर ११ की गाड़ी से उसे पहुंचाया। बाद में शयन। पत्र आदि लिखे, टाऊन हॉल में बेंच के मुकदमे थे, वे किये। बाद में बगीचे आया।

९-१०-१४

नित्य कार्य, रात में हवा लग गई। शरद-गर्मी से सिर में दर्द था। थोड़ा भोजन कर विश्राम किया। तबीयत भारी मालूम हुई। ज्वर का अंश था। शाम को भोजन नहीं किया। बगीचे गये।

१०-१०-१४

सर्दी थी, नित्य कार्य। बेंच मुकद्मे घर पर ही किये। बगीचे में ताश खेली। रात में भोजन के बाद विद्यार्थियों के भजन। कई विद्यार्थियों से अभिमन्यु नाटक के विषय में वार्ता। ११ बजे शयन।

११-१०-१४

सर्दी लग गई थी। बाल बनवाये। कुर्ते-टोपी लेकर टुल्या जाट को आर्वी भेजा। पत्र देखकर, भोजन व विश्राम। व्यवहार-कार्य व बगीचे में ताश खेलना। सर्दी की दवा ली। भोजन के बाद बोर्डिंग हाऊस गये। आज लेक्चर थे। प्रौढ़ विवाह पर श्रीयुत पाण्डे व जाजूजी बोले। मैंने भी थोड़ा-सा कहा। बाद में बाल प्रबोधिनी सभा का कार्य देखा। श्रीनारायण धामणगांव-वाले व महादेवजी आये, उनसे उनके घर की वार्ता। कर्तव्य पर डटे रहने को कहा। १२। बजे रात में शयन। इनके साथ रामनारायणजी वैद्य सीकर-वाले भी आये थे।

१२-१०-१४

नित्य कार्य कर जाजूजी के यहां गया। पत्र वगैरा देखकर, भोजन व विश्राम। बाद में व्यवहार-कार्य। बेंच मुकदमे घर पर ही किये। सर्दी का जोर कम था।

बोर्डिंग के मकान के संबंध में जाजूजी से वार्ता भागचंदजी, बंशीधरजी,

फोजराजजी राठी आदि वगीचे में मिले। उनके साथ ताश खेले। पोद्दार के यहां वार्ता। वहीं पर भोजन किया। १०।। बजे शयन।

१३-१०-१४

बोर्डिंग का मकान देखा व नित्य कार्य किया।

वंशीधरजी हरलालका से धामणगांव आदि विषय की वार्ता। भोजन व विश्राम, संपेरा रीछ लेकर आया, खेल किया। बाद में टाऊन हॉल जाकर म्युनिसिपल के नाली-संबंधी कागजात देखे। बेंच मुकदमे किये। ६। बजे तक वगीचे। ताश खेले। घर पर पत्र पढ़े। आज रुई का भाव घटकर आया। चित्त में थोड़ा विचार रहा। ईश्वर इच्छा।

१५-१०-१४

साफ-सफाई आदि करवाई। महादेवजी धामणगांववाले वगीचे आये। हकीकत कही। रात में भोजन के बाद पूज्य रामगोपालजी से मिले। उनसे धामणगांव-संबंधी बहुत-सी वार्ता। कहा-सुनी भी योग्य तरीके से की, पर उनका जिद्दी स्वभाव होने से, संतोष लायक बातें नहीं हुईं। ११ बजे शयन।

धामणगांव १६-१०-१४

चिमनीराम राठी बंबई से आया। उससे बातचीत। मेल २।। घंटा लेट आई। १०-५१ पेसेंजर से धामणगांव गया। पूज्य रामगोपालजी, मोतीलालजी मुनीम आदि से वार्ता। धामणगांव श्रीनारायण तथा उनकी भांजी, श्रीकृष्णदासजी डागा, महादेवजी आदि से वार्ता। सब हकीकत मालूम हुई। पूज्य रामगोपालजी की इच्छा मुजब सीर का वाजिब प्रबंध हुआ। जमा-खर्च किये। डागा मुनीमजी का मत था कि काम कोई रीत से निभ नहीं सकता। इस कार्य में परिश्रम हुआ व फिकर भी हुआ। बहुत रात तक बातें होती रहीं।

वर्धा १७-१०-१४

धामणगांव में रात निद्रा नहीं आई। स्टेशन आया। मेल लेट थी। भागचंदजी के साथ वार्ता। मेल से वर्धा आना। दीपावली का कार्य-व्यवहार

किया। शाम को दीपपूजन, अखबार व पत्र पढ़े। वंसीलाल ने कलकत्ते के समाचार कहे।

१८-१०-१४

दीपावली का कार्य। वाल बनवाये व सजाई वगैरा की। ६ वजे दीपपूजन हुआ, वाद में भोजन। ७। वजे से लक्ष्मी-पूजन का कार्य प्रारंभ हुआ, जो १० वजे आनंदपूर्वक निर्विघ्न समाप्त हुआ। रोशनी-सजावट ठीक हुई। नरसिंगदासजी मोहता के रामप्रतापजी से १०१ गांठों का सौदा हुआ। गांव में रामगोपालजी पोद्दार, छोटी दुकान आदि स्थानों में गये। आज शाम को कमला को चोट लग गई थी। उससे थोड़ी फिक्र रही। थोड़ी देर वाद ही वह खुश होकर, खेलने लग गई।

१९-१०-१४

डिप्टी कमिशनर मि० बैचलर, सिविल सर्जन व हरिदास सेक्रेटरी आदि बोर्डिंग पर आये। सव घूम-फिरकर देखा। डिप्टी कमिश्नर वहुत खुश हुए। वहुत वातचीत हुई। भोजन व विश्राम। पूजन की चिट्ठियां लिखीं, पोद्दार के यहां कलेवा किया। वगीचे में ताश खेला। शाम को घर पर भोजन। रात में जाजूजी आदि के साथ गांव में सव लोग पान खाने गये। १० वजे वापस आये।

२०-१०-१४

अन्नकूट के कार्य की व्यवस्था। डिप्टी कमिशनर के यहां गये। उन्होंने पान-सुपारी को सहर्ष आने का कवूल किया। भोजन व विश्राम के वाद जाइंट की लिखा-पढ़ी की। व्यवहार-कार्य व पूजन किया व चिट्ठियां लिखीं।
पूज्य रामगोपालजी ने धामणगांववालों के वारे में वुलाया। उनसे साफ-साफ वात हुई थी। इनका कुछ भी ठिकाना नहीं। घर से वालाजी के मंदिर में अन्नकूट जीमने गये। जयनारायणसाहव मिले। पोद्दार के वगीचे तक पैदल घूमने वार्ता करते हुए गये। वापस में नायडू वकील व वालचन्द्रजी पण्डित मिले। युद्ध-सम्वन्धी वहुत-सी वातें हुईं। फ्रामरोज इंजिनियर बीमार था, उसके घर गये।

२१-१०-१४

अन्नकूट-कार्य की व्यवस्था। भोजन व थोड़ा विश्राम। १२ वजे मन्दिर में गये। १।। वजे तक आरती वगैरा कार्य हुए। बाद में कप्तान कोलमीनसाहब के यहां गये। उनसे वार्ता। पान बीड़े के लिए आने को कहा। वहां से हरिदास साहब के यहां बैठने गये, वह नहीं थे। छोटे कप्तान के यहां गये। उनसे बहुत-सी वार्ता। आत्मज्ञानी व बहुत ही लायक सज्जन मालूम हुए। वहां से तह-सीलदार दुबे के यहां, उनकी लड़की का बच्चा चला गया था सो बैठने गये। वार्ता की। उन्हें अन्नकूट का प्रसाद लेने के लिए आने को कहा। कन्हैया-लाल पोद्दार के बहनोई केशवदेवजी घेलिया की चाची मर गई थी। वहां बैठने गये। मन्दिर में ८ बजे तक व्यवस्था। सबको जिमाया। बाद में दुबे-साहब, घर के लोग, जाजूजी, पण्डितजी आदि ने मिलकर आनन्द से प्रसाद लिया।

२२-१०-१४

आज अफसरों को पान-सुपारी थी। उसका प्रबन्ध किया। रात में ७।। बजे से आफिसर व वकील लोग आने शुरू हुए। ८। बजे डिप्टी कमिश्नर आये। सिविल सर्जन, छोटा कप्तान ढोबले, लोभेसाहब आदि आये। सीता-राम विद्यार्थी का गायन हुआ। उसके बाद डिप्टी कमिश्नर १।-१।। घण्टे तक बातचीत करता रहा। बहुत-से लोग बिना भोजन किये आये थे। इन्हें देर हो गई। पान-सुपारी का सम्मेलन बहुत ही आनन्दपूर्वक सम्पन्न हो गया।

वर्धा, हिंगनघाट २३-१०-१४

जयनारायणसाहब आये। उनसे वार्ता। जाजूजी के यहां भोजन किया। असेसर के रूप में हाजिर होने का नोटिस था, सो वहां गये। कचहरी में ढोबले साहब ने शीघ्र ही छुटकारा कर दिया। बार-रूम में थोड़ी देर ताश खेले। घर आकर विश्राम किया।

हिंगनघाट गये। पण्डित बालचन्द्रजी से वार्ता। वह थर्ड में बैठे। पोद्दार के बगीचे जाना, रात में भोजन कर व्यवहार की बातचीत की। चुन्नीलाल को

बुलाया। उनके फैसले की वातचीत की।

हिंगनघाट २४-१०-१४

सुबह उठते ही पोद्दार-बगीचे गये। निवृत्त होकर ६ बजे उनकी दुकान पर आये। दलालों से वार्ता। भोजन। वर्धा से रामनाथजी की व दुकान की चिट्ठी-तार आदि आये। बाद में रेखचन्द्रजी मोहता की दुकान पर नरसिंगदासजी से मिलकर पोद्दार की दुकान पर जाइन्ट-सम्बन्धी व चुन्नीलाल के फैसले-सम्बन्धी वार्ता।

जूनी मिल में गये। वेलचमसाहब व मोतीलालजी से वार्ता। २०४ गांठें वेचीं, दाम तो कम ही आये। वहां कलेवा किया। पोद्दार की दुकान से पैदल जीन गये। देखभाल करके मिल में दामाजी से मिलकर पोद्दार की दुकान पर भोजन किया। दलालों से व्यापार-सम्बन्धी वार्ता। १० बजे रात में स्टेशन पर वेटिंग रूम में गये। १॥ बजे उठे, ३॥ बजे वर्धा पहुंचे।

वर्धा २५-१०-१४

सुबह रामनिरंजनदासजी मुरारका पटनेवाले, रामनाथजी के साथ आये। जल्दी निवृत्त होकर उनसे मिले। उन्हें मेल से विदा किया। उन्हें एक रोज रहने के लिए कहा गया, पर वह चले गये। घूमकर स्नान व भोजन, थोड़ा विश्राम। डागाजी हिंगनघाट से आये। ६४ गांठों का सौदा किया। नायडूसाहब जाजूजी व पाण्डे आदि आये। लड़ाई के कारण व्यापार-संबंधी सूचना सरकार को भेजने के विषय में वार्तालाप हुआ। खरेसाहब से मिलकर व सलाह करके डेप्युटेशन लेकर डिप्टी कमिश्नर के पास जाने का निश्चय किया।

मिठाबाई व डाक्टरनी आई। पोद्दार के बगीचे गये। रात मिठमल पोद्दार से व्यक्तिगत चरित्र-सम्बन्धी बहुत-सी बातें हुई।

२७-१०-१४

सिविल सर्जन के साथ मालगुजारी पुरा वगैरा पैदल घूमे। थोड़ी देर बाद घर आकर ११ बजे बगीचे गये। १२ बजे आंवले के नीचे आनन्द के साथ भोजन किया।

जाजूजी के साथ २ बजे दुकान आये। डागाजी हिंगनघाट से आये। भवानी-दास, चुन्नीलाल का फैसला हुआ। करारनामा वगैरा किया।

२९-१०-१४

पूज्य रामगोपालजी को साथ लेकर रजिस्ट्रार के कोर्ट में गये। मदनी के खेत की रजिस्ट्री कर दी। बैंच में मुकदमे किये। वगीचे में भगवानचन्दजी से वार्ता।

हिंगनघाट-वरोरा ३०-१०-१४

९ बजे भोजन करके शिवनारायणजी लब्धड़ के साथ हिंगनघाट गये। रेखचन्दजी के यहां बैठने गये। पोद्दार के यहां थोड़ी देर वार्ता। १॥ बजे रेखचन्दजी की मिल से टांगा आया। वहां गये। चार आने की पाती की जमीन का फैसला किया। डागाजी की मरजी के मुआफिक हुआ। शर्तनामे की शर्तें नक्की कीं। वहींपर फलाहार किया। मथुरादास मोहता से वार्ता। शाम की गाड़ी से वरोरा स्टेशन पर शिगरू मिल के सम्वन्ध में वार्ता। उसमें नुकसान वतलाया और काम वन्द करने का विचार वताया। वरोरा स्टेशन पर गोविंदराम पोद्दार आये। पैदल ही पोद्दार के यहां गये। वहीं भोजन किया। वार्ता और शयन।

वरोरा ३१-१०-१४

जंगम की जमीन में से जीन के लिए देखी। गोविन्दराम से वार्ता, भोजन किया। शिवनारायणजी करारनामा लिखवाकर लाये। २० वर्ष आगे की शर्त डालना आवश्यक मालूम हुआ। रावतमलजी की दुकान पर बहुत समझाने पर ६ बजे करारनामे का कार्य समाप्त हुआ। फिर जगह देखी। जीन की जगह का निश्चय हुआ। पोद्दार के यहां भोजन। जंगम को एक-दो कड़ी वातें कहनी पड़ीं। ११॥ बजे स्टेशन। ३ बजे रात को वर्धा पहुंचे।

वर्धा ११-१-१४

व्यवहार-कार्य, दोपहर को जाजूजी से मिले। वरोरा का करारनामा आदि दिखाया। वर्धा जाइन्ट-सम्वन्धी गामडिया का पत्र-व्यवहार दिखलाया। पोद्दार के वगीचे दही-हुरडा खाया। लोन, खात देने व वुवाई करने आदि के

बहुत-सी बातें हुईं।

२-११-१४

हिंगनघाट से डागाजी आये। उनसे वार्ता। बगीचे में वाणी का हुरडा खाया। आज टर्की के विरुद्ध ब्रिटिश सरकार द्वारा लड़ाई आरंभ करने के समाचार आये, चिंता हुई।

३-११-१४

विद्यार्थी-गृह का कार्य १।। घंटा किया। फिर भीकमचंद, रेखचंद व अपनी वरोरा जीन संबंधी लिखा-पढ़ी की। डागाजी से वार्ता। उनसे भविष्य पुराण सुना। थोड़ा विश्राम। हिंगनघाट जीन की जगह रेखचंदजीवाले को दी। रजिस्ट्री कर दी। दो दफे कचहरी जाना पड़ा। फिर बगीचे आये। रामप्रताप मोहता, डागाजी आदि से वार्ता। तुकाराम पटेल से वार्ता। ११ बजे शयन।

रेल में ५-११-१४

छोटु को छुट्टी दी, मन चिंतित रहा। जोखम वगैरा का बंदोबस्त कर व्यवहार-कार्य। पूज्य रामगोपालजी पोद्दार मिले।
बंबई के लिए रवाना हुए। पुलगांव व धामणगांव में लोग मिले। अकोला में लक्ष्मीनारायण सिंघानिया मिलने आये। रामभाऊ भी मिला।

बंबई ६-११-१४

कसारे से कल्याण तक दृश्य सुंदर थे। माधोभाई बोरीबन्दर आये। जापान काटन के साहब मिले। भोजन करके रामनारायणजी से मिले। बातचीत हुई। नानोली में आने को कहा। बाद में सूरजमलजी से हिसाब की बातचीत की। रामनारायणजी को बोरीबंदर छोड़कर भुसान-आफिस गये। सबसे मिलकर मर्चेंट बैंक होते हुए कुलाबा आये। ११० में १८४ गांठें बेचीं।

लोणावला ७-११-१४

सूरजमलजी के हिसाब का निकाल किया। दानीजी के यहां गये, बातचीत। वहांपर भोजन में ११।।। बजे सूरजमलजी से बात हो गई। बाद में भुसान-

आफिस व वोरीवंदर गये। २॥। वजे की गाड़ी से दानीजी के साथ लोणा-वला गये। रामनारायणजी स्टेशन पर आये। वंगले पहुंचे। वातचीत भोजन, १० वजे शयन।

८-११-१४

निवृत्त होकर मोटर में दानीजी के साथ बंगला वगैरा बहुत देर तक देखते रहे। भोजन व वार्ता। वाद मोटर में टाटा का विजली का कारखाना अच्छी तरह से देखा। काफी देर तक घूमने से सरदी का जोर हुआ। डाक्टर रजवअली ने परीक्षा की, वहुत अच्छी तरह से देखा। चावल, दूध, आलू वगैरा लेने की मनाही की। जीमकर १०॥ वजे धर्म-संवंधी वातें व बाद में शयन।

माथेरान ९-११-१४

निवृत्त होकर रामनारायणजी से वार्ता। कॉफी लेकर लोणावला स्टेशन आये। पूर्णमलजी की स्थिति के विषय में दानीजी से वार्ता। २ वजे माथे-रान। लक्ष्मी होटल में ठहरे। स्नान-भोजन। घोड़े पर बैठकर गार्वट पाईन्ट देखा। १२ वजे जादू के खेल देखे।

१०-११-१४

निवृत्त होकर जुल पाईन्ट घोंड़े पर गये। पार्टी का फोटो लिया गया। फल खाये और वातचीत की। ११। वजे डेरे पर स्नान व १२ वजे भोजन। विश्राम करके गायन सुना। नगर-सेठ की आश्चर्यजनक वार्ता सुनी। दानीजी के साथ फोटो लिया। धर्मदास, नानाभाई तुलसीदास, छोटेलाल के साथ घोड़े पर पेनोरमा पाईंट देखने गये। वहुत अच्छी तरह देखकर डेरे पर लौटे। २॥ घंटा आराम। भोजन।

बंबई ११-११-१४

जल्दी निवृत्त होकर दूध लेकर ७॥। वजे माथेरान से रवाना हुए। दानीजी से वार्ता। १० वजे नेरल से बंवई रवाना।
रामनारायणजी से मिले।
भुसान आफिस से कुलावा गये, वाजार का रंग ठीक था। २२९ गांठें

११० के भाव में नरम माल की विक्री।

१२-११-१४

तबीयत कुछ अस्वस्थ मालूम हुई। सूरजमलजी की देश जाने की तैयारी की। १२ वजे भोजन किया। प्रेमराजजी कलकत्ता से वर्धा होकर आये। उनसे वार्तालाप। गामडिया आफिस में जाकर जाइंट-संवंधी लिखा-पढ़ी। भुसान-आफिस से कुलावा गये। वाजार ठीक था। दुकान पर भोजन करके रामनारायणजी के साथ मोटर में कुलावा हवा खाने गये। सूरजमलजी देश के लिए विदा हुए। लादूरामजी वजाज के घर के लोग देश गये। उनके पुत्र को विदा में ४ रुपये दिलाये। रामनारायणजी के साथ पवनचक्की गये। रामेश्वरजी विड़ला, लक्ष्मणदासजी डागा आदि आये। उनसे सभा के विषय में वातचीत। ११ वजे दुकान गये। ऊपर के बंगले में शयन किया, निद्रा ठीक आई।

१३-११-१४

८।। वजे निवृत्त होकर रामनारायणजी रूइया से मिले। वहुत-सी व्यापार-संवंधी खुलासे से वातचीत हुई। एक लाख का चैक १२ मास करार का उनका जमा कर ७५ हजार भुसान के यहां व २५ हजार सूरजमलजी के यहां जमा करवाया। वल्लभनारायणजी दानी की तवीतय देखने गये। तवीयत अस्वस्थ थी। १।। घंटा उनके पास बैठे। फिर दुकान जाकर भोजन किया व पत्र लिखे। केदारमलजी मेमराजजी आये, उनसे वार्ता की। वाद में मारवाड़ी विद्यालय में परीक्षा का प्रवंध देखने गये। प्रवंध ठीक तौर से करवा दिया गया। वहां से स्टोर सामान की निगाह करके कुलावा गये। रात में भोजन के वाद रामनारायणजी की मोटर में पालवा पवनचक्की व भुसानसाहब के घर होते हुए कुलावा स्टेशन पर केशवदेवजी नेवटिया को पहुंचाया। वाद में केदारमलजी के साथ सिनेमा देखा। लड़ाई के दृश्य देखने लायक थे।

१४-११-१४

६।। वजे दानीजी के यहां गये। 'डिबेटिंग यूनियन सभा' के प्रवंध-संबंधी

वार्ता। दुकान जाकर भोजन किया। किले में स्टोर सामान देखा। विरूल कंपनी के यहां केकसरू से वार्ता। धामणगांव-संवंधी उनका समाधान कर दिया। धीरज रखने को कहा। भुसान आफिस में मि० टक्याउची मैंनेजर से जिद होने के कारण ५०० गाठें वर्धा जनवरी १८२ में खरीद की। वाद कुलावा। बाजार मंदा रहा। कोशिश करके ५०० गांठें गोसा गोसी कम्पनी को दर १८३ में बेचीं। १०० नागपुर विरूल को १८० में। दुकान पर भोजन करके रात मारवाड़ी वाचनालय में गयें। सभा का प्रवन्ध किया।

१५-११-१४

९ वजे दानीजी आदि से मिले। आज की सभा में उन्हें आने का आग्रह-पूर्वक कहा। दुकान पर भोजन व विश्राम। २ वजे से सभा के कार्य का प्रवन्ध करना शुरू किया। ३।। वजे मि० एडवर्ड पुलिस कमिश्नर वम्बई आये। उनका स्वागत किया गया। सभा का कार्य भली प्रकार निर्विघ्न पार पड़ गया।

मारवाड़ी हिन्दी वाचनालय में अखवार पढ़े। वर्धा मारवाड़ी विद्यार्थी-गृह की खवर भी पढ़ी। केदारमलजी के साथ अमेरिका-इंडिया सिनेमा देखा। ठीक था। घर पर भोजन।

१६-११-१४

९ वजे हीरजी खेतसी के यहां गये। सनावद के वारे में सनावदवालों के सामने खेतसीभाई को पंचों की हकीकत कही। मेमराजजी से मिलकर दुकान पर भोजन। हीरालालजी रामगोपालजी की दुकान गये। उन्होंने हिसाब दिया। वंशीधरजी के साथ इन्कमटैक्स के काम के लिए सॉलि-सिटर के यहां गये। इन्कमटैक्स कलेक्टर को रिमाइन्डर भिजवाया। भुसान-आफिस के मि० मोरिया का मैंनेजर से वहुत-सी वार्ता। कुलावा में कुछ सौदा किया। दुकान होकर दानीजी के यहां गये। वार्ता। वहीं भोजन किया। १०।। वजे दुकान पर आकर शयन।

रेल में १७-११-१४

जल्दी भोजन करके रामविलास खेतान से मिले। हीरालाल रामगोपाल, दुकान भुसान आफिस, मैनेजर से वार्ता। १५० जूनी गांठें वेचीं। १ बजे की गाड़ी से वर्धा के लिए रवाना। मि० सावा भी साथ स्टेशन पर आया। भुसान मैनेजर आदि सब आये। मि० फावलर सर्वेअर भी मिला, हीरालाल व टिकिट इन्स्पेक्टर से वार्तालाप।

वर्धा १८-११-१४

धामणगांव में श्रीनारायण व महादेवजी मिलने आये। वार्ता। श्रीनारायण वर्धा तक आया। भोजन, विश्राम। जीन, प्रेस, मार्केट अन्य कार्य।

हिंगनघाट २२-११-१४

श्री गोपालन कम्पनी की साधारण सभा के लिए शाम की गाड़ी से हिंगनघाट गये। पोद्दार के यहां भोजन कर गोपालन की मीटिंग के लिए गये। सभा का कार्य आरम्भ हुआ। ११ बजे रात तक काम चला। आगे कार्य वन्द करने का निश्चय हुआ। ३१ को जाहिर नीलाम करने का नक्की हो गया व कोटे आदि के सम्वन्ध में प्रस्ताव पास करने का निश्चय हुआ। कम्पनी का कार्य देखकर चित्त में नाराजी हुई।

वर्धा २३-११-१४

पोद्दार के वगीचे निवृत्त हुए व व्यवहार-कार्य किया। सामान वगैरा गया, सो देखा। नई व जूनी मिलवालों से मिले। नरसिंगदासजी मिले। २०० गांठें सुपर फाइन की खुलासे करार से खरीद की। नरसिंगदासजी के प्रेस में गये। माल देखा। १२॥ वजे की गाड़ी से वर्धा।

२६-११-१४

विद्यार्थी-गृह के उत्सव के निमित्त साफ-सफाई, सजावट वगैरा। शाम को मेहमान आदि आने लगे। उसकी व्यवस्था की। रामचन्दजी भूतड़ा आये। रात में इनसे थोड़ी वार्ता। नागपुर के विद्यार्थियों के इनाम वगैरा तय किये। रात को ११॥ वजे शयन।

जल्दी निवृत्त हो गये। विद्यार्थीगृह के मेहमानों की व्यवस्था। पौन बजे उत्सव-कार्य आरम्भ हुआ। विद्यार्थियों का गायन हुआ। रिपोर्ट का कार्य श्री जाजूजी ने किया। रामचन्द्रजी भूतड़ा सभापति बनाये गए। बाद में विद्यार्थी-गृह में भोजन हुआ।

दोपहर को वर्धा के विद्यार्थी-गृह के विद्यार्थियों के व्याख्यान हुए। शालिग्राम-जी सभापति बनाये गए। राधाकिसन, विसवा, शंकर, बालकिशन, नेमीचन्द, दुर्गा आदि ठीक बोले। शाम को विद्यार्थियों की कुश्ती हुई। रात में विद्यार्थी-गृह में भोजन। सम्मेलन बड़े ही आनन्द के साथ हुआ। बाद में विद्यार्थियों के भजन हुए। ११ बजे सब व्यवस्था करके शयन।

२८-११-१४

वर्धा विद्यार्थीगृह के विद्यार्थियों में व नागपुर विद्यार्थी-गृह के कालेज विद्यार्थियों में फुटबाल मैच हुआ। मैच काटन मार्केट के मैदान में हो रहा था। वह देखा। वर्धावाले अच्छा खेले। बाद में मलखम, डबल-बार आदि के व्यायाम विद्यार्थियों ने ठीक किये।

शिक्षामण्डल की सभा का कार्य पूर्ण हुआ। आज नागपुर के विद्यार्थियों को घर पर प्रेमपूर्वक भोजन कराया।

शिक्षामण्डल का कार्य पूर्ण हुआ। नागपुर के विद्यार्थियों के व्याख्यान हुए। साधारण थे। भगवानदासजी औरों से ठीक बोले। नागपुर के हरप्रसादजी व अकोला के एक विद्यार्थी ने मलखम के व्यायाम किये। अकोलावाला होशियार मालूम हुआ।

७। बजे दुकान पर आये। शालिग्रामजी आर्वी गये। भोजन के बाद मिठ-मल पोद्दार से वार्ता। थक गये। जल्दी शयन। रात में पण्डित बालचन्द्रजी का व्याख्यान हुआ।

पुलगांव-वर्धा २९-११-१४

सुबह विद्यार्थी-गृह होकर १०-१५ की गाड़ी से पुलगांव गये। वहां पानमलजी दलाल को प्रामाणिकता के लिए भली प्रकार समझाया। श्रीधरजी, त्र्यंब-

करावजी व पुलगांव मिल के मैनेजर भी थे। एक्सप्रेस से वापस वर्धा। नागपुर के वोर्डिंग के विद्यार्थी स्टेशन पर मिले। वरोरावाले वावा दलाल आये। उससे वातचीत। भुसानसाहव के वंगले गये। ३०७ गांठें वरोरा व वर्धा की वेचीं। वगीचे गये। वहां वार्ता। पोद्दार के यहां जीमने को वुलावा आया। वहां पर भोजन किया। श्रीनिवासजी से जीन प्रेस-सम्वन्धी वार्ता। दुकान आकर नागरमलजी आदि को पत्र दिया।

वर्धा-हिंगनघाट-वरोरा ३०-११-१४

भोजन करके सुवह ६ की गाड़ी से हिंगनघाट गये। वहां गोपालन कम्पनी का कार्य किया। पोद्दारों की दुकान पर नागपुरवाले शिवनारायणजी राठी से वार्ता। रुस्तमजी पारसी से मिले। गांठों के लिए साधुराम तुलाराम का माल देखा। माल नरम था। पैदल ही दुकान गये। लक्ष्मीनारायणजी राठी से मिलकर मारवाड़ी शिक्षा-मण्डल के उद्देश्यों का मतलव सविस्तर समझाकर सही ली। पोद्दार के यहां कलेवा किया। पूज्य जीवराजजी से गोपालन कम्पनी-सम्वन्धी वार्ता। उनका हार्दिक अभिप्राय दूसरा मालूम हुआ। ३॥ वजे कम्पनी में गये। प्रवन्ध वरावर नहीं था। ४॥ वजे तक विडकर नहीं आये। तव आदमी भेजकर वुलाया। नीलाम-कार्य शुरू हुआ। पूज्य जीवराजजी व विडकर ने अन्दर-ही-अन्दर एक सलाह कर ली थी, जिससे कार्य नहीं हो सका। वुरा मालूम हुआ। प्रेमसुखदासजी मोहता को १६० रुपये में दी, उसमें शीघ्रता करने के कारण ४० रुपये की कसर लगी। अनुचित कार्य हुआ। वाद में स्टेशन आकर वरोरा के लिए रवाना हुआ।

चांदा १-१२-१४

जीन का कार्य देखते रहे। रावतमलजी, मगनीरामजी आदि मिलने आये। उनसे व्यवहार-सम्वन्धी वार्ता। स्टेशन पर भुसानसाहव नहीं आया। चांदा देखने का विचार हुआ। स्टेशन-मास्टर के लड़के से नौकरी-सम्वन्धी वार्ता। चांदा गये। वरोरा सवइन्स्पेक्टर से वार्ता। अच्छे आदमी मालूम हुए। चांदा में धड़सीराम पोद्दार मुनीम स्टेशन आये थे। उनकी दुकान व गांव देखने गये। परकोटा, दरवाजा, देवीमन्दिर, महादेव मन्दिर, छत्री, लकड़ी

का कारखाना, जीन, छोटा स्टेशन, तालाव, वाजार आदि घूमकर देखे। मुरलीधरजी बागला, भीखराजजी सागरमल कम्पनीवाले आये, उनसे वार्ता। पोद्दारों की दुकान गये। वरोरा पोद्दारों के यहां गोविन्दरामजी से मिले। यात्रा-सम्बन्धी वार्ता। १२ वजे शयन। चांदा शहर में पुराने अवशेष वहुत मालूम हुए।

वर्धा २-१२-१४

डाकबंगले जाकर मि० सावा से मिले। जीन का कार्य होते हुए देखा। पोद्दार के यहां भोजन कर १०। वजे की गाड़ी से वर्धा रवाना। नागरी से पहले एंजिन विगड़ गया। गाड़ी वापस वरोरा गई। मि० विनायक वासुदेव रानडे कान्ट्रेक्टर से वहुत प्रकार की वातें हुईं। गाड़ी वर्धा ४। वजे पहुंची। फल खाये। पत्र पढ़े। विनायकराव रानडे से वार्ता। मन्दिर वोर्डिंग आदि का व्यवस्था-कार्य किया।

३-१२-१४

नित्य कार्य किया। जीन प्रेस व वाजार गये। नागपुर के जौहरी केशरीचन्द-जी, पूनमचन्द, कर्णधिन, आदि भांदक जाते हुए मिलने आये। उनसे वार्ता। रात में जाजजी से गोपालन कम्पनी आदि सम्बन्धी वार्ता।

५-१२-१४

दत्तूजी केस के सिलसिले में मिलने आये, उनसे वार्ता। अमरचन्दजी व नागोरीजी से वार्ता। आज कपास की गांठें वहुत ली गईं। जीन में गये। वहां से लखमीचन्द व नागोरीजी से मिलकर पोद्दार के वगीचे गये। कल सुवह अपने वगीचे में श्रीधर खरे की तरफ से भोज का निश्चय हुआ। उसकी व्यवस्था की।

६-१२-१४

११ वजे वगीचे श्रीधर पंत की तरफ से अपने वगीचे में मित्र-मण्डली का भोजन था। १२।।। वजे जीमने वैठे। आंवले के नीचे दाल, बाटी चूरमा आदि का भोजन हुआ। वम्वेवाले कप्तानसाहव आनेवाले थे। दुकान होकर वह स्टेशन गये। उन्हें फलाहार कराया। मेल लेट थी।

सीतारामजी आर्वीवाले से वार्ता। घर दत्तूजी के मांजी के आग्रह के कारण श्रीराम के आंगी-मेवा देखने गये। अकोला के सब लोग घर आये। उनसे वार्ता। आज भोजन नहीं किया। रात में कुछ बुखार हो गया। खांसी व अस्वस्थता थी।

७-१२-१४

रात में ज्वर हो आया था। शरीर अस्वस्थ हो गया। डाक्टर बापट आया। दवा वगैरा ही। नागोरीजी व लखमीचन्द से वार्ता। पुस्तक पढ़ी। २ बजे दुकान में पत्र-व्यवहार। भुसान का नया साहब मिसानू आया। उससे वार्ता। अकोलेवाले बहुत-से सज्जन हिंगनघाट बरात में जाकर आये। उनसे वार्ता। उन्हें घर पर ही भोजन कराया। बोर्डिंग आदि बताया। रात में लखमीचन्द व भगवानदासजी झुंझुनवाला से वार्ता।

८-१२-१४

तबीयत कुछ अस्वस्थ थी। अल्प भोजन किया। नागोराजी से वार्ता। दुकान पर भुसान कम्पनी का साहब आया। आज बगीचे में इन ४ साहबों को हिन्दू खाना खिलाया। उन्होंने बड़े ही आनन्द से खाया। दाल, पकौड़ी, पापड़, चावल वगैरा बहुत पसन्द किये।

९-१२-१४

बम्बेवाले साहब यवतमाल से वणी जाने को आये। उनके लिए चाय व फलाहार की व्यवस्था की। उनसे वार्ता।

दत्तूजी के यहां, बिल्कुल मन न रहने पर भी, उनको गलतफहमी न हो इससे, कच्ची रसोई जीमने गये। तिलक वगैरा का नेग नहीं लिया। पूज्य रामगोपालजी से वार्ता। पोद्दार के यहां होते हुए घर आये। भुसानसाहब से वार्ता। नागपुर में नमूने के तौर पर खरीदी की। जीन-कार्य देखा, डा० बापट की तरफ से दामोदर पंत खरे के बगीचे में पार्टी थी। उनका ज्यादा आग्रह होने के कारण वहां गये। बिलकुल थोड़ी दूधीपाक लेकर खरेसाहब के साथ घर आना।

१०-१२-१४

जाजूजी से जीन प्रेस, जाइन्ट आदि की वातें। मोतीलालजी मोहता मिलने आये।

११-१२-१४

दत्तूजी के आग्रह से नांवे वांटने गये। ५ वजे तक वहां रहे। वाद में जीन होते हुए पोद्दार के वगीचे गये। भगवानदास से विरदीचंदजी की वार्ता। रात में पत्र लिखे।

नागपुर-वर्धा १२-१२-१४

मेल ट्रेन से मि० सावा के साथ नागपुर आये। रेल में दादाभाई के मैनेजर से जीन प्रेस-संवंधी वहुत-सी वातें हुई। नागपुर में दादाभाई के जीन प्रेस देखे। ओटाई, वंघाई की निगाह की। भार्वी सभापति प्रेस में भुसान की गांठें वंध रही थीं। माल ठीक था। पोद्दार के वंगले पर जल्दी में भोजन किया। दादाभाई की मोटर में मि० सावा को लेकर सावनेर गये। कारखाना देखा। ७२ वोरे खरीदे। ४। वजे वापस नागपुर आये। नागरमलजी से वार्ता। कलेवा करके ५ की गाड़ी से वर्धा रवाना।

वर्धा १३-१२-१४

जाजूजी व काले मास्टर के साथ प्ले ग्राऊंड। विद्यार्थियों के लिए खेल-कूद की जगह देखी। नये प्रेस के सामने की पसंद आई। नागपुर व सावनेर के काम की व्यवस्था। पोद्दारों के वगीचे में भुसानसाहव से वार्ता। स्कूल-कमेटी का कार्य किया।

१४-१२-१४

रात में वर्षा हुई। सुवह मेल ट्रेन से मि० सावा के साथ नागपुर गया। मि० गोपालराव देशमुख मिले, उनसे वार्ता। नागपुर में दादाभाई जीन प्रेस में आगे। काटन मार्केट में ५-६ गाड़ियां लीं। वाजार की रंगत देखी। पोद्दारों के यहां भोजन किया। इतवारी में गोपीजी से वार्ता। उन्होंने काम करने की इच्छा वहुत वतलाई। इन्हें ६ आना सैकड़ा आढ़त भर देने को कहा। काम वरावर करने के लिए समझाया। दादाभाई जीन प्रेस जाकर

एम्प्रेस मिल में नागरमलजी से वार्ता। मि० सोरावजी मैनेजर से मिले। लड़ाई व व्यवहार-संवंधी वार्ता हुई। अमरचंदजी पुंगलिया के साथ मारवाड़ी कालेज वोर्डिंग देखने गये। सवसे वार्ता। भगवानदासजी से बात-चीत।

वर्धा १५-१२-१४

पोद्दारों के वंगले पर निवृत्त होकर कॉफी ली। मिल में नागरमलजी के साथ मि० एंडरसन के यहां गये। सब बातें कहीं। बुधवार को वर्धा आने को कहा। काटन मार्केट में रायली के बड़े साहब से दो-दो बातें हुईं। थोड़ी कपास की गाड़ियों के बोझ लिये। इतवारी में गोपीजी के घर जीमे। बाद में गोपीजी के साथ दादाभाई वगैरे मिले। शिवनारायणजी राठी से व दलाल से वार्ता। मैनेजर माणकजी से लिखा-पढ़ी आदि सब व्यवस्था की। पोद्दारों के बंगले होते हुए नागरमलजी से मिलकर स्टेशन आये। ४-५५ की गाड़ी से वर्धा घर पहुंचकर भोजन-आराम।

१६-१२-१४

मि० सावा से नागपुर एजेंसी-संवंधी वार्ता। मि० अत्रे के यहां होते हुए पोद्दारों के यहां गये। ५० गांठों का सौदा किया। २०० खंडी विनोला का भी। पूज्य जीवराजजी से वार्ता।

मिसेस फ्रांसिस डाक्टरनी से जचकी-संवंधी वार्ता। मिस एंडरसन व छोटी वाई नर्स मेल से आई। उन्होंने कमला की मांजी को भली प्रकार देखा-भाला। ७।। की गाड़ी से वे नागपुर गये।

१९-१२-१४

स्टेशन गये। वंवई से श्रीयुत वल्लभनारायणजी दानी आये। उनकी व्यवस्था की। बेंच में मुकदमे किये। वल्लभनारायणजी के साथ बगीचे गया।

२०-१२-१४

वल्लभनारायणजी से वार्ता। शाम को वल्लभनारायणजी, नागोरीजी के साथ टेकड़ी तक घूमने गये। आज विद्यार्थियों को फल-पार्टी दी। अमरूद व चिवड़ा खाया। जाजूजी से मिलकर वार्ता।

नागपुर २१-१२-१४

मेल से मि० सावा के साथ नागपुर। मियोरियेका व क्वाय कलकत्ते से बंबई गये। नागपुर से वर्धा तक वार्ता। नागपुर बाजार में कपास खरीद की। जीन प्रेस की व्यवस्था देखी। शिवनारायणजी राठी के यहां भोजन। मेल से वर्धा।

वर्धा २३-१२-१४

वल्लभनारायणजी के साथ घूमने गये। श्रीनिवास, मि० दुबे तहसीलदार के घर के सब लोग भोजन करने आये। वेंच के मुकदमे का कार्य ६ वजे तक किया। वल्लभनारायणजी से घर पर वातचीत।

नागपुर-वर्धा २४-१२-१४

बंबई से मि० टक्याउची नागपुर मेल से आये। उनसे व्यापार-संबंधी बातचीत। मि० येलमिन कप्तान के साथ वार्ता। नागपुर जीन प्रेस-व्यवस्था। नागरमलजी से वार्ता। रायली कंपनी से जीन प्रेस में जाकर रुई का सौदा किया। रायली के साहब से बहुत-सी वार्ता। मेल से वर्धा।

२५-१२-१४

मि० टक्याउची असिस्टेंट मैनेजर भुसान से व्यवहार-संबंधी बातचीत। जापान की नई कंपनी आई। उसकी मुकदमीदलाली की वल्लभनारायणजी के साथ बात की। जथा-संबंधी बातचीत की। डाक गाड़ी से भिसानु बंबई गये। टक्याउची अमरावती व जाजूजी आर्वी तथा अमृतलालजी उपदेशक मेरठ गये।

हिंगनघाट-वर्धा, २६-१२-१४

९ वजे भोजन वगैरा करके हिंगनघाट गये। लक्ष्मीनारायणजी डिस्ट्रिक्ट जज तथा वल्लभनारायणजी दानी साथ में थे। मथुरादास मोहता से मिले। ७५० रुपये वार्षिक, पांच साल तक, देने को कहा। बाद में इस रकम का अंदाजन ब्याज देखकर आध आना एकदम स्थायी फंड में देना कबूल किया। मोतीलालजी व वेलचमसाहब आये। गाड़ी व वोझा का लाग कबूल किया। प्रेमसुखदासजी का मन कम था। पोद्दार के यहां होकर दोपहर वर्धा आया।

६-१-१५

वल्लभनारायणजी के साथ जैन बोर्डिंग का निरीक्षण किया। मकान वगैरा देखा। वस्ती में घूमकर, कान में दवा डलवाकर घर आये। हरदास सा० घर आये थे, उनसे मिले। सपलाय बिल-सम्बन्धी वार्ता। बाल बनवाये। मामूली व्यवहार-कार्य किया। घूमते हुए जीन प्रेस, एम्प्रेस जीन, वर्धा जीन प्रेस आदि देखने गये। रात में रामा दलाल आया, गहनों पर १५०० रुपयों के विषय में बातचीत की। शिवनारायण को सावनेर आदि के विषय में समझाया। चिमनीराम नागपुर से आया।

पुलगांव-वर्धा ७-१-१५

वल्लभनारायणजी के साथ सुबह ही पैदल घूमने गये। कान में दवा डलवाई।

१०।। गाड़ी से पुलगांव गये। वल्लभनारायणजी, श्रीनिवासजी सरावगी (छपरेवाला) व कमला साथ थी। पुलगांव मिल देखी। दुकान जाकर व्यवहार-कार्य देखा।

श्रीधर पोद्दार आदि के साथ गाड़ी से वर्धा रवाना हुए। दौलतरामजी भरतिया से नागपुर जॉइन्ट-सम्बन्धी वार्ता। वर्धा में व्यवहार-कार्य देखा। जीन में नरम माल की व्यवस्था ठीक नहीं मालूम दी।

८-१-१५

वल्लभनारायणजी दानी की बम्बई जाने की तैयारी। उनसे बातचीत करके बगीचे आदि गये। आज वल्लभनारायणजी के साथ जाजूजी, श्रीनिवासजी सरावगी आदि को जीमने बुलाया। भोजन के समय बातचीत। स्टेशन पर मेल से रामेश्वरजी बिड़ला कलकत्ता से बम्बई जा रहे थे। जीवणलाल (मूलजी जेठावाला) भी जा रहा था। धामणगांव तक दानीजी व बिड़लाजी से वार्ता। वापस आकर श्रीनिवासजी से मिले। फलाहार व भोजन किया।

९-१-१५

बगीचे में लक्ष्मणराव राजा की मांजी आई, उनसे बातचीत। अस्पताल जाकर कान में दवा डलवाई। डागाजी आदि हिंगनघाट से आये। व्यवहार-कार्य।

१०-१-१५

आज बैंच में मुकदमे बहुत थे। वहां गये। चिमनीराम बम्बई गया। गोदाम वगैरा के लिए बम्बईवाले सा० मिले। पुलगांव से बंशीलाल वगैरा आये।

१३-१-१५

जीन प्रेस, बगीचा आदि गये।

नरसिंहदास के कंपाउण्ड में गये। बोर्डिंग का कार्य देखा। निरीक्षण करते थे कि श्रीनिवासजी छपरेवाले आये। उनसे बातचीत।

१४-१-१५

आज तिल संक्रांति है। बादल और सर्दी है। पानी का भी रंग होने से कपास की व्यवस्था की और बापट डाक्टर के घर तक उनके साथ गये। हरदत्त-रायजी सरावगी व श्रीनिवासजी छपरेवाले जीमने आये, उनसे वार्ता। डाकगाड़ी से छपरेवाले गये। पूज्य रामगोपालजी स्टेशन पर मिले, उनसे बातचीत की। शाम को जीन में गये। पानी का रंग जोर का दिखाई दिया। नागपुरवाले सुले ब्रदर्स आये। जाजूजी साथ थे। १० रुपये दिये। शाम को बोर्डिंग में भोजन किया।

धामणगांव-वर्धा १५-१-१५

जीन में गये। बादल थे। अब्दुल हुसैन व दत्तूजी आये। ११ की गाड़ी से धामणगांव गये। भुसान का खरीदी का काम देखा। श्रीनारायण वगैरा नहीं मिले। बंशीजी, भगवानदासजी आदि भी बाहर गये हुए थे। फत्ते-लालजी व भागचंदजी से वार्ता। एक्सप्रैस से वर्धा वापस आया

वरोरा १६-१-१५

९ बजे की गाड़ी से वरोरा रवाना हुए कि फूलकुंवर की मां आ गई। गाड़ी खड़ी करवाई, उनके साथ हिंगनघाट तक गया। रास्ते में बातचीत की और समझाया। वरोरा में मोतीलालजी को जीन दिखाई। बाजार में अजीतमलजी मिले। प्रेस का फैसला हुआ। २०० खंडी सरकी (बिनौले) १०॥ के भाव में बेची। पानी का रंग दिखाई देता रहा। पोद्दारों के यहां

जीमकर जल्दी स्टेशन पहुंचकर चांदा तार से विरदीचंदजी के वारे में पूछा। पता नहीं लगा, मिलने की इच्छा थी। वेटिंगरूम में सोये। वर्षा जोर की आई। कप्तान साहव आये। उनसे वातें की। रात को गाड़ी से रवाना हुए। सुवह गाड़ी में उठे। वम्बे वाले मिल गये। उनको चाय वगैरा पिलाई। वर्षा जोर की हुई थी। ७ वजे घर पहुंचे।

वर्धा १७-१-१५

रात में पानी वहुत वरसा। आज भी वर्षा थी। अकोला, नागपुर में भी वर्षा हुई। खवर आई, मद्रास में ८।। इंच पानी हुआ। आज का दिन सुस्त मालूम हुआ, ठंड थी।

१८-१-१५

जीन में गये। आज मुकदमे थे, सो वहां से टाउन हॉल में गये। वहां ३ घंटे रहे।

२०-१-१५

नागपुर से मिडवाईफ छोटी वाई आई। उससे वार्ता।

विठोवा थोडगे आया। रकम जमा करने की वावत कहा। कवूल नहीं किया।

२१-१-१५

रामनाथजी की वाई के विवाह की जनेत वावनवीर से आई। उसके साथ रामनाथजी के वगीचे में १ घंटा रहा। पत्र आदि व्यवहार-कार्य किया। रथ-निकासी में गये। विद्यार्थी पूज्य रामगोपालजी से मिले व उनसे वात-चीत की।

२२-१-१५

मि० सावा वंवई से आया, उससे वातचीत की। जयदेवजी खंडेलवाल आये। साथ में भोजन किया। विश्राम और वाद में भुसानसाहव से वार्ता की। रामनाथजी के यहां नांवे (दक्षिणा) वटाने के लिए गये। ठहराव मुजव कार्य हुआ। खंडेलवाल ने नांवे नहीं लिये। घर पर ब्रजमोहनजी सांवलका के जमाई कानपुर से आये थे। उन्हें भोजन वगैरा करवाया।

डाक्टरनी वगैरा की व्यवस्था की। रात में ८ बजकर १० मिनट पर पुत्र-जन्म हुआ। बाद मिलने-भेंटनेवाले आये। उनसे बातचीत की। कानपुरवाले रात में गये। रात में नींद बराबर नहीं आई।

२३-१-१५

स्नान करके जाजूजी के यहां गया। बाद में डाक्टर बरट, सिविल सर्जन मिलने आये। कमला की मां और गीगले (लड़के) को देखा। डाक्टरनी ने छोटी बाई को समझा दिया।

दत्तूजी वगैरा रामनाथजी के भंडार (मिठाई की पत्तलें बंटती हैं वह स्थान) में गये। १२ बजे आकर भोजन करके विश्राम किया। पूज्य बिरदीचंदजी पोद्दार आये। उनसे वार्ता। जनेतवाले आये। उन्हें बोर्डिंग दिखलाया और बातचीत की। टाउन हॉल, मुकदमे किये। थोड़ी देर घर पर रहा। जयदेवजी खंडेलवाल आदि आये। उनके साथ बोर्डिंग, बगीचा आदि गये। रात में १२॥ बजे वापस लौटना हुआ।

२४-१-१५

प्रेस, पोद्दारों तथा जाजूजी के यहां होकर दुकान आया। पत्र वगैरा लिखे। बोर्डिंग गया। डाक्टर वापट से गरीबों को अपनी चिट्ठी से दवा देने के विषय में बात करके फीस ठहराई। पोद्दारों के बगीचे गया। पूज्य जीवराजजी से वार्ता। रात में रामनाथजी के यहां कन्या के विवाह का जीमण था, वहां जीमने गये।

२७-१-१५

भुसान की कंपनी को एकदम एक हजार गांठें ५०० रुपये के भाव में दीं। जीन प्रेस होकर बगीचे गया। टेनिस खेले। मि० साबा साथ में थे।

नागपुर-वर्धा २८-१-१५

मेल से नागपुर गये। रास्ते में बामनराव घारपुरे वकील के साथ बातचीत। जीन व प्रेस में जाकर मि० साब्रा से मिले। व्यवस्था देखी। निरीक्षण करके भोजन के बाद मार्केट गये। बाद में दारसा जीन में, जहां खरीदी थी, जाकर सब कार्य देखा। पिसानु के साथ बंगले गये। वहां बहुत-सी बातचीत

हुई। वह प्रसन्न हुआ। डाक-गाड़ी से वर्धा।

सर कस्तूरचंदजी से नागपुर व वर्धा में बहुत-सी बातें। वह हिंगनघाट गये। दादाभाई से वार्ता। रेल में श्री बुटी से भी थोड़ी बातचीत हुई।

२९-१-१५

जाजूजी के यहां बिरदीचंदजी भी मिले, उनसे बातचीत हुई। मि० हेलेट-साहब, डिप्टी इंस्पेक्टर पुलिस मिले। उनसे बहुत-सी बातचीत हुई। बड़े लायक सज्जन मालूम हुए। मि० साबा से बहुत देर तक खानगी बातचीत हुई। उसने सब बातें खानगी कहीं।

सेलू ७-२-१५

सुबह की गाड़ी से सेलू गये। वर्धा के तहसीलदार से बातचीत। जनेत सब विदा करके ११ बजे सेलू पहुंचे। भोजन, बातचीत व नेगचार हुए। सम्मे-लन शाम को हुआ। शाम को ही भोजन करके वर्धा आने की तैयारी थी, पर नथमलजी ने बहुत जोर देकर रोक लिया। वर के बारे में बातचीत।

वर्धा ८-२-१५

जाजूजी, टिकमदासजी आदि से मिलकर घोराड गये, नदी में स्नान व मंदिर में संध्या की। मंदिर मौके पर अच्छा बना हुआ है। भोजन कर पंचायती विवाह पर वार्तालाप दस घंटा। लाला के यहां शयन। कुश्ती-संबंधी वार्ता। लायब्रेरी देखी, प्रबंध ठीक था। बगीचे आये। नाच होता था, इसलिए नथमलजी को समझाकर डेरे आये। वहां टिकमदासजी आदि बैठे थे। उनसे बातचीत। शाम को रामधनजी चूड़ीवाले के यहां भोजन किया। तिलारावालों से मिलकर पौनार स्टेशन तक वार्ता करते हुए पैदल आये। जाजूजी व परमानंद साथ में थे। १२॥ बजे रात में घर आये।

१२-२-१५

जल्दी निवृत्त होकर डाकबंगले गया। नायडूसाहब के इलेक्शन का प्रबंध ठीक था। वहां देरी थी, इसलिए ब्राह्मणपुरा होकर फिर टाउन हॉल गया। ११ बजे इलेक्शन शुरू हुआ। पांडे को पांच वोट मिले।

१३-२-१५

तबीयत अस्वस्थ थी। बुखार मालूम दिया। खिचड़ी खाई। शयन ४ बजे। डा० बापट आये, उन्होंने देखा। १०० डिग्री बुखार था। बालूजी, हीरालालजी आदि आये। उनसे बातचीत। रात में शिवनारायणजी से व्यवहार-संबंधी वार्ता। गंगाबिसन से बोर्डिंग की जानकारी ली। खानगी में सुधार-संबंधी जानकारी ली। ११ बजे रात में शयन।

१४-२-१५

तबीयत ज़रा ठीक मालूम हुई। गोविंदराम पोद्दार आये। वरोरा-जीन-संबंधी वार्ता। मि० नायडू वकील, शंकरराव करमरकर, देवराव देशपांडे, डा० बापट, जाजूजी आदि आये। उनसे बातचीत। ११ बजे भोजन। गियाजी आये, उनसे करमकर के विषय में बातचीत। बाद में हरी शास्त्री व सोहनी मास्टर आये। सोहनी का वर्ताव अहंकार से भरा हुआ मालूम हुआ। गोपालरावजी देशमुख आये। उनसे बातचीत। राहरिका (गांव) के देशमुख, मि० नारायणराव (बी० ए०-फेल) आये। उनसे वार्ता। उनके उत्साह में संदेह लगा। १००० रुपये अथवा दो वर्ष स्कूल-मास्टर की नौकरी की इच्छा बतलाई। गोपालरावजी ने करमरकर के लिए दो वोट तय कर दिये।

१५-२-१५

मि० नायडू आदि आये। इलेक्शन हुआ। पाटिलपुरे में मि० करमरकर को दो वोट ज्यादा मिले। खुशी हुई।

डाकगाड़ी से मि० मोरियेका व कवाबादा बम्बई से नागपुर होकर आये।

हिंगनघाट-वर्धा १६-२-१५

मि० मोरियेका भुसान के मैनेजर हैं। मि० कवाबादा कॉटन कम्पनी के मैनेजर ओसाका व मि० साबा के साथ हिंगनघाट गये। मि० बेलचम (हिंगनघाट मिल के अंग्रेज मैनेजर) मोटर लेकर आये। मिल वगैरा भली प्रकार दिखलाई। घर ले गये। जीन-प्रेस देखकर स्टेशन आये। वहां बातचीत की। वर्धा पहुंचकर मि० मोरियेका तथा मि० कवाबादा को बगीचे में हिन्दुस्तानी

भोजन के लिए बुलाया। आनन्द और प्रेमपूर्वक उन लोगों का भोजन हुआ। पैसेंजर से अमरावती के लिए उन्हें भली प्रकार विदा करके घर आये। हाईस्कूल गये।

१७-२-१५

पूज्य रामगोपालजी के पास जाइण्ट के कागजों पर सही के लिए गये। आखिर उनका अभिप्राय जाना। वे सही नीचे करना नहीं चाहते थे, इससे अपने नाम पर इनके नाम की पट्टी व उनके नाम पर अपने नाम की पट्टी लगा-कर सही की। उनके कहने से वहां भोजन किया। घर आये।

वगीचे जाकर टेनिस आदि खेले। रात में जाजूजी से वार्ता।

१८-२-१५

मि० सावा से वार्ता। रुई के नमूने आदि दिखलाये।

श्रीधरजी पोद्दार दुलसीव से आये। उनकी व दुलसीव मिल के मैनेजर नायडू की तकरार हो गई, वह बात बताई।

मि० जाल बॉरिस्टर आये। खरेसाहब को प्रेसिडेंट बनाने को कहा। बात-चीत के बाद वगीचे आकर टेनिस आदि खेले। घर पर भोजन। श्रीधर-जी आये, खरेसाहब से मिले, उन्होंने सब बयान किया। द्वारकादास भैया से घर पर वार्ता। उसे रुपये ८५ मासिक की नौकरी के लिए कहा।

१९-२-१५

जीन में गये। दो नम्बर का माल जीन में चलवाया। दुकान में व्यवस्था-कार्य देखा। लक्ष्मण बजाज को मलखम करते हुए चोट लग गई।

१॥ बजे रुस्तमजी पारसी आया। जीन में नरम माल था, उसे दिखलाया। उसने दूसरे रोज आने को कहा।

कन्हैयालाल राठी हिंगनघाट से आया। वार्ता। गोपाल राठी, शिवदत्त राठी का भतीजा, नागपुर में चलता रहा (मृत्यु हुई)। उसके यहां बैठने गये. वहां से दूकान होकर बगीचे गये। वहां टेनिस, पेशंस आदि खेल खेलते रहे। रात में लक्ष्मण की देखभाल कर जाजूजी से बातचीत।

मारवाड़ी शिक्षा मण्डल के फार्म पर सही कर दी।

देवली २०-२-१५

चिमनीराम व द्वारकादास को वरोरा भेजा। स्नान, भोजन के वाद प्रेस, होकर रुई वाजार गये। फिर घर आकर विश्राम व पत्र आदि लिखे। ३॥ बजे देवली घोड़ी के टांगे में मनसुखलाल के साथ रवाना हुए। रास्ता खराव था, घोड़ी दो-तीन जगह दो पांव से खड़ी हो गई, जीन में ५-१० पर पहुंचे। जीन का निरीक्षण किया। भोजन करके नानाजी थोडगे से वार्ता। शयन।

वर्धा २१-२-१५

महादेवलाल की वाड़ी में मुंह-हाथ धोया। सन्तरे लिये। वर्धा के तहसीलदार व लोये साहव मिले। उनसे वार्ता। जीन में मुलाकातवाले आये। दलालों को पेठ जमाने के बारे में वहुत-सा समझाया। स्नान करके भोजन किया। 'अमरीका में गरीव विद्यार्थी'[1] पढ़ा। वाद में २।। बजे तहसीलदारसाहव आये। स्वामी आत्मारामजी आये, चने, गेहूं, वटाने (मटर) का हुड्डा भली प्रकार हुआ। सन्तरे खाये। वाद में सव मिलकर नानाजी थोडगे के यहां पान-सुपारी के लिए गये। वहां राठीजी चुन्नीलालजी से फत्तेचन्द वार्ड में मिले। सुपरफाइन हाथ करघे का ४१ वोझा ५८ रतल ३४५ रु० में लिया। ६। बजे रवाना होकर वर्धा पहुंचे।

वम्वई २६-२-१५

निवृत्त। रामनारायणजी से वार्ता। नागरमल सूरजमलजी के मुनीम आये। उनके साथ चेक की जोखम का व दरसनी हुंडी का खुलासा किया। हुंडी की जोखम, धारे मुजव जिसको लागू पड़े उसकी चेक का जोखम रास्ते की भेजनेवाले की व आदमी की जोखम आड़तिये की, आदि की खुलासा किया। १२-५ की गाड़ी से वम्वई आया। दामोदरदासजी राठी के साथ वातचीत की। शिवनारायणजी नेमाणी आदि से मिले। दामोदरदासजी के साथ वालकिसनदास फत्तेलाल की दुकान पर गये। उनके पास से दिवाली तक का शिक्षा-मण्डल का हिसाव लिया। शाम को प्रार्थना-समाज में होलिका-सम्मेलन की

---

[1] स्वामी सत्यदेवजी परिव्राजक लिखित पुस्तक।

सभा थी, उसमें गये। दानीजी साथ थे। व्याख्यान ठीक हुए। श्री देवधर, कवि शंकर, मदनलाल आदि ठीक बोले। १० वजे अंधेरी आया।

बम्बई २७-२-१५

सीतारामजी सिंयानिया, शंकरभाई आदि के वंगले देखे। भेरूंप्रसादजी से वार्ता। उन्होंने घर का हाल कहा।

१२-१५ की गाड़ी से दादर आया। मोटर में माटुंगा, हनुमानजी के दर्शन कर रामनारायणजी के साथ कालवादेवी गये। गामडिया, भुसान आदि के आफिस व स्कूल आदि गये। सामान लेते हुए कुलावा गये। वहां का रंग देखा। वाद में मारवाड़ी विद्यालय का नया मकान वनते हुए देखा। दानी-जी से मिला। ग्रांटरोड से माटुंगा उतरे। रामेश्वरजी व माधोप्रसादजी से मिले। वहीं भोजन किया, ११॥ वजे अंधेरी आये।

वर्धा रवाना २८-२-१५

शीघ्र निवृत्त हो रामनारायणजी रुइया से व्यवहार-सम्वन्धी व विद्यार्थी-गृह व विद्यालय सम्वन्धी वार्ता। उन्होंने कहा, यहां दुकान होना ठीक है।

९-२० की गाड़ी से ग्रांटरोड आया। मगनवाई से मिलकर दानीजी के यहां विद्यालय-सम्वन्धी वातचीत की। प्रेम से भोजन किया। वाद में वल्लभ-नारायणजी के साथ वोरीवंदर आये। सामान आने में बहुत देर हो गई। सेकेंड क्लास खाली न होने से फर्स्ट क्लास में वैठे। नागरमलजी पोद्दार नागपुरवाले, रामेश्वरजी विड़ला, वल्लभनारायणजी, सूरजमलजी के दुकान दार आदि आये थे। उनसे वातचीत। १ वजे गाड़ी चली। मनमाड में जल पीया। चिवड़ा, दाल व फल खाये। भुसावल में शयन।

वर्धा १-३-१५

सुवह मेल से वर्धा पहुंचे। धामणगांव से ठंड शुरू हुई,। रात में वर्धा की तरफ वर्षा हुई, ऐसा मालूम हुआ। मि० सावा स्टेशन पर मिला। वह नागपुर गया।

भोजन, विश्राम, जाजूजी से वार्ता। शाम को विद्यार्थियों के खेल वगैरा देखे। रात में ८ वजे होली-पूजा में गये। वहां से वापस आकर पूज्य राम-

गोपालजी, विरदीचंदजी आदि से मिलकर ११॥ वजे रात में शयन।

२-३-१५

रात में वर्षा खूब हुई। आज छारेंड़ी (धुलेंड़ी) थी। उसका प्रवन्ध किया। विद्यार्थियों को व बाल-प्रबोधनी सभा के मेम्बरों को समझाया। लेडी सर्कस कम्पनी से ५० रुपये में खेल ठहराया। अपने वार्ड में सर्कस और सभा आदि का प्रवन्ध किया। पानी जोर का आया। २॥ बजे सर्कस शुरू हुआ। बहुत-से मारवाड़ी स्त्री-पुरुष व इतर लोग भी काफी जमा हो गये। कसरत का काम स्त्रियों ने अच्छा किया। सर्कस खतम होने के बाद विद्यार्थियों के होली-सम्बन्धी, बोधप्रद गायन हुए। बाद में रा० ब० खरे का 'होली का महत्व' इस विषय पर व्याख्यान हुआ। मि० पाण्डे ने आभार माना। ठंडाई-पान आदि की व्यवस्था थी।

३-३-१५

वर्षा हो रही थी। लड़कियों की स्कूल कमेटी में गये। डिप्टी कमिश्नर नहीं आये। लेडी सर्कस कम्पनीवाले आये, इन्हें ५० रु० कल के खेल के दिये। वंशीलाल व महादेवजी पुलगांव से आये। वार्ता। २१ गांठें साधारण ४६॥) रु० में खरीदीं। सर्कस कम्पनी की दो स्त्रियां मिलने आईं, उन्हें घर से कुछ कपड़ा वगैरा इनाम दिलाया। एक स्त्री चालाक मालूम हुई। सर्कसवाले बैंड बजाने आये, १०-५ गत अच्छी बजाईं। बोर्डिंग गये।

४-३-१५

लड़कियों के स्कूल में गये। डिप्टी कमिश्नर मि० बैचलर आये। जगह बढ़ाने का मौका देखा। रा० ब० खरे, कामा आदि से वार्तालाप।

५-३-१५

मेल के समय पर स्टेशन गये। मि० सावा (भुसान एजेंट) नागपुर गया। उससे बातचीत। जीन होकर घर आया। धामणगांववाले श्रीनारायण का हाथ दिखलाने के लिए अस्पताल गये। सिविल सर्जन को दिखाया। उसने सोमवार को बुलाया। बाद में स्नान-भोजन किया।

१२।। वजे सिविल सर्जन घर आये, गीगला को देखा। उनसे वातचीत हुई। टाउन हॉल में मुकदमे किये। जाजूजी से वातचीत की। रायवहादुर खरे से म्युनिसिपल चेयरमैन के सम्बन्ध में वातचीत की।

पोद्दार के वगीचे में रामराव आदि के साथ वैडमिंटन खेला। नायडू वकील से मिलकर दत्तूजी के मुकदमे के वारे में कहा। वाद में चेयरमैन के सम्बन्ध में वातचीत। ९। वजे घर आकर भोजन किया।

नागपुर ६-३-१५

निवृत्त हो मेल गाड़ी से नागपुर के लिए रवाना हुए। वहां भुसान एजेंट के वंगले पर वातचीत की। व्यवहार-कार्य व व्यवस्था-सम्बन्धी सब समझाया। वहां से जीन प्रेस गये।

भोजन करके कॉटन मार्केट में गये। गाड़ियां कम थीं। नागरमलजी मिले। उनके साथ मिल के सम्वन्ध में सर ब्रेजनजी सोरावजी, एम्प्रेस मिल-मैनेजर से वातचीत। वंगले आये। वाद में जीन प्रेस गये। वहां से तेलनखेड़ी गये। वहां फोटो लिये। भुसान वंगले पर घोड़ी के पास कोई न रहने के कारण सामान तोड़ डाला। टमटम को नुकसान हुआ। भाड़े के टांगे में तेलनखेड़ी से फोर्ट होते हुए शीघ्र ही स्टेशन गये। फिर भी रामटेक की गाड़ी चूक गई। आदितवारी गये। वहां से भी गाड़ी चूक गई। फिर टांगे से रामटेक जाने का निश्चय करके जीन प्रेस में आये। साहव से वार्ता। दादाभाई सेठ से मिल-कर जो ठहराव हुआ, वह उन्हें वताया। उन्होंने वहुत खुशी के साथ कहा कि कोई हर्ज नहीं तुम काम लो। वाद में भोजन करके टांगे से रामटेक ९।। वजे रवाना। रामटेक से ६ मील दूर पर आंवुडा रात में १२।। वजे पहुंचे। वहीं सोये।

रामटेक-वर्धा ७-३-१५

सुवह आंवुडा से तांगे में वैठकर रामटेक गये। तहसीलदार मि० दुवे दौरे पर थे। आंवुडा में सर कस्तूरचन्दजी के मकान (धर्मशाला) में उतरे। हिस्लाप कालेज के संस्कृत टीचर मिलने आये। उनसे वार्ता। विद्यार्थियों से रामटेक-सम्बन्धी जानकारी ली। १ वजे स्नान, भोजन व आराम किया। ३। वजे

पिसान् व सावा भुसान के एजेंट नागपुर से मोटर में आये। उनको गोपीजी के साथ सन्तरे वगैरा खिलवाये। वाद में रामसागर तालाब देखा। दृश्य मनोहर था। जुडीशियल कमिश्नर स्यानीयन साहब मिले। वाद में वहां बंगले में बैठे। साहब को वहां छोड़ा और वहां से टेकड़ी के नीचे मोटर रोककर पैदल ऊपर गये। दम फूल गया। धूप थी। डाकबंगले में विश्राम किया। बाद में श्री रामचन्द्रजी लक्ष्मणजी के दर्शन किये। ऊपर से नीचे का दृश्य ठीक दिखा। डेरे पर जल पीकर मोटर से दुबेसाहब के घर गया। वहां जल व फल लेकर ६॥ बजे नागपुर पहुंचे। रास्ते में तबीयत खराब हो गई। १२ बजे रात में वर्धा पहुंचे।

वर्धा ८-३-१५

जीन की गांठें जो पोते (सिल्लक) हैं, वे दर २०७ रु० में वेचने का निश्चय करके बम्बई तार दिया। बोर्डिंग में गये। भोजन व विश्राम किया। जीन प्रेस गये। रुस्तमजी पारसी से बातचीत की। डाकगाड़ी पर गये। सानू साहब नागपुर से बम्बई गया। फूल-हार पहनाकर वातचीत की। बम्बेवाले साहब से मिले, वार्ता। गोपीजी नागपुर से आये। वगीचे जाकर टेनिस खेले। गदुरामजी आये। पूज्य रामगोपालजी ने ५-७ रोज में व्यावर की तरफ जाने को कहा।

१०-३-१५

शाम को जीन व हाई स्कूल कमेटी में गये। वहां से साधुरामजी तुलाराम के वगीचे जीमने गये। लड्डू अच्छे बने थे। बाद में पोद्दार के वगीचे, लॉन में बैठे। बहुत-सी बातचीत हुई। पश्चात अत्रे वकील, जाजूजी आदि से मिलना।

११-३-१५

धामणगांववाला श्रीनारायण हाथ का इलाज कराने आया। श्री गोस्वामी द्वारिकाप्रसादजी भ्रमण करते हुए आये। उनकी व्यवस्था की। अब्दुल हुसैन इसाजी आदि आये। अस्पताल जाकर श्रीनारायणजी को दवा सुंघाकर सिविल सर्जन ने हाथ सीधा किया। जरा घबराहट मालूम हुई।

जाजूजी आज बम्बई गये, उनसे बातचीत। रात में म्युनिसिपल के ६ मेम्बर आये। नाली तथा म्युनिसिपल के अध्यक्ष के सम्बन्ध में विचार हुआ।

१२-३-१५

खरेसाहब को नाली के मुकदमे के विषय में कहा। नायडू वकील आये, म्यु० चेयरमैन की सीट की बात की।

गोस्वामी द्वारकाप्रसादजी (अलीगढ़ नजदीक के निवासी) आदि के साथ घूमने को गये। बाद में मि० चन्डीप्रसादसाहब, मि० हरदास साहब, जाल-साहब आदि से मिले। म्युनिसिपैलिटी के सम्बन्ध में बरटसाहब को छोड़कर और सब सज्जनों से मिले।

रात में ब्रजमोहन आदि से मिले।

१३-३-१५

नायडूसाहब व श्रीनारायण से वार्ता।

तबीयत थोड़ी अस्वस्थ मालूम हुई, शाम को खरेसाहब व पुलिस के डिप्टी सुपरिंटेंडेंट साहब से मिले। उनसे बहुत-सी वार्ता। बड़े ही योग्य सज्जन हैं। रात में श्री द्वारकाप्रसादजी गोस्वामी का आधुनिक सुधार के विषय पर अच्छा व्याख्यान हुआ।

१८-३-१५

बगीचे गया। वहां पूज्य बिरदीचंदजी आये, उनसे वार्ता। मि० ठाकुरदास मालपानी जापान काटन कम्पनी का सब-एजेन्ट आया। भोजन व विश्राम। रुस्तमजी पारसी आया। उससे बातचीत की। प्रेस में गांठें दिखलाईं। घर आये। तबीयत जरा अस्वस्थ मालूम हुई। सिर-दर्द था। जलवा (जचकी के बाद स्नान कर पूजा) का कार्य हो गया। नागपुर से गोपीजी, सावासा आदि आये।

बगीचे में आनन्द से मेला हुआ। रात में चर्चा हुई। भोजन नहीं किया।

१९-३-१५

बगीचे में बाल बनवाये। केसरी खंडेलवाल से नागपुर की हकीकत जानी। बालूजी आदि से वार्ता। उधारी-वसूली का कार्य देखा। लेना था उन्हें

नोटिस-नालिस आदि की सूचनाएं कीं। गणगौर निकली। घूमते हुए वगीचे गये। मेला ठीक हुआ। आज पक्की रसोई वनी थी। ८ वजे छत के ऊपर आनन्द से भोजन हुआ।

२०-३-१५

वगीचे जाकर नित्य कार्य किया। गोपीजी, सीववगस आदि मेल से नागपुर गये। श्रीनिवासजी आये व वाई रवीदेई के पावणा (पति) मदनमोहनजी इटावा में चलते रहे (गुजर गये) कहा। पूरा फिकर हुआ। १२वजे अन्दाज पूज्य रामगोपालजी की दुकान पर ठहरे। हरसामलजी के यहां वैठने गये। वहां से घर आये।

चित्त अस्वस्थ था। जोर देकर बुखार आया। १०३-१०४ डिग्री था। डाक्टर वापट ने दवा दी, रात में वेचैनी मालूम हुई।

मि० नायडू, राठी, रुस्तमजी आदि आये।

२२-३-१५

बुखार ऊपर से तो नहीं मालूम हुआ, वाकी अन्न पर रुचि नहीं थी, दवा ली। विश्राम किया। गोपालरावजी का निकाल (फैसला) ११००० रुपया की वातचीत।

२३-३-१५

गोपालराव, मणिलाल, कन्हैयालाल का निकाल ११००० रु० में किया।

२६-३-१५

म्युनिसिपल प्रेसिडेंट का इलेक्शन ७। वजे टाउनहॉल में हुआ। कई तरह का दवाव वग़ैरा पड़ा। थोड़ा विचार आया, तथापि मि० नायडू को ग्यारह व मि० कामा को तीन वोट मिले। नायडू प्रेसिडेन्ट हो गये, कामा वाइस प्रेसिडेन्ट। मि० नायडू घर आये।

२७-३-१५

दत्तूजी के लिए नायडू के घर गये। वेंच मुकदमे थे, वे किये। छोटे व बड़े कप्तान से मिले, उनसे वातचीत की। वगीचे में टेनिस खेली। रात में छत पर भोजन किया।

२८-३-१५

वगीचे गये। वल्लभकुल-संप्रदाय की हकीकत वगीचे में उतरे हुए भाटिया सद्‌गृहस्थों के ब्राह्मणों से सुनी। अन्याय।

सिविल सर्जन को कान दिखलाया, उसने साफ करके दवा दी। चित्त अस्वस्थ था। उधारी वगैरा का कार्य देखकर जाजूजी के यहां। वाद में पोद्दार के वगीचे में गोठ (स्नेह भोजन) थी, वहां गये। वार्ता और भोजन। ११ वजे घर आये।

चांदा ७-४-१५

वल्हारशा गाड़ी से उतरकर जूना किला देखा। वर्धा नदी में स्नान किया। वाद में आम के झाड़ के नीचे भोजन व विश्राम करके मन्दिर देखा। मैनेजर वाकरे के यहां वैठे। उनसे वार्ता। वर्धा से पूज्य कनीरामजी व शिवनारायण लघ्घड़ आये। खदान देखने गये। देखने योग्य थी। तीन घंटे तक देखी। वाद में नदी में जाकर खूब स्नान करके विश्राम किया। वरुडवाले सवाईरामजी के भाई की दुकान पर निहालचन्द खंडेलवाल ने वहुत खातिरदारी की।

८-४-१५

आज शरीर कुछ अस्वस्थ मालूम होता था। शाम को हरसामलजी के साथ वंगले गये। वहां से वगीचे और स्टेशन गये। दिल्ली से विरदीचंदजी पोद्दार आदि आये, उनके घर भोजन और नागरमलजी आदि से १०॥ तक वार्ता की।

१८-४-१५

आज ज़रा वुखार हो गया, शाम को पोद्दार के वगीचे गये। जाजूजी व विरदीचंदजी से बम्वई की दुकान-सम्वन्धी सलाह व वार्ता।

रेल में १९-४-१५

वर्धा से सेकेंड क्लास का डव्वा रिजर्व कराकर मेलगाड़ी से वम्वई रवाना।

बम्वई २०-४-१५

वालकेश्वर दानीजी के बंगले में उतरे। स्नान वगैरा करके भोजन किया।

दामोदरदासजी राठी मिलने आये, उनसे बातें। शरीर भारी मालूम हुआ। सोये, थोड़ी ठंड देकर बुखार हुआ।

२१-४-१५

बुखार उतर गया, पसीना बहुत आया। राठीजी से मिले।

नोट—१९१५ की डायरी २१-४-१५ तक की ही लिखी हुई है। वीच-वीच में कई तारीखों में कुछ भी नहीं लिखा है।—सं०

निर्देशिका

[जमनालालजी का जिनसे संपर्क हुआ है, उनके नाम इस डायरी में आये हैं। इन अनेक नामों में, एक ही नाम के एकाधिक नाम हैं; फिर भी जहांतक संभव हो सका है, सही व्यक्ति का सही स्थान पर निर्देशिका में उल्लेख करने और उनका परिचय देने का प्रयास किया गया है।]



जमनालाल बजाज सम्बन्धी साहित्य

जमनालाल जी	घनश्यामदास बिड़ला
श्रेयार्थी जमनालाल जी	हरिभाऊ उपाध्याय
स्मरणांजलि	सं० काका कालेलकर
मेरी जीवन-यात्रा	जानकीदेवी बजाज
जीवन जौहरी	रिषभदास रांका
रचनात्मक राजनीति	जमनालाल बजाज
जमनालाल बजाज की डायरी	सं० रामकृष्ण बजाज
बापू स्मरण	सं० रामकृष्ण बजाज
गांधी जी के साथ पत्र व्यवहार	सं० काका कालेलकर
TO A GANDHIAN CAPITALIST	
पांचवे पुत्र को बापू के आशीर्वाद	
बापू के पत्र (संक्षिप्त)	
पांचमा पुत्रने बापुना आशीर्वाद (गुजराती)	

अन्य पत्र-साहित्य

पत्र-व्यवहार—१	राजनैतिक नेताओं से
पत्र-व्यवहार—२	रियासती कार्यकर्त्ताओं से
पत्र-व्यवहार—३	रचनात्मक कार्यकर्त्ताओं से
पत्र-व्यवहार—४	जानकीदेवी बजाज से
पत्र-व्यवहार—५	परिवार के सदस्यों से
विनोबा के पत्र	आचार्य विनोबा भावे से